यह चेहरा क्या तुम्हारा है ?

लक्ष्मीधर मालवीय

संभावना प्रकाशन
रेवती कुंज हापुड़-२४५१०१

मूल्य : 55.00 रुपये

प्रथम संस्करण : 1985

यह चेहरा क्या तुम्हारा है ? (उपन्यास)//आवरण : लक्ष्मीधर मालवीय/प्रकाशक : संभावना प्रकाशन; रेवती कुंज, हापुड़-245101
मुद्रक : हरिकृष्ण प्रिंटर्स, शाहदरा, दिल्ली-32

आयुष्मान् !

इन पन्नों को सूंघो—
तुम्हें अपनी दुर्गन्ध नहीं लगेगी
क्योंकि मैंने ठीक से पता कर लिया है—तुम्हारे
नाक नहीं होती

यह तुम्हारा ही रचा हुआ संगीत
पर तुम्हें सुनाई न दे सकेगा
क्योंकि तुम्हारे पास कान नहीं हैं

क्योंकि तुम्हारे पास दांत हैं
इसीलिए यह रचना
और क्योंकि तुम्हारे पास आंखें तो हैं हो
इसलिए इसे मैं तुम्हें देता हूं—
लो इसे
देखो तो

ओ पवित्र दीमको !

सप्तपदी

कांच



कालिन्दी ताक पर से एक-एक फोटो-प्लेट सम्हाल-सम्हाल कर उतारता और उस पर जमा बारीक गर्द को बड़े हल्के हाथों से पोंछ कर प्लेट को ताक पर दूसरी तरफ रखता जा रहा था। खाली समय में वह प्राय: यही किया करता था—और खाली वक्त तो उसके पास तमाम था ! फोटो-प्लेट भी दो-चार सौ नहीं, हजारों की संख्या में थी। स्वयं कालिन्दी को नहीं मालूम, कितने हजार। पूरब वाली पूरी दीवार पर ही लकड़ी के तीन टांड प्लेटों के बोझ से बीच में लचक आये थे। फिर दालान की चारो अलमारियां ऊपर से नीचे तक उन प्लेटों से खचाखच भरी थी। उसने कई बार सोचा कि खुले ताक वाली प्लेटों के लिये भी काठ की शीशेदार बंद अलमारियां खरीद लें तो आंधी-पानी धूल-गर्द से सब की रक्षा हो जाये लेकिन जब प्रिंटिंग पेपर और केमिकल खरीदने के लिये पैसा पूरा न पड़ रहा हो तो अलमारियां कहां से खरीदे !

अचानक नीचे बच्चे की तेज चीख सुन कर वह छज्जे की ओर लपका।

गगा महाजन का ढाई साल का पोता लगातार चीखे जा रहा था और महाजन की बहू धोती के नीचे बिना कुर्ती पहने सड़क के किनारे खड़ी हो चिल्ला-चिल्ला कर गालियां बकती हुई रो रही थी—कोढ़ियल हो के मरे ! हाय मेरे लल्लू को मार डाला ! अंधा हो के साइकिल चलाता है ! रंडी का भतार !

लल्लू के सिर के पिछले हिस्से से खून बह रहा था।

—पकड़ा क्यों नहीं साले साईकिल वाले को ! —अरे, बच्चे का सिर फट गया है ।— साइकिल वाला रुका रहा कि पकड़ लेते ? —जल्दी अस्पताल ले जाओ भाई, कि जब मर जाएगा तब अस्पताल ले जाओगे !

गंगा महाजन की बहू की गालियां तथा रोते हुए लल्लू की रोती-रिरियाती आवाज़ मद पड़ी तो नीचे की दूसरी आवाजें, गुज़रते रिक्शों की घंटियां और स्कूटर की घुरघुर -किर्र हार्न तथा स्टेशनरी मार्ट की मिली-जुली आवाजें साफ-साफ ऊपर उठ कर आने लगी—चार दस्ता कागज बढ़ाओ—भइया साहब दो गुड्स पेंसिल आठ जिस्ता कागज—कह तो दिया कि कापी नहीं है, भाग जाओ ! —नयी डायरी कब तक आ जायेगी भइया साहब ? —बीस रुपये अस्सी पैसे निकालो फटाफट !

चार दुकान आगे पन्ना तमोली के रेडियो पर लोकगीत कार्यक्रम आ रहा था। बीच में उसकी आवाज़ को क्रमश. डुबाती हुई लाउडस्पीकर रिक्शा से फिल्मी गीत—*अपने दिल मे जगह दीजिए, मेरे प्यार के देवता !* फिर लकवा मारी-सी मर्दानी आवाज़ मे विज्ञापन—ह व स । ता क त औ दौ ल त की ह व स । ह व स जि स ग की फि लि म ह वस में दे खि ये नी तू सि रेएखा वि द्या सि न्हा प्रदीप कुमार बिन्दू को फि लिम ह वस में रूप मती के सु नहरे पर दे—फिर तेरी गलियों में न रखेंगे कदम आज के बाद—

लाउडस्पीकर कुछ दूर निकल गया था कि ऊपर आने वाली सीढ़ियों पर पैरों की तेज़ आहट बढ़ती हुई सुनाई दी। कालिंदी बरस गया कि कहीं फिर कोई ग्राहक अपना प्रिंट मांगने तो नहीं आ रहा है ! मोतियाबिंद के कारण वह खुद तो प्रिंट कर नहीं पाता, सीताराम के कालेज मे हाइपो लाने में लक्ष्मण आज तीन दिनों से लगातार हीला-हवाला बता रहा था। सुबह से अब तक तीन ग्राहक कालिंदी पर भल्ला कर वापस जा चुके थे। कल रात भी उसने लक्ष्मण को याद दिलायी तो लक्ष्मण ने उत्तर दिया कि सीताराम मास्टर मिरजापुर गये हैं, सुबह लौटेंगे। आज सुबह कहा तो उत्तर मिला कि उनके घर गया था, वह कालेज चले गये थे। सीताराम कालेज की साइंस लैब से निकाल कर हाइपो दे देता है तो उतने पैसों की बचत हो जाती है। कालिंदी को पता है कि लक्ष्मण को सीताराम से चिढ़ है। चिढ़ने का कारण भी उसे मालूम है लेकिन जब सारी दुनिया जानती है, फिर लक्ष्मण के चिढ़ने से होता क्या है।

ग्राहक नहीं, नीचे की स्टेशनरी मार्ट का नौकर बच्चा था। उसे देख कर कालिंदी राहत की सास लेने जा ही रहा था कि बच्चा को झुकी हुई पीठ पर कई रिम कागज़ चढ़ा देख कर वह हत्थे से उखड़ गया—बच्चा, मैं कहे देता हू कि इसे मैं अपनी दुकान में हरगिज़ नहीं रखने दूंगा।

मगर बच्चा धड़धड़ाता हुआ उसके बगल से गुज़रा और आंगन पार करके

दालान के कोने में ले जा कर उसने कागज धम्म से पटक दिया—जो कहना हो तुम्हें नीचे जा कर भइया जी से कहो। —वह हांपते हुए बोला—तब तक मैं बोझ लादे यहा खड़ा रहूंगा क्या?

—मैं तुम्हारा यह सारा कागज-फागज उठा कर नीचे सड़क पर फेंक दूंगा, समझे?—कालिंदी चश्मे के फ्रेम को नाक के ऊपर ठेलते हुए बोला।

—अरे चलो काली बाबू! एक रिम कागज तो तुमसे उठेगा नही, बडा उठा के फेंक देंगे! —लौटते हुए वह कुटिलता से मुस्कराया—अभी बारह रिम कागज और रखना है।

कालिंदी कुड़मुड़ा कर रह गया। शिकायत करने के लिये वह नीचे भी न गया।

हर महीने किराया चुकाने में उससे देरी हो ही जाती है। और पहली से दूसरी तारीख हुई नही की मकान मालिक भईया साहब कोई न कोई खुराफात करने लगता है।

उसी समय भद-भद करता हुआ भइया साहब ऊपर आ धमका—आज चार तारीख हो गयी। जब आपसे दुकान नही चलायी जाती है तो आप मेरी जगह खाली क्यो नही कर देते! बाप-दादा के जमाने का वही बीस रुपल्ली किराया आप देते चले आ रहे हैं। वह भी समय से आपसे अदा नही किया जाता।

कालिंदी को इतना भर सुन लेना कभी बुरा नही लगता क्योकि यह तो हर महीने की बात है।

—सुझाई आपको देता नही है। अरे, घर बैठिये और भगवद भजन करिये। फिर कौन आयेगा इस सन उन्हत्तर मे आपके कबाड़िया बक्से से अपना फोटू उतरवाने नये जर्मन-जापानी कैमरे लाइए, तड़पा बिजली लगाइए, तब तो कोई मुर्गी-मुर्गा फसे भी! नही ता बैठे रहिए, अपने कैमरे का लेन्स थामे भये!

भइया साहब ने दाहिने हाथ की मुट्ठी बना कर हिलाते हुए भद्दा-सा इशारा किया और वैसे ही भद्-भद् करता हुआ सीढ़िया उतर गया।

कालिंदी तिलमिला कर रह गया। उसने एक बार सोचा कि चल कर शंभू ओझा से कहू, नेता आदमी है, वह भइया साहब को समझा-बुझा दे कि इसी दुकान की बदौलत किसी तरह हम मियां-बीबी की दो जून की रोटी चल रही है, क्यो नाहक बुढाई मे दुकान-धधे से उदवास रहा है। पर कालिंदी शंभू ओझा के यहां भी नही गया। एक बार गया था वह शंभू ओझा के यहां, यह कहने कि दस नेता लोगो से तुम्हारा परिचय है, किसी से कह दो कि मुझसे फोटो उतरवा ले, फर्स्ट क्लास फोटो उतार कर दूंगा। बड़े लोग है, एक फोटो के लिए सौ पचास रुपया दे देना कोई मुश्किल नही। वहां पहुचा तो देखा कि दरवाजे पर मुहल्ले के बीस-पचीस लौंडे-लपाड़ियो का झुंड जमा है—हमें दो!—हमे नही मिली

साहब !—रऊफ मियां लड़कों के ऊपर रेवड़ी चुआते हुए वह रहे हैं—ओझा जी निकलें तो खूब ज़ोर से नारा लगाना। समझे ?—कालिंदी एक बगल खड़ा हो कर तमाशा देखता रहा कि शंभू ओझा बाहर निकला।

—शमूऊ ओझा की ! '' जै !—शंभू ओझाआ की !—जै !

शंभू ओझा ने मुस्करा कर कालिंदी की ओर देखते हुए कहा—कहिए चित्रकार जी, कभी मेरा एक बढ़िया-सा फोटो उतार दीजिए।

कालिंदी ने अच्छा कहा और अपना-सा मुह ले कर लौट आया।

वह शमू ओझा के यहां भी नही गया। नेता आदमी है, पूत भी मित्र भतार भी मित्र भला किरिया किसकी खाएगा ! हा सबसे कह देगा, करेगा किसी की नही।

नीचे सड़क किनारे एक कुत्ता सिर झुका कर नाली से बाहर बची हुई उल्टी को तल्लीन हो कर चाट रहा था घिना कर कालिंदी ने मुंह फेर लिया। अभी दस ही मिनट पहले जब गगा महाजन की बहू चिल्ला-चिल्ला कर गालियां बक रही थी, सिर जमीन तक झुका कर उसी कुत्ते ने वह कै की थी !

कालिंदी ने नए ज़माने की कभी परवाह न की। उसके स्वर्गीय पिता ने उसे जैसा सिखाया था, ठीक वैसे ही खुले दिन कांच की गच के ऊपर लगा तिरपाल कमोवेश खोलकर ठीक रोशनी की जाच-परख करके तब वह फोटो उतारता था। यदि रोशनी मन-माफिक न हुई तो कैमरे के सामने कुर्सी पर बैठे हुए ग्राहक को किसी दूसरे दिन आने को कहकर उठा देता। इस प्रकार दो-दो, तीन-तीन बार एक ही ग्राहक को उसने बुलाया है मगर गलत फोटो कभी नही उतारा। उसके पिता ने यह नया कैमरा, जोडेल हाफ प्लेट का, सन् 27 में सोलह पाउन्ड सात शिलिंग चुका कर लन्दन की वालेस हीटन लिमिटेड कंपनी से सीधे इम्पोर्ट किया था। कालिंदी को लन्दन कि उस दुकान का नाम ही नही पता भी अब तक याद है—119 न्यू बान्ड स्ट्रीट। हाफ प्लेट कैमरा, छह इंच का लेन्स, जिसके लिए भइया साहब कहता है कि अपना लेन्स थामे बैठे रहिए। कोई जज हो या बैरिस्टर, पिता ने किसी के भी बंगले पर जाकर फोटो कभी नही उतारा। अपनी मर्जी हुई तो बात ही और है। दुकान का पुराना नौकर बड़कऊ कैमरे की भारी-सी बैसाखी, कालिंदी को याद है कि वह बड़ा हो जाने के बाद भी लकड़ी के उस ट्राइपाड को कैमरे की बैसाखी कहता था कैमरे का भारी बक्स, काला परदा, प्लेटों का अलग बक्स-सारा तामझाम इक्के या तागे पर चढ़ाता था। पिता मन-पसद जगह पर सवारी रुकवाते। बड़कऊ सारा सराजाम फिट करता, तब धोती-अचकन पहने, माथे पर लाल चदन की छोटी बिन्दी लगाए पिता गोल पारसी टोपी उतार कर कैमरे के पीछे लटक रहे बुरके मे सिर डालते। अन्त मे लेन्स का ढक्कन वह खोलते और हाथ कलाई पर से घुमा कर झप से ढक्कन बंद कर देते।

कालिंदी ने सोलहवां साल पार किया उसके पहले ही उन्होंने सारा हुनर कालिंदी को सिखा दिया। लेकिन लेन्स ढक्कन को कभी हाथ न लगाने दिया उन्होंने—जैसे कि रोशनी की सही माप का पता केवल उन्हीं की कलाई को हो। कालिंदी ने भी दो ही वर्ष में वह सारा काम लक्ष्मण को सिखा दिया लेकिन फाटो उतारता था खुद ही। चश्मे के बायीं ओर का फ्रेम टूट गया था, फ्रेम बदलवाने की नौबत ही नहीं आती। बाया कांच चुटकी से पकड़ कर ठीक करने पर भी सफेद-सफेद, धुंधला-धुंधला सुझाई देता है, फिर भी।

कैमरों के बड़े-बड़े नाम क्या उसने सुने नहीं हैं?—याशिका, कोनिका, लायका—सब सारे नालायक! जब हाइपो और स्टापर तक खरीदने के लिए गांठ में पैसे न हों, खाली बोतल ले जाकर सीताराम से कहना पड़े कि भाई मेरे, एसिटिक ऐसिड चुक गया है, अपनी साइंस लैब से इस बोतल में थोड़ा सा भर दो यार, तो—

न फिल्म मिलती है न मसाला न कागज तो क्या वह दस्ता कागज के पन्ने पर फोटो उतार कर दे दे? वह पुराने ग्राहकों को शालीनतापूर्वक झूठ बोल देता कि बहुत बिज़ी हूं, फोटो उतरवाना हो तो अगले महीने आइए। नहीं दूसरी दूकान से उतरवा लीजिए।

हां, पिछले महीने ही तो, वह इन्कार नहीं कर पाया, शाम को जो दो छोटी लड़कियां फोटो उतरवाने आई थीं। उनमें से एक पर जो कालिंदी की नज़र पड़ी तो फिर वह उसे एकटक देखता ही रह गया! फिल्म तो थी ही नहीं, उसने कैमरे के पीछे प्रिंटिंग पेपर लगा-लगा कर पेपर निगेटिव लिए, और खूब लिए। डेढ़ घंटे में आठ-दस तो उतारे ही होंगे।

—लच्छू लाल, नाम-नंबर लिख लो रजिस्टर में दोनों बेटियों का!—संतुष्ट हो कालिंदी स्टूडियो से बाहर आ दालान से उतर कर छज्जे पर दोनों हाथ टिका कर खड़ा हो गया। पसीने से उसकी बनियान पीठ पर चिपक गई थी यद्यपि दशहरा बीते एक हफ्ता हो गया था।

सूरज का फीका गोला मुसलमानी मुहल्ले के पीछे डूबने ही वाला था। मस्जिद की ओर से अज़ान की हल्की पुकार उड़ कर आ रही थी। बहुत दिनों बाद कालिंदी को अपना मन भरा-भरा लगा।

स्टूडियो के अन्दर दोनों लड़कियां और लक्ष्मण ही-ही खी-खी कर रहे थे। कालिंदी ने उधर ध्यान ही नहीं दिया।

बस, लक्ष्मण को लाइट परखने का कैंड़ा सिखा दूं फिर उसे कैमरा-दूकान सब सम्हला कर इस रोज़-रोज़ की झंझट से छुटकारा पाऊं—वह पीले आसमान में उड़ती पतंगों की बुन्दियों को देख रहा था—अपना क्या, दो प्राणी की गृहस्थी दोनों अधअधे। दो जून चार रोटियां लक्ष्मण दे देगा तो ठीक और अगर न देगा

तो पहले ही कौन देने वाला बैठा है। इसीलिए लक्ष्मण से कहता हूं कि जो हुनर सीख रहे हो उसी में सारा दिलोदिमाग लगाओ। आसान से आसान काम-धंधा भी खटनी के बिना नहीं आ सकता। यह क्या कि फोटोग्राफी सीख रहे हो और बीच मे बिदक कर जानकी के घर मे लेई, रोशनाई और सुगंधित तेल का कुटीर-उद्योग खड़ा करने लगे ! पूछो कि ग्राहक की फिल्म धो ली या नही तो जवाब मिलता है कि जानकी की लडकियों को स्कूल छोड़ने जाना था।

—देखिए जी, मेरा फोटो खूब अच्छा आना चाहिए।—पीछे से गुजरते हुए उसी लड़की ने कालिंदी से कहा तो कालिंदी उसे फिर एक नजर भर कर देखने के लिए अचानक पलट गया।

गोरी चिट्टी, भरे-भरे चेहरे वाली, सलवार-कुरता में वह कितनी सयानी लगती है। चौदह-पन्द्रह साल पहले जांघिया-फ्राक पहने, नाभि निकली हुई, कितनी मरियल-सी घिनौनी लगती थी वह ! कालिंदी उसकी पीठ पर झूलती हुई मोटी चोटी को देखता उसे अपनी दीठ से सहलाता-दुलारता रहा, जब तक कि वह बिना एक बार भी पीछे मुड़े सीढ़ी की दीवार की ओट मे न चली गई।

हुलास के साथ लक्ष्मण से तगादा कर-कर के कालिंदी ने वे निगेटिव धुलवाए। निगेटिव धुंधले थे, सपनों के बादलों मे खोई-खोई किशोरी के ! —अब यह कही नही जा सकती, कालिंदी ने सोचा।

लक्ष्मण ने भी डार्करूम में घटों मेहनत की। एक पूरा दिन तो आसमान में बदली घिर आने से बेकार निकल गया। कितने प्रिंट लक्ष्मण ने बनाए होंगे, कालिंदी को मालूम नही। पेपर-निगेटिव से अच्छा प्रिंट उठाना कोई हंसी-ठट्ठा थोड़े ही है। फिर डार्क रूम भी क्या, उसी पुराने जमाने की कोठरी, जिसमे बाहर छत की ओर वाली दो दीवारों के कोने पर एक जगह छेद बनाकर उसमे गाढ़ा नीला चोकोर शीशा फिट करा दिया गया था। उस शीशे से छन कर अन्दर आने वाली धुंधली रोशनी मे निगेटिव्ज रखना, पेपर टटोल कर ढूंढना, निगेटिव प्लेट के साथ काच से चिपका कर एक्सपोज करना। कालिंदी को अपनी युवावस्था के वे दिन स्मरण हो आए जब वह भी इसी तरह दिन के दिन उस कालकोठरी मे खटा करता था, जाड़ा-गर्मी-बरसात ! जब बांहों के नीचे दोनो बगलें पसीने से गीली होने लगें तो इसका मतलब कि टेम्परेचर अस्सी डिगरी से ऊपर है, घड़े से निकाल कर नीचे की ट्रे मे ठडा पानी डालो। और जब पीठ पर चींटियां-सी चलने लगें तो इसका अर्थ यह कि अब पन्चानवें डिगरी से ज्यादे है, डेवलपर मे फिटकरी का चूरा मिलाओ, नही तो प्लेट पर का मुलम्मा दूध की फांफी की तरह उचट कर बह जाएगा। क्या-क्या बातें थी, क्या-क्या गुर थे !

लक्ष्मण प्रिंट लिए हुए बाहर निकला तो गोधूलि हो गई थी लेकिन कालिंदी अपने ख्यालो मे ऐसा बह गया था कि उसने दिया-बत्ती तक नही की थी।

—यह लीजिये।—लक्ष्मण ने उसके हाथ में प्रिंट पकड़ाया। कालिंदी ने देखा, कालिंदी ने फोटो उतारते समय ऐसे ही फोटो देखे थे। गीले प्रिंट के एक कोने से पानी की बूंदें कालिंदी के पैरों पर टप-टप गिरने लगीं।

मुलमुलाती आंखों से उसे एकटक देखते-देखते अचानक कालिंदी को न जाने क्या हुआ कि वह अपनी अड़सठ साल की उम्र भूल कर एक छोटे-से बच्चे की तरह दोनों बांहों में लक्ष्मण के गले से लिपट गया—वाह प्यारे लच्छू!

हर्षातिरेक में वह बाईं कांख और दोनों रानों के बीच के सफेद दाग वाले लक्ष्मण से परहेज करना भी भूल गया, उस समय!

—और कोई ऐसे काम हों तो बता दीजिए। -लक्ष्मण कालिंदी को धीरे से परे करते हुए बोला—मुझे एक जगह ऐसे जाना है।

—कहां?—कालिंदी ने यों ही पूछ लिया।

—जानकी चाची ने ऐसे साथ पिक्चर दिखा लाने को कहा है, मुकद्दर।

कालिंदी ने सुन लिया। बोला—तो घर पर सब्जी का यह थैला दे देना और बिट्टो से कह देना कि रात की तरह मार गरम मसाला न झोंक देंगी चौंराई में। कल रात भर नींद ही नहीं आई खांसी के मारे।

लक्ष्मण ने दालान की खूंटी पर से बंद गले का काला गरम कोट उतार कर पहना और चप्पलों में पैर डालकर सीढ़ियां उतर गया। पिछले ही सप्ताह कालिंदी ने अपने गरम कपड़े निकाले तो बन्द गले का वह काला कोट उसने लक्ष्मण को दे दिया कि लक्ष्मण पहने, अब मुझे कहां बाहर आना-जाना रहता है। सफेद सूती पतलून के ऊपर बन्द गले का काला कोट पहनकर लक्ष्मण बिल्कुल वकील की तरह लगता था।

कालिंदी ने गीला प्रिंट फेरोप्लेट पर चिपका दिया और बोरसी के आगे उकड़ूं बैठकर उसे सुखाने लगा। बोरसी में से उठती अधजले उपलों की सोंधी-कड़वी गंध नाक तक पहुंची तो अच्छी लगी उसे उस रोज।

लेन्स के आगे लगा ढक्कन खोलता है वह और हाथ कलाई पर से घुमाकर लेन्स बन्द कर देता है तो कैमरे के अन्दर बन्द हो जाता है एक अक्स! पचीसों वर्ष हो गए उसे फोटो उतारते, अब तक वह इतना ही जानता था लेकिन उतरते कातिक की उस शाम को सूखा हुआ प्रिंट दोनों हाथों से उठाकर देखते हुए उसने पहली बार पहचाना कि एक अक्स अन्दर बन्द ही नहीं होता बल्कि अपने अतीत की कचोट का एक अक्स बाहर निकलकर आंखों से आंसू भी छलका दे सकता है। उसी अक्स को कालिंदी देर तक देखता रह गया।

अक्सों की ही थाती मिली थी उसे अपने पिता से और मोतियाबिंद से धुंधली अपनी पुतलियों के भीतर रोशनी की अंतिम किरण के पहुंचते रहने तक वह उस विरासत को खोना नहीं चाहता था। एक बढ़ई या लोहार, मोची, जुलाहा

या कुम्हार, हर पुरुष अपने हुनर को अपने से आगे किसी न किसी के हाथों में पकड़ाना चाहता है, अपने बेटा-बेटी को, वह न सही तो परिचित-अपरिचित, किसी को भी !

कालिंदी सोचने लगा कि लक्ष्मण अगर रायबरेली जाने की बजाय चार-पांच साल पहले ही उसके पास आ गया होता तो अब तक कालिंदी ने उसे क्या से क्या बना दिया होता। लक्ष्मण कालिंदी का भतीजा था, सगा नहीं तो क्या हुआ रिश्ते का तो था। लक्ष्मण का पिता बुल्लो कालिंदी का ननिहाल की ओर से भाई लगता था। वह बुल्लो एक दिन सबको छोड़कर जो गया तो पीछे पलटकर उसने एक बार ताका तक नहीं। पत्नी-बच्चों तक की खोज-खबर न ली। बुल्लो का बड़ा बेटा रामा, लक्ष्मण से अठारह वर्ष बड़ा, अपनी ननिहाल मे पला, वहीं पढ़-लिख कर अब रायबरेली के एक बैंक मे एकाउन्टेन्ट है। खुद रामा का बड़ा परिवार था, ऊपर से लेकर नीचे तक आध दर्जन लड़कियों की पलटन। लक्ष्मण उसका सौतेला भाई लेकिन उसने लक्ष्मण को अपने पास रखकर हाई स्कूल तक पढ़ाया। रामा की सबसे बडी लड़की, बारह-तेरह बरस की, बकलोल-जैसी। बेबी-बेबी सब उसे पुकारते थे। वह न घर का आदमी देखे न बाहर का, जिसके लिपट जाए उसके एकदम लिपट जाए ! रामा की पत्नी मीरा उसे मारती भी तो बहुत थी, जो चीज हाथ मे आ जाए उसीसे धुनना शुरू कर देती। लक्ष्मण को न जाने क्या पगलई सवार हुई कि उसने कहा ब्याह करूगा तो बेबी ही से ! बड़ी बकरकूद मचाई घर मे ! तिमहले की सीढी के ऊपर चढकर बैठ गया कि अगर तुम लोग यह ब्याह नही होने दोगे तो मैं यहा से नीचे गली मे कूद कर सुइसाइड कर लूगा। कहा की बात ! भला बताइए, बीस साल के नौजवान को क्या इतना भी नही मालूम कि भाई की लडकी से ब्याह रचाओगे तो जेल की हवा नही खानी पड़ेगी ? मीरा ने अपनी कोखजाई लड़की को "रंडी" और लक्ष्मण को कोढ़ी-निखट्टू और न जाने क्या-क्या गालिया दी। फिर पग घुंघरू बाध मीरा नाची रे ! आधी सीढी चढकर लक्ष्मण को लोहे की खाली बाल्टी वह खीचकर मारी कि उसका निशान आज तक मिटा थोड़े ही है ! रामा ने लक्ष्मण को कान पकड़कर खड़े-खड़े घर से बाहर कर दिया कि आइन्दा घर मे आने की जरूरत नही।

तब मन्नो भाभी मुरारीलाल की बेवा रानी बीबी के साथ रहती थी, वहीं स्कूल के अन्दर छोटी सी कोठरी मे, जहां रानी बीबी दाईगिरी करती थी। कालिंदी को बडा बुरा लगता था जब वह मन्नो को नाते-रिश्तेदारो से एक-एक, दो-दो रुपया मांगते देखता…"तुम्हारे कोई फटी पुरानी धोती हो तो हमे दे दो।—रायबरेली से लक्ष्मण अपनी मां के पास आया यहां। निठल्लू की तरह दिन-भर यहां से वहा लुटकता रहता। कालिंदी ने उसे अपने साथ रख लिया।

सच कहे तो इसमे कालिंदी का स्वार्थ भी था। अपनी बिरादरी का, नाते का

नौजवान लड़का था, बाप तो छोड़कर ऐसे चला गया जैसे कुत्ता-बिल्ली भी अपने तन के जाए को नहीं छोड़ेगा ! फिर कालिंदी को मदद की जरूरत थी। सहारे की भी। मानसिक सहारे की।

सामने वाले लम्बे ताक पर पीछे से लेकर आगे तक तीन लम्बी कतारों में जमी हुई खड़ी थी वे फोटो-प्लेटें जो खुद कालिंदी ने उतारी थी। कलकत्ते के चौरंगी पर के साइन फोटो हाउस से वह प्लेट मंगाता था। साइन फोटो हाउस उसने खुद कभी नहीं देखा। कलकत्ते में ह्वाइटवे लिडला की आलीशान दूकान जरूर देखी थी, लड़कई में जब बुल्लो के साथ कलकत्ता गया था तब ह्वाइटवे लिडला की चलती सीढ़ियों पर भी चढ़ा था। बुल्लो ठहरा रईस जादा ! उसने बुल्लो से कहा, बुल्लो यार मेरा एक ठो कैमरा लेने का मन है तो बुल्लो ने गुमाश्ते से कह कर फट से ब्राउनी का बाक्स कैमरा खरीदवा दिया। अब ये तमाम प्लेटें हैं। अब के लोगों को इनकी भला क्या परवाह। जिनके फोटो जब उन्हीं को ख्याल नहीं तो औरों की बात ही क्या। पैसा फेंका, अपना फोटो उठाया और चलते बने, फोटो निगेटिव सम्हालो तुम ! ऊपर वाले टांड़ पर भी कालिंदी ही के उतारे फोटो प्लेट थे। तब बम्बई की कोडक कंपनी अंग्रेजों के हाथ में थी। लेकिन एक-एक प्लेट हाथ में लेकर देखे बिना वह याद नहीं कर सकता कि उसने कब उसे उतारा। उनमें जो व्यक्ति तब जवान थे, अब बूढ़े हो चुके होंगे, शादी के जोड़ों में से पता नहीं कौन जीवित कौन मर-मरा गया होगा लेकिन यह क्या किसी करिश्मे से कम है कि यहां सब वैसे-के-वैसे बने हैं !

ऊपर के ताकों पर कालिंदी के पिता के उतारे प्लेट निगेटिव हैं। उन्हें तो वह देख कर भी नहीं पहचान सकता। ऐसे दस हजार प्लेट हों कि बारह हजार ! दालान में, आंगन के किनारे-किनारे जड़े तख्तों पर, स्टूडियो में। तिरपाल तान देने पर भी बरसाती बौछार पड़ती ही है। बरसों से पड़ती आ रही है। आपस में चिपक कर वे शीशे की ईंटों में बदल गयी हैं। उनके बीच न जाने किन-किन स्त्री-पुरुषों के चेहरे। अब कालिंदी उन्हें अलग करने की कोशिश भी नहीं करता क्योंकि एक बार अलग करने की कोशिश में जरा-सा ही जोर लगाया था कि एक प्लेट खट से टूट गयी। नीचे के सादे हाशिए पर दिन-महीना-सन् लिखा दिखाई दिया था 5-12-1919, पिता की सुडौल महीन लिखावट में। साड़ी के निचले भाग के साथ दो पैर और चूड़ियों से भरी कलाइयां, बाकी शीशे की ईंट के अंदर रह गया।

इन सबको फेंक देने का साहस न होता उसे। उसे लगता कि उसके आगे वह बंधा हुआ खड़ा है। छज्जे के बाहर लटका हुआ साइनबोर्ड "चित्रकार स्टूडियो" का, उसके पिता के समय का नाम, लोहे के मजबूत फाटक की तरह उसे अंदर बंद किए हुए है !

कालिंदी ने मन में मुट्ठी पटकते हुए अपना संकल्प दोहराया—भइया साहब की ऐसी की तैसी, अपनी दूकान मैं कभी न छोड़ूंगा !

सामने पीपल की डालों के पीछे एक ओर डाकखाने की दोपहल सीढ़ी दिखाई दे रही थी, दूसरी ओर लक्ष्मी ज्वेलर्स की दूकान। उस दूकान के अंदर भी तो कोई ग्राहक नहीं जा रहा था ! पीपल के थड़े पर बैठा मोची लोहे के बोहम पर जूता चढ़ा कर उसमें ठक-ठक कीलें जड़ रहा था। पास में खड़े इक्के से जुता हुआ घोड़ा सिर से लटक रहे कनस्तर के अंदर खखार-खखार कर दाना खा रहा था।

—काली बाबू, प्रिंट बन गया ?

कालिंदी मुड़ कर देखे बिना आवाज़ से ही पहचान गया कि गिरिराज अपना एक निगेटिव प्रिंट करने के लिए दे गया था। वह उसे आठ या नौ चक्कर दौड़ा चुका था। फिर भी कालिंदी को गुस्सा आ गया। उसने कोई उत्तर न दिया।

—बन गया ?—गिरिराज उसके पास आ कर मुस्कराने लगा।

उसे मुस्कराता देख कालिंदी और चिढ़ गया—देखिए गिरिराज जी, आप निगेटिव उठा ले जाइए। किसी दूसरी जगह से बनवा लीजिए।

गिरिराज सरल स्वभाव का हंसमुख व्यक्ति था। उसने हंसते हुए कहा—बनवाऊंगा तो मैं आप ही के यहां से काली बाबू। आप चाहे जितने दिन लगाइए, आपकी मर्ज़ी। असल में वह मेरी बेटी के बर्थडे का फोटो है, मेरी वाइफ ज़रा जल्दी देखना चाहती है कि कैसा आया, और कोई बात नहीं।

—तभी तो कहता हूं कि दूसरी जगह से बनवा लीजिए न ! शहर में तमाम फोटोग्राफर तो हैं।

गिरिराज ने उसके एक कंधे पर हाथ रखते हुए पूछा—क्या बात है काली बाबू, आज तुम बहुत ज़्यादा नाराज़ हो किसी पर।

तभी लक्ष्मण बाहर से आया और उन दोनों पर एक चोर नज़र डाल कर स्टूडियो में जाने लगा कि कालिंदी उसे रोक कर उसके ऊपर बरस पड़ा—क्यों जी लच्छू, मैं आज पांच दिन से रट रहा हूं लेकिन तुम्हें राड़ की सेवा करने की तो फ़ुर्सत है, सीताराम के यहां जाने की नहीं।

—वह ऐसे मिलते ही नहीं तो मैं क्या करूं—लक्ष्मण ने मुंह में भरी पान की पीक कोने की नाली में थूक कर कहा—ऐसे पैसा दीजिए तो बाज़ार से जितना केमिकल कहिए ऐसे ला दूं।

लक्ष्मण नीचे चला गया तो कालिंदी बोला—राजे जी आपके पास कौन-सा कैमरा है ?

—यों ही एक मामूली-सा कैमरा है आग्फा का।

—नहीं-नहीं, अग्फा कैमरा बढ़िया होता है।

—अरे काली बाबू ! आपके कैमरे के आगे पानी भरें दूसरे सब कैमरे !

कालिंदी हर्ष को पीते हुए बोला—राजे जी, बड़ी प्यारी बिटिया है आपकी! कितने साल की हो गयी ?

—नौ की हो गयी ! चार-पांच बरस बीतने दीजिए फिर आपसे कहूंगा कि काली बाबू अपनी बिटिया के लिए कोई अच्छा लड़का बताइए।

—भगवान उसे हमेशा सुखी रखे। बड़ी प्यारी बेटी है वह। अच्छा राजे जी, कल शाम को आप आइए, आपको प्रिंट जरूर तैयार मिलेगा।

ग्राहक के चले जाने के बाद भी वह याद करता रह गया उस बिटिया को जो उसकी अपनी अकेली संतान थी। चौंतीस वर्ष की उम्र में यही तो एक संतान हुई थी, वह भी साढ़े पांच वर्ष की हो कर डबल निमोनिया में मर गयी। सांस उसकी बंद हो गयी थी और गर्दन नीचे लटक आयी थी परन्तु बिट्टो उसे अपनी गोद में उसी तरह लिटाए बैठी रही, आंखों में आंसू की एक बूंद तक नहीं। मां-बाप तो अपनी औलाद का घर्रा सुन कर पहले ही मर जाते हैं !—अब उसमें कुछ नहीं है। लाओ मुझे दे दो !—कालिंदी उसे कफन में लपेट कर अपने हाथ से यमुना के पानी पर रख आया था। उसके बाद दो बार संतान पैदा होने की उम्मीद बंधी लेकिन पांचवें-छठे माह में ही कच्चा गर्भ बह गया। रोते-रोते बिट्टो की आंख में कोई दोष आ गया। सीतापुर में आंख का आपरेशन करवाया, आपरेशन बिगड़ गया तो दाहिनी आंख ही निकलवा देनी पड़ी। उसकी जगह कांच की आंख देख कर पहले कालिंदी को बड़ा अटपटा लगता फिर उसे मसखरी सूझी, कि लो, यह भी कैमरा हो गयी, एक लेन्स वाला !

कालिंदी ने सोचा कि कल प्रिंट देने का वायदा तो कर बैठा लेकिन देखूं कि पेपर है भी या नहीं। सात-आठ मास बाद उसने डार्करूम के अंदर कदम रखे। घुसते ही आदतन उसकी निगाह ऊपर उठी तो देखा सामने की दीवार पर टंगा रहने वाला उसके पिता का चित्र वहां नहीं था। टेबुल पर पानी भरी ट्रे पड़ी थी। झुंझला गया। कितनी मर्तबा लक्ष्मण को सहेजा कि ट्रे खाली कर दिया करो, बंद कमरे में सीलन हो गयी तो चीजों में फफूंद लग जाता है और एक बार फफूंद लग गया तो कोढ़ की तरह—याद करके वह सिहर गया। लक्ष्मण हमेशा पाजामा या पैन्ट पहने रहता था लेकिन एक बार उसने लक्ष्मण को नल के नीचे खड़े हो कर नहाते हुए देखा था !

पिता का फोटो जमीन पर दीवार के सहारे औंधा हुआ रखा था। उसने उसे उठाकर फिर दीवार पर लगा दिया।

कोने में जड़े नीले कांच से छन कर बहुत ही हल्की रोशनी अंदर आ रही थी। नीली धुंध-जैसी रोशनी में वह कोठरी उसे आह्लादकारी तिलस्मों से भरी हुई लगी, जैसे बहुत बचपन के दिनों घर में दक्षिण का कोठा, निगोल की सीढ़ी का मोड़ तथा बगल का संकरा गलियारा लगा करता था।

इस कोठरी में वह आठ महीने क्या आठ वर्ष बाद भी क्यों न आए, इसके चप्पे-चप्पे को वह आंख मूंद कर दसों उंगलियों के सिरों से पहचान सकता है ! उसने कागज़ के बक्सों वाली छोटी अलमारी की ओर कदम बढ़ाया तो बाएँ पैर की छिगुलिया में लोहे के स्टूल की ठोकर लगते ही उसके पैर से सिर तक मानों करेंट दौड़ गया ! दो-तीन मिनट तक वह वहीं सन्न खड़ा रह गया !

अलमारी के सबसे नीचे वाले दर में पेपर के केवल दो डिब्बे थे। उसने एक डिब्बा उठा कर उसका ढक्कन खोला, उसमें छह-सात शीट कागज थे। दूसरे में केवल तीन शीट। वह सोचने लगा कि इधर तो दूकान पर अधिक काम भी नहीं आया !

कालिंदी ने सोचा कि चलो, मैं ही किसी तरह रेंगता-रेंगता सीताराम के कालेज तक चला जाऊंगा। सीताराम लक्ष्मण के पिता बुल्लो का पहले विवाह से साढ़ू लगता था, वैश्य डिग्री कालेज में केमिस्ट्री टीचर था। लक्ष्मण-सीताराम के बेटे कृपालू से आमना-सामना बचाता था। न होगा तो किसी फोटोग्राफर से थोड़ा सा माल लूंगा। लेकिन यह भी कैसा मसखरा चक्कर है कि ग्राहक पैसा दे तो माल भराओ, माल हो तो ग्राहक आए। और जो ग्राहक न आए तो सामान न खरीद सको, तो ग्राहक आने बंद हो जाएं !

कालिंदी सीताराम के कालेज जाने के इरादे से डार्करूम से बाहर निकल कर दालान में आया ही था कि उसने देखा अपरिचित सरदार दालान पार करके उसकी ओर आ रहा है।

कालिंदी ने सोचा कि सरदार जी से कह दूंगा कि फोटो नहीं उतार सकता, मुझे अभी बाहर ज़रूरी काम से जाना है।

—यहां के मालिक आप हैं ?—सरदार ने शोकेस के ऊपर कुहनी के बल टिकते हुए पूछा।

—जी। कुहनी हटा लीजिए, नहीं तो उसका शीशा टूट जाएगा। कहिए !

सरदार ने धीरे से कुहनी खींच ली परन्तु कुछ कहने के बजाय दीवार पर नज़र दौड़ाने लगा। उसकी दाढ़ी तक के अधिकतर बाल सफेद हो चुके थे और वह कालिंदी ही की उम्र का रहा होगा फिर भी कालिंदी को डर लगा, दीवार पर उसके यों निगाह दौड़ाने से, उसके प्रशान्त चेहरे से, उसकी लम्बी चुप्पी से। संयोग से लक्ष्मण भी अभी पंद्रह मिनट पहले चला गया था।

—देखिए सरदार साहब, आज तो फोटो—कालिंदी ने कहना चाहा लेकिन सरदार ने अपनी एक हथेली उठा कर इशारे से उसे चुप करा दिया।

फिर उसने अपना चेहरा कालिंदी के चेहरे के एकदम पास ला कालिंदी की आंखों में आखें डाल कर फुसफुसाते हुए पूछा—क्या तेरे पास ऐसा कैमरा है जिससे तू जवान लड़की को नंगी कर सकता है ?

पहले तो कालिंदी समझ ही न सका कि सरदार जो कह रहा है उसका अर्थ क्या है और यह माजरा क्या है। उसका मुंह खुला का खुला रह गया।

—नहीं, ऐसा गंदा काम हमारे यहां नहीं होता साहब !—जुगुप्सा से कालिंदी की मुस्कराहट एकदम विकृत हो गई।

सरदार ने सिर झुकाकर अपने कोट के भीतरी जेब से डाक का एक लिफाफा निकाला और उसमें से एक कागज़ बाहर करके कालिंदी की ओर चुपचाप बढ़ा दिया।

कालिंदी ने उसे दोनों हाथों से लेकर देखा, आंखों के पास लाकर देखा, पलटकर देखा, फिर उलटकर अपनी नाक के एकदम पास लाकर देखा।

'''अ'''देखिए, हमारा इससे, 'कालिंदी ज़ोर से हकलाने लगा—इस पर तो अं चित्रकार स्टूडियो —पीछे मोहर तक—

'''पकड़ा गया तो साला अं—अं करता है !

कालिंदी को असहनीय पीड़ा हुई होंठों के कोनों पर, उसकी देह भर की ताकत घुटनों के अन्दर से ही होती हुई धरती में समा गई और उसकी आंखों के आगे अंधेरा घिर गया।

— फिर ये पिन समेत जबलपुर का पता कहां से आया मादरचोद ! बोल !

कालिंदी को सुनाई दिया लेकिन कालिंदी को अपमान नहीं लगा। दाहिने गाल पर भरपूर मुक्का पड़ा, पेट पर भरपूर लात। भरभरा कर वह गिरा तो कूल्हा खंभे से टकराया, उसे कूल्हे की हड्डी में बहुत तेज दर्द हुआ लेकिन उसने उसे महसूस नहीं किया। सरदार ने ठोकरें मार-मारकर अलमारी और शोकेस चकनाचूर कर दिए, कालिंदी ने देखा लेकिन कालिंदी को अफसोस नहीं हुआ। उन शोकेसों में फिल्मों के खाली सजावटी डिब्बों के अलावा भला था भी क्या !

—सुनिए तो सरदार साहब, आप मेरी बात सुनिएगा कि नहीं सुनिएगा?—कालिंदी ने चिल्लाते हुए कहा'''आपकी बेटी अगर आज—आज अगर मेरी बेटी जिन्दा होती—सरदार साहब पहले आप मेरी बात तो सुन लीजिए—मेरी बेटी अगर आज होती तो आपकी बेटी के बराबर उसकी बिटिया होती !

सरदार ने कालिंदी की मृत बेटी को अश्लील गाली दी, फिर भी कालिंदी के मन में रोष पैदा न हुआ।

—शाम तक इसका निगेटिव निकाल कर रखना !—सरदार ने दोनों मुट्ठियों में भर कर कालिंदी के सफ़ेद बालों को तीन-चार बार ज़ोर से झकझोरा ' मैं लेने आऊंगा, समझा ?

वह चला गया, कालिंदी के मन में एक बहुत बड़ा-सा बगूला उठा कर ! कालिंदी ने खुद से यह सवाल पहली बार पूछा, रेत के ढेर में चमकती रुपहली कनी-सा पैना सवाल, कि पिछले दो वर्षों से क्या वह एक अपराधी को दाल-रोटी

खिला रहा था, उसे पाल-पोस कर बड़ा कर रहा था ? क्या वह अनजाने में एक पाप को पोषित कर रहा था ?

कालिंदी का पोर-पोर दर्द से टीस रहा था। एक-एक कदम रखने मे उसे दुसह पीड़ा होती। बडी कठिनाई से एक-एक सीढ़ी उतरकर वह सड़क पर आया। सडक पर लोग हमेशा की तरह आ-जा रहे थे। त्रिमुहानी पर दो छोटे-बड़े जलूस एक-दूसरे के सामने डटे हुए थे और दोनो तरफ से लाउडस्पीकरों द्वारा एक-दूसरे पर नारों की बौछार हो रही थी। एक जलूस के आगे रिक्शे के ऊपर खड़ा होकर रामू ओझा नारे लगवा रहा था। दोनों ओर रुक गई मोटरें रिक्शे, साइकिल, स्कूटर हार्न और घंटियां बजाए जा रहे थे। पैदल चलने वाले खुशकिस्मत थे, वे उनके बीच से बचकर, कतरा कर, राह निकाल लेते थे। अगले महीने असेम्बली की सीट का उपचुनाव होने को था। कालिंदी दोनो पजों की उलझी हुई उगलियों-सी तमाम सवारियों-पैदल चलने वालों की भीड़ के बीच से किसी तरह निकलकर कबाड़ी बाजार तक पहुंचा और वहा से दो कबाड़ियो को अपने साथ ले आया।

वह स्टूल पर चढकर ऊचे ताकों पर से पुराने फोटो-प्लेट उतार-उतारकर कबाड़ियों को तोलने के लिए पकड़ाने लगा तो बारीक गर्द का बादल-सा उठा। उसे खासियों का दौरा पड गया।

—यह कब का खजाना जमा कर रखा है बाबू !—एक कबाडी ने प्लेटो का मोटा पोथा उसके हाथ से लेकर नीचे पटकते हुए ऊची आवाज में पूछा।

—पटको नही जी !—कालिंदी ने उसे डपट दिया।

—पटकें नहीं तो सेज सजा कर उस पर सुलावें ? कौन खरीदेगा इसको ! पहले तो पानी-कास्टिक सोडा मे गलाकर शीशा साफ करना होगा। तब कही दो-ढाई रुपया के भाव बिकेगा। नही तो गदहा वाला भी न्ही ले जाएगा इसे।

वे दोनो कबाड़ी अकेले बाट से प्लेटें तौलकर फिर उन्ही प्लेटो पर बाट चढा कर वजन दुगुना करके बाकी प्लेटें तौलने लगे। बीच मे एक-दो बार उन्होने प्लेट ऊपर उठाकर देखी।

—सारे का मूत-अस तो चेहरा है !—दोनों हंसने लगे।

न जाने क्यों और कैसे कालिंदी को उस समय अपने घर के उन बर्तनो की याद आ गई जिन बर्तनो मे वह न जाने कितने वर्षों से खाना खाता आ रहा था। पीतल का लंबा गिलास, जिसका पेंदा एक जगह पिचक गया था—जर्मनसिल्वर की टेंढी नारी वाली वह थाली जिसमे से कौर के साथ रसेदार सब्जी उठाते हुए उसे हमेशा खीझ आ जाती थी—कस्कुट का वह बड़ा कटोरा, जिसका गोडा एक जगह जरा-सा झर गया था फिर भी सेंवई की पिस्तेदार खीर कभी बनती थी तो वह उसे उसी कटोरे में खाना पसद करता था, अन्त मे एक उंगली

से पोंछकर चाटते समय के बाकस स्वाद तक ! ऐसा इसलिए कि शायद एक गृहस्वामी अपनी घर-गृहस्थी की पहचान अपने घर के सिर्फ उन गिने-चुने बर्तनों के ज़रिए ही कर पाता है जिन बर्तनों में वह भोजन पाता आया है !

लक्ष्मण आया जब कबाड़ी प्लेटें तौल चुकने के बाद उन्हें बोरों में भर रहे थे। वह थोड़ी देर तक खड़ा होकर चुपचाप देखता रहा। कालिंदी ने उससे कुछ भी नहीं कहा। लक्ष्मण ही धीरे से बुदबुदाया···तो यह दूकान भी ऐसे उठ गई ?—कालिंदी फिर भी चुप रहा। लक्ष्मण खुद ही सीढ़ियां उतर गया।

पैसे चुकाते समय दोनों कबाड़ियों के पास रकम कम पड़ गई। कालिंदी दोनों से हुज्जत करने लगा तो एक कबाड़ी ने कमर के फेंटे में से सिक्के और मुड़े हुए नोट निकालकर आपस में रकम पूरी कर ली।

—साहब, हम लोग और आदमियों को लिवाकर अभी आते हैं।—उनमें से एक ने कालिंदी के हाथ में नोट-रेजगारी का ढेर पकड़ाते हुए बहुत ही नम्रतापूर्वक कहा।

ऊपर तक भरे और सुतली की डोर से सिले हुए बोरे थे चौबीस !

कांच की गच के ऊपर तिरपाल पूरा खुला हुआ था, फिर भी दिन ढलने के कारण ज़रा-सी ही रोशनी अन्दर आ रही थी। कालिंदी ने एक खिलंदरे बच्चे की तरह अपना सिर बैसाखियों पर खड़े हुए जोड़ेल कैमरे के पीछे लटक रहे बुरके के अन्दर डाल दिया और देखने लगा—कैमरे के चौकोर कांच पर धुंधला-धुंधला सा उल्टा अक्स लटका हुआ था—दालान के दोनों खंभे, पूर्व की सफेद दीवार पर लगे तीन ताक, जो दूर छोर तक एकदम खाली थे। उस चौखटे धुंधलके में एक आदमज़ात तक न था !

उसने बुरका पलटकर सिर बाहर निकाला और इधर-उधर नज़र दौड़ाने लगा। आसपास कोई चीज़ भी न दिखलाई दी तो उसने कैमरे के आगे से लेन्स घुमा-घुमाकर अलग किया और उसे भरपूर ताकत से जोड़ेल कैमरे के पीछे लगे चौकोर कांच पर दे मारा !

अमरबेल



बुल्लो ने ड्योढ़ी के बाहर पैर रखा ही था कि ड्योढ़ी पर उकड़ू बैठा हुआ पन्नालाल पूछ बैठा'''कहां जा रहे हो बुल्लो भैया ?

बुल्लो को टोकना बुरा लग गया। लेकिन पागल आदमी, उसका क्या ठिकाना ! बुल्लो ने उत्तर नहीं दिया। पीछे पन्नालाल उचककर खड़ा हुआ—आओ बुल्लो भैया, तुम्हें एक बहुत बढ़िया बात बतावें।—और बुल्लो के पीछे लग लिया।

सड़क पूर्व से आती तिरछी साफ धूप में सोने की पट्टी-सी चमक रही थी। चक्की वाला हलवाई भट्ठा सुलगा रहा था, पक्के कोयले का मीठा-मीठा धुंआ दूर-दूर तक भर गया था और सुबह की धूप में कुहरे का मजा दे रहा था। वर्षों बाद यही अपरिवर्तित दृश्य देखकर बुल्लो को अच्छा लग रहा था।

पन्नालाल उसके बगल में चलता-चलता न जाने क्या कहता जा रहा था, बुल्लो का ध्यान उधर था ही नहीं। लेकिन जब पन्नालाल ने बुल्लो की बांह पकड़कर जोर से हिलाई—यह बड़े ज्ञान की बात है बुल्लो भैया !—तो बुल्लो को भय हुआ कि हाथ में लटकाया हुआ भरा लोटा कहीं गिर न जाए। उसने सिर घुमाकर पन्नालाल की ओर देख लिया।

—बुल्लो भैया, उसका ज्ञान हो जाने पर जीव की हृदयग्रन्थि टूट जाती है और उसके जो संदेह हैं सब की सब नष्ट हो जाते हैं।

—तुम तो बड़े ज्ञानी हो यार पन्ना !—बुल्लो ने हंस कर कहा।

—कहा गया है कि भिद्यते हृदय ग्रन्थिः, छिद्यते सर्व संशयाः !

—यह सब तुमने कहां पढा ?

मुंडकोपनिषद में है।—पन्नालाल ऊंचे स्वर में पाठ करने लगा—हिरण्मये परे कोशे विरज ब्रह्म निष्कलम्, वहा न सूर्य प्रकाशित होता है न चन्द्रमा-तारे, न बिजली—

बुल्लो ने मन मे सोचा कि सुबह-सुबह यह न जाने कहां का ससुर मडूकोपनिषद पीछे पड गया !

सामने एक बड़ा-सा पार्क बन गया था। पहले यही पर शीशमहल का खंडहर हुआ करता था। पार्क में सिमेन्ट की बेन्चें थी लेकिन खाली। एक कोने में पत्थर की ऊंची चौकी पर पीठ के ऊपर बच्चा बांधे एक घोड़सवार स्त्री की कीड़े लगी हुरी मूर्ति खडी थी। घोडे की अगली उठी हुई टापों पर बैठे तीन कौवे डर नही रहे थे, नीचे की ओर घूरते हुए कांव-कांव कर रहे थे। नीचे जहा चार-पाच बच्चो की कतार पीली बंदनवार बांधने के लिए नाली के किनारे उकड़ू बैठी थी और उनसे जरा परे हट कर बुग्गड तमोली का छोटा भाई छेदी भी उसी बहती नाली के दोनों ओर पैर फैलाए अधखडा होकर पखाना कर रहा था और नाली में बहते अपने पाखाने को हाथ से पकडने की कोशिश भी कर रहा था।

पन्नालाल ने छेदी को ध्यान से देखा फिर बुल्लो से बोला—यह जो आत्मा है न, वह अमर है। इसीलिए मनुष्य को बार-बार मरना और बार-बार जन्म लेना पडता है !

तभी तीन-साढे तीन बरस की एक लडकी फ्राक को अपने पेट पर मुट्ठी में पकडे ज़ोर से चिल्लाकर रोती हुई अपने घर के अन्दर भाग गई।

मन्दिर के ऊपर लगे चौमुहे लाउडस्पीकर के अन्दर से संकीर्तन अखंड गरज रहा था—मन भज ले, मन भज ले राधा का प्यारा नाम है हरी का प्यारा नाम है !—फिर कर्कश बासुरी। पिछले तीन-चार महीनो से—पूरे एक वर्ष तक वह अखंड भजन-संकीर्तन होने को था। मन्दिर के आगे लगे बड़े से साइनबोर्ड पर यही संदेश प्यारे भाइयों और बहनों के लिए लिखा हुआ था।

एक सफेद बिल्ली—ध बहिन की लौंड़ी !—बुल्लो ज़ोर से चिल्लाया लेकिन बिल्ली ससुरी फुर्र से रास्ता काट ही तो गई। लो, यह दूसरा अपशकुन हुआ ! अब आज भी टट्टी खुलासा न होगी। बुल्लो एक बार ठिठका, फिर आगे बढ़ गया।

चबूतरे पर एक अपरिचित नौजवान हज्जाम से दाढी बनवा रहा था। उसने काकदृष्टि बना कर बुल्लो को देखा तो दोनों की आंखें चार हुईं। मुहल्ले के तमाम लड़के बड़े-बडे हो गए, जिन्हे बुल्लो पहचान नही पाता था।

अनारो साइकिल वाले की दूकान के बगल में एक ही बेन्च पर तड़ीवाले तिवाड़ी, धन्नूगुरू और एक मोटा नौजवान सटे हुए बैठे थे। उनके बगल में एक-

दम पास खड़ी होकर एक मरियल-सी गाय उन तीनों को एकटक देख रही थी। गाय ने पूंछ अपनी पीठ पर पटकी तो उन तीनों ने एक साथ खड़े होकर गाय को दुत्कार दिया। उसके चूतड़ों और पूछ पर चमकता हुआ पतला गोबर लिपटा हुआ था।

बुल्लो ने तडीवाले तिवाड़ी को देखकर बत्तीसी निकालते हुए पूछा—क्यों तिवाड़ी, होती है ?

—आप कब आए ?—धन्नू ने बुल्लो को तड़ीवालेतिवाड़ी की ओर से मानों उत्तर दिया।

—परसो रात।

तभी मोटा नौजवान ईसाइयों की तरह दोनों हाथ जोड़कर बुल्लो के सामने आ खड़ा हुआ—पहचाना आपने ?

बुल्लो ने दिमाग पर काफी जोर डाला लेकिन उसे याद न आया तो उसने दाहिने-बाएं सिर हिला दिया।

—मैं हूं द्वारा बाबू का बेटा सत्यप्रसाद।

—अरे! तुम इतने बडे हो गए!—बुल्लो को अब याद आ गया, यही लड़का था, पाच-छह साल का रहा होगा, बुल्लो ने अपने कमरे से निकलते देखा तो पुकारा लेकिन वह तेजी से भाग गया। बुल्लो ने अपने कुर्ते के जेब देखे, जेब मे रखा पाँच का नोट साफ था।

—बहुत दिन बाद आए !—तडीवालेतिवाड़ी बोला।

बुल्लो ने उससे हूँ कह कर धन्नू से पूछा—क्या कर रहे हो आजकल ? पहले तो तुम आसाम में थे न ?

—धन्नू भैया वहाँ सुपाड़ी का रोजगार करते थे।—कह कर सत्यप्रसाद जोर से हँसा। तड़ीवालेतिवाड़ी भी हँसने लगा—बंगला देश बन जाने से सब मामला गडबड हो गया।

पन्नालाल ने सत्यप्रसाद को गम्भीरता से एक बार देखा।

—अगली बार आप कलकत्ता आइऐ,—सत्यप्रसाद ने बुल्लो से कहा—तो वहाँ से मेरे लिए एक तानपूरा ला दीजिए। मुझे म्यूजिक का बहुत शौक है। यहाँ पर अच्छा नही मिलता।

—दोपहर को तो आप घर पर ही रहिएगा न ?—धन्नूगुरु बोला—आप से दो मिनट जरूरी बात करनी है।

अच्छा हुआ कि पन्नालाल तड़ीवालेतिवाड़ी से बतियाने लगा। बुल्लो उससे अपना पीछा छुड़ाना ही चाहता था।

सार्वजनिक नल के नीचे एक आदमी जल्दी-जल्दी स्नान कर रहा था। नल के आगे खाली बर्तन लिए हुए एक पुरुष तथा पतली चुटिया किए जांघिया-कुर्ता

पहने दस-बारह बरस की एक लड़की खाली बाल्टी लटकाए खड़ी थे।

—जल्दी करो ! कितनी देर में नहाओगे। बम्बा चला जाएगा तो ?

वृंदावन की कुंजगलिन में सब को नाच-नचाए-सब को नाच नचाए रे ?

लड़की निराश हो चली गई। दोनों में पहले गाली-गलौज फिर हाथ और खाली बर्तन से मारपीट हो गयी।

बगल में बिजली के खंबे के ऊपर तारों में उलझी एक सफेद पतंग पेन्डुलम की तरह धीरे-धीरे हिल रही थी।

बुल्लो ने देखा, सरस्वतीसदन पुस्तकालय खुल गया था। क्या सुबह से चांव-चांव लगाए हैं, उसने सोचा और लाइब्रेरी में जाकर ताजा अखबार पढ़ने के इरादे से उधर घूमा ही था कि घंटी घनघनाता हुआ एक रिक्शा जरा सा बच गया, नहीं तो साले ने टक्कर मार ही दी थी !

वह लाइब्रेरी नहीं गया।

जमात वाली संकरी गली के बीचो-बीच वही मरियल गाय खड़ी हुई थी। गली काफी लम्बी थी। गली के मुहाने पर खड़े होकर बुल्लो ने बहुत बार हट्-हट् किया लेकिन गाय अपनी जगह से टस से मस न हुई। वह वहीं खड़ा हो गया।

—क्यों बुल्लो, सुबह-सुबह यह मंगलकलश लिए किधर चले ?

—जरा जगदीश के यहाँ जा रहे हैं, उनके यहाँ फलश संडास है, टट्टी खुलासा होती है।

—तो लोटे में गंगाजल तो भरे नहीं होंगे, कि आबदस्त भी गंगाजल ही से लेते हो ? जगदीश के यहाँ नल नहीं है क्या ?

यार बुचुन दिल्लगी न करो !—बुल्लो ने कहा तो उसके सारे सफेद-सफेद दांत दिखलायी दे गए। उसकी छाती तक के बाल सफेद हो गए, कंधो पर झुरियां आ गयीं मगर नहा-धो कर माथे पर अंगूठे बराबर मोटा रामफटाका चंदन लगा लेता तो एकदम गोसांई जी की तरह लगने लगता।

बुचुन अपनी शाही पोशाक अर्थात् पतला लाल अंगोछा कमर में बांधे घर के छज्जे पर खड़ा-खड़ा बुल्लो को चुपचाप देखता रहा। अंगौछे में से बुचुन का माल असबाब झलक रहा था, माल कम असबाब ज्यादा !

दोनों हमउम्र बचपन के संगी थे। बुल्लो के अच्छे दिनों में बुचुन ने बालटियों तो बुल्लो की भांग-ठंडाई गटकी होगी, पसेरियों पिस्ते बादाम की बर्फियां उड़ायी होंगी और सैकड़ों बार बुल्लो की नाव पर यमुना में सैर सपाटा मारा होगा !

—आओ, चार बीड़ा पान खाते जाओ !—बुचुन बोला।

—अभी जरा जल्दी में हैं।—बुल्लो ने उत्तर दिया। गाय धीरे-धीरे रेंगने लगी थी, वह भी उसके पीछे-पीछे रेंगने लगा।

मंगलकलश लिए किधर चलें ! अपने मन में दुहरा कर बुल्लो मुस्कराया।

हवा का झोंका लगा तो बुल्लो ने धोती का खुला हुआ सिरा कान और सिर के ऊपर से ले जा कर गर्दन मे लपेट लिया।

इन्ही गलियों-रास्तों से होकर वह कम-से-कम पचीस-पचास हजार वार तो आया-गया होगा क्योकि वह यहीं पैदा हुआ था और इन्ही गलियों में खेल कर बड़ा हुआ था। दाहिनी तरफ मुडने वाली गली मे वह नही गया। सीधे सामने की ढालदार संकरी अंधेरी गली मे घुस गया। वह इतनी पतली थी कि दो मनुष्य मुश्किल से एक ही समय उसके आर-पार जा सकते थे और अंधेरी इतनी कि केवल दोपहर को दस-पंद्रह ही मिनट को धूप आ कर उसके पत्थर के चौको पर पड पाती थी। बुल्लो को याद था कि गली के बीचो बीच बहने वाली नाली पर रखे पत्थरो मे से एक पत्थर ढीला है, उसके वचपन के दिनो मे भी ऐसा ही था और पैर रखने पर खट् से बोल उठता था।

बुल्लो के जितने भी पुराने इष्ट-मित्र थे उनमें से अधिकतर या तो मर-मरा गए, या जो थोड़े से जीवित बच रहे हैं वे भी घरों के भीतर बिस्तरों पर पड़े खांस-कराह रहे हैं। बुचुन अब भी साठा पर पाठा था। कालिंदी भी था लेकिन उसने खाहमखाह अपनी फोटोग्राफी की दूकान ही बंद कर दी। रामप्रकाश और रामगोपाल उसके बचपन के लंगोटिया यार। केवल रामप्रकाश है, वह भी अपने लड़के के पास नखलऊ मे। वकालत मे जितना कमाया सब शराब-कबाब-रंडी-बाजी में उडा दिया। धड़ के नीचे लकवा मार गया। यही रामप्रकाश साथ में स्कूल से लौटता और बुल्लो के घर में घुसकर—अम्मा, कुछ है खाने को?—बासी चीमड़ पराठा और लौकी की चना पड़ी बासी सब्जी मुंह बोर-बोर कर खाता था। एडवोकेट हो गया, बगले की रिहायश हो गयी तो बिना दातुन कुल्ला किए, मुंह के कोने से लार बहाते, बेड-टी पीने लगा! पडा होगा अब टट्टी-पेशाब मे, निरघिन भोगते! भगवान बहुत लम्बी उम्र किसी को न दें। कहते हैं कि सजा-एमौत मबसे बड़ी सजा है लेकिन लम्बी अवर्दा भोगनी पड जाए तो उससे बड़ा नरक दूसरा नही। छोटी बुआ को ही देख लो, बरसो से पड़ी है लकवे में!

पुराने सब छितर-बितर हो गए लेकिन बुल्लो का चेहरा पहचान लेने वाले निकल ही आते हैं। रामगोपाल का बेटा जगदीश जब भी कलकत्ता आता बुल्लो को खोज कर मिलता। इतना नम्र की दिखने से पहले ही हाथ जोड़ कर सामने खड़ा हो जाता—नमस्कार ताऊ जी! मुहल्ले के बाहर उसने अपना नया मकान बनवाया है। अपने सगे बेटों से तो खैर अच्छा ही है! लक्ष्मण ने तो शहर ही छोड़ दिया बुल्लो को जानकी ने बताया कि लक्ष्मण आजकल दिल्ली मे है, ओखला के पास कोई काटेज इंडस्ट्री खडी कर रहा है। मिलता था तो बाबू कह कर हाथ तो जोड़ देता लेकिन अपनी आखें चुधिया कर ऐसा एकटक बुल्लो को घूरने

लगता कि बुल्लो ही अपनी नजर फेर लेता।

दस-पन्द्रह कदम पर उसका बिका हुआ पुराना पुश्तैनी मकान था। मकान के कोने पर टिन की चादर का गोल कूड़ेदान। खुद बुल्लो का साहस उस मकान के नीचे से हो कर जाने का न होता। पिछले दो दिनों से वह जगदीश के यहां सुबह-शाम आता था लेकिन सिर झुकाए हुए दूसरी-दूसरी गलियों से हो कर। वह मकान उसने खुद अपने हाथो से बेचा था। अब भी उसका मन कसकता है, आखिरी मकान था, वह भी बुल्लो तुमने बेच डाला!

न सही बुल्लो लेकिन उसके बाप-दादा तो रईस थे ही! आधा कटरा उसके पूर्वजो का था उसके अलावा बयालिस किता मकान थे और तीन दूकानें जो मामूली शामो को भी दीवाली की रात की तरह जगमग-जगमग करती रहती। रोकड उसके पिता खनन साह के जमाने तक गिनी नही, घर लायी जा कर तौली जाती थी। वह रुपया थैलियों मे नही छोटी-छोटी बोरियो में भर कर बाहर वाली बैठक के तहखाने मे डनवा दिया जाता था। खास मुनीम बुल्लो का बड़ा फूफा था, जो दोनों पैरो से लगड़ा था। बड़ी बुआ भी एक पैर से कजी थी और लंगड़ी बुआ पुकारी जाने पर भी बुरा न मानती थी। थैलियो मे रुपया भरते-भरते बड़े फुफा का दाहिना हाथ चांदी की करखी से पहुंचे तक परमानेन्ट काला हो गया था। देर रात तक बोरियों मे सिक्के डाले जाने की खनक सुनते-सुनते पडोसियो ने बुल्लो के पिता का नाम ही रख दिया खनन साह और उसका यही नाम जगत प्रसिद्ध हो गया।

गजब की ऐयाश तबीयत पायी थी खनन साह ने! वह अपनी बैठक में, आंगन में, सड़क चलते दूकान पर ठोढी ऊपर करके कहता—चार दिन कि जिंदगी, जो जिंदगी का मजा न ले वह साला परम चूतिया!—दूसरे कोठी वाले कोठो पर जाते तो खनन साह कोठेवालियों को बुलाता था ऐलानिया अपनी बैठक में और तिमहले के अपने सोने के कमरे में। अम्मा उस रात अपनी सास के पास सोती थी। बनारस-कलकत्ता-लखनऊ-रामपुर की न जाने कितनी तवायफों के मुजरे वह अपने यहा करा चुका था। उन सब के फोटो का अलबम उसके पास था और जब वह हल्की-फुल्की रौ में होता तो बारह-तेरह साल के बुल्लो को प्यार से अपने बगल में बैठा कर एक-एक फोटो पहचनवाता'''यह साली गौहरबा है!

माहौल के कारण रहा हो या नसों में दौड रहे खून ने जोर मारा हो, क्यों-कि सिंह के शावक को शिकार करना आज तक भला किसने सिखाया है, खनन साह के तिमहले से उतर कर एक अधेड़ स्त्री ने सुबह पांच बजे बडे दरवाजे की चिटखनी पर हाथ रखा ही था कि पन्द्रहवर्षीय बुल्लो ने अंधेरे में पीछे से आकर उस औरत की दोनो चिटखनिया पकड लीं और बोला—होलुआ दिए बिना ही!

घर में सोता पडा था इसलिए वह वही बुल्लो को धेलुआ चुका कर, खिसिर-खिसिर हंसती हुई दरवाजा खोल कर बाहर निकल गई। तब से बुल्लो आये दिन बद दरवाजे के भीतर धेलुआ मांगने लगा। देने वाली प्रसन्न रही तो धेलुआ दे देती, चिढ़ी रही तो गरिया कर परे धकेल देती।

लेकिन एक लाभ बुल्लो को अवश्य हुआ। अनजाने में ही उसे तबला-सारगी बजाना आ गया। केवल बजाना ही नही, जिन दिनो उसका रियाज चढ़ा हुआ था, अच्छे-अच्छे पेशेवर साजिन्दे तक तोबा बोल देते उसके आगे!

उन्ही दिनों बुल्लो अपने मित्रो रामगोपाल, कालिदी तथा दूसरे तीन-चार परिचित लडकों को ले कर कलकत्ता घूमने गया। पिता ने एक गुमाश्ता साथ कर दिया। सब खूब घूमे, जम कर मौज-पानी किया, मनमाना सामान खरीद दिया। लौटते समय गुमाश्ता रेल पर हिसाब तैयार करते-करते परेशान हो गया क्योंकि बारह सौ रुपये का मीजान मिले ही न!

—लिख क्यो नही देता बे, कि बारह सौ का इत्र-फुलेल! यह कहा था बुल्लो ने गुमश्ते से—लक्ष्मी भाग्य से आती है, भाग्यवान के पास रहती है और भाग्यहीन के पास से चली जाती है!

खनन साह के भाग्य की पूंजी भी लगता है चुक चली थी। जमीनतो सारी पहले ही उड़ गयी थी, मकान भी एक-एक करके खिसकने लगे तथा दूकान केवल एक बच रही थी लेकिन खनन साह की तनी हुई गर्दन में जरा भी खम न दिखलायी देता।

एक सुबह उसका पुराना इत्रफरोश आया। बैठक के झाड़-फानूस कब के उतर चुके थे। चंदोवे में एक कोने पर बड़ा-सा छेद हो गया था। इत्रफरोश चोर दृष्टि से इधर-उधर नजर फेर रहा था लेकिन अन्दर आ कर फंस चुका था, चुपचाप बैठक की ड्योढ़ी पर बैठ गया।

—क्योंजी, बहुत दिनों पर आये! कोई बढिया चीजें लाये हो?—खनन साह ने खनकती हुई आवाज में पूछा। वह झाड़ू लेकर दालान को रगड़-रगड़ कर धो रहा था।

—जी। इत्रफरोश ने चमड़ की काली पेटी में से एक शीशी निकलकर दोनों हाथों से खनन को पकड़ाते हुए बताया—मुश्क है सरकार लेकिन है जरा महगा।

खनन साह को जैसे सुनायी ही न दिया। हाथ की झाड़ू नीचे गिरा कर उसने मुश्क की शीशी ली और उसे चेहरे के बराबर लाया, गोया इत्र का रग परख रहा हो। फिर शीशी का ढक्कन खोला और बिना गंध लिए पास वाली बढिया की नांद के ऊपर शीशी उलट कर झटके दे-दे शीशी खाली कर दी।

— मैं कहता हूं कोई है जी—उसने खडी बोली में जोर से आवाज दी—बुल्लो!

बुल्लो बाहर आया तो खनन ने कहा—यह बदतमीज जो भी दाम मांगे अन्दर से लाकर दो और इसके चूतड़ पर लात मार कर बाहर कर दो ! ससुर कहता है कि जरा महंगा है ! अगर नकद न हो तो अपनी अम्मा के हाथ से बारह तोले वाला कड़ा उतरवा कर ले आओ।

खनन साह ने बुल्लो का विवाह किया तब उसके पास अपने उस एक पैतृक निवास के सिवा कुछ न रह गया था। आखिरी दूकान भी उसने बेच दी थी और उसी दूकान पर मुनीमी करने लगा था। दाढ़ी उसने रख ली थी। सफेद दाढ़ी, सफेद कलकतिया कुर्ता और सफेद लुंगी, जिसे वह मद्रासियों की तरह आधी उठा कर कमर में कैंची-खोस खोस लेता था। मगर तब भी खम न उसकी आवाज में आया और न कधे-कमर में !

बुल्लो का विवाह किया उसने रामगोपाल के कारण ! क्योंकि बुल्लो तथा रामगोपाल का चौबीसों घटे का साथ। बुल्लो को आवाज देने पर अंदर से जवाब मिलता—नाव पर सैर करने गए हैं।—किसके साथ !—रामगोपाल आए थे। —रामगोपाल के यहां चावल की खीर बनी है तो अघखाया कटोरा लिए चला आ रहा है रामगोपाल और निर्लज्जों की तरह अपने हाथ से खिला रहा है बुल्लो को ! यह क्या लौंडियापना है ! इससे अच्छी तो रंडीबाजी ! फिर लड़की भी अच्छे घर की मिल रही थी। कहा भी है कि कन्या लीजे घर देख के ! उसने सुभद्रा से बुल्लो का विवाह रचा दिया।

साल के भीतर बुल्लो का पहला लड़का पैदा हुआ। परन्तु खनन साह से लक्ष्मी सचमुच ही रूठ गयी थी ! बहू सौरगृह के बाहर नहीं निकल पायी, जहर फैल जाने के कारण सौरगृह से ही परलोक सिधार गयी।

मातमपुर्सी करने के लिए आए स्त्री-पुरुषों की भीड़ खनन साह के आगन तथा बाहर गली में भी समा नहीं पा रही थी। लोग बताते हैं कि लाश को कफन उढ़ाया जाने को हुआ तो बिलख-बिलख कर रोते हुए खनन साह ने बहू की लाश का पैर, हाथ, माथा और सिर चूमना शुरू कर दिया और धाड़ें मार कर उसके ऊपर भहरा पड़ा।

सुभद्रा की छोटी बहिन चंपा का विवाह दो ही महीने पहले हुआ था। सुभद्रा से छह साल छोटी थी वह। बड़ी बहिन के दुधमुहे बच्चे का पालन करने के लिए चंपा उसे अपने यहां ले गयी।

खनन साह को पुत्रवधू की अकाल मृत्यु से बहुत बड़ा सदमा पहुंचा। रह-रह लंबी उसास छोड़ता और बस इतना ही उसके मुंह से निकलता—रामा हो रामा!

हां, उसने अपने अकेले बेटे की अकेली संतान का नामकरण स्वयं किया था—रामानन्द।

हर दूसरी या तीसरी शाम वह कलकतिया कुर्ता-मद्रासी लुंगी की अपनी धज

में चंपा या चंपा के मायके के दरवाजे के सामने जाकर खड़ा हो जाता और बुलंदी से आवाज देता—रामा बे !

वह बार-बार कहता —सब-कुछ देखा कुछ भी बचा नही रहा। जाना बस, यह कि स्वर्ग-नरक सब यही है !

सुबह-सुबह वह घर की गाय की सानी चला रहा था, गाय बार-बार उसकी नंगी पीठ चाट लेती। झुंझला कर उसने उल्टा हाथ मार कर बछिया को परे कर दिया।

—देखती हो जी ?—उसने बुल्लो की अम्मा से कहा—ससुरी सुबह से रो रही है, मैंने तो बस जरा-सा हाथ जमाया था।

उसी रात की बात है, वह पेशाब करने के लिए आगन के कोने की नाली पर गया होगा। काई पर उसका पैर फिसल गया होगा। खटाक से सिर पत्थर के चौके पर टकराने के कारण वह गाफिल हो गया होगा। इसलिए किसी को पुकार न सका होगा। बहरहाल, अगली सुबह उसे वही नाली पर मरा हुआ पाया गया।

बुल्लो को सनाका मार गया। न किसी से बोलना, न कही बाहर जाना। बस, ठाकुरद्वारे में दिन-दिन भर पूजा-पाठ। बाहर जाता तो कह कर जाता था कि विंध्याचल जा रहा हूं। वहा अष्टभुजा के मदिर में दिन और रात पाठ करता या फिर सगीत। सानिरेरे गरे गप पम रेरे सप पस सगम पपनि धप धपम रेरे। सारी रात तबला ठनकाता रह जाता। नारि तो मर ही गयी थी, गृह-सपत्ति भी नष्ट हो चुकी थी, लोगों को भय हुआ कि कही बुल्लो सचमुच मूड मुडा कर हिमालय न चला जाए ! घर-बाहर सब ने बहुतेरा समझाया कि बुल्लो पुनर्विवाह कर ले मगर बुल्लो ने जो एक बार कहा कि मुझे विवाह नही करना तो सब सिर पटक कर रह गये, बुल्लो शादी के लिए राजी न हुआ। लड़का ननिहाल में पल ही रहा था—अच्छे कद-काठी की थी बुल्लो की साली चपा। पछांही गाय की-सी थी उसकी देह, कसी-चिकनी। और बुल्लो को रामगोपाल का साथ था। लोगबाग कानाफूसी तो करते ही थे, रामगोपाल को ले कर और साली को ले कर।

लेकिन लोगों की भ्रान्त धारणा के विपरीत, वह इधर-उधर छुछुवा नही रहा था। उसके एक साली थी चंपा, लम्बी, जवान घोडी जैसी चुस्त। धाकित् धाकिट् धाकिट् धा के सम की तरह बुल्लो ने साढ़ू-साली के संगम में सरस्वती की की तरह अपनी वह एक और संतान भी मिला देनी चाही मगर सम्मिलित दुर्भाग्य धाकिट् धा बुल्लो और साली चपा और केमिस्ट्री में एम एस सी सीताराम का कि ठीक बुल्लो की-सी संत मुस्कराहट दिखाने के लिए कृपालू के बाद चंदा के कोई लड़का-लडकी ही न पैदा हुआ !

किरकिट किट्-किट्—तब भी बड़ी बैरीटोन आवाज थी बुल्लो की ! हालांकि अब बाबू अर्थात बुल्लो के गले में कैंसर हो गया है—जानकी तो यही कहती है !

बुल्लो तीस-बत्तीस पार कर चुका था। दूसरों की छोड़, खुद बुल्लो के भी मन में आशा न रह गयी कि वह दोबारा गृहस्थी बसाएगा। पर होनी के आगे किसका वश चल सकता है। बुल्लो के छोटे फूफा मुरारीलाल ने बुल्लो का विवाह करा दिया। चट मगनी पट ब्याह ! दुबली-पतली लेकिन खूब ही तो गोरी बहू आयी मन्नो, उन्नीस साल की, बुल्लो के सिर से डेढ़ मूठी ऊंची।

पहले ही दिन अम्मा ने नयी बहू का घूंघट आगे खींच कर लम्बा करते हुए उसे शिक्षा प्रदान की—*देखो, अपना भला चाहना तो इस घर के मर्दों के बीच कभी न बोलना, समझ गयी न ?*—तो मन्नो ने घूंघट समेत सिर झुका कर हामी भरी। घर में मर्द तो केवल एक ही रह गया था, बुल्लो।

बुल्लो के पुराने दिन लौट आए। उसके चेहरे पर और घर के अन्दर रौनक आ गयी—यों ही नहीं कहा जाता कि बहू घर की लक्ष्मी होती है !

लेकिन विवाह को एक साल भी पूरा न हुआ था कि एक रोज जैसे कि भारी भूचाल आ गया ! बुल्लो के तमाम नए-पुराने यार-दोस्त दोपहर-शाम से बुल्लो के कमरे में जमा थे और हुड़ाकुडी मचाए थे। पान की मांग होने पर मन्नो पान लगा कर ऊपर ले जाती, शरबत-लस्सी की फरमायश होने पर वह दौड़ी-दौड़ी सीढ़ियां चढ़ती हुई शर्बत-लस्सी पहुंचाती। रात को वह तीन थालियां लगवा कर ऊपर ले गयी। अम्मा रात को शयन आरती करके चतुर्भुज ठाकुर को लिटा कर, दूसरे सिंहासन में बैठे छोटे-बड़े नर्मदेश्वरों पर ओढ़ावन डाल कर स्वयं भी सोने चली गयीं।

रात को बारह-साढ़े बारह बजे दरवाजा जोर-जोर से पीटे जाने की आवाज से अम्मा की नींद टूटी तो उसने पहचाना कि वह दरवाजा किसी पड़ोसी के घर का नहीं, खुद उसी के घर के अंदर तिमहले पर बुल्लो के कमरे का दरवाजा है। यह सोच कर कि बुल्लो को भाग चढ़ गयी होगी, वह दो मंजिल की सीढ़ियां धीरे धीरे चढ़ती हुई ऊपर पहुंची तो देखती क्या है कि बुल्लो और रामगोपाल, दोनों गालियां बकते जा रहे हैं और अंदर से बंद दरवाजे पर कंधे बदल-बदल कर टक्कर मार रहे हैं।

—बुल्लो ? यह सब क्या है ?—अम्मा ने घबरायी हुई आवाज में पूछा ही था कि उसने देखा रामगोपाल के माथे की बायीं ओर से काला-काला खून बह कर सारे गाल पर फैला हुआ है, रामगोपाल के कुर्ते पर भी स्याह छींटे पड़े हैं। वे दोनों तब भी बंद दरवाजे पर बहशियों की तरह धक्के मार रहे थे।

अम्मा ने किवाड़ों के बीच की फांक पर मुंह लगा कर पुकारा—नयी बहू ! नयी बहू ?

कुछ देर बाद उसे अंदर सिसकियों के बीच घुटती हुई सिर्फ इतनी सी बात सुनाई दी—मैं रामगोपाल को मारते-मारते मर जाऊंगी !

—इस हरामजादी का मरा मुंह नही देखूंगा मैं, अम्मा ! यह देखो इसने क्या किया है रामगोपाल को ! —क्रोध तथा अपमान से बुल्लो की घिग्गी बंध गयी।

बडी ठस्के वाली थी अम्मा, सुनहरे फ्रेम का गोल चश्मा लगाती थी और क्या ही खनकती हुई हंसी थी उसकी ! उसने अपने गले की सोने की सकडी उतार कर बुल्लो की ओर फेंकी तो सकड़ी बुल्लो के एक पैर की उंगलियो से पत्थर की तरह जा कर टकरायी— बुल्लो ! इसे बेच कर पतुरिया के कोठे पर जाओ और इस बहन की लौंड़ी का आज के बाद कभी मुंह भी न देखना !

मन्नो ने अंदर से दरवाजा न खोला, न खोला ! अगली सुबह भी उसने किवाड़ न खोले, सारे दिन। अगले पूरे दिन और उसके बाद वाले दिन भी। चार रात और तीन दिन बाद मन्नो का छोटा भाई यों ही बहिन का हाल पूछने चला आया तो उसे घरवालों ने बताया कि बहू तीन दिन से दरवाजा बंद करके कमरे मे बैठी है। छोटे भाई की आवाज अच्छी तरह पहचान लेने के बाद मन्नो ने किवाड खोला और भाई से कहा कि घर जा कर मेरे लिए मायके की चादर ले आओ। बस, इतना कह कर उसने द्वार फिर अंदर से बंद कर लिए।

छोटा भाई घर जाकर चादर ले आया। मायके की चादर ओढ़ कर मन्नो ससुराल की ड्योढी के बाहर निकल आयी। वह दिन और आज का दिन, उसने उस ड्योढ़ी के भीतर कदम नही रखे। ससुराल वालों की ओर से तमाम संबंधियों ने क्षमायाचना की, पैर तक छूने को तैयार हुए, कहा कि उन सब की गवाही और लिखा पढ़ी पर कि बहू को किसी प्रकार का कष्ट न होने पाएगा, लेकिन वह लौटने को राजी न हुई।

—अम्मा से मेरी पैंलगी कह देना।—वह बोली—उस घर मे कोई बहू सुखी नही रह सकती क्योंकि उस घर के मर्द बहुरिया और पतुरिया में फर्क नही जानते।

नौ माह बाद मन्नो को मायके में पुत्र-रत्न उत्पन्न हुआ। बूढे नाना ने नाम रखा लक्ष्मण। बुड्ढे के मन में बड़ी आस थी कि लड़की-दामाद में मेल हो जाएगा।

अम्मा मरी चित्रकोट में, अकेली। मन्नो के पिता ने दसवें तक रात का खाना समधियाने भिजवाया, मातमपुरसी करने गया लेकिन मन्नो मातमपुरसी करने न गयी। पहले छोटा भाई हैजे से मरा, डेढ़ साल बाद पिता कलप-कलप कर मरा, कि बुल्लो ने मेरी बेटी को न विधवा में रखा न सधवा में। मन्नो गोद में एक छोटी सन्तान लिए हुए फिर निराश्रित होग यी। सौतेले लडके रामा ने खुद आ कर उससे कहा—छोटी अम्मा, चलो चलकर तुम मेरे साथ रहो।

लेकिन मन्नो ने उसका सहारा भी न लिया—बच्चा, तुम जहां रहो सुख से रहो, बस। मुझे और कुछ नही चाहिए।

मन्नो बचपन से ही बड़ी दुलारी थी मुरारीलाल की, हमेशा उसकी गोद में

पढी रहती थी। बडी हो जाने पर भी मुरारीलाल उसे मन्ना बेटा-मन्ना बेटा ही कह कर पुकारता था। मुरारीलाल अच्छा खाता-पीता आदमी था। उसके परिवार में वैद्यकी होती आयी थी। मुरारीलाल के पिता नामी वैद्य थे, रजवाडो में उनकी बडी प्रतिष्ठा थी। परतु मुरारीलाल ने वैद्यकी नही पढी, पिता के नुस्खों के बल पर मरीजो का इलाज कर लेता था। सरल स्वभाव का मनुष्य था लेकिन जरा भक्की। कोई भी बात शुरू करने के पहले कहता था एक बात दो बात तीन बात। वह मुरारीलाल भी वृद्ध होकर मर गया, उसका बडा लडका हीरालाल आफिस जाने के लिए साइकिल घर से बाहर निकाल रहा था कि ड्योढी पर ही उसका हार्टफेल हो गया। छोटा बेटा पन्नालाल संस्कृत मे साहित्याचार्य बनने बनारस गया, वही पागल हो गया। गलियो में श्लोक पढ़ता हुआ घूमता रहता, उग्र हो जाता तो पागलखाने भेज दिया जाता। बड़े लड़के की विधवा बहू जानकी और उनकी दो छोटी-छोटी लडकिया थी।

पिता की मृत्यु के बाद मन्नो ने मुरारीलाल की पत्नी रानी बुआ से कहा—बुआ, अब मैं आखिर कहां जाऊ।

रानी बुआ ने घर किराए पर चढा दिया था लडकियों के एक स्कूल में दाई हो गयी थी, पैंतालीस रुपया वेतन तथा रहने को स्कूल के अहाते के अदर एक लम्बी कोठरी। विधवा बहू अपनी दोनों छोटी-छोटी लड़कियों को ले कर रीवा में अपनी बड़ी बहिन के साथ रह रही थी और सिलाई-कढ़ाई का काम सीख रही थी।

रानी बुआ ने मन्नो को अपने फटे आंचल के अदर ले लिया। दस साल के लक्ष्मण को ले कर मन्नो उसकी कोठरी में आ गयी।

हा, बुल्लो कभी-कदा आ जाता, हाल-चाल देखने-पूछने को। आखिर उसकी सगी बुआ थी! बुल्लो पहनता तो था मूगे का रेशमी कुर्ता ही लेकिन जेब में अधिकतर पान की खोगी के अलावा और कुछ न रहता। रामगोपाल वर्षों पहले कलकत्ता चला गया था, वहां उसका अच्छा व्यापार चल रहा था। जब भांग-बूटी तरी का माल बुल्लो के पास न रह गया तो बुचुन जैसे पुराने यार-दोस्त भी दूर छिटक गए।

इसके आगे-पीछे मुहल्ले में दो तीन ऐसी वारदातें हुई कि लोग हैरान के हैरान रह गए!

एक रात द्वारा बाबू का नौकर रबड़ी खरीद कर लौट रहा था, रात ग्यारह-साढे ग्यारह बजे की बात होगी, कि वह जो शिवाला है, उससे थोड़ा पहले पीपल का एक छतनारा पेड था। नल तो अब भी वही है लेकिन पीपल का पेड कट गया। तब वहा घर-दूकान कुछ नही था, म्युनिसिपैलिटी का लैंप तक नही। वही पर नौकर के कंधे पर किसी ने पीछे से आ कर हाथ रखा और धीरे से कहा—जो

लिए हो यही धर दो ! —नौकर तो इतना डर गया कि उसकी घिग्घी बंध गयी !

द्वारा बाबू ने सोचा कि नौकर झूठ बोल रहा है, रबड़ी खुद खा गया।

लेकिन एक रात तो गजब ही हो गया !

द्वारा बाबू दुकान बढा कर घर लौट रहा था कि लगभग वही ग्यारह-साढ़ ग्यारह के समय, उसी जगह और वैसे ही द्वारा बाबू के कंधे पर हल्की-सी थपकी पड़ी। द्वारा बाबू ठहरे ज्वान खत्री, खाया-पिया शरीर, उसने पलट कर टेंटुआ पकड़ लिया, टेंटुआ पकड़ तो लिया लेकिन खुद द्वारा बाबू के मुंह से हल्की-सी चीख निकल पड़ी, आश्चर्य की !

मुहल्ले की बात, थोडी-बहुत कानाफूसी के बाद लोग भूल गये।

उन दिनों बनारस मे रिक्शे सस्ते में बन जाते थे। बुल्लो ने रिक्शों का धंधा करने का निश्चय किया। पास में तो भूजी भांग तक न थी। छोटी बुआ के यहां जा कर मन्नो से बोला—देखो ऐसा है कि गहने तो तुम्हारे पास बेकार ही पड़े रहते हैं। मुझे दे दो तो मैं व्यापार में लगा दूगा, तुम्हें हर महीने उसका ब्याज—

मन्नो ने पूरी बात सुनी भी नही, भीतर कोठरी में जा कर गहने का छोटा डिब्बा ले आयी और उसे बुल्लो के हाथ में पकड़ाती हुई बोली—ब्याज मुझे नहीं चाहिये।

बुल्लो गया बनारस। चार रिक्शे खरीदे और उनका काफिला सड़क-सड़क ले कर लौटा। रिक्शे चलवाने का धंधा शुरू किया। मगर उसमें पचास झंझट। कभी रिक्शेवाला टूटी घंटी का बहाना कर रिक्शा वापस ले आता तो वह सामने खड़ा होकर मिस्त्री से घंटी बनवा रहा है तो कभी रिक्शे वाला गले में रिक्शा पहने उसका अगला मुडा हुआ पहिया आसमान में उठाये दोपहर को चला आ रहा है !

रिक्शे का धंधा ठीक से जमा भी न था कि बुल्लो को तपेदिक हो गयी। तीन रिक्शे तो बीमारी के पहले ही दौर में औने-पौने में बिक चुके थे। चंगे होने के बाद उसने आखिरी संपत्ति अपना पैत्रिक मकान बेचा और व्यापार करने के इरादे से कलकत्ते का टिकट कटाया।

कलकत्ता मे रामगोपाल ने सट्टे में काफी रकम बनायी थी। वह बरसों से कलकत्ता रहता आ रहा था लेकिन था वह अब भी यहीं का।

—बुल्लो गुरू ! यह बंगाले का कलकत्ता है कलकत्ता ! यहां भले-चंगे रहने का गुरमत्र बताता हू तुम्हे। एक तो रोज सवेरे एक मूठी भीगा चना खाओ और शरीर की घटा भर सरसो के तेल से मालिश करो बेनागे। दूसरे अपनी आंख के सामने का दुहा हुआ दूध पियो। दूध के मामले में अपने सगे बाप का भी विश्वास न करना क्योंकि हो सकता है कि वही साला उसमे पानी मिला दे !

कलकत्ते में साप्रदायिक दंगा हो गया। लोग शहर छोड़-छोड़ कर भागने

लगे। बड़तल्ला-बहूबजार-चितपुर रोड, सारा कलकत्ता भांय-भांय करने लगा। रामगोपाल और बुल्लो सुबह-सुबह अपनी-अपनी बाल्टी लिये ग्वाले के यहां पहुंच जाते तो ग्वाला बिना नापे-तौले उनकी बाल्टियां लबालब भर देता, वे जो भी दाम दे देते उसे बिना देखे अपने खीसे में डाल लेता।

बरसों न बुल्लो के बंधु-बांधवों ने उसकी खोज-खबर ली, न उसने अपने शहर वालों की। कलकत्ता जाने-आने वालों ने बताया कि बुल्लो का तो वहां बड़ा रंग है ! और जैसी कि हम लोगों की पुरातन आदत है, आदमी मे रुचि हो या न हो, उसकी बिल मे झांकते हुए आंखो से यह अवश्य सूंघते हैं कि भीतर मादा है कि नही ! ऐसे ही सूंघने वालो ने लौट कर यह प्रचारित किया कि चित्रा नाम की एक जवान बंगालिन बुल्लो के साथ रह रही है। इसके पीछे यह जानकारी भी बड़ी शीघ्रता के साथ प्रसारित हो गयी कि उस औरत का नाम भले ही चित्रा हो लेकिन है वह मुसलमानिन, और बुल्लो के साथ अकेली वही नहो, उसकी बूढी मां और छोटी बहिन भी रहती हैं। पुरानी मसल है, जिसके कोई न गोती उसके कूकुर गोती !

लगभग दो दहाई साल बाद जब बुल्लो भए प्रगट कृपाला दीनदयाला की भांति उसी शहर-मुहल्ले में अवतरित हुआ, मन्नो तब भी मुरारीलाल की विधवा रानी बुआ के साथ उसके घर मे रह रही थी, यद्यपि मुरारीलाल की बेवा को लकवा लग कर खाट तोडते दसवां साल चल रहा था। मुरारीलाल की बडी बहू जानकी उसी स्कूल में होमसायंस टीचर हो गयी थी, जिसमें उसकी सास बरसों दाई रही थी।

बुल्लो से किसी ने न तो मन्नो और लक्ष्मण की चर्चा की और न यह पूछा कि बुल्लो ने उस काली कलकत्ते वाली का क्या किया। किसी को याद ही न रह गयी होगी उसकी !

बुल्लो ने रानी बुआ के घर के अंदर आ कर अपनी बंधी हुई दरी दालान में पटकी और प्रेम भरे स्वर मे ज़ोर से पुकारा—जानकी ! मैं तुम्हारे ही घर आया हूं और मैं तुम्हारी ही रसोई में खाना खाऊंगा।

उसके स्वर मे दीनता नहीं थी, ग्लानि नही थी, अपराध कर चुकने की भावना नही थी। रही हो तो रही हो, उसके मन के अंदर।

रानी बुआ अंदर वाली दालान में पडी थी। उसने तकिये पर गर्दन घुमा कर देखा लेकिन कहा कुछ नही। जानकी ऊपर से उतर कर नीचे आयी, देखा, लेकिन कहा कुछ नही। मन्नो ने उसकी आवाज सुनी, पहचानी भी ज़रूर होगी, लेकिन वह बोली कुछ नही। लक्ष्मण घर मे नही था, बाद मे पता चला कि दिल्ली गया है। दोनों लड़कियां, सुषमा और दीपा, तो बुल्लो को शायद पहचानती भी न रही होंगी कि वह कौन है, उनका क्या लगता है।

बुल्लो जगदीश के यहां शौच से निवृत्त हो उन्ही पतली-संकरी गलियों से हो कर जमात वाली लम्बी गली से चौड़ी सडक पर निकला तो बीच मे सारा दृश्य बदल गया था। नल की हौद खाली थी और खुला हुआ नल बह रहा था। चबूतरे पर अपरिचित नौजवान तथा हज्जाम के जोड़े की जगह अकेला छेदी था लेटा हुआ। केवल बिजली के तारों में उलझी हुई वही पंतग अब भी वैसे ही झूल रही थी और अनारी की बेन्च पर दूसरे दो व्यक्ति बैठे थे।

दुकान के सामने बुचुन कमीज-पाजामा पहने, दोनों पायंचे क्लिपों से कसे हुए अनारी से अपनी साइकिल की मरम्मत करवा रहा था।

—जरा ठीक से दो बूंद तेल डाल दो चेन में यार अनारी!—बुचुन नकिया कर बोला।

चमकाते-चमकाते उसकी साइकिल के दोनों मडगार्ड तथा फ्रेम की कलई गायब हो चुकी थी, लोहा चमक रहा था।

—बुल्लो, दूध लेने गये थे क्या?—पीपल के नीचे वाले गंजे मातादीन टेलर-मास्टर ने गंभीर चेहरे से पूछा परंतु बुल्लो ने उत्तर नही दिया कि क्या जाने दिल्लगी कर रहा हो।

पुस्तकालय में एक व्यक्ति टेबुल पर फैले अखबार के ऊपर झुका हुआ था। बुल्लो ने खाली लोटा टेबुल के नीचे अपने पैर से छुआ कर रखा और बगल से झांक कर अखबार का वही पन्ना पढ़ने लगा।

सात व्यक्ति ट्रक से कुचल कर मरे: सात व्यक्ति, जिनमें दो बच्चे भी सम्मिलित हैं, कल रात जी० टी० रोड थाने के निकट फुटपाथ पर खाटें बिछा कर सोते हुए एक ट्रक से कुचले जा कर मारे गये। एक प्रत्यक्षदर्शी उस ट्रक का लाइसेन्स नम्बर पढ़ लेने में सफल रहा परन्तु ट्रक-चालक, जो शराब पिये हुए मालूम देता था, ट्रक को भगा ले जाने में सफल हो गया। पुलिस ने क्षतविक्षत शवों को अपने सिपुर्द कर लिया है और मामले की जांच कर रही है।

बुल्लो ने सोचा कि कहीं अच्छा सत्संग हो रहा हो तो वहां चल कर बैठें पर धार्मिक समाचार का कालम देखने पर भी मन पसन्द कार्यक्रम नजर न आय।

तभी अचानक एक आदमी दौड़ता हुआ आया और दनदनाता हुआ पुस्तकालय के हाल में घुस गया। कई चौंकी हुई निगाहें एक साथ उठी, वह व्यक्ति हाल के अन्दर भी उसी तरह दौड़ता हुआ लम्बी मेजों का चक्कर-दर-चक्कर लगाने लगा। हाल में पुस्तकें पढ रहे व्यक्तियों में से तीन ने अपनी जगह से उठ कर उस दौड़ते हुए आदमी को रोकना चाहा तो वह फुर्ती से उनके बीच से दुबक कर उन्हीं मेजों का उलटी ओर से चक्कर काटने लगा।

बाहर के कई लोग अखबार पढ़ना छोड़ कर अन्दर जुट आये। बुल्लो ने सोचा कि वह कही पन्नालाल तो नही! उसने टेबुल के नीचे से अपना लोटा

उठाया और हाल के दरवाजे पर खड़ा होकर देखने लगा। पन्नालाल नहीं, वह तो कोई अजनबी था।

तब तक उस आदमी को पकडने वाले दस-बारह लोग हो गये थे लेकिन उस आदमी मे बला की फुर्ती थी कि वह आतिशबाजी के छछूंदर की तरह यहां से वहां-वहां से यहां फुदक रहा था। उसके सारे तन पर पकडों के नाम पर महज एक सफेद लगोट था। बीस-पचीस व्यक्ति एक साथ दौड़े उसे पकड़ने के लिए तो वह टेबुल पर चढ़ कर दुलकी घोड़ी की तरह ठुमकता हुआ दूसरे-तीसरे टेबुलो पर चलता गया। लोग दो हिस्सो मे विभक्त हो दोनों ओर से उसे घेर कर पकड़ने के लिए आगे बढे। तीन-चार हाथों ने उसके बदन को छुआ ही होगा कि वह बिजली की-सी फुर्ती से टेबुल के अन्दर से हो कर दरवाजे के बाहर दौड़ता हुआ पुस्तकालय की सीढियों पर से नीचे सड़क पर दौड़ता ही चला गया, जब तक कि वह सब की विस्फारित निगाहों से ओझल न हो गया!

लोग हंस-हस कर आपस मे बतियाने लगे।

—साले, दुनिया भर के पागल छूटते हैं, छूटते सीधे यहीं चले आते हैं!—बुल्लो ने खुल कर बत्तीसी निपोरते हुए अपने से कहा और वही सीढियां उतरने लगा।

चेहरा



एक क्षण भर को तो उसका कलेजा धक रह गया !

फिर वह सोचने लगा कि टूटी हुई आरसी में मुह देखने से क्या सचमुच दुर्भाग्य आता है ?

सिकुडी-चुंधियाई आंखों से एकटक इधर ही घूरता हुआ वह चेहरा फैल कर बडा होने लगा, पानी की सतह पर हिलती हुई छाया-सा अस्पष्ट वही चेहरा जो उसकी आंखों के सामने अहर्निश आगे-पीछे डोलता रहता था। लोग भला उसका आदर क्यो करते हैं ? उसे बाबू पुकारना किसने सिखाया उसे ?

ननिहाल का वह किराये का मकान और उसकी वह अंधेरी कोठरी तक उसने नही देखी थी, जिस कोठरी मे वह पैदा हुआ था। अम्मा कभीकदा उस घर की चर्चा करती थी, अब नही बरसों पहले। कल्पनाओं की चिन्दियां जोड़-जोड कर उसने अपने जन्म स्थान का खाका तैयार किया था, कि वह मकान बाजार के बीचोंबीच था। नीचे इक्के-तांगे का अड्डा था। दोनो ओर पसारियो और गल्ले की दूकानों की कतारें थी। मिर्च-मसाले की धास से मुहल्ले भर के लोगो को दिन भर खांसियां और छीके आती रहती पडोस के वकील साहब ने नई-नई वकालत पास की थी और नई काली शेरवानी पहनकर कचहरी जाना शुरू ही किया था।

बाबू शाम को बाहर जाने से पहले अपनी पत्नी से मघई पान के बीडे बनवा कर पत्नी के हाथों से उन्हे चादी के पनडब्बे में भरवा कर घर की सीढ़ियां उतरता था, बुल्ने बनाये, रेम रेशमी कुर्ते में गमकता हुआ ! यह उसके जन्म से पहले की कहानी है, जिसे उसने अपनी अम्मा के मुह से सुना है।

वह सदा के लिए अनुपस्थित रहने वाला पिता उसके हृदय में एक मुंह बंद ज्वालामुखी की तरह हरदम धधकता रहता, जो उसे तथा उसकी अम्मा के रहने भर के ठिकाने उनके घर को बेच-खा कर, अम्मा के तन पर से छल्ला-छल्ला उतरवा कर और उन दोनों को यतीम-भिखमंगों की तरह सड़क के किनारे खड़ा कर के गुम हो गया था !

और वही यतीम औरत थी जिसने यह जान कर कि उसका पति कलकत्ता में फुटपाथ पर बेहोश पड़ा पाया गया है, दूर के रिश्ते के अपने एक भाई से रो-रो कर कहा था कि वह उसके पति को उसके पास ला दे। मामा अपनी परित्यक्त बहिन को सुहागिन ही देखना चाहता रहा होगा। वह, एक पति और पिता, कलकत्ता श्याम बाजार की एक गंधाती हुई धर्मशाला में बुखार से तपता, अपने ही खून में सना हुआ बेहोश पड़ा मिला था ! उसकी पुरानी तपेदिक फिर उभर आई थी।

स्टेशन से तांगे की पिछली सीट पर उसे लिटा कर और खुद नीचे पावदान पर बैठ कर पीठ से उसे रोके हुए मामा जब घर पहुंचे थे, तब की याद उसे अब भी है। घोड़े के गले में बंधे घुंघरुओं की आवाज अचानक थम गई। उसके पिता का गहरा सांवला चेहरा एकदम जर्द हो गया था और उसकी धंसी हुई गाफिल आंखों के नीचे अंगूठे जितनी मोटी काली पट्टियां चिपकी हुई थीं।

अम्मा ने सिर पर की धोती चुटकी से पकड़ कर जरा सा घूंघट कर लिया था।

उसे याद है खून से भरे मिट्टी के उस छोटे मड़ने की, जिसे अम्मा दोनों हाथों से ऊपर उठा कर संडास में फेंकने जाती थी, दिन मे कई-कई बार। सारे डाक्टरों ने जवाब दे दिया मगर उसका मुक्तमान पूरा नही हुआ था ! एक वैद्य की सिंदूरी रंग की दवा लग गई। वह मामूली दवा नही संजीवनी थी संजीवनी ! खून की उल्टी जो एक बार रुकी तो आज तक, वह कितनी भी खखार-खखार कर दातुन-कुल्ला क्यो न करे, कफ के साथ गुलाबी रंग का एक छींटा तक नही दिखलाई दिया !

सुबह-सुबह उठ कर अम्मा चिकने होरसे पर एक-एक बादाम घिसती थी, बीस बादाम। दूध मे दो चम्मच चक्खन के साथ औंटा कर देती थी उसे।

अम्मा को जब यह विश्वास हो गया कि उसका सुहाग लौट आया है, एक दिन अम्मा ने बारह वर्ष के लक्ष्मण को अलग ले जाकर अनुरोध किया कि वह अपना एक फोटो उतरवाना चाहती है किसी को भी बिना जताए, लक्ष्मण के साथ जाकर फुटपाथ पर के एक फोटोग्राफर से अम्मा ने सुहागिन वेश का अपना फोटो उतरवाया था—अम्मा का एकमात्र फोटो ! काले-सफेद संगमर्मर के चौकों की छत, महराबदार खंभों के पीछे बाग और दूर पर बहती नदी के सामने कुर्सी पर बैठ

कर, चूड़ियों से भरे दोनों हाथ घुटनों पर रख, चश्मा लगाए अम्मा का !

पिता ऊपर की दोछत्ती पर धूप की ओर सिर करके चारपाई पर लेटा-लेटा पैर के ऊपर पैर चढ़ा कर धीरे-धीरे हिलाते हुए चुपचाप पढ़ता रहता, रामायण महाभारत, गीता, भागवत। इनमें छपे रंगीन और सादे चित्र उसकी याद में अब तक एकदम ताजा हैं—जनमेजय का नाग-यज्ञ, पुरंजन-पुरंजनी, भवाटवी, नरसिंह अवतार !

वह लक्ष्मण से यदाकदा ही बोलता था। बातें भी करता तो उसे अपने से काफी दूर पर खड़े रहने को कह कर। चमकते हुए दांतों वाली उसकी हंसी की याद ही लक्ष्मण के लिए अपने गुमशुदा पिता की याद है !

एक दिन मामी ने कहा—आखिर कब तक कोई किसी का कर सकता है !

तो मामी और बाबू में कहासुनी हो गई। मामी ने हाथ की बाल्टी नल के नीचे भन्न से पटक कर रख दी।

—तो भई आखिर मैं कहा चला जाऊं ? क्या जा कर सड़क पर खड़ा हो जाऊं ?

जैसा कि लडाई-झगड़े मे होता है, मामी ने पिता को कहा, पिता ने मामी को सुनाया। उसने इन्हें निखट्टू-मरदूद कहा। इसने उसे गालियां दी ।

—इस घर के ऊपर तो पेसाब करने न आऊंगा मैं ! —उत्तेजना से बुल्लो का चेहरा लाल हो गया।

खुले दिन की धूप के शाम को गायब हो जाने की भांति वह उस शाम गायब हो गया।

लक्ष्मण को पता था कि कलकत्ता मे उसके पिता की एक बंगाली औरत है, वह उसके साथ वहां मौज-मजे कर रहा है। उस ने यह भी सुन रखा था कि उसने उस बगालिन से एक बच्चा भी पैदा कर रखा है, लक्ष्मण का दूसरा, या कि तीसरा, सौतेला भाई !

तब उसके कोमल किशोर हृदय पर कैसे एक आरे चला करते थे, कौन जान सकता है !

कोई भी शिशु क्यों न हो, बड़े हो जाने के बाद भी उस के चारों ओर पिता-चाचा-ताऊ-भाइयों-बहनों का एक घेरा होता है, जिसके अन्दर वह मानसिक रूप से सुरक्षित अनुभव करता है। मां की कोख से बाहर आने के बाद यही तो दूसरी कोख होती है, जिससे मनुष्य अपने को निपट अकेला तथा बेसहारा नही महसूस करता ! न सही, ऐसी यादें तो होती ही हैं जिन के सहारे मनुष्य एकदम एकाकी पड़ जाने पर भी एकांत में मुस्करा तो सकता है, क्या एक भी ऐसा मनुष्य है जिसके पास एक भी खुशनुमा याद न हो ? फिर बूढा हो जाने पर वह इसान किस बिना पर जीवित रह सकेगा !

लक्ष्मण चार-पांच वर्ष का रहा होगा, एक रोज बुल्लो घूमते-घामते चला आया आया, तो महीने-पंद्रह दिन रह गया।

लक्ष्मण को साथ ले कर वह रोज पैदल नदी स्नान को जाता। घाट पर लक्ष्मण को अपने सामने नगा खड़ा कर उसके सारे शरीर मे तेल की मालिश करता। उतरते अगहन के हल्के नीले आकाश और मटमैली नदी की सिकुड़ी हुई धारा की यादो के साथ-साथ उसे याद है अपने नथुनों की भीतरी दीवारों पर सरसो के तेल की चुनचुनाती हुई झार और मालिश करते हुए पिता की बड़ी-बड़ी हथेलियों की कसी पकड़ मे अपनी कमजोर-पतली जांघो तथा कलाइयों का दुखना।

बहुत बचपन मे उस ने बोरसी पर से गर्म दूध की पतीली अपने ऊपर गिरा ली थी तो वह दोनो जांघो के बीच में तथा बांई आंख के पास बुरी तरह जल गया था। घाव तो कभी का अच्छा हो गया लेकिन उसका बदनुमा दाग हमेशा के लिए रह गया।

उन जगहो पर मालिश करते हुए पिता उन स्थानों को उंगलियों के मुलायम स्पर्श से जैसे-कि सहलाया करता था।

जब उसे पानी मे कुछ-कुछ हाथ-पैर फेकना आ गया तो बुल्लो हर्ष विभोर होकर जोर से पुकार उठा—हां बे लच्छू! ऐसे ही चलाए जाओ, चलाए जाओ! सिर ऊपर मत उठाओ!

पिता ने अगली बार के अपने गृहागमन में लक्ष्मण को तैरना खूब अच्छी तरह से सिखा दिया।

बस, उसके पास इतना-सा ही उसका बाप था!

और तो तमाम दूसरी यादों के कोयले ही सुलगते रहते, राख की बारीक परत मे लिपटे, उसके मन के अन्दर!

सारे कष्ट एक अकेली निर्धनता ही के नही होते। मनुष्य एक अरसे के बाद गरीबी का—कैसी भी घोर गरीबी वह क्यो न हो—आदी हो सकता है, हो जाता है। बंद गले के काले कोट और खादी-भडार की एक बारीक खुरदुरी लोई से उसने पिछले सात-आठ वर्ष के जाड़े काट दिए मगर एक बार भी उसके मन मे यह इच्छा तक न हुई कि कोट के अन्दर यदि एक स्वेटर भी होती तो सर्दियो मे कितना सुख मिलता। उसने अपने जीवन मे जो पहला ऊनी वस्त्र पहना था, काही रंग का ओवरकोट, वह भी उसकी अम्मा ने सौतेले भाई रामा से पुराना कोट ले कर सिलवाया था। मन को लोना खाई ईंट की तरह भरभुरा बना देने वाली चीज निर्धनता नही दीनता है।

मन्नो तब चौदह वर्ष के लक्ष्मण को ले कर बूढ़ीनंबरएक रानी बुआ के साथ रहती थी बूढ़ीनंबरएक लड़कियो के स्कूल मे दाई थी और उसी स्कूल मे ग्राउन्ड

के दूसरी ओर ऊंची चारदीवारी से लगी हुई लम्बी कोठरी मे रहती थी। कोठरी के बांयीं ओर स्कूल के चपरासी श्याम्बिहारी की वैसीही लम्बी कोठरी थी और दूसरी ओर जरा हटकर स्कूल का पेशाबघर, जहा से हर दो-तीन मिनट के बाद अलग-अलग सुरकी अश्लील आवाज़ आ कर कानो मे पड़ती थी। श्याम्बिहारी रहा होगा 30-35 साल का, नाटा, गठे हुए बदन का। अपनी गृहस्थी वह गांव पर ही छोड़ आया था और उतनी बड़ी कोठरी मे अकेला रहता-बनाता-खाता था। न जाने कितनी बार उसे उसकी कोठरी मे, स्कूल की छत पर, छुट्टी के बाद पेशाबघर में रंगे हाथों पकडा गया रम्पतिया के साथ, जो स्कूल मे दूसरी दाई थी। रहती तो थी वह प्रिंसिपल मिस संध्या दास के घर पर, सोलह-सत्रह साल की भयकर काली, दुबली-पतली मगर बडी-सी कमर। उसमें मे न जाने कहां की गर्मी भरी हुई थी। कुतिया थी कुतिया! श्याम्बिहारी ने एक दिन लक्ष्मण से हंसते हुए कहा—लक्ष्मण बाबू, कभी छुट्टी के रोज दोपहर के समय हमारी कोठरी मे आओ! — तब से लक्ष्मण को उसकी शक्ल से भी नफरत हो गई!

उधर मैदान का निचला हिस्सा होने के कारण बरसात में वहां टखने भर पानी जमा हो जाता तो वे लोग बीच-बीच मे ईंटें रख कर उन पर पैर धरते हुए आते-जाते। स्कूल की लडकियो को पेशाबघर से निकल कर मैदान की ओर मुंह कर के बेशर्मी के साथ शलवार-जांघिए का नाड़ा बांधते, कुर्त्ता नीचे खीचते और उन्ही ईंटों को घूरते और फुदकते हुए वापस जाते वह कोठरी में अकेला बैठा-बैठा देखा करता।

अप्रैल-मई जून में टीन की छत वाली वह कोठरी आवे की तरह तपती रहती तेज लू ऊपर नीम के पत्तों के बीच बड़े झरने की तरह बहती और छत पर पटर-पटर निबौलियां गिराती, ओलों बौछार की तरह!

स्कूल की सीढ़ियो के पास वाले दूसरे नीम की डाल से रेल लाइन का एक लम्बा टुकड़ा तार से बंधा लटका था जिस पर एक छोटी हथौड़ी से बूढीनबरएक स्कूल के घण्टे बजाया करती थी और हर सुबह प्रार्थना के समय सब से ऊपर की सीढ़ीपर तन कर खड़ी हो वह नाटी चूतड़स्तनी प्रिंसिपल मिस संध्या दास लड़कियों से हे प्रभू आनन्ददाता गवाती।

उसी ने लक्ष्मण से कच्चा कोयला मगवाया था। वह साइकिल के पीछे कोयले की बोरी बाध कर कैंची पैंडिल मारता हुआ आ रहा था। बिजलीघर से आगे। जाड़े की शाम के नीले कुहरे में रेलवे यार्ड का धुआ, कालोनी के घरो के बाहर रखी भट्ठियों से उठते हुए धुंए मिल गए थे। दूर पर कही से एक इंजन की कमजोर-सी छु.छु: सुनाई दी, फिर माल का खाली डिब्बा गड़ाम से टकराया और गाडी की जजीर की आवाज एक कतार मे दूर तक बज गई।

मोड़ पर उसने साइकिल घुमायी तो हैंडिल जोर से कांपा, वह सम्हाल न

पाया और साइकिल को लिए-दिए उल्टी ओर भहरा गया। बोरिया गिरी तो उसकी सीवन खुल गयी, आधे से अधिक कोयला भरभरा कर सड़क पर फैल गया

साइकिल सड़क के किनारे खड़ी करके वह दोनों हाथों से कोयला बटोर कर जल्दी-जल्दी फिर बोरिया मे भर रहा था कि एक कड़कती मर्दाना आवाज सुनाई दी—पकड़ो साले को ! रेलवे का कोयला भर कर लिए जा रहा है !

धुएं मे घुटती हुई शाम की फीकी रोशनी मे यह ललकार, कोई भी क्यों न हो, उसे मखौलबाजी नही लग सकती !

बूढ़ीनंबर एक की कोठरी मे केवल एक दरवाजा था, जिसके ऊपर वाले आधे हिस्से मे काच-जड़े छोटे-छोटे चोखटे थे। सुबह की धूप उन कांचों के दूसरी ओर से इशारा कर के बाहर बुलाती, शाम होते होते वे अंधे चोखटे उसे उस लम्बी कोठरी के भीतर कैद कर देते।

इकलौती लालटेन या इन्सुलिन की शीशी की ढिबरी की रोगियल रोशनी में बूढ़ीनम्बरएक और बूढ़ीनम्बरदो आपस मे हंसी-ठिठोली करती, कभी भजन वार्ता करती तो कभी निस्पृह स्वर मे गंवारू गीत का डुएट गाती—

चदा-सुरुज ऐसी बहिनी संकल्यो रे, हाइ जरि-जरि भई है कोइलिया रे, कै मन कूटों मैया कै मन पीसों रे, भइया कै मन सिझवों रसोईया रे, सबका खिलावों मैया सब का पिलावों रे, मैया बचि जा थे पिछली टिकरिया रे, पहिरों मैं मैया सब का उतरवा रे भइया सरी-गली फटही लुगरिया रे, लोहवा जरै जइसे लोहरा दुकनिया रे, मोरी बहिनी जरै ससुररिया रे, ई दुख जिनि कहेओ माई के अगवा रे, माई छतिया बिहरि मरि जइहैं रे, ई दुख जिनि कहेओ बाबा के अगवा रे, सभवै बइठि बाबा रोइहैं रे, ई दुख कह्यो बम्हना के अगवा रे, भैया जिन मोरि लगन बिचारेओ रे···

बूढीनम्बरएक-बूढीनम्बरदो की आसुओं से घुटती रिरियाती आवाजों तथा हवा मे भटकते सेमल रुई के फूलो-सी पुरानी यादों और नयी कल्पनाओ के बीच चक्कर-दर-चक्कर काटते-काटते बीच मे न जाने कब उसे नींद आ जाती। अपने उस पिता अथवा अपनी अम्मा को, जिसे वह बूढ़ीनम्बरदो पुकारता था, अपना मान सकना या किसी तीसरे-चौथे-पांचवें व्यक्ति से प्रेम-प्यार करना तो दूर अक्सर वह यह सोचा करता कि मैं एक मनुष्य हूं या केवल एक कीड़ा-मकोड़ा, कुत्ता-बिल्ली !

जिसे बचपन मे भी रूखा-सूखा भरपेट खाना तक न मिल पाये घृणा वही नही करता !

बूढ़ीनम्बरदो किसी शादी-ब्याह मे गाने या ढोलक बजाने जाती तो वहां मिली मिठाई मिट्टी के सकोरे समेत अपने आंचल में नीचे छिपाकर घर लाती। लक्ष्मण को अलग ले जा कर बेसन या मोतीचूर का लड्डू उसके मुंह मे जबर

दस्ती ठूंस देती — खा कर पानी पी लेना।—तो लक्ष्मण का मन उसे उसके मुंह पर थूह से थूक देने का करता।

जिस संतान के माता-पिता अपनी औलाद को छोड देते हैं, अपने जीते हुए भी उसे बेसहारा और यतीम बना डालते हैं, दूसरों के फेंके हुए टुकड़ों पर पले ऐसे बच्चे न केवल उस मां और बाप से बल्कि सारी दुनिया से और स्वय अपने से भी घुघुआती हुई घृणा करते हैं, अपनी अन्तिम सास टूटने तक !

जिस दिन वह बूढ़ीनम्बरएक की कोठरी से अन्तिम बार बाहर निकला, उसे लगा कि उसने एक रोशन नरक के बाहर कदम रखा है। चौदह-सोलह वर्ष के एक किशोर को एक घर सदा के लिए छोडकर बाहर निकलते समय क्या ऐसा लगना चाहिए कि वह एक नरक से निजात पा रहा है ?

रामा जब-जब रायबरेली से आता, अपनी सौतेली माता से अवश्य मिलता। हर बार वह मन्नो से कहता कि चलकर वे उसके परिवार के साथ रहे। मन्नो उसे आशीष देती मगर उसके साथ जाना अस्वीकार कर देती। मन्नो ने पिछली बार रामा से कहा था कि यदि वह लक्ष्मण को अपने साथ रख ले तो लक्ष्मण पढ़-लिख लेगा। यहा या तो दिन भर घर की ड्योढ़ी पर खाली बैठा रहता है अथवा बाहर इधर-उधर बहिल्ला बना डोलता है। पहले ही दो-तीन बार उसका नाम स्कूल से कट चुका था, कभी महीनो फीस जमा न करायी जाने के कारण तो कभी बुल्लो के फरमान से कि लक्ष्मी तो व्यापार मे बसती है, पढ़ा-लिखा कर क्या सरकारी दफ्तर का बाबू बनाना है ?

लक्ष्मण ने अपने सौतेले भाई के परिवार को रायबरेली पहुंच कर पहले पहल देखा। वहां बच्चो की एक पल्टन खडी थी, ऊपर से नीचे तक पांच लडकिया ही लड़कियां, छठी संतान मीरा के फूले हुए पेट मे।

मीरा ने छत पर ही सामान वाली कोठरी में सारे संदूक वगैरह एक-पर-एक लाद कर बीच में अलगनी से पर्दा तान कर आधी कोठरी में लक्ष्मण के रहने-पढ़ने की व्यवस्था कर दी। नीचे तो दिन भर बच्चों की चिल्ल-पों मची रहती थी। फिर एक रोज दफ्तर जाते हुए रामा उसे साइकिल के पीछे बैठा कर ले गया और दसवें दर्जे में उसका नाम लिखवा दिया।

रामा को आफिस के पहले और बाद बाजार से छोटे-बडे सौदे लाने, छह लड़कियों को लाड़-प्यार करने, सुबह हर एक को नहलाने और बालो मे कंघी करने, गलत जगह पर रखे-बिखरे सामानो को करीने से करने से ही फुर्सत न मिलती थी। छठी कन्या का जन्म होने पर मीरा ने हार मान कर अपनी नहीं कटवा दी ! उसके शरीर के एक-न-एक हिस्से में दर्द माह के इकतीसों दिन बना रहता था— बड़ी मुश्किल से वह दो समय खाना बना देती, उसके अलावा अधिकतर समय वह अपनी खटिया पर लेटी रहती।

सप्ताह में एक या दो बार ऐसा अवश्य होता कि बच्चों के शोर-शराबे, धमक-चौकड़ी से झल्ला कर वह लड़कियों को धुन डालती। जब उसके सिर पर चुड़ैल सवार होती तो वह एक बच्ची से गलती होने पर गोद की लड़की से लेकर छहों बेटियों को ढूढ-ढूढ़ कर पकड़ती और सबको पाथ कर रख देती! सबसे ज्यादा बार पिटती थी सबसे बड़ी लड़की बेबी। मीरा बेबी के सिर के बाल रस्से की तरह दोनों मुट्ठियों में कस कर पकड़ लेती और उसे जो लातों से घुमा-घुमा कर मारना शुरू करती तो फिर उसे खुद के कपड़े-लत्ते, तन-बदन का भी होश न रह जाता। उस समय मीरा का चौड़ा-चकला चेहरा अविचल रूप से शान्त दिखलाई देने लगता, जैसे कि वह बेबी को बेरहमी से मार न रही हो, बल्कि क्रुशिया से कढ़ाई कर रही हो! बेबी की नाक, होंठ, कुहनी, घुटने कहीं से भी खून निकलने तक वह उसे अन्धाधुन्ध पीटती जाती। फिर उसे छोड़ कर स्वयं ज़ोर-ज़ोर से विलाप करने बैठ जाती। ऐसे अवसरों पर लक्ष्मण की मुस्कराहट एकदम बुझ जाती थी।

फिर भी लक्ष्मण को वहां अच्छा लग रहा था। कि वह एक परिवार के बीच रह रहा है। आज भी उसे उस मकान के सामने वाले चबूतरे की याद रह गयी है, जिसके ऊपर बरगद का एक बड़ा पेड़ था। एक-एक चीज़ याद है उसे। घर का आंगन। जाड़े की दोपहरों की मड़या की खाट। तपती गर्मी में उसी कमरे के सीमेन्ट का नंगा फर्श। आगे की छत तथा तीसरी मंजिल पर जाने वाली बिना बंहिया की पत्थर की सीढ़ियां। सबसे ऊपर की छत पर से दिखायी देने वाला चारों ओर के घरों का दृश्य।

सारे परिवार में सबसे अधिक अच्छी लगती थी उसे बारह-तेरह बरस की बेबी। मोटी नाटी और एकदम भोली।

—चाचा, चंदामामा सुनाओ।—बेबी लक्ष्मण की कोठरी में आ धमकती और कुर्सी के पीछे उसके ऊपर झूल जाती।

कभी वह दबे पैर आकर दोनों हथेलियों से उसकी आंखें मूद लेती फिर पूछती—बताओ मैं कौन हूं!

लक्ष्मण कोई हंसाने की बात कह देता तो वह लक्ष्मण की एक बांह से लिपट कर हंसती ही चली जाती!

एक रोज़ मीरा ने बेबी को लक्ष्मण से इस तरह लपट-झपट करते देख लिया। उस दिन उसने बेबी को कपड़ा धोने के डंडे से इतना मारा कि बेचारी के शरीर पर जहां-तहां दाग पड़ गये, लेकिन बेबी इस कदर सरल और भोली थी कि मीरा उसे जितना ही पीटती बेबी उतना ही अधिक लक्ष्मण से चिपकी रहती।

कभी यही मीरा थी जो बेबी से कहा करती थी—जाओ बेबी, चाचा के पास जाओ। देखो तो क्या कर रहे हैं।

—ए बेबी ! चाचा से कह दो तुम्हे भाभी बुला रही हैं। और तुम लोग नीचे आंगन में जाकर खेलो। और अगर किसी ने मुझे परेशान किया तो मैं आ कर एक-एक की खबर लूंगी।

बुलाये जाने पर लक्ष्मण को भइया की खाट से डर नहीं लगता था बल्कि कष्ट होता था भाभी के बालसफा लोशन के कारण ! उसने एक बार धीरे से एतराज किया तो मीरा जो खिलखिलाकर जोर से हंसी तो मीरा की सारी देह खाली डोंगी की तरह लहरें लेने लगी !

यह तो लक्ष्मण ने बाद में जाना कि बेबी भोली या मूर्ख नही, हर ऊपर से सीधी और मूर्ख दिखलाई पड़ने वाली औरत की तरह घाघ और धूर्त थी।

वह बीजगणित का एक कठिन सवाल हल करने मे डूबा हुआ था। उसने जाना ही नही कि बेबी कमरे मे आयी और कब दरवाजा बन्द करके चिटकनी ऊपर चढा दी ! उसने जब देखा तो सन्नाटे मे आ गया।

तभी बाहर से किसी ने दरवाज़े पर दस्तक दी।

लच्छू ? लच्छू ! दरवाजा तो खोलो। बेबी अन्दर है क्या ?—मीरा की महीन आवाज तनी हुई थी।

लक्ष्मण ने चिटखनी पर से बेबी का हाथ परे झटक कर चिटखनी नीचे कर दी।

दरवाजा खुलते ही मीरा झपटी बेबी पर और उसने बेबी को इस तरह पकडा जैसे बिल्ली चूहे को अपने पंजों में धर दबोचती है !

छत पर की नाली के पास रखे खाली लोटे पर मीरा की नज़र पड़ी तो उसने वही लोटा उठाकर उससे बेबी को मारना शुरू कर दिया। बेबी रो-रो कर बचाओ-बचाओ चिल्लाने लगी।

—मुझे सब पता है,—उसने जोर से चीखते हुए कहा—भइया की खाट का मतलब ! मैं भइया को सब बता दूंगी।

—बता देना, मुझे परवाह नही !—मीरा के लोटे वाले हाथ मे साड़ी का पल्ला उलझ गया। फिर भी वह बेबी को लोटे से कूटती ही गयी—मैं तुम्हें ज़िन्दा छोड़ूंगी तब न ! आज तो मैं तुम्हारा सिर कुचल कर रख दूंगी।

मीरा की हफनी छूटने लगी।

दो-तीन जगह बेबी के सिर और माथे पर वार पडा था। माथा दो जगह से फट गया और ढेर सारा खून बहने लगा। वह बेचारी जिबह होते जानवर की तरह ज़मीन पर लोट-लोट कर चिल्लाने लगी।

अगल-बगल के घरों मे रहने वाले औरत-मर्द मुंडेरों के ऊपर से सिर निकाल कर झांकने लगे मगर मीरा को होश कहां !

—बचाओ चाचा, बचाओ ! यह मेरी अम्मा नही जल्लाद है, मुझे मार

डालेगी।

लक्ष्मण के मस्तिष्क में जैसे कि खून का फवारा छूटा ! उसने मीरा की साड़ी में पीछे कमर पर हाथ डाल कर उसे घसीट लिया—हरामजादी, ऐसे एक रहपट दूगा तो सारी गर्मी बाहर निकल आयेगी !

उत्तेजना से लक्ष्मण की सास भी धौंकनी की तरह चल रही थी।

—बेबी की गोद भरने का इरादा है क्या ?—छत पर बिछी हुई मीरा ने एक लात लक्ष्मण के ऐसे कुठांव मारा कि पल भर के लिए तो लक्ष्मण की आंखों के सामने अंधेरे मे तितलिया उड़ने लगी।

—हा ! ऐसे बेबी को अपनी ब्याहता बना कर न दिखा दिया तो ऐसे मैं अपने असली बाप का नही !

मीरा ने पास मे पड़ी लोहे की अधभरी बाल्टी घुमा कर लक्ष्मण के सिर पर दे मारी।

—तुम सब लोग ऐसे चाहे मुझे जान से मार डालो लेकिन ऐसे बेबी को अपनी औरत बना कर न दिखा दिया तो ऐसे तुम कहना !

लक्ष्मण दौड़ कर एक सांस में ऊपर की सीढ़ियां चढ़ गया और छत से बाहर गली की ओर दोनों पैर लटका कर वहीं से बोला—ऐसे कोई हरामी की औलाद मना कर के देख ले। मैं यहीं ऐसे कूद कर अपनी जान दे दूंगा।

—तुम नीचे उतर कर तो आओ, देखो, फिर मैं जूते से तुम्हारी पूजा करती हूं कि नही !

लेकिन मन ही मन वह औरत डर गयी।

मीरा ने गलत नही समझा था। लक्ष्मण को बेबी प्यारी नही बेचारी लगती थी। वह सच्चे मन से चाहता था, बेबी को सदा के लिए अपना कर उसे सुखी बनाना। बेबी उसकी भतीजी हुई तो क्या ! जब एक मुसलमान अपनी सगी भतीजी से शादी रच सकता है तो एक हिन्दू भी ऐसा क्यों नही कर सकता ! क्या मुसलमान जानवर होता है, या कीड़ा-मकोड़ा ? तो फिर उस बुड्ढे को क्या कहा जायेगा, जिसने अम्मा की कोख से औलाद पैदा करने के बाद उस औलाद को सयानी बया की तरह दूसरों के घोंसलों मे पलने के लिए रख दिया !

आसपास की छतों पर जमा तमाशबीनों की भीड़ घंटे-डेढ़ घंटे के स्टेलमेट से ऊब कर धीरे-धीरे छट गयी। केवल लक्ष्मण मुंडेर के ऊपर और मीरा छत के ऊपर दो योद्धाओं की तरह डटे रहे। फिर मीरा उठी, सीढ़ी का चौखट पार करके सीढ़ी का दरवाजा भड़ से बन्द किया और नीचे चली गयी। बेबी में तो रो सकने की ताकत भी शेष नही थी।

चार के करीब लू थम गयी, गर्मी भी कम हो चली। आकाश में दो-चार

पतंगें उड़ती नजर आने लगीं।

—खो लो!—नीचे गली में रामा की थकी हुई पुकार ऊपर सुनायी दी मगर किसी ने उत्तर न दिया। सदर दरवाजे की सांकल बोली। फिर रामा, मीरा, बेबी, किसी बच्चे तक के बोलने का स्वर नहीं उठा। छोटी, हमेशा रोने-रिरियाने वाली लड़कियों तक को मानों कहीं अन्यत्र भेज दिया गया हो!

शाम होने पर घर भर की रोशनियां जला दी गयी लेकिन सारे घर में अटूट सन्नाटा छाया हुआ था, जैसे कि घर के सब लोग ताला डाल कर शहर से चले गये हों। छत पर हवा हिलने का नाम तक नहीं ले रही थी, उमस बहुत बढ़ गयी थी। लक्ष्मण उस सारी रात वहीं मुंडेर पर करवट बदल-बदल कर बैठा, तेज चिलचिलाती धूप गर्म लू मे अगले पूरे दिन वह वहां से नहीं हिला, बिना दाना-पानी! अगले सारे रोज भी! आकाश, धरती, मकानात सब उसे हल्दी-पुते से नजर आ रहे थे।

शाम के समय अचानक लक्ष्मण को घर के अन्दर आवाज सुनायी दी अपनी अम्मा की तो वह चौंक गया!

—लच्छू!—मन्नो नीचे की छत पर खड़ी हो कर दम लेने लगी—लच्छू लाल यह सब क्या है?

—अम्मा, अगर किसी ने ऐसे सीढ़ी पर एक कदम भी रखा तो मैं ऐसे यहां से छलांग लगा लूगा, तुम ऐसे अच्छी तरह समझ लो!—लक्ष्मण वास्तव में कूद पड़ने के लिए दोनों हथेलियों के बल आगे की ओर झुका।

लच्छूलाल! लच्छूलाल!—धीरे-धीरे रटती हुई बूढ़ी मन्नो कमर झुका कर ऊपर सीढ़ियां जल्दी-जल्दी चढ़ने लगी।

वह छोटे-छोटे तेज कदमों से लक्ष्मण के पास पहुंची तो लक्ष्मण ने झिल-मिलाते हुए आसुओं के पार मन्नो का चेहरा दो-ढाई वर्ष बाद देखा। उसके चेहरे पर कितनी ज्यादा नई झुर्रियां पड़ गई थी और उसकी ठोड़ी तब से अब कितनी नुकीली हो गई थी।

—लच्छूलाल! लच्छूलाल! यह सब क्या है?—मन्नो ने दोबारा पूछा।

—यह लच्छूलाल नहीं है अम्मा, लत्तूलाल है! लात खायेगा तभी समझ में आयेगा!—मीरा तमक कर बोली—हमारी लड़की को बिगाड़ कर रख देगा तो हम किस नदी-पोखरे मे डूब कर जान देंगे!

—अरे रंडी, यही मैं भी ऐसे चालू हो जाऊं क्या? एक ही बात ऐसे हो। समझी!

—नहीं, तू कूद नीचे भोंसड़ी के, कूद! असल बाप की औलाद हो तो कूद!—मीरा गदी-से-गदी मर्दानी गालियां बकने लगी।

मन्नो के चेहरे पर विकार का चिह्न तक न आया। वह वैसे ही

किए मीरा तथा लक्ष्मण को बारी-बारी से हाथ जोड़ने लगी।

उसके चौथे दिन लक्ष्मण का इंटर का पहला पर्चा था। हाईस्कूल मे उसे फर्स्ट डिविजन मिला था। इस दिमाग से वह परीक्षा तो खाक दे पाता, देता भी तो प्रथम श्रेणी तो मिलने से रही! उसने रामा के आगे गिड़गिड़ा कर कहा कि वह उसे एक वर्ष ड्राप कर लेने दे मगर रामा ने स्वीकार न किया।

तेरह मई को पहला परचा था। लक्ष्मण साढ़े छह बजे घर से निकलने लगा तो सदर दरवाजे के पास मन्नो ने उसके हाथ में एक बंद शीशी में सौफ-शंखपुष्पी की ठंडाई पकडाई—खूब मन लगा कर अच्छा परचा करना लच्छू-लाल!

मन्नो की आवाज भीग गई!

साढे छह बजे निकला है लक्ष्मण घर से और सात भी नही बजे थे कि वह बदहवासी की हालत में वापस घर में घुसा, चीखते-चिल्लाते हुए कि सत्यानाश हो गया अम्मा! मैं तो कही का न रहा।

मीरा और मन्नो रसोईघर में थी। खून से सनी लक्ष्मण की दाहिनी हथेली देख कर दोनो सन्न रह गईं।

लक्ष्मण की लम्बी दास्तान का सार यह था कि कालेज के फाटक पर छुरे इत्यादि-इत्यादि से लैस उसके दुश्मन तीन गुंडे लडकों ने उस पर हमला करके उसका दाहिना हाथ इस कदर घायल कर दिया कि वह परीक्षा में बैठने काबिल न रहे और परीक्षा में उन छात्रों से अधिक अंक न मार ले जाए।

रामा आफिस नही चला गया था अतः वह लक्ष्मण को साथ ले कर एटीएस लगवाने अस्पताल ले गया।

डाक्टर ने हाल सुना, घाव देखा फिर लक्ष्मण का चेहरा घूर कर देखते हुए कहा कि एटीएस लगाने की जरूरत नही, टिंचर आयोडीन चाहें तो लगा दूं।

आयोडीन लगा कर डाक्टर ने लक्ष्मण से तो घर वापस जाने को कह दिया, रामा को रोक लिया।

लक्ष्मण परीक्षा मे नहीं बैठ पाया।

उसने रामा से फिर हाथ जोडकर गिड़गिडा कर चिरौरी की कि वह उसे सिर्फ एक और साल पढा दे मगर रामा ने जवाब दिया मन्नो को—इटर बोर्ड का इम्तहान तो लच्छू किसी भी दूसरे सेन्टर से प्राइवेट दे सकता है अम्मा!

लक्ष्मण उत्तेजित हो गया—साफ-साफ क्यों नही कहते हो कि ऐसे एक साल की मेरी फीस नही भरना चाहते, तुम और खुले फाटक ऐसी तुम्हारी औरत! ऐसे फिर नाटक-बाटक करने की ऐसे क्या जरूरत है!

—नाटक-बाटक तुम करते हो कि हम?—मीरा ने जवाब दिया—कहते हो कि दुश्मनों ने तुम्हारे ऊपर चाकू-तलवार ले कर हमला बोल दिया। डाक्टर

कहता था कि कलाई की चमड़ी पर घाव तुमने खुद बनाया है, ब्लेड से ! ऐसे बल्लम-बरछी से लैस तीन-चार दुश्मनों ने हमला किया होता तो लत्तूलाला, तुम पइयां-पइयां घर तक चलकर आने लायक थोड़े ही होते ! ऐक्टिंग-वैक्टिंग तुम बहुत बढ़िया करते हो !

रामा-मीरा ने लक्ष्मण का पत्ता काट दिया वहां से परन्तु और अधिक लांछित अपमानित करने के बाद।

शाम को दिया-बाती के समय मालूम हुआ कि बिजली ही नहीं आ रही है। अगल-बगल-सामने के सभी घरों में थी। रामा ने जा कर मेनस्विच देखा तो पाया कि कट-आउट ही गायब है।

—ताज्जुब नहीं जो लच्छू ने निकाल कर छिपा दिया हो ! —मीरा ने लूक लगाई।

लालटेन-टार्च ले कर सारी जगहें देख डाली गईं। बक्सों के पीछे, अलमारी पर सीढ़ियों के नीचे रखी जलाने की लकड़ियों के ढेर में। मगर कट-आउट न मिला।

—जरा अपना बक्सा खोलो ! —रामा ने झुंझलाए हुए स्वर मे लक्ष्मण से कहा।

लक्ष्मण ने कोठरी के अन्दर से अपना बक्स छत पर ला कर सब के बीच में पटक दिया, ताला निकाल कर ढक्कन का पल्ला खोल कर पीछे गिरा दिया। रामा उसके अन्दर की चीजें निकाल-निकाल कर एक बगल उनका ढेर लगाने लगा। लक्ष्मण के सूती और थोड़े से ऊनी कपड़े, छोटे-से फ्रेम में मढ़ी शंकर भगवान् की रंगीन तस्वीर, हाईस्कूल के सर्टिफिकेट का रोल। फिर बक्स में से समुद्रमंथन से निकले दूसरे ही रत्न बाहर आने लगे। बेबी की खोई हुई पेटी, मीरा की पीली ब्लाउज, बेबी की चड्ढी एक, बेबी की चड्ढी दो, एक चुटीला सचित्र व्यावहारिक सेक्स नामक पुस्तक, बड़े नाप की ब्रेसरी, एक, दो, तीन, चार पाच…

रामा का कांपता हुआ हाथ रुक गया। क्रोध से कांपते-मुस्कराते हुए उसने चार उंगलियों से नीचे की ओर इशारा किया—यह सब क्या है जी ?

—ऐसे ये भइया की खाट के मेहनताने हैं।—लक्ष्मण ने संयत स्वर में उत्तर दिया खड़ी बोली मे—आगे ऐसे आप स्वयं अपनी वाइफ से पूछें तो उत्तम होगा।

मन्नो लक्ष्मण के संदूक से निकले सामानों के ढेर को देख कर पहले ही वेदम-सी आवाज में रोने लगी थी। अचानक उठ कर वह लक्ष्मण की छाती पर खुली हथेलियों से थप्पड़ मारने लगी ! पंद्रह-बीस थप्पड़ तो उसने मारे होंगे लेकिन पति द्वारा परित्यक्ता बरसों-बरसों से अधपेट खा कर केवल जीती रहने वाली मन्नो की सूखी बाहों में ताकत भी भला कितनी हो सकती थी ! तब वह नीचे

बैठ कर ज़ोर-ज़ोर से रोते हुए अपना सिर छत पर खट्-खट् पटकने लगी ! आगे बढ़ कर न मीरा ने उसे पकड़ा न रामा ने, न लक्ष्मण ने और न उसकी पोतियों ने जो उसे दादी अम्मा पुकारने लगी थी !

रायबरेली का स्टेशन बहुत पीछे छूट गया था। मन्नो के साथ में था लक्ष्मण का टिन का बक्स, हरी दरी में रस्सी से बंधा बिस्तर और मन्नो का अपना झोला ! और लक्ष्मण !

रामा की अधनगी-नगी लड़कियों के सम्मिलित शोर के ऊपर, रेल के पहियों के शोर के ऊपर अब भी सुनाई दे रहा था मन्नो को, जो रामा ने मुस्कराते हुए कहा था—अम्मा ! इसके पहले वह क्या कहा गया है कि बारे उजियारो लगें, बड़े अंधेरो होइ ?

सारे रास्ते भर मन्नो और लक्ष्मण एक-दूसरे से एक शब्द भी नहीं बोले।

मुरारीलाल की बेवा को, जिसे लक्ष्मण बूढ़ीनम्बरएक कहता था, डेढ़ वर्ष पहले पक्षाघात हो गया था। लक्ष्मण वहीं वापस लौटा लेकिन ठीक वहीं नहीं क्योंकि फालिज गिरने के बाद बूढ़ीनम्बरएक की नौकरी तथा कोठरी छूट गई थी। वह अपने बड़े पुत्र के साथ उसके पैत्रिक टुटहे घर की पहली मंज़िल की उत्तरी दालान में, जहां पहले वह रसोई बनाया करती थी, झोलदार चारपाई पर जिसे बीच से काट कर एक बड़ा मोकवा बना दिया गया था, पड़ी रहती थी।

बूढ़ीनम्बरएक का छोटा पुत्र पन्नालाल कभी घर में अथवा मुहल्ले में रहता था जब उसका उन्माद संस्कृत श्लोकों से आगे बढ़ कर दूसरों के लिए खतरे के बिंदु पर आ जाता तो उसे घर के सामने वाले जंगलेदार कमरे में बंद कर दिया जाता या बड़ा भाई उसे पगलखाने में भर्ती करा आता। बड़ा लड़का हीरालाल बूढ़ीनम्बरएक के लकवाग्रस्त होने के बाद मरा, अचानक। मंदरक्तचाप की पुरानी शिकायत थी उसे। आफिस जाने के लिए साइकिल उठा कर बाहर निकल रहा था कि ड्योढ़ी की सीढ़ी पर ही उसका हार्टफेल हो गया ! उसकी विधवा पत्नी जानकी उसी हायर सेकेन्डरी स्कूल में सिलाई-कढ़ाई की मास्टरनी हो गई थी जिसमें पहले बूढ़ीनम्बरएक दाई थी। जानकी के दो लड़कियां थी, दुबली-पतली घिनौनी-सी, सुषमा और दीपा।

लक्ष्मण ने पिछली बार जानकी को देखा था तब से अब वह सूख कर आधी रह गई थी, एकदम हाड़-हाड़, लम्बा सा चेहरा। वह स्कूल करती थी और मन्नो बूढ़ीनम्बरएक का गू-मूत !

लक्ष्मण को बड़ा बुरा लगता उस घर की रसोई में बैठकर कौर तोड़ना खाना खाने की कौन, उसे उस घर का पानी भी गवारा न होता। तीन छोटी-छोटी लड़कियों और एक लड़के को इकट्ठा पढ़ाने का उसे ट्यूशन मिल गया तीस रुपये महीने का जब तक उसके पास ट्यूशन का पैसा रहता, वह बाज़ार में खा लेता, पैसे कम

पड़ने लगते तो रात को मूंगफली खाकर ऊपर से भरपेट पानी पी कर सो रहता।

लक्ष्मण का एक रिश्तेदार था कालिंदी साह, फोटोग्राफर। उसने लक्ष्मण से कहा कि मेरे पास आओ तो मैं तुम्हें आर्टिस्ट बना दूंगा। लक्ष्मण ने सोचा बूढ़ी-नम्बरएक के यहां के टुकड़े तोड़ने से तो कहीं अच्छा फोटोग्राफर बन जाऊं। फिर कालिंदी उस्ताद के कोई आद-औलाद थी नहीं, एक दूकान थी। लक्ष्मण को उसने फोटोग्राफी का काम बड़ा ललक कर सिखाया। पहला फोटो लक्ष्मण ने कालिंदी की निगाह बचा कर कालिंदी के कैमरे से उतारा था सुषमा और दीपा का, चित्रकला मन्दिर की छत पर, पीछे की दीवार पर एक चारखानेदार कंबल कीलों से ठोंक कर।

लेकिन कालिंदी अपने को लगाता बहुत था। उसकी बूढ़ी पत्नी बिद्दो के एक ही आंख रह गई थी। ऊपर से वह रतौंधी तथा डायबिटीज की मरीज थी। शाम से रात तक मे वह दस बार तो ठोकर खा-खा कर गिरती लेकिन कालिंदी को अपनी फोटोग्राफी की ही पड़ी रहती थी। लक्ष्मण का दिल भर आता उस बेचारी औरत बिद्दो के पैर देख कर, जिसके दसो उंगलियों के छोरों पर स्थाई घाव हो गए थे और हमेशा रिसते ही रहते थे। एक रोज रोटी सेंकते समय चूल्हे पर से तवा उतारते हुए तवा गिरा बिद्दो के बाए पैर पर तो छिगुलिया ऐसे कट गई जैसे छिपकली की पूछ! उसी शाम वह हरामी कालिंदी जवान पंजाबी लौंडिया के फोटो उतारते वक्त कह रहा था कि लम्बी सांस पेट मे भरो तो लक्ष्मण को बहुत बुरा लगा। वह जानता नही क्या, कि कालिंदी ऐसा क्यों कराता है? उभरी हुई छातिया देखने के लालच से।

लक्ष्मण ने उसी दम अपने मन में कसम खाई कि मैं चाहे ट्यूशन कर लूंगा, साइनबोर्ड पेन्ट करके अपना पेट भर लूंगा लेकिन अब से इस कालिंदी के घर के ऊपर पेशाब करने भी न आऊंगा।

कालिंदी को तो उसने ऐसी छलती मारी कि एक ही बार मे टाट पलट गया सारे चित्रकला मन्दिर का!

वह देखता कि जानकी अपने टूटे शरीर से भी स्कूल करती थी। अपनी सारी तनखाह वह बूढ़ी सास और दोनों लड़कियों पर खर्च कर देती, अपना न कोई शौक न कोई मौज। उसका अपना कोई न था, उसे मरने के बाद आग देने वाला तक नही। पुरानी पेचिश से उसे दिन में दस-दस, पन्द्रह-पन्द्रह दस्त होते लेकिन वह स्कूल से लौटते समय सब्जी-सामान का भरा हुआ थैला राह मे तीन चार जगह रख कर दम लेती हुई घर पहुंचती।

—अब इस समय कहां जा रही हो चाची?—लक्ष्मण ने पूछा।

—अरे, आटा सब खत्म हो गया है, पिसाऊं नही तो कल सुबह खाना कैसे बनेगा।—जानकी ने लम्बी सांस छोड़ते हुए गेहूं का थैला उठा कर बाहर वाली

सीढ़ी पर रखा, पहले खुद सीढ़ियां उतरी फिर थैला अपनी ओर खींच लिया।

लक्ष्मण कमीज़ गले में डालता हुआ बाहर निकल आया।

वह देखता कि जानकी अपने तन-बदन पर, दवा-दारू पर एक नया पैसा तक नहीं खर्च करती। बस, घर से स्कूल, स्कूल से घर। दुनिया भर में तमाम खुशियां थी, केवल उस एक औरत के लिए कोई खुशी क्या सिर्फ इसलिए नहीं रह गई थी कि वह बेवा और पेचिश की मरीज थी और आए दिन उसके कपड़े खराब हो जाया करते थे ?

—अम्मा ! —एक रोज़ लक्ष्मण ने जानकी को वैसे पुकार कर कहा जैसे जानकी की बेटियां उसे बुलाती थीं—अम्मा, तुम्हारा बाहर का सब काम अब से मैं कर दिया करूंगा। तुम्हें इतना ही सुख सही !

—अरे अब सुख मेरी जिंदगी मे कहा !

इसमे जानकी का क्या कसूर कि वह विधवा हो गई और अपने टूटे हुए तन, उजाड़ मन से भी बरसों से लकवे मे पड़ी उसके मृत पति को जन्म देने वाली बूढ़ी नम्बरएक को पालती-पोसती रहे, अपने दिवंगत पति की दो सन्तानों का पेट भरती रहे !

—लच्छू, इतनी देर हो गई, सुषमा अभी तक स्कूल से नहीं लौटी। मेरा जी बड़ा घबरा रहा है।

—लाओ पैसा दे दो तो बैद जी के यहां से बूढ़ीनम्बरएक की दवा ला दूं।

—इस बार की सत्यकथा तुम पढ़ चुके हो लच्छू तो मुझे दे देना।

दोनों की एक सी रुचि, एक सी पसंद। लक्ष्मण चंदामामा शौक से पढ़ता था तो जानकी सत्यकथा !

—अम्मा, मैं तुम्हें सुखी बना कर दिखा दूंगा ! तुम इसकी परवाह न करो कि तुम्हारे दो लड़कियां ही हैं। मैं तो हूं।

—अरे, अब मेरी जिंदगी मे कौन-सी खुशी, कौन-सी बहार आने वाली है। सिर फटा चला जा रहा है, खांसते-खांसते प्राण निकल रहा है। भगवान किसी का समय न खराब करें।

—तुम अपनी धोती वहीं नल के नीचे छोड़ देना, मैं नहाऊंगा तो अपने कपड़ों के साथ उसे भी धो दूंगा।

—लच्छू यह दीपा की फीस है, स्कूल में जमा करा देना। नहीं दीपा गिरा देगी तो एक और मेरी जान की आफत होगी।

जानकी ने अपने प्राविडेन्ड फन्ड से कुछ कर्ज ले कर एक रेडियो खरीदने का इरादा बांधा। लक्ष्मण अपने परिचित के द्वारा अच्छा रेडियो दिलाने को तैयार था पर जानकी ने बुचुन से सलाह की—सोचती हूं बुचुन्चा, कि एक रेडियो ले लूं तो सबका मन बहला रहे।

बुचुन बड़ा प्रसन्न हुआ—यह तुम्हारा फर्स्ट क्लास आइडिया है। लेकिन चार जानकारों से सलाह-बात किए बगैर न ले लेना, यह मैं तुमसे कहे देता हूं। तुम मेरी सलाह मानो तो फिलिप्स का रेडियो खरीदो। मुन्नू बाबू ने अभी खरीदा है। निहायत बढ़िया है ! आवाज इतनी साफ…

बुचुन ने अपनी पहचान की एक दूकान से उसे फिलिप्स का एक बड़ा-सा रेडियो साढ़े सात सौ का, किस्तों पर दिलवा दिया। रेडियो आ गया तो सारे घर में जैसे नई ज़िंदगी आ गई। बूढ़ीनम्बरएक रात को हवामहल सुनने लगी, लक्ष्मण सुबह-सुबह भक्तिसंगीत का कार्यक्रम लगा देता, दोनों लड़कियां एक-दूसरे का हाथ परे झटक कर अपनी पसन्द का स्टेशन लगाने की कोशिश करती और झगड़ती।

यों वह अनाथाश्रम धीरे-धीरे एक घर और परिवार में बदलने लगा।

मगर लक्ष्मण ही के कारण और लक्ष्मण ही के सामने जानकी अपने से आधी से आधी उम्र के मुस्टडे सगे भान्जे चन्दर से पिटते हुए बिलख-बिलख कर जानवरों की तरह रोती रही, लक्ष्मण उसे बचाने के लिए आगे कदम न बढ़ा पाया। उसे लग रहा था मानो कोई उसके कलेजे को मुट्ठी में ले कर मसल रहा हो, फिर भी वह सिवा खखार-खखार कर अपना गला साफ करने के, एक शब्द तक न बोल पाया। वह पन्द्रह अगस्त का दिन, जानकी के स्कूल में छुट्टी थी और सारे देश में स्वाधीनता दिवस धूमधाम से मनाया जा रहा था !

लोग कहते हैं कि वह अधेड़ बेवा ही लक्ष्मण के सारे जीवन की एकमात्र प्रेम-उपलब्धि थी अतः उसकी रक्षा के लिए लक्ष्मण को आगे बढ़ कर अपनी जान तक दाव पर लगा देनी चाहिए थी। लोग मानते हैं कि आम तौर पर ऐसा सिर्फ औरतज़ात ही कर सकती है, मर्द कभी नहीं क्योंकि मर्द अगर दोना चाटता भी है तो दोना चाट कर दोने को फेंक देता है, उसे दिल की जगह चिपका कर नहीं रखता।

लोग कहते हैं कि लक्ष्मण ने जानकी को खा डाला। लोग कहते है कि नहीं, जानकी ने लक्ष्मण को खा डाला। जैसे कि हाथी कैथे को सज्जा-कि-सज्जा खा जाता है और हगता है तो एकदम साबुत मगर अन्दर से एकदम खोखल-खाली ! पंडितवर्ग उसे *गजमुक्तकपित्थ* कहता है ! पर लोग यह नहीं बूझ पाते कि कौन है हाथी, कौन है कैथा !

लक्ष्मण को सुनाई दिया ! बाहर गली से किसी ने उसका नाम ले कर जोर से पुकारा है ! उसने उधर गर्दन तान कर देखा कि कौन है लेकिन कोई नहीं था !

उसने कई बार सोचा कि वह जाए और ऊंचे से नदी में कूद कर अपना जान दे दे। पर यह मुक्तिमार्ग भी पितानामधारी उस व्यक्ति ने बचपन ही में उसे

तैरना सिखला कर मूंद दिया !

एक-एक ने उसे धोखा दिया ! पिता और अम्मा ने मिल कर उसे पैदा कर के, उस चूतिया तांत्रिक पण्डित ने झूठे खुदारज्जासु मन्त्र का उससे जाप कराकर, सौतेले भाई की औरत तथा बेबी ने इस्तेमाल करने के बाद चूतड़ पर लात मार बाहर कर चमकौवा खोपड़ी वाले पेशकार होम्योपैथ ने उसे ल्यूकोरिया की दवा खिला-खिला कर, इस रंडी जानकी ने···

लक्ष्मण के मन में अथाह भय समा गया था। उसे भय था कि उसे बवासीर की शिकायत है परंतु वह इस डर के मारे अस्पताल दिखाने भी नहीं गया कि कहीं डाक्टर इंजेक्शन से दवा चढ़ाने के साथ-साथ दो-चार बूंद हवा भी न पम्प कर दे !

वह वैसे ही स्तब्ध खड़ा हुआ डरता रहा कि क्या टूटे हुए आइने में अपना मुंह दिखाई दे जाने से सचमुच दुर्भाग्य आता है !

सुबह-सुबह वह छत की दीवार पर आइना खड़ा कर के शेव कर रहा था तो टिन के चौखटे के अन्दर से एक जोड़ा आंख उसे तरेर कर देखने लगी। वह मुस्कराया, कि वह किसी दूसरे का नहीं, खुद उसी का चेहरा है। मगर उसने अपने बचपन के फोटो में अपना चेहरा देखा था, चौखटे के भीतर वाला चेहरा बचपन के उस चेहरे से भिन्न था। चौखटे के भीतर वाले सावले गालों पर दो-तीन मुहासे कट जाने से खून की नन्ही-नन्ही बूंदें छलछला आई थीं। बत्तीस साल की एकदम पूर्ण तथा मेच्योर एज में निकलने वाले वे मुंहासे बीच में लापता हो गई उस की जवानी के थे !

चौखटे के अन्दर से सिकुड़ी-सिकुड़ी आंखों से एकटक घूरने वाला चेहरा उसे अपना नहीं बल्कि अपने जीवित तथा लापता और घृणित पिता का चेहरा लगा ! उसने हमेशा की तरह आज भी उन क्रूर आखों में अपनी आंखें डालते हुए वही सवाल दोहराया —यह चेहरा क्या तुम्हारा है ?—हा, यह चेहरा क्या तुम्हारा ही नहीं है ?

लक्ष्मण ने चांटा नहीं मारा था उसे। चील ने साबुन की घिसी हुई चिप्पी को झपट्टा मारा था और साबुन के साथ उस चेहरे को भी उड़ा ले गई थी। लक्ष्मण गच पर छिटकी आइने की किरचों को बटोरने के लिए झुका तो वही चेहरा एक जैसी बीसियों जोड़ा आखों में वापस आ कर उसे फिर घूरने लगा, आखें छोटी कर के !

कहीं लाउडस्पीकर पर वह फिल्मी गाना आ रहा था—तू जिधर का रुख करेगा, मेरा साया साथ होगा ! —फिल्मी गाने तक कितने क्रूर हो गए हैं !

बायीं ओर की सोना लगी लाल ईंटों वाली बिना पलस्तर की उस दीवार पर भी गुनगुनी धूप पड़ रही थी। वे ईंटें उन तमाम किशोर-जवान-अधेड़-बूढ़ी

औरतों, बूढ़ीनम्बरएक, बूढ़ीनम्बरदो, मीरा, जानकी, बेबी, सुषमा, दीपा के एक-जैसे खड़खड़ाते हुए दांतों की तरह निकली हुई थीं ! दीवार के ऊपर कूबड़-सा निकल आया था। लक्ष्मण को लगा कि ऊपर से लेकर नीचे तक वह लाल दीवार भरभरा कर किसी भी पल उसके ऊपर गिर सकती है !

सैकड़ों अदृश्य चिड़िया चहचहा रही थी। उनके कलरव के बीच दो बच्चे खिलखिला कर हंसे—कल्लू ने सब फंसाया है ! हट जाओ !—नल के नीचे खाली बाल्टी रखी गई।

पड़ोस के किसी घर में प्रेशरकुकर पर खाना पक गया था और प्रेशरकुकर की लम्बी सूऊं की सीटी बजने लगी थी। एक कौवा कां-का कां-कां…

लंकासुन्दरीराग

ओफ कितना वीभत्स
एक घर की तीन इकट्ठा पीढ़ियों को देखना !
जैसे कि एक महावृक्ष से नई-नई कोंपलों का फूटना
सड़ी हुई शाखों का साथ टूटना-गिरना !

—एजरा पाउन्ड

Oh how Hideous it is
To See Three generations of on house gatheree together !
It is like an old tree shoots,
And with some branches Rotted and falling.

—Ezra Pound



हरिहरचा की ऊंची मुंडेर लांघ रहा था सूरज, वैसे ही जैसे मुहल्ले के हिम्मती लड़के ऊंची-से-ऊंची छत लांघ कर पड़ोसी की छत पर आते हैं पतंग-डोरी लूटने !

धूप मे लखौरी ईंटों की कुबड़ी लाल दीवार निखर आई थी। धूप छज्जे के आले पर महीनों से पड़ी नारियल के तेल की खाली चीकट बोतल पर भी पड़ रही थी।

सुषमा ने आले पर से काला कंघा उठाया, उसमें लिपटे जानकी के बाल नोच-नोच कर फेंके फिर अपने गीले बालों मे खींच-खींच कर कंघी करने लगी।

नीचे रानी अम्मा उदास-अकेली टूटी-उखड़ी आवाज में सोहर गा रही थी, जिसे वह अक्सर अपने को सुनाया करती थी,—छूटले राम के बहेलिया हरना बझावें। तो हरिना को बझा कर ले गए बहेलिया। तो आगे-आगे चले हैं हरि-नवा, पिछवां हरिनिया !

मन्नो ने ठाकुरद्वारे ही में कच्चे कोयलों की बोरसी जला कर उस पर दूध का बर्तन चढ़ाया।

बहते हुए नल की हौद पर उकड़ूं बैठ कर लक्ष्मण देर से दातुन कर रहा था। वह दिल्ली-मेरठ कहीं नहीं गया था। जानकी छिपाने के लिए झूठ बोली थी। वास्तव मे लक्ष्मण गया था बम्बई, रेस और सट्टा खेल कर रातों-रात अमीर बनने के इरादे से। वहां पता नहीं क्या हुआ, लक्ष्मण ने जानकी के स्कूल के पते

पर तार भेज कर दो-सौ रुपये तार से मंगवाये। लौट कर उसने जानकी को बताया कि उसने ट्यूशन कर-कर के बरसों में जो थोड़ी बहुत रकम जमा की थी, सब वह रेस मे हार गया, यहां तक कि उसके पास वापसी के लिए टिकट भर का भी पैसा न था।

वह फिर कुटीर-उद्योग में जुट गया। उसने एक नयी किस्म की लेई आविष्कृत की थी जो कागज, कपड़ा, दफ्ती, लकड़ी आदि गैर धातु वाली किसी भी चीज को मजबूती से जोड़ सकती थी। इसके बाद वह नेलपालिश तथा बिन्दी बनाने पर प्रयोग कर रहा था। सामने वाले कमरे में उसका तमाम सामान भरा हुआ था। एक बगल दीवार पर लेनिन के केवल मस्तक का रंगीन फोटो फ्रेम किया हुआ लटका था, फोटो के नीचे किसी का सूत्र-वाक्य उसी ने अपने हाथ से लिख दिया था—सुदृढ़ रहो, बलिदान देने से डरो नहीं, प्रत्येक कठिनाई को पार कर आगे बढ़ो, विजय तुम्हारी है।

यहां पक्के कोयले की भट्ठी जला कर वह सामान तैयार करता। सरेस तथा यूडीकोलोन की-सी मिली-जुली गंधों से कमरे की हवा हमेशा बोझिल रहती।

—तो मचिया बैठी कौसिल्या रानी हरिनी अरज करैं। रानी, मसवा तो सीझहि रसोइया, खलरिया हमहि देतिउ। पेंड़वा से टंगतिउ खलरिया त हेरिफेरि देखतिउं···

—कहीं और जा कर नहीं खड़ा हुआ जाता हरामजादी!—मुंह ऊपर कर लक्ष्मण जोर से चिल्लाया—या कि ऐसे मैं ऊपर आ कर तुम्हे बताऊं।

मन्नो ने सिर टेढ़ा कर के बारजे की ओर देखा, पर कुछ बोली नहीं।

कौसल्याजी हुक्म देती है कि हरिना मारा न जाए।—रानी अम्मा अपने को सुना कर रोने लगी—तो आगे-आगे चले हरिनवा पाछे कुलांचत हरिनिया। सोने फूल-फूलें अजोध्या जहां राम राज करें।

देखती हो अम्मा, यह कुतिया जानबूझ कर ऐसे मेरे ऊपर बाल से गंदे पानी का छींटा फेंक रही है।

—दीपू! सुषमा ने जोर से पुकारा।

जानकी तो साढ़े आठ बजे ही तैयार होकर स्कूल चली गई थी। आज सुबह से उसे बहुत काम था। दो झोले भर वह कपड़े स्कूल से ले आई थी, जो लड़कियों ने सिल कर इम्तहान के लिए दिये थे। एक-एक को देख कर पास-फेल करना था। कुछ अच्छे कपड़े वह रख लेती थी, सुषमा-दीपा को घर में पहनाने के लिए। वह जानती थी कि अक्सर लड़कियों की मांएं परीक्षा के लिए खुद कपड़े सिल कर भेज देती हैं। सुषमा-दीपा छोटी-छोटी थी तो स्कूल की सिलाई-क्लास के ये कपड़े पहनने में उज्र न करती लेकिन सुषमा अब उन्हें पहनने में नाक-भौंह सिकोड़ने लगी थी।

स्कूल जाने के पहले जानकी ने सुषमा का गाल-ठोढी सहलाते हुए उसे समझाया था—आज तुम्हारी तबीयत ठीक नही है बबुआ, तो तुम स्कूल न आना।

—दीपू !—सुषमा ने दोबारा पुकारा तो मन्नो ने बुझी हुई आवाज़ में ठाकुरद्वारे से उत्तर दिया—दीपा स्कूल गई।

—हीरालाल, हीरालाल !—रानी अम्मा रोते-रोते प्रलाप करने लगी—कहां चले गए तुम, हम सब को यहां छोड़ कर !

—देख लेना अम्मा,—लक्ष्मण मन्नो को सुनाते हुए बोला—ऐसे यह कुतिया सुषमा ऐसे आज मेरे हाथ से पिटे बिना मानेगी नही !

—हीरा तो मेरा चला गया, अंगूठी मेरी सूनी हो गई !—रानी अम्मा जरा भी देर रोती तो उसके गाल लाल सुर्ख हो जाते।

—यह बूढीनंबरएक आज सुबह से ही क्यों रो रही है ?—लक्ष्मण ने सिर झुका कर नाली में थूका।

गली के सब्जीफरोशों की मिलीजुली पुकारें घर के अन्दर तक आ रही थी। आंगन के खुले नल तथा सब्जी वालों की चीखों के बीच पतली-सी पुकार सुनाई दी—अरे, कोई पानी तो पिला दो ! कितनी देर से पुकार रही हूं। अरे हीरालाल, आ कर घूट भर पानी दे दो !

वह ऐसे ही जरा-जरा सी बात पर रोने और अपने मृत बेटे को पुकार-पुकार कर करुण विलाप करने लगती।

—अरे सुन नही रही हो अम्मा ! बूढीनंबरएक ऐसे पानी माग रही है। पानी तो ऐसे इन लोगो का चुक ही गया है !

सुषमा ने नीचे उतर कर रानी अम्मा के मुंह मे तुतही की टोंटी लगाई तो वह अपने पोपले मुंह से खीच-खीच कर पानी पीने लगी, जैसे गोद का बच्चा मां की छाती से लग कर दूध पीता है ! पेट भर पानी पीकर रानी अम्मा ने मुंह अलग कर लिया—हीरालाल-पन्नालाल, हीरालाल पन्नालाल !

—बडी अम्मा, पन्नालाल स्कूल गई !

—और हीरालाल ?

—आज मेरे सिर में बहुत चक्कर आ रहा है, मैं स्कूल नही जाऊंगी।—उसने खाट के नीचे झुक कर देखा मिट्टी का तसला ऊपर तक भरा नही था।

रानी अम्मा अपने मे गाफिल-सी गाने की तरह गुनगुनाने लगी—हीरालाल पन्नालाल-हीरालाल, पन्नालाल !

वह प्रसन्नचित होने पर दोनो छोटी लड़कियों को अपने मृत तथा विक्षिप्त बेटों के नाम से पुकारती थी।

लक्ष्मण ड्योढ़ी के बाहर निकला, मकान के आगे डलिए रख कर सब्जी बेचने वालों से एक दिन के पचीस-पचीस पैसे उगाहने।

—रानी बुआ भूख लगी है ? कुछ खाओगी ?—मन्नो ने आंगन पार कर के रानी अम्मा के सिर पर झुकते हुए पूछा तो वह अकस्मात उत्साहित हो गई—नहीं, भूख नहीं लगी है। बस, प्यास बहुत लगी थी। कितना मांगा सब से तब कहीं पानी मिला !

मन्नो ने वापस ठाकुरद्वारे में आ कर घंटी बजाई और ठाकुर को उठा कर बैठाया। दूध मे उबाल आने लगा तो उसने लक्ष्मण को आवाज़ दी—लच्छू आ कर दूध ले जाओ, नहीं तो सारा फेन बैठ जाएगा !

लक्ष्मण बैठक का दरवाज़ा खोल कर निकला, दूध का गिलास लिए और वापस बैठक मे चला गया। दिन का दिन वह उसी बैठक में रहता, गली की ओर का दरवाज़ा जंगलेदार खिड़की खोल कर, भीतर की ओर के दोनों दरवाज़े अंदर से बंदकर। रात को ज़रूर वह उत्तर वाली छत पर सोने के लिए जाता था। बैठक मे स्याही, लेई तथा नेलपालिश बनाने का सामान भरा था। तेल के पीपे, खाली नई शीशियां, रासायनिक, लेबल, कार्क। पान-तम्बाकू-सिगरेट किसी की उसे लत न थी। सब्ज़ी वालों से मिले पैसों से वह अपने उद्योग का फुटकर कच्चा माल ले आता था। शुरू-शुरू में जानकी ने उसे तीन सौ रुपए एकमुश्त दिए थे, मन्नो तक से छिपाकर !

जंगले के नीचे वाली कुंजड़िन से टोकरी के दूसरी ओर उकडूं बैठा, गोल फ्रेम मे मोटे कांच का चश्मा लगाए बूढ़ा मियां देर से हुज्जत कर रहा था। मियां उसका रोज का बंधा हुआ ग्राहक था।

अनारी साइकिल वाले की बेंच पर केवल तड़ीवालेतिवाड़ी बैठा था और उसके सामने खड़ा एक किशोर मोल-भाव कर रहा था—न पचीस पैसे की न पचास पैसे की, बीच वाली तड़ी लगवा लो तिवाड़ी !—बीच वाली होती ही नहीं। लगाना हो तो पचीस की लगाओ या पचास की।—तड़ीवालेतिवाड़ी नाटा और निपट गंजा था। भगेड़ी। बच्चे-बड़े सब उसे पैसे दे कर तड़ी जमाते थे। पचीस पैसे, पचास पैसे, एक रुपए की उसकी अलग-अलग रेट थी। डेढ़ रुपए वाली डिलक्स वह तभी लगवाता था जब बहुत अधिक नशे में हो अथवा पैसे से तंग। पचास वाली तड़ी तय होते ही तड़ीवालेतिवाड़ी पचास पैसा ले सीधे तन कर बैठ गया और आंखें मूद लीं। सिर पर चटाक से तड़ी पड़ने के बाद उसने आंखें खोलते हुए कहा—पचास से ज़रा कम की थी, पचीस से ज़रा ज़्यादा।—तिवाड़ी, वह तो मैं हाथ आजमा रहा था।—दोनों मे कहासुनी होने लगी। अंत में तड़ीवालेतिवाड़ी राज़ी हो गया—अच्छा तो एक तड़ी मार लो लेकिन पचीस से कम की। लेना-देना बराबर !

तभी सरला गुंडी साइकिल के हैंडिल पर झुकी-झुकी आई—अनारी, तुम अनारी हो कि सचमुच अनाड़ी। कल रात को यह कैसा पन्चर बनाया है कि आज

सुबह हवा गायब ! —तो रात को कोई चढ़ा होगा ! —हंसते हुए अनारी बोला। सरला गुंडी चिढी हुई थी—एक साइकिल निकालो फटाफट ! मैं आऊं तब तक मेरी साइकिल बना कर तैयार रखना।

सारे मुहल्ले में केवल दो ही ऐसे प्राणी थे, सरला गुडी तथा बुचुन, जो घर के बाहर अपनी-अपनी साइकिल के बिना कभी देखे ही नही गए !

घर भर मे सन्नाटा था। रानी अम्मा लगता है सो गई।

जहां-तहां बारीक चटखन लिए चूने के पलस्तर वाली तीसरे मंजिल की उत्तरी छत पर शुरू अक्तूबर की हल्की पीली धूप बगरी हुई थी। धूप के साथ इन हल्की दरारो को सुषमा अपनी याददाश्त के पहले-पहले दिनो से खूब अच्छी तरह पहचानती थी। पीली पर पारदर्शी, गुनगुनी पर ठडी धूप। उत्तर की ओर होने के कारण बाहर की गली का शोर वहां तक नही पहुचता इसलिए मकान के पीछे खडे हुए बहुत ऊचे पीपल की बजाई तालियां सुनने के कुछ पल बाद देह पर अनुभव होता कि हवा चली !

सामने वाले पार्क में वह थी, दाहिने हाथ में तलवार उठाए वह घुड़सवार औरत, अपनी पीठ पर बंधे बच्चे को भगा ले जाने की कोशिश मे, हमेशा की तरह हवा में टंगी हुई !

गाढे नीले आसमान को एक अकेली पतंग फर्र-फर्र आवाज से चीर रही थी। बछैयन अपनी छत के ऊंचे चबूतरे पर खड़ा हो कर पतग उड़ा रहा था।

उत्तर वाली दोछत्ती मे तीन चारपाइयां पडी हुई थीं और उनके ऊपर आधे उल्टे तीन बिस्तर। दिन मे उन्हें देखकर अलग-अलग पहचाना भी नही जा सकता कि रात को उनमे से कौन-सा सुषमा-दीपा का होता था, कौन अम्मा का और कौन लक्ष्मण का। गर्मियों भर सारे दिन धूप और धूल में पड़े रहने के कारण दरियो का रंग उद्धस हो चुका था। शाम-रात को उलट कर बिस्तर फैलाते समय बारीक गर्द सोंधी महक बन कर नथुनों तक आती। लेकिन रात को वही गर्द दिखलाई न देती, रात और रात के चेहरों की तरह ! उन्हें वह जानती तो खूब थी लेकिन पहचानना नही चाहती थी।

सुषमा को नीद नही आ रही थी। नही, नीद से आखें मुदी जा रही थी फिर भी वह सो नही जाना चाहती थी। आख मुदते ही खाट हिल जाती तो चौंक कर वह आंखें खोल निश्चल पड़ी-पडी अधेरे मे कानो से देखने की कोशिश करने लगती। दीपा उसी बिस्तर पर सो रही थी मगर खूब गहरी नीद में, दाहिना पैर फैला कर अंदर की ओर मोड़े हुए। नीद मे डूबते-डूबते उसे सुनाई दिया, अम्मा का स्पष्ट स्वर—और जोर से लच्छू, हां और जोर से ! —उसकी कनपटियों मे नसो की धड़कन घन की चोटो की तरह बजने लगी !

भाभीजी ! पान लगा कर तुम्हारे बेलहरा मे रख दिया है, तम्बाकू-पेपरमेंट

थी ।—बड़ी अम्मा के एकालाप के बोल मन्नाटे की नसैनी चढ़ कर छत पर आ रहे थे ।

—सुनती हो, ऐसे बूढीनम्बरएक बर्रा रही है ।—लक्ष्मण धीरे से हंसा ।

—बर्रा नहीं रही है बकबक कर रही हैं !—जानकी कांखते हुए बोली—कमर तो मेरी जैसे दर्द हुए रही है !

—अब तुम जरा ऐसे उधर घूम जाओ ।

खाट हिली तो सुषमा ने सोचा कि कल से वह अपनी और अम्मा की खाटों के बीच एक बालिश्त की दूरी रखा करेगी । पीपल के डर से वह छत की दूसरी ओर अपनी खाट भी नहीं लगा सकती थी । दीपू बीच की मंजिल पर सोने को राज़ी नहीं होती क्योंकि उसे गर्मी बहुत लगती है । एकदम नीचे सोओ तो बड़ी अम्मा रात-रात भर बातें ही करती रह जाती है ।

सुनार के हथौडी मारने की-सी ठक-ठक सुनाई दी । मन्नो ताई आंगन के कोने वाले पत्थर पर पक्का कोयला तोड़ रही होगी । आज कितने लम्बे अरसे के बाद वह दिन में छत पर आई थी ! दिन में न वह छत मनहूस लग रही थी और न पीपल का पेड़ । धूप और धूल के कारण आकाश की फीकी निलाई । धूप लगातार अधिक पीली और तीखी होती जा रही थी, मार्च-अप्रैल, मई-जून की धूप की तरह प्रखर !

उसने सोचा कि वह सीढियों पर बैठ-बैठ कर धीरे-धीरे नीचे उतर जाए नहीं तो यहीं उसे कुछ हो जाएगा । लेकिन सीढ़ियां एकदम खड़ी थीं । उसे सीढ़ियों के निकट जाने में खतरा महसूस हुआ । उसके घुटने ज़ोर-ज़ोर से हिल रहे थे । कंधे के जोड़ों, गर्दन और हाथों में भी तेज़ कंपकपी उठ रही थी । उसने अपने सारे शरीर के भीतर लहरों की तरह उठ रहे कंपन को काबू में करने की भरसक कोशिश की, फिर दीपा या मन्नो में से एक को पुकारना चाहा मगर थरथर करते जबड़ों के बीच से आवाज़ बाहर नहीं फूट सकी । पुकार मुंह में भर रहे झाग के साथ लिपट कर मुंह के भीतर ही रह गयी—ए अम्मा जल्दी आओ !

फिर सुखदायक कमज़ोरी में डूबते उतराते हुए लगा मानो कोई उसकी बायीं भौंह के ऊपर माथे पर अपनी एक उंगली रख कर लगातार कोंच रहा है । मगर छत पर तो कोई नज़र नहीं आ रहा था । वह बायां हाथ उठाकर अपने माथे तक ले गई और उंगली के दबाव को पोंछ कर माथे पर से हटाया तो देखा, तो उसकी बायीं हथेली पर गाढे खून की चौड़ी पट्टी चिपकी हुई थी ।

वह अपने पैरों तले की ज़मीन पर बैठ गई । उसे पिछले बहुत दिनों से ऐसा लग रहा था कि उसे कुछ होने वाला है ।

जानकी ने शाम को स्कूल से घर लौटते ही जो सुषमा के माथे पर अंगुल भर लम्बा ताज़ा घाव देखा तो वह अपना बैग एक ओर फेंक कर सुषमा से लिपट गई

—अरे मुन्ना, यह क्या हुआ !

अम्मा, मुझे चोट लग गई ! —सुषमा रोने लगी। जानकी को यह बताते हुए कि वह उत्तर वाली छत पर खड़ी थी, खड़ी-खड़ी अचानक गिर पड़ी, सुषमा की हिचकियां बंध गयीं। —क्या जरूरत थी तुम्हें ऊपर जाने की ! —जानकी उसी पर उल्टी चिल्लाने लगी—जब मैंने तुमसे सहेज दिया था कि तुम्हें दिन भर बिस्तर से उठना नहीं है !

—नहीं अम्मा सुषमा बिलखने लगी—तुम्हारी कमर में दर्द होता है तो तुम मुझसे अपनी कमर क्यों नहीं दबवाती हो, दीपू से क्यों नहीं दबवाती हो, लच्छू चाचा ही से क्यों दबवाती हो !

—तो लच्छू से कमर दबवा ली तो इतनी बड़ी बात हो गई ! जानकी की आवाज़ और भी चढ़ गई।

—नहीं अम्मा ! तुम बिना बाप की अपाहिज बिटिया की जान के साथ खेल रही हो अम्मा ! अगर तुम्हारे आत्मा हो तो अब से तुम ऐसा न करना !

लक्ष्मण बैठक से निकल कर आया और बिलख-बिलख कर रोती हुई सुषमा को देख उसके बालों पर हाथ फेर कर लगा उसे समझाने—नहीं सुषमा, ऐसी कोई बात नहीं है, सुषमा !

—सुषमा, दीपा और तुम, हम लोग सिर्फ तीन ही तो बच गए हैं अम्मा ! हम लोगों के पास कुछ भी नहीं है अम्मा ! नहीं अम्मा, ऐसा न करो !

—अब जब कोई बात नहीं है तो रो-रो कर क्यों अपना जी खराब कर रही हो ! कि अब और तो सब है ही, तुम्हारी बला भी मेरे सिर पर आ पड़े ! मेरी चूने की डिबिया कहां चली गई। तम्बाकू खाऊं तो जी ठिकाने लगे। मेरा तो बस यही काम कि मर-मर कर नौकरी करूं और सबकी भरसाई भरूं।

जानकी ने ताली बजा कर पत्ता तम्बाकू बनाई और उसकी चुटकी अपने निचले होंठ में दबाई। सुषमा बीच वाले कमरे में जाने के लिए आंगन तक गई ही थी कि फिसल कर पीठ के बल गिर पड़ी।

लक्ष्मण झपट कर उसके पास पहुंचा और घबरा कर चुटकी से उसकी नाक बन्द करते हुए चिल्लाया—अरे, ऐसे चप्पल-जूता ऐसे कुछ हो तो ऐसे जल्दी लाओ भाई !

खंभे के पास जानकी की चप्पलें अलग-अलग पड़ी थीं। झुक कर खाली हाथ बढ़ाते हुए लक्ष्मण ने उन में से एक चप्पल अपने पास खींच ली। उसे घिस कर सुषमा के मुंह पर उसका तला रखते हुए वह हंसने लगा—ऐसे यह सब नाटक-वाटक कर रही है। देख लेना, यह ऐसे रांड़ हो कर रहेगी।

भागदौड़ और शोरगुल देख-सुन कर रानी अम्मा घबरा गयीं और रोने लगीं —आज दिन अगर मेरे पैर होते तो मैं उठ कर यहां से भाग जाती ! इसके बाद

वह जो चुप हुई तो ऐसे जैसे कि वह चौदह वर्षों से दालान की जिस चारपाई पर पड़ी रही थी, उस चारपाई से उड़ कर अचानक अन्तर्धान हो गई हो।

जानकी बुरादे की अंगीठी में बुरादा भर कर उसके ऊपर का ढक्कन कपड़ा धोने की मुगरी से ठक-ठक ठोंकने लगी। उसके पीछे मन्नो ने नल की हौद में खाली बाल्टी रखते हुए कहा—लच्छू कह रहे हैं कि जरा आ कर दो मिनट को सुन जाओ।

—किसकी-किसकी सुनूं मैं —जानकी ने झुंझला कर कहा और हाथ की मुंगरी नीचे पटक दी।

सुषमा मन्नो की बड़ी दुलारी थी। सुषमा गुसलखाने में नहा रही होती और लक्ष्मण बाहर का नल खोल देता, सुषमा अंदर से पुकारती कि बाहर का नल बंद कर दो, मैं सिर मे साबुन लगाये हू, तो मन्नो बाल्टी-बाल्टी पानी गुसलखाने मे पहुंचाती। उसे अपने आगे बैठा कर अक्सर उसकी चोटिया गूंध देती। उसके बालों मे कंघी चलाते हुए मन्नो को अपनी किशोरावस्था की याद आ जाती थी ! मन्नो ने काले टायर की अपनी चप्पलों में पैर डाले और ड्योढ़ी से नीचे उतर गई। सुषमा की बीमारी के बारे में सोचते हुए उसके कदम अनजाने मे तेज होते गये। उसने सुन रखा था कि भवानी मदिर के पुजारी गोबरधन पंडित के दिये गंडा-तावीज से ऐसे मरीज भी भले-चगे हो गये हैं जिन्हें सिविल सर्जन तक ने जवाब दे दिया था !

नाले वाली ढाल पर वह घर था जिसमे वह ब्याह कर गयी थी। वह मकान अब दूसरों का हो गया था। उसने आचल से अपना मुंह दबा कर सिर झुका लिया और पांच-छह तेज-तेज कदम चल कर आगे बढ़ गयी।

शाम के वक्त, मंदिर की सीढ़ियों के ऊपर पत्थरों के चौकों वाले आंगन में कोई भी न था। आगन के किनारे के छोटे मंदिरों मे से दो के आगे गुड़हल के बिखरे हुए फूलों के बीच दिये जल रहे थे।

आगन के दूसरी ओर गोबरधन पंडित की कोठरी थी। कोठरी के खुले दरवाजे के अन्दर लालटेन की रोशनी थी और अन्दर गोबरधन पडित का ऊंचा मगन स्वर लहरा रहा था—माता कालिका, महाकाल महारानी, माता कालिका खड्ग मुंड खप्पर कर धारनी माता कालिका —

मन्नो को थोड़ा डर लगा। फिर भी उसने मंदिर की ड्योढी लाघ कर देवी के आगे धरती पर अपना माथा छुआ दिया—भवानी मेरी लाज न डुबाना !

रास्ते मे रुक कर उसने एक जगह फूल वाले की दूकान से पांच पैसे का फूल खरीदा था। सफेद धोती की खूंट में से खोल कर उन फूलों को भवानी के

ऊपर निछावर करते हुए उसने कहा—भवानी, बस मेरे पास और कुछ भी नही था।

वहां से बाहर निकल कर गोबरधन पडित की खुली कोठरी के आगे खड़ी हो कर उसने धीरे से पुकारा—पडिज्जी !

उसने दोबारा पुकारा पडिज्जी तो गोबरधन पंडित ने भजन बीच मे रोक कर डांटने की तरह पूछा—कौन है ?

शाम की भाग-बूटी के बाद अपने मे मगन चोला गोबरधन पडित को यह खलल अच्छा न लगा।

गोबरधन पंडित अकेली आंख से टेपरा था, ऊपर से काना भी। उसके बचपन मे ही उसकी एक आंख के छेद मे कीचड़ भर गयी थी भवानी, एक नयन कर तजा भवानी !

—हम हैं मन्नो, पंडिज्जी, साहू की घरवाली।

मंदिर से तावीज ले कर लौटते हुए रास्ते मे वर्षा का एक दौगरा पड़ा तो उस की सफेद धोती उस के हाड़-हाड़ रह गये शरीर से चिपक गयी। धोती के पीछे का हिस्सा रबर की चप्पल से उठने वाले बहुत से छीटों से बदरंग हो गया।

घर के आंगन मे बत्ती जल रही थी। लक्ष्मण की बैठक मे रोशनी गुल थी, वह कही बाहर चला गया होगा शायद। रानी बुआ उत्तर वाली दालान मे खाट पर पड़ी रही होगी, क्योंकि वह तो वहां से हिल कर जा भी नही सकती।

नल वाली अंधेरी दालान के एक खंभे से पीठ लगा कर दोनों पैर दासे से लटकाए हुए बैठी थी जानकी, जैसे कि वह बैठी-बैठी सो रही हो, दोनों आखें पूरी-पूरी खोले हुए !

—जानकी ?—मन्नो उसके एकदम पास उकड़ूं बैठती हुई बोली—कुछ तो होश करो, कुआरी लड़की का मामला है !

मन्नो ने पोर भर लम्बी एक गोल तावीज, काले डोरे से बधी हुई जानकी की हथेली पर रखकर उसकी मुट्ठी बद कर दी।

—जीजी, मेरे तो कुछ भी समझ मे नही आता कि यह क्या है और मैं क्या करूं !—जानकी चेहरा बिगाड़ कर मुंह बंद करके रोने लगी।

—कही यह मिरगी तो नही है जानकी !—मन्नो ने अपने पतले-पतले होंठ जानकी के फूले हुए होंठों के एकदम पास लाकर फुसफुसाते हुए बताया।

जानकी ने सिर धीरे से नीचे झुकाया—लच्छू भी यही कह रहे थे।

जानकी के स्वर मे से रुलाई की नमी उड़ गयी अचानक, आतंक की वजह से !

—यह तो बहुत बुरा हुआ ! बहुत बुरा हुआ !—मन्नो ने कई बार इंकारी

में सिर हिलाया—अच्छा ! तो अब इसका ढिंढोरा न पीटना । हे प्रभू !

—मैं यह सोचती हूं कि मैं कहां ऐसी जगह चली जाऊं कि मुझे किसी को अपना यह चेहरा न दिखलाना पड़े !—जानकी एक बारगी फिर रो पड़ी।

बिजली नही आ रही थी। मुन्नो अंधेरे मे सीढ़िया टटोलती चढ़ गई ऊपर, सोने के लिए। कुछ देर बाद सीढियों पर उतरते कदमो की आहट सुनाई दी तो जानकी ने अंधेरे मे पूछा—कौन है ?

—हम हैं।—दीपा की आवाज़ ने उत्तर दिया।

दीपा फिर सीढिया चढ़ गई। काफी देर बाद बरामदे, लक्ष्मण की बंद बैठक, गलियारे के सारे बल्ब अचानक जल उठे।

जानकी की एक चप्पल ड्योढ़ी मे उलटी पड़ी थी, शाम से। दूसरी आंगन में। उसने हाथ से दोनो चप्पल इकट्ठा कर सीढी के एक किनारे रखा।

स्कूल में 'सत्यकथा' का नया अंक आज ही आया था। वह स्कूल से लेती आई थी। आज ही नाइन्थ बी का तिमाही इम्तहान भी उसने लिया था। सिलाई कढ़ाई का काम भी वह थैले मे भर कर घर ले आई थी। सिलाई के थैले में से उसने 'सत्यकथा' का ताजा अंक तथा अपना चश्मा निकाला। कुर्सी पर पालथी लगाकर उसने सत्यकथा खोल ली।

रात को न जाने कितने बजे थे कि मुन्नो ने बारजे पर से नीचे लटक कर धीरे से पुकारा—जानकी ?—तो वह चौंक गई और जनानी चीखों वाले डाक-बंगले से उछल कर अपने दालान मे आ गई।

—साढ़े बारह बज गए, लच्छू अभी तक नही आए।

जानकी निरुत्तर रही। उसने 'सत्यकथा' बन्द करके बगल के डाइनिंग टेबुल पर रख दी, उठ कर सारी बत्तियां बुझाईं और ऊपर तिमले पर चली गई।

लक्ष्मण का हाल ही मे परिचय हुआ था जियालाल शर्मा से, जिसे सब पेश-कार साहब कहते थे। दुबला-पतला शरीर, छहफुटा कद, रंग पक्का। वह पहले एक सेशन जज के मातहत पेशकार था, मगर उसकी किस्मत ही खोटी थी। जिस सेशन जज का वह मातहत था, उसी जज की जाली दस्तखत बनाई, डेढ़ सौ रुपया घूस ले कर, फर्जी दस्तखत बनाने के अपराध में पकड़ा गया और नौकरी से निकाल बाहर किया गया। लोकोक्ति से भी करिया बाम्हन—गोरा सूद कभी सीधा नही होता। तब से वह होम्योपैथी करने लगा, ज्योतिष भी। बिन मांगे अपना कानूनी ज्ञान लोगो मे बांटा करता। ये तीनों लग जाएं तो तीर नही तुक्का ! रोज सुबह कचहरी खुलने के बाद वह कचहरी की प्रभात फेरी लगाता, अर्थात् कचहरी के बरामदो, वकीलो की सीटो के आसपास मंडराता दिखलाई देता। कानूनी चक्कर मे फंसा ऐसा व्यक्ति जो पांच रुपये वाला लंगडा-काना वकील भी नही कर सकता, पेशकार साहब के पास कानूनी सलाह मांगने चला

आता था। होम्योपैथी से इलाज करने में उसने काफी शोहरत हासिल कर ली थी। लक्ष्मण को पेशाब में जलन होने की तकलीफ थी। वह बुचुन के कहने से पेशकार साहब को दिखलाने आया तो पेशकार ने उसे बताया कि तुम्हे ल्यूकोरिया की शिकायत है। कभी सचित्र व्यावहारिक सेक्स नामक पुस्तक पास मे रखने के बावजूद लक्ष्मण क्या जाने कि ल्यूकोरिया क्या बला है! पेशकार साहब ने उसे महीनों मीठी-मीठी गोलियां खिलाई, निर्मूल्य। उससे कोई लाभ तो होना नहीं था और होम्योपैथी की गोलियो से हानि होती आज तक देखी नही गई! बाद मे जब लक्ष्मण को पता चला तो उसने पेशकार साहब को कुत्ता, चमार की औलाद वगैरह तमाम गालियां जानकी के आगन के बीचोबीच खड़े होकर लहरा दी बुचुन को कानून से क्या लेना-देना, वह तो यह सुन कर ही कि मुहल्ले मे पुलिस आयी है, अपने घर की निगोल छत पर चढ जाता था! कोई न कोई तकलीफ उसे हमेशा बनी रहती थी।—पेशकार साहब, आज हम कुछ टायर्ड फील कर रहे हैं। कोई गोली-वोली हो तो!—वह नकिया कर कहता। उसने लक्ष्मण को समझाया कि पेशकार साहब तुमसे मजाक कर रहे थे, दवा वह ठीक ही दे रहे थे।

एक रोज शाम और रात के बीच सुषमा को तीन बार दौरा पड़ा तो अगली सुबह जानकी लक्ष्मण को साथ ले कर सुषमा को पेशकार साहब के पास ले गई। राधे अहीर के घर के पास ढाल के नीचे वह रहता था, सांवले धोबी के घर के तीन मकान पहले।

जानकी इधर से जा रही थी, उधर से बुचुन ढाल उतर रहा था, राधे अहीर के यहां से दूध ले कर।

कहा जा रही हो जानकी?—उसने जानकी के पास आ कर खड़े होते हुए पूछा।

—अरे पेशकार साहब के यहा जा रहे हैं।—जानकी ने रुके बिना बुझी हुई आवाज मे उत्तर दिया।

—तो जल्दी करो, नही तो वह निकल जाएगे कचहरी।—बुचुन ने तीनों की पीठ की ओर देखते हुए ज़ोर से कहा।

पेशकार साहब घर पर था, बस, निकलने ही वाला था। उसने सुषमा की आखों की पलकें नीचे खीच कर देखीं, जीभ कढ़वा कर देखी फिर दवा की पेटी खोल कर दवा ढूंढने लगा।

—पेशकार साहब, दो लड़कियों के अलावा मेरे आगे-पीछे और कोई नही है।—कहते-कहते जानकी की आवाज भर्रा गई—अगर मेरी लड़की को कुछ हो गया तो बताइए, क्या मेरे मन को चैन रहेगी?

आप नाहक परेशान है, आपकी लड़की को कुछ हुआ ही नही है! पेशकार

साहब हंसने लगा।

—ऐसे ये क्रोध बहुत करती है, पेशकार साहब !—लक्ष्मण ने बतलाया।

पेशकार साहब ने लक्ष्मण की ओर गर्दन घुमा कर उसे देखा मगर पूछा जानकी से—और आपकी तबियत कैसी रहती है।

जानकी की आवाज और ज्यादा बुझ गई—अरे, अब मेरी जिंदगी में रह ही क्या गया है ! मैं हूं जिसे कि कहते हैं जिंदा लाश। बस, जिंदगी का छकड़ा घसीटे जा रही हूं किसी तरह !

पेशकार साहब के यहां से एक रोज की दवा लेकर वे लौटे तो बाजार में सनसनी फैली हुई थी। बछैयन उस्ताद और उसके पिछलग्गू लड़कों ने सब्जी वालों से एक-एक रुपया दैनिक फीस उगाहने के दौरान दो कुजड़ों की अच्छी-खासी पिटाई कर दी थी। बहती नाली में ईंट रख कर बांधे हुए पानी में नए आलू तथा मूली की मिट्टी धोता हुआ एक कुजड़ा अब भी बड़बड़ा रहा था—पुलिस वाला आता है, डंडा पटक-पटक कर रुपया-रुपया ले जाता है, उस्ताद आते हैं, रुपया-रुपया वसूल ले जाते हैं। सब इन लोगों को बांट दें तो फिर खाएं क्या और खिलाएं क्या !

उसी दिन लक्ष्मण अपना दरी-बिस्तर लपेट कर दक्षिण वाली छत पर चला गया इसलिए पहले की तरह उस रात इस बात को लेकर लड़कियों का उससे झगड़ा नहीं हो सकता था कि जानकी की खाट के एकदम बगल में लक्ष्मण की खाट हो या दीपा-सुषमा की।

रात को महीनों बाद दीपा ने बड़े लाड़ से पूछा—अम्मा मैं तुम्हारे पास चली आऊं ? तो जानकी उसे अपने सीने से चिपटा कर देर तक निःशब्द रोती रही।

पड़ोसी घरों के बर्तनों तथा गली-बाजार की सारी आवाजें सो गईं। दूर के किसी मुहल्ले में एक लाउडस्पीकर से एक फिल्मी गाना रात की हवा में उड़ कर इधर आ रहा था। जाग रहे थे आसमान में दूर-दूर तक छिटके हुए असंख्य तारे। जब रानी अम्मा स्वस्थ थीं और दो सीढ़ियां चढ़ सकती थीं, वह इसी छत पर सोती थीं। दोनों लड़कियां अपने मां-बाप के कमरे में सोना पसंद न करतीं, उसके अगल-बगल सोतीं।

अगल-बगल काई, बीच में मलाई !—बड़ी अम्मा हंस कर कहतीं। दोनों बहनों में कभी-कभी झगड़ा होता क्योंकि पीपल की तरफ दोनों में से कोई भी नहीं सोना चाहती थी दीपा को तो तब ठीक से बोलना भी नहीं आता था—बोली अम्मा, मैं बताऊं ? एक लही लिल्ली ! एक लहा बंदल ! तो बंदल हो गया लड्डू !—कह कर दीपा खुद ही खिलखिला कर हंस पड़ती। बड़ी अम्मा सप्तर्षि बालक ध्रुव—हिरण्यकश्यपु—रोहिणी—बृहस्पति की पौराणिक कहानियां सुना

सुना कर आकाश में उनके नाम के तारों को पहचनवाती। बड़ी अम्मा को न जाने कितने सौ भजन तथा गांव के गीत याद थे। बड़े सुरीले कंठ से वह उन्हें भी गाती थी। दोनों बहनों का बचपन तथा बचपन में सुनी हुई वे सारी कहानियां बहुत पहले ही खो गईं थी !

अंधेरे मे रेलगाड़ी के पहियो की हल्की-घड़-धड सुनाई दी अब वह पावर-हाउस के बगल वाले पुल पर से गुजर रही थी। दूर पर कही रेडियो बज रहा था और उसी के साथ इन्जन के ढीले पुर्जों की खडखड़, जैसे कि लोहे का कंकाल अंधेरे मे बेतहाशा दौडता जा रहा हो ! कब्रगाह के बगल वाली ऊची पुलिया पर गुजरती लम्बी घरघराहट, इजन की लम्बी सीटी, अब रेलगाड़ी नदी के लम्बे पुल पर घड-घड, घड-घड दौड रही थी !

दीपा हमेशा पूरे बिस्तर पर फैल कर सोती थी।

सुषमा दक्षिण वाली सीढियों पर बिल्ली की तरह दबे-पैर चढती गई, गाने की आवाज पासतर होती गई—कोई मेरी आखों से देखे तो समझे के तुम मेरे क्या हो।—सबसे ऊपर वाली सीढ़ी की सतह उस की आंखों की सीध से नीचे झुकी।

—तुम मेरे क्या हो।

जानकी की पीठ इस ओर थी। वह लक्ष्मण की खाट के पायताने दाहिनी कुहनी के बल अघलेटी बैठी थी।—माथे की बिंदिया के झिलमिल, तुम्ही मेरे हाथों के गजरों की—

लता के गाने के बीच—वाह अम्मा !—कहती हुई सुषमा छत पर आ गई।

उसके स्वर में असाधारण पुलक भरी हुई थी।—तुम्ही प्राण मेरे, तुम्ही आतमा हो—मैं दो घडी को रेडियो सुनने यहा चली आई।—जानकी की आवाज चढ गई—आखिर मुझे भी कोई इन्टरटेनमेन्ट चाहिए या नही !

—मैं सब जानती हूं कि यह सब क्या है ! दीपू ! दीपू—सुषमा की चीखती हुई पुकारें मुहल्ले के तमाम घरों के ऊपर दूर-दूर तक फैल गईं।—तुम्ही मेरे मंदिर तुम्ही मेरी पूजा, तुम्ही देवता हो, तुम्ही देवता हो। तुम्ही मेरे मंदिर—

दीपा उत्तर की छत से दक्षिण की छत पर बाद में पहुंची, मन्नो उससे पहले दो सीढिया चढ़ती हुई छत पर आ गई। मन्नो एक संत्रस्त, प्रताडित पशु की भांति हांफ रही थी। रेडियो पर अब भी फिल्मी गाना आ रहा था—पवन छेड़े सरगम, मैं लोरी सुना दूं—हुंउं हु हुऊं हुऊं ! बहुत रात बीती, चलो मैं सुला दूं, पवन छेड़े सरगम, मैं लोरी सुना दू।

सुषमा लक्ष्मण के नजदीक आ कर उंगली से ट्रांजिस्टर रेडियो की ओर

इशारा करते हुए ठंडे इस्पात जैसे स्वर में बोली—रेडियो बंद कर, बे !

लक्ष्मण ने रेडियो बंद करने के लिए हाथ बढ़ाया ही था कि दीपा उसके ऊपर टूट पड़ी और लगी उसे घूंसों से ताबड़तोड़ मारने, सिर-मुंह-कंधा-छाती जहां भी घूमा पड़ जाए !

मन्नो वहीं छत पर बैठ गई और अपना सिर दोनों घुटनों के बीच से झुका कर अपना माथा छत पर फट्-फट् पटकने लगी। फिर मन्नो, जानकी, सुषमा तथा दीपा एक साथ बुक्का फाड रो पड़े।

—अब मेरे कोई नहीं रह गया। सबका खून सफेद हो गया। मैंने जिसे दूध पिलाया उसका भी खून सफेद हो गया !—मन्नो रोते-रोते बोली—अब मैं इस घर में नहीं रहूंगी। मैं इसी रात को ही चली जाऊंगी। मैं कहीं भी जाऊं पर मैं अब इस घर में नहीं रहूंगी। जो धोती मैं पहने हूं वही धोती पहने मैं घर-घर बर्तन मांज लूंगी, भीख मांग कर पेट भर लूंगी मगर अब मैं इस घर में नहीं रहूंगी।

सुषमा तो गश खाकर गिर पड़ी थी। मन्नो लड़खड़ाती हुई उठी तो उसकी पतली काया जैसे खिंच कर और अधिक लम्बी हो गई। वह अब रो नहीं रही थी।

एक-एक सीढ़ी उतरते, अपना सिर बगल की दीवार पर खट्-खट् मारते हुए दो मंजिलों की सीढ़ियां तय कीं। अंधेरी पूजा की कोठरी से उसने कपड़े का अपना थैला उठाया वह सदर दरवाजे की कुंडी खोल ही रही थी कि जानकी ने पीछे से आ कर सांकल दोनों हाथों से कस कर पकड़ ली।

—कसम है जीजी, तुम्हें बाबू और लच्छू की !—वह अंधेरे में बोली—तुम्हारे रहने से मुझे बड़ा सहारा है। वह सहारा मैं खोना नहीं चाहती।

जानकी ने सुषमा का स्कूल छुड़ा दिया, इस डर से कि उसे न जाने कब-कहां दौरा पड़ जाए। घर ही में वह चलते-चलते, बैठे-बैठे गिर जाती थी और बीमारी को छिपाने के भी विचार से।

पेशकार साहब कभी कदा स्वयं चला आता, सुषमा को देखने के लिए। लक्ष्मण अपनी बैठक में उसे बैठा लेता। जानकी चाय बना कर ले आती। लेकिन पेशकार साहब की दवा से सुषमा को लाभ होता नहीं दिखलाई दे रहा था।

बुचुन भी हर दूसरे-तीसरे दिन हाल पूछने आ जाता। एक दिन उसने जानकी से कहा—जानकी, तुम मेरी बात मानो, तुम राधे पहलवान के पास सुषमा को ले जाओ। उसे झाड़-फूंक के फर्स्ट क्लास तरीके मालूम हैं। तुम राधे से मिलो। मेरे साथ तुम चलो, मैं राधे से तुम्हारी बात करा दूं। मैं चार बजे निकलता हूं दूध दुहाने के वास्ते।

जानकी ने अगले दिन स्कूल से आधे दिन की छुट्टी ली दीपा को भी उसने स्कूल न जाने दिया। दीपा को सुषमा की देख-भाल करने के लिए घर पर छोड़,

वह वुचुन के घर से राधे अहीर के यहां गई, बुचुन के साथ-साथ।

ढाल के ऊपर लकड़ी की टाल के सामने मैदान में राधे की आठ-नौ गाय-भैंस बंधी थीं। राधे ने एक गाय को दुहना पूरा किया और वही बाल्टी लेकर दूसरी गाय के नीचे बैठ गया। आगे पांच-छह ग्राहक अपने-अपने बर्तन चबूतरे पर रखकर अर्धवृत्त मे मुस्तैद खड़े थे।

राधे ने ग्राहक के बर्तनों मे नाप-नाप कर दूध डाला। बुचुन की छोटी बाल्टी में डालने के लिए नपना भरा तो बुचुन ने नकियाते हुए प्रतिवाद किया—पहलवान, सब फेन ही फेन डाल रहे हो!

राधे चिढ गया—बुचुन जी, जिस अहीर की गाय-भैंस बिना फन का दूध देती हो, कल से उसी के यहां से दूध लिया करो, मेरे यहा मत आना!

—अच्छा, जरा-सा घलुआ तो डालो।

राधे ने वही खाली नपना बुचुन की बाल्टी के ऊपर दो-तीन बार झटका तो तीन-चार बूद दूध उसकी बाल्टी में गिरा।

—ज़रा-सी शक्ति डाल दो?—बुचुन ने फिर नकियाते हुए दीन स्वर मे कहा।

राधे अपनी दूध की खाली बाल्टी मे से थोड़ा-सा फेन एक उंगली से करो कर बुचुन की बाल्टी मे छिड़कता हुआ बोला—अभी तुम्ही कह रहे थे कि फेन ही फेन नाप कर देता हूं!

दूध में फेन की शक्ती डलवा कर बुचुन सन्तुष्ट हो गया। धीरे से बोला—राधे उस्ताद, तुमसे ज़रा एक काम है। दो मिनट को सुन लो इधर!

—अभी मेरे पास टैम नही है। ग्राहक निबटा लूं फिर चाहे दो घटे अपनी कहानी सुनाना।—कहता हुआ वह बाल्टी लटकाए भैंसों की ओर बढ़ गया।

बुचुन ने जानकी को छपरैल के नीचे पड़ी एक खाट पर बैठा दिया था। बुचुन अपना एक हाथ कमर के पीछे ले जाकर दूसरी बांह को उससे पकड़े राधे के खाली होने का इन्तजार करता रहा। सभी ग्राहक चले गए तो वह बुचुन के पास आया। बुचुन और जानकी ने मिलकर उसे सुषमा का हाल सुनाया। राधे बोला कि वह दियाजले के बाद घर आकर बिटिया को देखेगा।

राधे रहा होगा 35-38 वर्ष का ठिगना-सा, मजबूत काठी का हंसमुख नौजवान। आठ बजे जानकी के घर झक धोती-कुर्ता पहने वह आया तो देखने मे अहीर लग ही नही रहा था!

बीच की छत पर आकर उसने इधर-उधर उड़ती-उड़ती नजर डाली फिर बोला—बिना एक की जान लिए यह घर दुरुस्त नही होगा। बुलाओ, कौन लड़की है।

जानकी ने सुषमा को ज़ोर ज़ोर से आवाज़ दी तो वह तथा दीपा कई बार

के बुलाने पर नीचे आई। आकर सुषमा ने राधे को हाथ जोड़ा तो वह सिटपिटा गया।

—यही है।—जानकी ने सुषमा की ओर ठोढ़ी हिलाकर इशारा दिया।

—ऐसे बैठ जाओ बिटिया!—राधे ने अपने सामने की जमीन पर हथेली रखी। सुषमा बैठ गई तो वह उसके सिर-माथे पर वही हथेली गोल-गोल फिराने लगा। सुषमा थिर निगाहों से उसके चेहरे की ओर देखे जा रही थी। राधे ने अपने कुर्ते की जेब से कागज की कई पुड़िया और माचिस निकाल कर जमीन पर रखी। फिर उसने अधजले उपले की मांग की तो जानकी एक उपला सुलगा कर ले आई। राधे के निर्देश के अनुसार लक्ष्मण ने छत के बीचोंबीच जलते हुए उपलों के ऊपर नए उपलों का छोटा-सा अलाव बना दिया। हरा-हरा धुआं उसमें से धीरे-धीरे उठने लगा।

राधे ने एक बार दीपा को देख कर कहा—उसे हटा दो।

सुषमा उड़ी-उड़ी निगाहों से कभी राधे को देखती, कभी उपलों के ढेर को।

—बिटिया के बाल काटने होंगे।—राधे जानकी से बोला।

जानकी चौंक गई—सारे बाल?

—हूं। कैंची हो तो मगाओ।

लक्ष्मण जानकी के कमरे से जो कैंची ले आया वह वही कैंची थी जिससे वह स्कूल के सिलाई क्लास में कपड़े काट कर लड़कियों को सिखाती थी।

—क्या बताऊं, और तो कोई कैंची घर में है नहीं! कहते हुए जानकी की आंखों में आंसू छलछला आए।

—मैं अपने बाल नहीं कटवाऊंगी अम्मा!—सुषमा ने खड़ी होकर जानकी के सामने ठुनकते हुए कहा।

—कटवा लो मुन्ना, तुम्हारी तबीयत अच्छी हो जाएगी। तुम्हारी तबीयत थोड़ी-सी भी खराब हो जाती है तो बेचैनी के मारे मैं रात-रात भर सो नहीं पाती। कटवा लो बबुआ!

—तो मैं अच्छी हो जाऊंगी न अम्मा!—सुषमा ने पूछा।

राधे ने दाहिनी चोटी मुट्ठी में पकड़कर एक बार में काटी तो खच्च की आवाज के साथ सुषमा ने दोनों आंखें मूंद लीं।

उपलों का ढेर ठीक से सुलग गया था। राधे ने बालों का कटा लच्छा उस पर फेंका तो चिड़-चिड़ के साथ तेज चिरांयध फैली।

सुषमा सिर झुकाकर चुपचाप बाल कटवाती रही। बीच-बीच में वह गर्दन सिकोड़कर हंसने लगती, जैसे छोटे बच्चे नाई से बाल कटवाते हुए गुदगुदी लगने पर करते हैं।

—अम्मा, अब कितने बचे?—उसने सिर झुकाए-झुकाए पूछा।

—बस ऐसे बहुत जरा-सी कसर रह गई है अब ऐसे।—लक्ष्मण ने उसके सिर को ताकते हुए जवाब दिया।

—मेरी सोने की बेटी! राख हो गई!—बुदबुदाते हुए जानकी के होठों का आकार बिगड़ गया।

सिर के सारे बाल कट जाने के बाद सुषमा की छोटी-सी खोपडी निकल आई। सत्रह वर्ष की वह औरत बनती लड़की बारह-तेरह साल के रूखे-सूखे लड़के-सी दिखलाई देने लगी।

बड़ी कैंची से काटने के कारण बाल बराबर से न कट पाए थे। अधकटे बालों के काले चकत्ते कान के पीछे तथा सिर के ऊपर रह गए थे।

राधे अहीर ने छत पर बिखरे बालों को दोनों हाथों से समेटा।

—आप लोग ज़रा परे हट जाइए!—कहते हुए उसने सारे बाल आग पर डाले तो आग में से फक्-से ऊंचा शरारा उठा।

वह दोनों हथेलियों को आपस में रगडने लगा।

फिर उसने एक पुडिया उठा कर खोली। उसमें काला तिल, हल्दी तथा गेरू का चूरा-सा था। जलते बालों की लपट बैठ जाने पर उसने चुटकी भर वह चूर्ण आग में डाला। लक्ष्मण और सुषमा को खांसियां आने लगीं। फिर जानकी को खांसी आई तो उसने आंचल उठाकर अपना मुंह-नाक ढक लिया।

—बेटा, ज़रा और आगे आओ!—राधे ने सुषमा के सिर पर हाथ रखकर उसे अलाव के ऊपर खींचना चाहा। सुषमा की गर्दन तन गई तो राधे ने लक्ष्मण को आवाज़ दी—गुरू, खड़े-खड़े तमाशा क्या देख रहे हो, ज़रा पीछे से ज़ोर लगाओ!

लक्ष्मण ने पीछे से सुषमा के दोनों कंधों पर अपनी हथेलियां जमाकर उसे आगे की ओर ठेला।

लेकिन वह छिटक कर पीछे की ओर गिरी तो उसके एक पैर की ठोकर जलते हुए उपलों के ढेर पर लगी, सारे उपले बिखर गए।

—बड़ी ताकत है ऐसे इस कुतिया के बदन में!—लक्ष्मण सुषमा की पीठ में घुटने से मारते हुए बोला।

राधे अहीर ने सुषमा को उठा कर बैठाने की कोशिश की लेकिन बीच में ही उसे छोड़ता बोला—ऐसे नहीं चलेगा। चारपाई है?

जानकी दीवार से चिपकी हुई खडी और अवाक् होकर सुषमा को देखती रही थी। उसे कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि उसकी आंखों के सामने यह हो क्या रहा है और ये लोग उसकी लड़की को कर क्या रहे हैं। उसे केवल इतना ही दिखलाई दे रहा था कि सुषमा के सारे बाल काट दिए गए हैं। वही सुषमा उसके आगे पीठ करके बैठ जाया करती थी—अम्मा, मेरी चोटी कर दो!

के बुलाने पर नीचे आई। आकर सुषमा ने राधे को हाथ जोड़ा तो वह सिटपिटा गया।

—यही है।—जानकी ने सुषमा की ओर ठोढ़ी हिलाकर इशारा दिया।

—ऐसे बैठ जाओ बिटिया!—राधे ने अपने सामने की ज़मीन पर हथेली रखी। सुषमा बैठ गई तो वह उसके सिर-माथे पर वही हथेली गोल-गोल फिराने लगा। सुषमा थिर निगाहों से उसके चेहरे की ओर देखे जा रही थी। राधे ने अपने कुर्ते की जेब से कागज़ की कई पुड़िया और माचिस निकाल कर ज़मीन पर रखी। फिर उसने अधजले उपले की मांग की तो जानकी एक उपला सुलगा कर ले आई। राधे के निर्देश के अनुसार लक्ष्मण ने छत के बीचोंबीच जलते हुए उपलों के ऊपर नए उपलों का छोटा-सा अलाव बना दिया। हरा-हरा धुंआ उसमें से धीरे-धीरे उठने लगा।

राधे ने एक बार दीपा को देख कर कहा—उसे हटा दो।

सुषमा उड़ी-उड़ी निगाहों से कभी राधे को देखती, कभी उपलों के ढेर को।

—बिटिया के बाल काटने होंगे।—राधे जानकी से बोला।

जानकी चौंक गई—सारे बाल ?

— हूं। कैंची हो तो मंगाओ।

लक्ष्मण जानकी के कमरे से जो कैंची ले आया वह वही कैंची थी जिससे वह स्कूल के सिलाई क्लास में कपड़े काट कर लड़कियों को सिखाती थी।

—क्या बताऊं, और तो कोई कैंची घर में है नहीं! कहते हुए जानकी की आंखों में आंसू छलछला आए।

—मैं अपने बाल नहीं कटवाऊंगी अम्मा!—सुषमा ने खड़ी होकर जानकी के सामने ठुनकते हुए कहा।

—कटवा लो मुन्ना, तुम्हारी तबीयत अच्छी हो जाएगी। तुम्हारी तबीयत थोड़ी-सी भी खराब हो जाती है तो बेचैनी के मारे मैं रात-रात भर सो नहीं पाती। कटवा लो बबुआ!

—तो मैं अच्छी हो जाऊंगी न अम्मा!—सुषमा ने पूछा।

राधे ने दाहिनी चोटी मुट्ठी में पकड़कर एक बार में काटी तो खच्च की आवाज़ के साथ सुषमा ने दोनों आंखें मूंद लीं।

उपलों का ढेर ठीक से सुलग गया था। राधे ने बालों का कटा लच्छा उस पर फेंका तो चिड़-चिड़ के साथ तेज़ चिरांयध फैली।

सुषमा सिर झुकाकर चुपचाप बाल कटवाती रही। बीच-बीच में वह गर्दन सिकोड़कर हंसने लगती, जैसे छोटे बच्चे नाई से बाल कटवाते हुए गुदगुदी लगने पर करते हैं।

—अम्मा, अब कितने बचे ?—उसने सिर झुकाए-झुकाए पूछा।

—बस ऐसे बहुत ज़रा-सी कसर रह गई है अब ऐसे।—लक्ष्मण ने उसके सिर को ताकते हुए जवाब दिया।

—मेरी सोने की बेटी! राख हो गई!—बुदबुदाते हुए जानकी के होठों का आकार बिगड़ गया।

सिर के सारे बाल कट जाने के बाद सुषमा की छोटी-सी खोपड़ी निकल आई। सत्रह वर्ष की वह औरत बनती लड़की बारह-तेरह साल के रूखे-सूखे लड़के-सी दिखलाई देने लगी।

बड़ी कैंची से काटने के कारण बाल बराबर से न कट पाए थे। अधकटे बालों के काले चकत्ते कान के पीछे तथा सिर के ऊपर रह गए थे।

राधे अहीर ने छत पर बिखरे बालों को दोनों हाथों से समेटा।

—आप लोग ज़रा परे हट जाइए!—कहते हुए उसने सारे बाल आग पर डाले तो आग में से फक-से ऊंचा शरारा उठा।

वह दोनों हथेलियों को आपस में रगड़ने लगा।

फिर उसने एक पुड़िया उठा कर खोली। उसमें काला तिल, हल्दी तथा गेरू का चूरा-सा था। जलते बालों की लपट बैठ जाने पर उसने चुटकी भर वह चूर्ण आग में डाला। लक्ष्मण और सुषमा को खांसियां आने लगीं। फिर जानकी को खांसी आई तो उसने आंचल उठाकर अपना मुंह-नाक ढक लिया।

—बेटा, ज़रा और आगे आओ!—राधे ने सुषमा के सिर पर हाथ रखकर उसे अलाव के ऊपर खींचना चाहा। सुषमा की गर्दन तन गई तो राधे ने लक्ष्मण को आवाज़ दी—गुरू, खड़े-खड़े तमाशा क्या देख रहे हो, ज़रा पीछे से ज़ोर लगाओ!

लक्ष्मण ने पीछे से सुषमा के दोनों कंधों पर अपनी हथेलियां जमाकर उसे आगे की ओर ठेला।

लेकिन वह छिटक कर पीछे की ओर गिरी तो उसके एक पैर की ठोकर जलते हुए उपलों के ढेर पर लगी, सारे उपले बिखर गए।

—बड़ी ताकत है ऐसे इस कुतिया के बदन में!—लक्ष्मण सुषमा की पीठ में घुटने से मारते हुए बोला।

राधे अहीर ने सुषमा को उठा कर बैठाने की कोशिश की लेकिन बीच में ही उसे छोड़ता बोला—ऐसे नहीं चलेगा। चारपाई है?

जानकी दीवार से चिपकी हुई खड़ी और अवाक होकर सुषमा को देखती रही थी। उसे कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि उसकी आंखों के सामने यह हो क्या रहा है और ये लोग उसकी लड़की को कर क्या रहे हैं। उसे केवल इतना ही दिखलाई दे रहा था कि सुषमा के सारे बाल काट दिए गए हैं। वही सुषमा उसके आगे पीठ करके बैठ जाया करती थी—अम्मा, मेरी चोटी कर दो!

लक्ष्मण दक्षिण वाले कमरे से खाट निकाल लाया। बहुत दिनों से इस्तेमाल मे न आने के कारण खाट बरर कर टेढ़ी हो गई थी।

राधे एक ताज़ा उपले से आग एक जगह पर समेट चुका था। उसने लक्ष्मण के हाथ से चारपाई लेकर आग के ठीक ऊपर बिछा दी।

राधे अहीर और लक्ष्मण को बहुत दम नहीं लगाना पड़ा, सुषमा को उस खाली खाट के ऊपर मुंह के बल गिरा कर उसे दबाए रखने में।

जानकी इसके पहले ही भाग गई, नीचे।

राधे अहीर ने खाट के नीचे फिर धूनी दी। सुषमा के दोनो कंधों के ऊपर हथेलियों के बल लदा हुआ था लक्ष्मण। सुषमा अविराम खांसने लगी।

—पानी! मुझे थोड़ा-सा पानी!—वह खांसियों के दौरे के बीच चेहरा एक बगल मोड़ते हुए चीखी—मुझे थोड़ा-सा पानी तो पिला दो! क्या मुझे मरते समय भी पानी नहीं मिलेगा!

—बस, ऐसे ही दबाए रहो!—राधे ने लक्ष्मण की ओर देख कर कहा।

—हीरालाल! हीरालाल!—उस रोज़ के बाद आज रानी अम्मा के मुंह से बोल फूटा—जानकी कलमुंही! मर्द को तो निगल गई, अब औलाद को भी खा जा! लेकिन मरते समय उसे एक चुल्लू पानी तो पिला दे! हीरालाल पन्नालाल, हीरालाल-पन्नालाल, हीरालाल-पन्नालाल!

मगर जानकी घर मे थी ही नहीं। वह इतना अधिक घबरा गई थी कि तेजी से सीढ़ियां उतर कर उसने पैरों मे चप्पल घसीटते हुए डाली और उतनी रात बाहर निकल गई। पैदल-पैदल गलियों से होकर पेशकार साहब के घर, उनसे सलाह करने। मन्नो अधअंधेरे ठाकुरद्वारे में ठाकुर की चौकी के सामने ज़मीन पर बैठी थी, गहरे सकते मे?

केवल नीचे की दालान में चालीस कैंडिल पावर का अकेला बल्ब जल रहा था। ऊपर आकाश तक अंधेरा था।

—यह मेरी मां नहीं है, मुझे इन लोगों से मरवाकर खतम कर देगी!—रात के अंधेरे में सफेद फुलझड़ी-सी चीखें छूटती रही सुषमा की—देखो-देखो, अम्मा मुंह मे तम्बाकू दबाकर खड़ी हैं। अरे बाप रे! कोई तो आकर मुझे बचा लो! क्या किसी को भी दया नहीं आती

पड़ोस के किसी घर से पुरुष-स्वर ने पूछा—कौन लड़की है जो इतनी रात को इस बुरी तरह रो रही है?—हरिहरबा का स्वर था।—दूसरा और कौन हो सकता है, वही जानकी की लड़की है सुषमा!—छत पर से वैं बछैयन ने जवाब दिया—जानकी का पर्दा तो फट गया। जानकी को शर्म नहीं आती तो क्या जानकी को डर भी नहीं लगता!

अंधेरी सीढ़ी पर खड़ी दीपा आंख गड़ाए हुए देर से देख रही थी, सुषमा

को मूंज की निखरारी खाट के ऊपर अपने दोनों पैर कुशल तैराक की तरह फड़फड़ाते हुए !

—दीदी तुम मर जाओ, मर जाओ ! तुम्हारे लिए मर जाना ही सबसे अच्छा है !—उसने सुषमा, लक्ष्मण और राधे अहीर को अधेरे में घूरते हुए बुदबुदा कर कहा और सीढ़ियां उतर गई।

सुषमा बेहोश हो गई होगी क्योंकि उसकी चीखें अचानक बन्द हो गईं।

मृत्यु का आशीर्वाद दे भर देने से किसी को वह शांतप्रदायिनी मुक्ति मिल नही जाती ! उससे पहले के कुछेक पल सबसे अधिक यंत्रणामय होते हैं जब विगत सारे दृश्य दूर घाटी मे बजती हुई घंटियो और बांसुरी की धुन के साथ दिखलाई देते हैं —चच्चू फूफा के यहां जनेऊ था। बड़ी गर्मी और मर्द-औरत-बच्चो की रेल-पेल थी। आगन के ऊपर लोहे के जंगले की पाटन थी। उसके ऊपर पीला तिरपाल तना हुआ था। केसरिया धूप मडवे के आगे रखे ताजा मंगल कलश पर पड रही थी। घर के द्वार के ठीक सामने एक हरा-भरा पेड़ था कटहल का, जिसके मोटे तने तक पर कांटेदार फलों के गुच्छे लटके हुए थे ! उसी के पके कोए खाकर हैजा हो गया था अम्मा को ! अम्मा को कितनी बार समझाया कि तुम पत्ता-तम्बाकू न खाया करो, कैंसर हो जाएगा तो हम दोनों का क्या होगा ! लेकिन वह—इस पर भी अम्मा पूछे जा रही है कि तुम्हें कौन-सा कष्ट है कि तुम रोए चली जा रही हो ! कितनी बार तो बताया कि तुम पूरब की ओर का दरवाजा न बद किया करो क्योंकि उधर से पड़ोसियों को तो दिखना बंद हो जाता है पर अन्दर ही सब नंगा हो जाता है···

राधे अहीर ने महीनों आकर झाड़-फूक की परन्तु उससे कोई फायदा न हुआ। सुषमा की दाहिनी आख के नीचे की हड्डी पर घाव का निशान पड़ गया था, पोर बराबर लम्बा।

बेचारे राधे के साथ ही इस बीच एक दुर्घटना हो गई ! उसकी औरत घर से भाग गई या उसे कोई भगा ले गया। इसकी जानकारी उसके यहा से दूध लेने वाले बुचुन आदि ग्राहकों को भी न हो पाई थी। वह तो सरस्वती सदन पुस्तकालय मे अखबार पढने वाले मुहल्ले के लोगों की नजर गुमशुदा की तलाश शीर्षक के नीचे छपे फोटो पर गई तो उन्होने आगे पढ़ा— मेरी धर्मपत्नी श्रीमती जमना देवी यादव, उम्र अट्ठाइस वर्ष, रंग सांवला, भोली और सीधी-सादी है। गत बाइस अक्तूबर से लापता है। खबर करने वाले या पहुंचाने वाले को उचित पुरस्कार के साथ-साथ एक भैंस भी इनाम में दी जाएगी।—भवदीय राधेराम यादव।

—अगर राधे की भैंस खो गई होती तो राधे अखबार में छपवाते कि खबर करने वाले या पहुंचाने वाले को उचित इनाम के साथ मेरी धर्मपत्नी प्रदान की

जाएगी !—एक ने यह खबर दूसरे को पढ़कर सुनाने के बाद खिस खिस हंसते हुए कहा।

हरिहरचा के घर और जानकी के घर के बीच की दीवार एक ही थी। वह पडोस में रोज रोज रोना फोना सुनता। उसने जानकी को बुलाकर समझाया कि लडकी को डाक्टर बच्चालाल के पास ले जाकर दिखलाओ और कायदे से उससे इलाज कराओ। डाक्टर बच्चालाल हरिहरचा का फैमिली डाक्टर भी था।

डाक्टर बच्चालाल का नाम सुनते ही लक्ष्मण को जैसे पलीता लग गया!

—वह हरामजादा कुत्ता बच्चा कोडियाला ऐसे सिर्फ रंडीबाजों की ऐसे गर्मी सुजाक का ही ऐसे इलाज करता है। उसी का इलाज करने लायक भी है!

डाक्टर बच्चालाल के बारे मे यह चर्चा बहुत दिनों से सुनाई दे रही थी कि जल्द ही वह फारेन जाने वाला है।—कहां भइया, डाक्टर बच्चालाल कहां जा रहे हैं?—अबूढबी भाई अबूढबी!—यह ससुर अबूढबी है कहां?…है कहां? अरे, फौरेन में है!—यहां भी डाक्टर बच्चालाल की प्रैक्टिस बस यों ही थी। फिर सब एक दूसरे को बताने लगे कि डाक्टर बच्चालाल का पासपोर्ट बनकर आ गया है। वहां हर महीने बीस हजार रुपया बराबर तनखाह मिलेगी। नौकर चाकर बंगला मोटर मुफ्त में। मोटर तो वहां भंगी जमादार के पास भी है क्योंकि पेट्रोल का दाम थोड़े ही देना पडता है!

लक्ष्मण के चिल्लाने के बावजूद जानकी सुषमा को लेकर डाक्टर बच्चालाल के पास पहुंची। उसने जानकी को साफ साफ बता दिया कि सुषमा को मिर्गी है, दवा खानी होगी, सात छह माह लगातार, तब कहीं लाभ होगा।

सुषमा तो पहले ही समझ गई थी कि उसे क्या रोग लग गया है। दो तीन माह में वह बहुत दुबली हो गई थी। कंधे से लेकर कलाई तक एक सी पतली बाहें। शलवार कुर्ता पहनती तो सूखे सूखे शरीर में उसका पेट ऐसा दिखलाई देता जैसे बारह तेरह साल की बच्ची को चार पांच माह का गर्भ हो। चेहरे और कुहनियों पर घावों के निशान पड़ गए थे। सिर पर की खाल बाल बढ जाने के कारण भांई की तरह काली हो गई थी।

रात साढे आठ-नौ का समय रहा होगा। वह अपना-दीपा का बिस्तर फैला कर उस पर पडी-पड़ी सोच रही थी। रार-रंजिश के कारण रात खाना नहीं बना था। थोडी ही देर पहले जानकी छज्जे पर खडी हो चिल्ला-चिल्ला कर कह रही थी—तुम्हीं लोगो के लिए मैं मरती रहती हू दिन-दिन भर! इतना कोई भी दूसरी मा नहीं कर सकती।

दोनो लड़कियां भूखी थीं। दीपा दक्षिण वाले कमरे के फर्श पर ही दरी डाल कर बिना रोशनी जलाए सो गई। मुहल्ले-नाते-रिश्ते का कोई नहीं है। सब अपने अपने घर में खा-पी कर आराम से रेडियो सुन रहे होंगे। भगवान कुत्ता-बिल्ली

को भी चाहे भूखे पेट उठाये लेकिन खाली पेट सुलाता नही !

न दीपा ने कहा न सुषमा ने कि अम्मा भूख लगी है, एक-दूसरे से भी नही कहा क्योंकि दोनों के मन में डर था कि कहूंगी तो जानकी इसी बात को लेकर फिर चिल्ला-चिल्ला कर अपना किया हुआ सुनाने लगेगी।

मैं यहां नही रहना चाहती। मैं इस औरत से दूर होना चाहती हूं। क्यों यह मुझे दिन में तीन-तीन बार रुलाती है। अगर अपने को इससे बचाऊंगी नही तो यह जानती है कि मुझे रोग लग चुका है, यह मुझे इसी तरह थोडा-थोडा करके पूरा खा जाएगी। आसपास कोई भी एक आदमी ऐसा व्यक्ति नही है जो इस औरत से मेरी जान बख्श देने को कह दे। मैं पढ-लिख कर लायक बन जाऊं तो इससे छूटकर बच निकल सकती हूं। अगर मैं कमाने-खाने लायक न बन सकी तो यह अपने अन्न के बल पर मुझे गुलाम की तरह अपने कब्जे में रखेगी। मैं दीपू को भी छोड़ दूंगी और केवल अपनी जान बचाऊंगी। अगर मैंने अपनी सारी ताकत जिन्दा रहने में ही खर्च कर दी तो लायक बनने के लिए मेरे पास क्या बच रहेगा ! पर मेरे लिए ज़िंदा रह जाना भी बहुत है, मैं कम से कम ज़िंदा तो रह लूंगी। कोई ऐसा भी नही जो मेरा ठीक से इलाज करवा कर मेरी बीमारी दूर कर दे। किराये का कमरा-कोठरी ले कर मैं और दीपा रह सकते हैं लेकिन किराया कहां से भरेंगे ? और खाने-कपड़े का खर्चा कहां से पूरा होगा ? फीस माफ भी हो गई तो किताब कापी के पैसे कहा से आएगे ? और अलग रहने वाली दो लडकियां तो मार कर फेंक दी जाएंगी ! क्यो, कोई ऐसा घर-परिवार नहीं हो सकता जो हम दोनों बहिनों को अपने पास रख ले ? हम उनका घर का सब काम कर दिया करेंगी। फिर अपने पैरों पर खड़ी होने लायक हो जाएगी तो अपना इन्तजाम खुद कर लेंगी। फिर अपनी-अपनी राह चली जाएगी— उसकी आंखों से आंसू ढुलक ढुलककर तकिए को भिगोते रहे।

दीवाली को थोड़े ही दिन रह गए थे। लक्ष्मी-गणेश की मूर्तियां बिकने लगी थी और सडक के दोनो ओर चादरों के ऊपर धान के लावे के सफेद छोटे-छोटे पहाड़ों की कतारें लग गई थी। धनतेरस के दिन जानकी बाजार से लक्ष्मी-गणेश की जोड़ी ले आई और स्टेनलेस स्टील की कटोरी-चम्मच। सारे घर के जाले साफ किए गए, धुलाई की गई। रानी अम्मा को खाट समेत उठा कर आंगन में ले आए लक्ष्मण, जानकी और दीपा। गरम पानी से रानी अम्मा का सिर रेठे से धोया गया। उसने पिछली दीवाली के बाद उस रोज नीला आकाश देखा तो खुशी के मारे वह आंखें मीच कर चुपचाप रोने लगी।

धनतेरस की शाम बुचुन जानकी के यहा आया, सबका हाल-चाल पूछने। बैसाखियों पर उचकता हुआ ! खुद उसका ही हाल बुरा था। पैंसठ पार कर गया था। पंद्रह दिन पहले सब्जी मंडी में एक बौराए सांड ने उसे पटक दिया, कूल्हे की

हड्डी चटक गई। दोष सांड़ का नहीं, बुचुन की लापरवाही थी। वह दूर-पास कोई भी जगह क्यों न हो, अपनी अर्धांगिनी अर्थात साइकिल पर चढ़ कर ही जाता था। अर्धांगिनी की सवारी करते समय तो वह पाजामे के दोनों पायंचों को पैर पर लपेट कर ऊपर से क्लिपें मढता ही था, पैदल चलते समय भी उन क्लिपों को नहीं निकालता था। उस रोज सब्जी बाजार में टहलने वाले सांड़ों में से एक ने कुंजड़े की सब्जी में मुंह मारा ही था कि कुंजड़े ने सांड के पीछे दौड़ कर उस की पूंछ पकड़ी और तीन-चार थापी उसमें भर दी! सुस्त सांड़ में इससे वीर रस भर गया! वह सिर झुका भीड़ को दाएं-बाएं सींगों से हुरपेटता, टोकरियों को खूंदता कवायद करने लगा। एक रेड़ी को ठोकर मार कर पलट गया। बदकिस्मती से बुचुन अपना खाली थैला अपने चूतड़ों के पीछे दोनों हाथों से लटकाए हुए दोनों आंखों से ताजा और सस्ती सब्जी टटोलता हुआ धीरे-धीरे रेंग रहा था। पैरों की क्लिपें उसने उतार दी थी। सो जाने कैसे उसके पाजामे का एक पैर बदहवास सांड़ के एक सींग से उलझ गया! पचासों गज तक सिर के बल जमीन पर घसिटता चला गया वह बेचारा बुचुन पैराशूट की तरह! बस यह कहो कि जान बच गई उसकी, विमला चाची ने देवी जी को भोग लगाया। पेशकार साहब उसे देखने के लिए अस्पताल गया।

दालान के तख्त पर बैठ कर बैसाखियां अगल-बगल टिकाते हुए वह बोला—बहुत दिनों से तुम लोगों को देखा नहीं था, मैंने कहा कि त्योहार का दिन है, चलो सबकी खोजखबर ले आऊं।

—नाहक आए बुचुन्वा तुम!—जानकी ने बुझी हुई आवाज में उसका स्वागत किया—तुम खुद ही कजी हो, कहीं फिर गिर-पड़ गए तो उल्टी परेशानी होगी सबको। मैंने चाची से मना कर दिया था कि तुम्हें आने न दें। मेरा हाल-चाल क्या, बस घसीटे जा रही हूं जिन्दगी किसी तरह!

—फिर भी तुम लोगों के पास आना कर्तव्य था मेरा। बेटी सबसे बड़ी चीज कर्तव्य है और उसके बाद है आदमी की बुद्धी!—बुचुन ने लम्बी बात कहने के मूड में लम्बी सांस भरी। उसकी आवाज जानकी की आवाज की तरह चढ़ गई।

लेकिन जानकी ने उसे टोक दिया—यह सब मुझे सुनाने की जरूरत नहीं है बुचुन्वा! तुम जब आते हो तो यही कहते हो!

बुचुन हतप्रभ हो कर रह गया। नाक के एक छेद में उंगली डाल कर मैल टटोलने लगा। बुचुन नाक से उंगली निकालकर उसे चौकी के नीचे की पाटी से पोंछता हुआ फिर बोला—तुम्हें यहां कष्ट है तो तुम छोड़ो सबको और आकर रहो मेरे घर!

—अरे बुचुन्वा कैसी अनर्गल बातें करते हो! घर है, लड़कियां हैं, कैसे छोड़ दूं सब को!

लक्ष्मण अपनी वद बैठक में वाल्यूम फुल कर ट्रांजिस्टर बजा रहा था। उस समय उस पर कोई ड्रामा आ रहा था। सुई ठीक से स्टेशन पर न थी और वाल्यूम इतना ऊंचा था कि फटे हुए नगाड़े को पीटने सी आवाज़ ही उसमे से निकल रही थी। बीच में ड्रामे की एक पात्र के खिलखिला कर हंसने का स्वर उन्मत्त अट्टहास-सा सुनाई दिया।

तभी सुषमा तेज़ी से सीढ़ियां उतर कर जानकी-वुचुन के सामने से होकर गुज़री। वह अपने एक हाथ मे स्कूल का भरा हुआ थैला लटकाए हुए थी। सुषमा गलियारे की ड्योढ़ी तक पहुंची ही थी कि जानकी ने ड्रामे की आवाज़ से ऊपर चीखते हुए उससे पूछा—कहां जा रही हो तुम?

—मैं अब इस घर में नही रहूंगी।

वुचुन ने भी चिल्ला कर सुषमा को आवाज़ दी लेकिन तब तक वह सपाटे के साथ दरवाज़े के बाहर निकल चुकी थी!

जानकी एकाएक व्यग्र हो गई। वह दालान के सिरे पर खड़ी हो मुंह ऊपर कर के दीपा को ज़ोर-ज़ोर से पुकारने लगी। दीपा नीचे आई तो जानकी ने उस से पूछा।

—तो इतना परेशान क्यों हो रही हो? दीपा के स्वर में लापरवाही थी—हमे एक न एक दिन तो यहां से जाना ही है। मर कर निकलने से तो अच्छा कि जीते-जी चली जाएं। तुम भी मन से तो यही चाहती हो न!

जानकी मुंह बिगाड़ कर ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी—मेरी सुषमा को कुछ हो गया तो मैं क्या करूंगी!

—अभी से स्यापा न बैठाओ दीदी के नाम, एक-आध-दिन ठहर जाओ, फिर खूब जी भर कर रो लेना!—दीपा ने उपेक्षा के साथ कहा और ऊपर की सीढ़ियां चढ़ने लगी।

—वास्तव में मेरी समझ में कुछ नही आता! यह एक नई परेशानी आ गई मेरे सिर! परेशान तो मैं पहले से थी ही! अब मैं इन्हे ढूंढने चलूं।

—नही सुषमा ने यह बड़ी गलत हरकत की! ऐन त्यौहार के पहले!—वुचुन बोला।

—दिवाली तो नस्ट हो गई! जानकी ने उत्तर दिया।

—तुम पेशकार साहब से पूछो। उन्हें ज्योतिष का फर्स्ट क्लास ज्ञान है, वह बता देंगे कि सुषमा को आये दिन ऐसा क्यों हो जाता है!

जानकी पेशकार साहब के पास नही गई, पड़ोस के घरों मे जा कर उसने दरियाफ्त किया। फिर लक्ष्मण को साइकिल से सिविल लाइन्स वाले चतुर्वेदी के यहां भेजा क्योंकि उसकी लड़की सुषमा की सहेली थी। फिर खुद डाकघर जाकर वहां से अपने स्कूल की प्रिंसिपल मिसेज मेन्सी के घर फोन करके पूछा क्योंकि

सुषमा पिछले कई दिनों से कह रही थी कि वह स्कूल की पढ़ाई शुरू करना चाहती है और हाई स्कूल की आगामी परीक्षा में बैठना चाहती है।

बाज़ार में रिक्शा, साइकिल स्कूटर तथा पैदल आने-जाने वालों की इतनी ज़्यादा भीड़ थी कि वे मुश्किल से रेंगते हुए आगे बढ़ पा रहे थे। दुकानदारों ने पटरे लगा कर दुकानें आगे फैला ली थीं। ऊपर से फुटपाथ पर के कुंजड़े अपनी-अपनी टोकरियां-टाट ले कर दो कदम और आगे खिसक आए थे अतः पतली सड़क और अधिक सकरी हो गई।

चींटियों के झुण्डों-जैसी भीड़ को पार कर रही काले सलवार-कुर्ता और सफ़ेद दुपट्टे में सत्रह-अठारह साल की एक मरियल सी गंजी लड़की की ओर किसी का ध्यान भी न गया होगा।

वह सोच रही थी मगर तय नहीं कर पा रही थी कि वह कहां जाए। उसके मन में इस का भी डर था कि यदि सड़क पर उसे दौरा पड़ा तो! तमाम रिश्तेदार तथा उनके घर थे लेकिन वहां जानकी बड़ी आसानी से उसे खोज निकाल सकती थी। एक कालिंदी का घर ऐसा था—तभी एक सफ़ेद फूल आ कर उसके सीने पर लगा और उसके दुपट्टे में उलझ कर रह गया। उसने सिर झुका कर देखा। नहीं, वह फूल नहीं खुला हुआ निरोध था! किसी का ध्यान उसकी ओर नहीं गया था, उसने दुपट्टे को झटका दे कर उसे नीचे गिरा दिया।

एक कालिंदी ही का घर उसे निरापद लगा। कालिंदी किसी रिश्तेदार के घर कभी नहीं जाता, रिश्तेदार भी उसकी खर बोली के कारण उसके यहां झांकते तक न थे। फोटोग्राफ़ी का धन्धा छूट जाने के बाद वह न जाने क्या करता था, न जाने कैसे गृहस्थी चलाता था, किसी को ठीक ठीक पता नहीं। तांबे-पीतल के पुराने बड़े-बड़े गगरे-सागर एक-एक कर कम होते जा रहे थे। लम्बी ढाल के नीचे मुसलमानी बस्ती में उसका घर था।

रात नौ बजे सुषमा ने कालिंदी के बंद दरवाज़े की कुंडी पीटी तो कालिंदी लालटेन लटकाए हुए दरवाज़ा खोलने आया। वह इधर हर तरफ़ से एकदम लापरवाह हो गया था। उसने इतनी रात को आई जवान लड़की से न यह पूछा कि उसके घर में सब खैर तो है और न यह कि वह किस प्रयोजन से आई है।

सुषमा को कालिंदी बाबा से ज़्यादा अच्छी लगती थीं बिट्टो दादी, बहुत अच्छी! वह अत्यधिक नाटी थीं, लगभग बौनी। कमर ड्योढ़ी कर फुर्ती से चलतीं तो देखने वाले को हंसी आए बिना न रहती। डायबिटिज़ के कारण उनकी बायीं आंख बहुत पहले सड़ गई थी तो उस आंख की जगह कांच की गोली लगवा दी गई थी, बहुत पहले। एक बार उन्होंने अपनी वह नकली आंख बाहर निकाल ली और अपनी हथेली पर रख कर दीपा-सुषमा को दिखाई तो दोनों बहुत डर गईं। अब तो खैर, उनकी दूसरी आंख भी करीब-करीब अंधी हो चुकी थी।

लेकिन मसखरी उनकी गई न थी। पोपला मुंह चुमला-चुमला कर वह हंसी-ठिठोली करती तो यह पता ही न चलने पाता कि उनकी कौन-सी आंख कांच की है और कौन-सी असली मगर प्रायः अंधी। एक कालिंदी बाबा से उन्हें बोलते-बात करते उसने कभी नही देखा।

हां, एक और बार वह डर गई थी। अभी पांच-छह माह पहले एक रोज दीपा ने सुषमा से कहा, चलो बिट्टो दादी के यहा चला जाए बड़ा मजा आयेगा। दोनों बहनें उनके यहां पहुची तो बाहर का दरवाजा चौपल्ला खुला पडा था और सामने की ठाकुर वाली दालान मे कालिंदी बाबा-बिट्टो दादी में न जाने किस बात को ले कर जोर की लडाई ठनी हुई थी। बाबा ने कहा कि अपनी लडकी को तुम्ही खा गई हो नरभक्षिन! — तो दादी ने जर्मन सिलवर का लोटा घुमा कर मारा। लोटा लगा बाबा के पैर की हड्डी पर तो वह अपने उस पैर को दोनों हाथों से उठा कर फिरकी की तरह नाचने लगे!

सुषमा-दीपा इतना अधिक डर गईं कि दरवाजे ही से उल्टे पैर भाग आईं!

—अरे सुषमा, यह सिर के बाल क्यो कटवा डाले!—सुषमा के गायब बालों की ओर अधअंधी बिट्टो का ध्यान काफी देर बाद गया।

सुषमा को हर मुलाकाती के इस प्रश्न का सामना करना पडता। अब तो उसके सिर पर छितरे-छितरे बाल निकल आए थे और वह एक दमचोर लड़के-सी दिखाई देने लगी थी।

कालिंदी लालटेन के नीचे ज़मीन पर 'नवनीत' का बरसों पुराना अंक खोल कर टूटे चश्मे का मोटा कांच चुटकी से एक आख के आगे पकड़े हुए उस पर झुका हुआ था। उसके गालों पर सफेद-सफेद खूटिया चमक रही थी।

—अम्मा ने कटवा दिए।—सुषमा ने फीकी मुस्कान चेहरे पर लाते हुए कहा—दादी, अगर मेरे हाथ-पैर जोर-जोर से कांपने लगें तो तुम या बाबा मुझे पकड़ कर ज़मीन पर बैठा देना, अच्छा?

कालिंदी ने कमर सीधी करते हुए ध्यान से सुषमा के चेहरे की ओर देखा।

—बाबा, आज रात भर मैं तुम्हारे घर में रह सकती हूं?

कालिंदी वैसे ही उसे ताकता रहा। उत्तर बिट्टो ने दिया—बेटा, हम दो जनों के दो बिस्तरो के अलावा तीसरा बिस्तर है कहां घर मे!

सुषमा को लगा कि बिट्टो दादी उसे अपने घर न टिकाने का बहाना बना रही है।

—दादी, मैं अपने लिए एक तकिया-एक चादर साथ ले आई हूं।—सुषमा हंसते हुए बोली—फिर कल मैं अम्मा के घर लौट जाऊंगी क्योंकि जाना तो मुझे वही पड़ेगा। उसके अलावा दूसरा ठिकाना ही नहीं है मेरे पास रहने को।

कालिंदी के मुंह से जानकी के नाम के साथ बड़ी गदी गाली निकली तो

सुषमा हक्का-बक्का रह गई।

कालिंदी उठ कर खड़ा हो गया और टहल-टहलकर दालान में चक्कर लगाने लगा। एक काली छाया भी दीवार और छत पर डोलने लगी, डरावनी !

वे दोनो बूढ़े थे। सझवाती के साथ ब्यारी कर लेते थे।

बचे हुए ठंडे परांठे, नींबू का अचार और छोटे-छोटे नए आलू-बैंगन की सोवा पड़ी सब्जी सुषमा को मिली। वह भोजन बहुत ही अधिक स्वादिष्ट लगा उसे ! पेट ही नही, उसका मन भी तृप्त हो गया। खाते-खाते उसने अपने मन में एक बार इतना जरूर कहा, अम्मा ! तुमने हमें ठीक से खाना ही दे दिया होता !

कालिंदी उसे चुपचाप खाते ध्यान से देखता रहा।

—बेटा एक बात पूछता हूं, सच-सच बताना।—कालिंदी एकाएक बोला—तुमने अपनी आंखो से कुछ देखा तो नही है ?

सुषमा कालिंदी की आंखों मे एकटक घूरने लगी। धीरे-धीरे उसकी आँखो में तरलता जमा होने लगी।

बिद्दो ने पति को झिड़क दिया —शरम नही आती तुम्हें, छोटी-सी लड़की से ऐसी बात पूछते !

सुषमा ने इन्कारी मे सिर हिलाया तो कई बूद आसू एक साथ ढुलक कर थाली में गिर गए।

कालिंदी अपने प्रश्न पर स्वय ही अप्रतिभ हो गया। वह दूसरी बात करने लगा।

बिद्दो ने एक पुराना मोटा कम्बल और अपनी एक धोती निकालकर सुषमा को दे दी। उसने उसे कम्बल के साथ साट लिया।

तबले-हारमोनियम के साथ कव्वाली का गाना रात के अंधेरे में हवा की लहरों के साथ उठता-गिरता आ रहा था—मेरी जिन्दगी क सवाल है, तेरि एक निगाह, तेरि एक निगाह की बात है—वह भागती पड़ी थी। उसने सोचा कि जिस मस्जिद से कव्वाली का यह गाना आ रहा है वह मस्जिद रात के समय पास खिसक कर आ रही है। मस्जिदों से अजान की बारीक पुकारें भी सुबह-शाम ऐसे ही उठती हैं। काफी देर तक सुनते रहने के बाद कौवाली उसके अपने घर के पास के मदिर मे होने वाले अखंड कीर्तन-सी लगने लगी।

सुषमा अगले दिन अपने घर नहीं लौटी। शाम को कालिंदी से मिलने आया शंभू ओझा। न जाने कैसे जानकी को गंध लग गई कि सुषमा कालिंदी के यहा है।-या केवल अनुमान से। उसी ने शंभू ओझा को कालिंदी के पास भेजा होगा।

शंभू ओझा पहले तो देर तक अपनी नेतागिरी के किस्से बखानता रहा, फलां मंत्री ने अपनी लडकी की शादी में अतिथियों का स्वागत करने की जिम्मेदारी शंभू ओझा पर डाल दी थी, फलां उपमंत्री ने कहा कि ओझा जी मुख्यमंत्री आपको

बहुत मानते हैं, आप उनसे मेरा एक काम करवा दीजिए। अपने परिचित प्रसिद्ध व्यक्तियों के नामों की बीट करते रहने के बाद वह जिस काम से कालिंदी के पास भेजा गया था, उस बात पर आया।

—देखो कालिंदी, यह तुम्हारे जाति-बिरादरी के ही नहीं, पूरे समाज की बदनामी का सवाल है। सत्रह-अठारह साल की कुंवारी लड़की का अपने घर से—

कालिंदी ने उसकी बात काट दी—मैं सुषमा को भाग कर ले आया हूं क्या, नेताजी? आप खुशी से ले जाइए उसे अपने साथ। जानकी की गोद में सुला दीजिए या काट कर बहा दीजिए यमुनाजी में, मुझे क्या!

कालिंदी न जाने क्यों हर एक के साथ दिनों-दिन कटु होता जा रहा था।

—कालिंदी बाबू, वह एक बेवा औरत है। आगे-पीछे दो लड़कियां ही हैं। जिन्दगी के जो दस-पांच बरस बचे हैं, इन्हीं दोनों लड़कियों को देखते हुए बिता देगी। लड़कियां भी पास में न रह जाएंगी तो फिर उसके पास रह क्या जाएगा।

—जिस रांड़ के आगे-पीछे दो लड़कियां ही हो वह उन लड़कियों के साथ ऐसा सलूक नहीं करती। मुहल्ले वाले सब देखते नहीं है क्या, कि घर के बाहर-भीतर कैसी लीला रचाती हैं जानकीजी! औरत और खेत खाली कभी नहीं रह सकती नेताजी! फसल न उगाओ तो झाड़-झंखाड़ पैदाकर के रख देती है ज़मीन! औरत भी। इसीलिए धरती और मादा को एक बराबर कहा गया है!

—अरे! भोली मूर्ख औरत है!

कालिंदी कुछ सोचने लगा।

—भोली और मूर्ख नहीं है नेताजी, उसके मन में कुछ है!—कालिंदी बोला—एक अच्छी-भली लडकी को जन्मभर के लिए अपाहिज करके रख दिया। मैं सुषमा से यहां से चली जाने के लिए नहीं कहूंगा। एक बिना बाप की लड़की की हत्या मैं अपने सिर नहीं लेना चाहता। वह अपनी मर्जी से जाना चाहे, खुशी से जा सकती है।

कालिंदी ने सुषमा को आवाज दी।

—सुषमा बेटी, तुम चलो अपने घर! —सुषमा आई तो शंभू ओझा ने बड़े लाड भरे स्वर मे कहा—यह देखो, मैं तुम्हें लिवाने आया हूं। तुम्हारी अम्मा ने कल से खाया-पिया नहीं है।

—मैं अम्मा के साथ नहीं रहूंगी। अगर बाबा मुझे अपने यहां नहीं रहने देते तो मैं दूसरी जगह चली जाऊंगी पर मैं अम्मा के पास नहीं रहूंगी।

—देखो, तुम्हे समझना चाहिए कि तुम लड़की हो। तुम्हारे एक कार्य का असर सारे परिवार, सारे समाज पर पड़ता है।

सुषमा निरुत्तर रही। उसने शंभू ओझा के कहने का शायद अर्थ ही नहीं समझा।

—तुम्हारी अम्मा ज्यादा दिन जीने वाली नहीं हैं। जब वह न रह जाएंगी तब तुम्हें मन मे पश्चाताप होगा कि मैंने अपनी अम्मा की अवहेलना की।

वह फिर भी चुप रही।

—अगर तुम्हारी अम्मा से कोई भूल हो गई हो तो यह लो में तुम्हारा पैर छू कर माफी मागता हूं ! —शंभूओझा ने झुकर अपने से एक तिहाई उम्र की लड़की का पैर छू लिया।

सुषमा की आखें पथराई-सी रही।

इस से तीसरी शाम बुचुन बैसाखी पर उचकता हुआ कानिंदी के घर आया। बिद्दो रसोई में रात का खाना बना रही थी। सुषमा ने सब्जी काट कर रख दी थी, अगीठी जला दी थी और आटा गूंध दिया था। बिद्दो तेल मे मसाला भून रही थी। बुचुन ने गलियारा-दालान आगन पार करके रसोई के बीच वाले जंगले के आगे खड़े हो कर पूछा—कालिंदी नहीं हैं क्या ?—तो बिद्दो—सुषमा चौंक गईं।

कह दो बाजार गए हैं ! —बिद्दो ने नजर फेरते हुए कहा।

सुषमा डर गई। वह समझ गई कि बुचुन उससे वापस घर जाने को कहने के लिए ही आया है।

—तीन-चार दिन हो गए,—वह बैसाखी के सहारे खड़ा-खड़ा जंगले के दो छडों के बीच मुह लगाते हुए बोला—जानकी परेशान है, हम सब लोग परेशान हैं। आखिर यह लड़की कब तक घर से बाहर रहना चाहती है ? कितनी बदनामी हो रही है जानकी की !

—सुषमा, इनसे कह तो कि बाहर बैठक मे जाकर बैठ जाएं। तुम्हारे बाबा आए तो उनसे बात करें। —बुचुन रिश्ते में बिद्दो का कुछ लगता था अत. वह बुचुन से पर्दा करती थी।

बुचुन को क्रोध आ गया। बोला—तुम घर से भागी एक नाबालिग लड़की को रखे हो, उस को खाना देती हो। मैं अभी जा कर पुलिस में तुम्हारी रपट लिखा दूगा तब तुम्हें सब आटे-दाल का भाव पता चल जाएगा !

—चुचुन्चा, दादी कहती हैं कि बैठक मे जाकर बैठो और जो कहना हो बाबा से कहो।

बुचुन बैसाखियों पर मुड़ कर बड़बड़ाता हुआ चला गया। बैठक मे जा कर बैठा रहा होगा क्योंकि आध घटे बाद कालिंदी सामान का थैला रख कर बिना कुछ कहे उल्टे पैर लौटने लगा तो बिद्दो ने उसे रोक लिया।

—बुचुन बाहर बैठे हैं न—वह तीखी आवाज मे बोली—उनसे जरा यह तो पूछो कि अभी मुझसे जो कह गए हैं कि मेरी रपट पुलिस में लिखा देंगे कि मैं सुषमा को खाना खिलाती हू, इस का क्या मतलब है !

कालिंदी शरीर से काफी स्थूल था। उत्तेजित हो कर जब वह चलता तो उसके पैरो से भद-भद आवाज़ होती और वह दाहिने-बाएं झूमता हुआ चलता।

कालिंदी ने बुचुन को डांटते हुए पूछा तो वह सिटपिटा गया—हा, मैंने ऐसा कहा, मैंने उत्तेजना मे ऐसा कहा। मैं बिद्दो से अभी मांफी मांगता हू।

अन्दर आ कर उसने तुरन्त मांफी भी मांग ली!

अगली दोपहर जानकी की बड़ी बहिन का लड़का चन्दर आया।

—सुषमा है ?

—हा है। क्या काम है।

—जानकी मौसी ने यह चिट्ठी भिजवाई है, सुषमा के लिए।

कालिंदी ने उसके हाथ की चिट्ठी ले ली।

मेरी प्यारी बेटी सुषमा, सदा प्रसन्न रहो। मुझे ओझा जी ने वताया कि तुम कालिंदी चाचा के यहां हो तुम्हारे न होने से मैं बहुत परेशान रहती हूं। चिन्ता के कारण कल सारी रात मुझे नीद नही आई और मैं सारी रात रोती रही। मैं बीमार हो गई हूं। तुम्हारे तथा दीपा के अलावा मेरा अपना कोई नही है। तुम आ जाओ। मैं तुम्हें पान फूल की तरह रखूंगी। अगर अब मैंने तुम्हें शिकायत का मौका दिया तो तुम मुझे अम्मा न कहना। दादी अम्मा भी बार-बार पूछती हैं कि हीरालाल कहां है। बताओ मैं उन्हे क्या उत्तर दू। बस, तुम लौट आओ। मैं तुम्हें हृदय से लगा कर रखूंगी।—तुम्हारी अम्मा।

—जानकी को पड़ गई है बहशी लत, गौस्त खाने की! —कालिंदी मुह-ही-मुह में बुदबुदाया।

चन्दर बीस-बाईस साल का रहा होगा, शरीर से हृष्ट-पुष्ट लेकिन चेहरे से सरल वह मूढ़ की तरह कालिंदी का चेहरा ताकता रहा।

—जाओ-जाओ, कह तो दिया कि सुषमा को घर भेज दूगा।—कालिंदी ने बायां हाथ हिलाकर उसे दूर हटकारा।

अच्छा दादी जा रही हूं।—सुषमा के हाथ में वही स्कूली थैला था, थैले में एक सूती चादर-तकिया-जाना तो वही है। दुनिया में सब के लिए एक न एक दूसरा ठिकाना है। पर कोई बात नही!

घर की ड्योढी पर बुग्गड़ तमोली का भाई छेदी बैठा था। वह था तो पागल लेकिन केवल कर्म से, वाणी से नहीं, अर्थात् वह लगभग गूंगे की तरह सदा मौन रहता था। सुषमा ने देखा, बैठक का बाहरी दरवाज़ा-जंगला बद थे। उसे खुशी हुई कि लक्ष्मण बाहर गया होगा। वह दबे पैर गलियारे से दालान मे आई ही थी कि जानकी लक्ष्मण के खुले हुए दरवाज़े से छिटक कर अलग हुई और दरवाज़ा बंद हो गया!

—यहा दालान मे खड़ी क्या कर रही हो अम्मा?—उसने यों हंसते हुए

पूछा मानो उसने कुछ देखा ही न हो।

—चूना लेने के लिए आई थी।—जानकी की आवाज एकदम पस्त-सी हो गई।

—तो कहां है चूना, दिखाओ मुझे।

—लच्छू ने कहा कि उनके पास चूना नहीं है।

— वह तो खैनी तम्बाकू ही नहीं खाते, तुम्हें यह पता नहीं था क्या ?

—मुझे क्या पता था और क्या नहीं पता था—जानकी की आवाज में स्फूर्ति आ गई—तुम्हें बीच में दखल देने का कोई अधिकार नहीं है। मैं अपनी निजी जिन्दगी कैसे जीती हूं, उसमें मीनमेख निकालने ही के लिए तुम वापस आई हो ? शरम नहीं आती तुम्हें ?

—हां, आती तो है शरम।—सुषमा उससे एकदम सट कर खड़ी हो गई—तुम्हीं ने मुझे चिट्ठी लिखकर बुलाया है न ? पान फूल ऐसे ही रखा जाता है अम्मा ? यह खतरनाक खेल तुम क्यों खेल रही हो अम्मा, मेरी जान के साथ ! बाबू के प्राण की तरह किसी दिन मेरा प्राण भी फट से निकल जाएगा तब तुम रोओगी अम्मा !

उसके जोर-जोर से रोने की आवाज सुन कर दीपा नीचे उतर आई—रोना सुन कर ही मैं जान गई कि मेरी दीदी घर लौट आई है। दीदी, तुम्हें यहां वापस आना ही नहीं था।

रानी अम्मा पहले तो जब घर में रोना-पीटना मचता, चिल्ला-चिल्ला कर भजन गाने या खुद भी रोने लगती थी मगर अब वह एकदम सन्न हो जाती।

सुषमा ने उसके चेहरे पर झुकते हुए बताया—बड़ी अम्मा मैं आ गई।

लेकिन रानी अम्मा ने यह भी न पूछा कि तुम गई कहां थी।

—पानी पियोगी ?—तो रानी अम्मा ने इस का भी उत्तर न दिया। मुल-मुलाती आंखों से सुषमा का चेहरा चुपचाप ताकती रही।

दुर्गन्ध के मारे नाक फटी जा रही थी, सुषमा ने खाट के नीचे झांका। मिट्टी का तसला लबालब भर गया था, बल्कि पाखाना-पेशाब उसके चारों ओर छलक गया था उसने दुपट्टा गर्दन में लपेटा, तसला संडास में लाकर खाली किया।

छत पर वाली तकरार के बाद से मन्नो सुषमा-दीपा से बहुत कम बोलती। अक्सर तो रानी अम्मा पुकारती रहती, मन्नो सुनी-अनसुनी कर जाती।

—जानकी, पैसा दे दो तो बाजार से तुम्हारी सब्जी ला दूं।—मन्नो ने ठाकरद्वारे से पुकारा। जानकी ने शायद सुना नहीं। मन्नो ने दालान में निकलकर फिर कहा। लक्ष्मण आंगन के छज्जे पर मोढ़ा डालकर अखबार पढ़ रहा था। अखबार समेटते हुए उसने जानकी को बताया—सुन नहीं रही हो, बुढ़ियानंबरदो ऐसे पैसा मांग रही है तुम्हारी सब्जी लाने के लिए !

एक रोज पन्नालाल न जाने कहां से प्रगट हो गया! इस बार वह गेरुए वस्त्र नहीं पहने था, दाढ़ी-मूछ भी साफ थी और पिछली बार की अपेक्षा उसका शरीर गोरा तथा स्वस्थ दिखलाई दे रहा था। उसके आ जाने-रह जाने से किसी को जरा भी कष्ट न होता था जब तक कि वह घर-बाहर के लोगों को प्रवचन सुनाता रहता। विक्षिप्तावस्था मे लौट जाने पर भी वह अकसर धारा प्रवाह सस्कृत ही मे बोलता, उस से भी किसी को परेशानी न होती। कठिनाई तब होती जब पागलपन मे वह अपने सारे कपड़े उतार देता या खतरनाक ढंग से झगड़ालू हो जाता। ऐसे समय मे लक्ष्मण की बैठक का सारा कुटीर उद्योग अन्दर दालान में रखवा कर पन्नालाल को बैठक में बंद करना पडता।

जानकी का वह बहुत अधिक आदर करता था। अन्नपूर्णा पुकारता उसे!

आने के अगले दिन पन्नालाल बुचुन के यहां पहुंच गया। बुचुन स्वेटर-गमछा पहने धूप मे बैठा कटोरे से छिली हुई मटर छोटे-छोटे चुल्लू में लेकर अपने मुह में फेंक रहा था। पन्नालाल के चेहरे पर मुस्कराहट खिल गई। बुचुन ने उसे वैसे ही मुस्कराते हुए दोबारा कनखियों से देखा तो डरकर थोड़ा उल्टी ओर घूम गया।

पन्नालाल एक हाथ में चूने की छोटी बोरी और दूसरे मे नई कूंचो लटकाए हुए उसके पीछे खड़ा रहा।

बुचुन पहले ही से परेशान था। उसकी पुत्रवधू पहली संतान को जन्म देने के बाद जो बीमार रहने लगी तो पिछले चार सालों से अच्छी ही नही हो रही थी। छह माह पहले उसकी रीढ़ की निचली हड्डी में फोड़ा निकला, जो अब नासूर हो चुका था। बडी कठिनाई से बिस्तर से उतर पाती।

—अपने घर में पोताई करवाइएगा? पन्नालाल ने पूछा।

बुचुन ने उत्तर नही दिया। पन्नालाल चला गया तो उसने राहत की सांस ली। फिर, पेशकार साहब ने हाल ही में उसके साथ ऐसी गन्दी हरकत की, कि उसे अब तक उसके सच होने पर विश्वास ही नही होता!

बुचुन-पत्नी को कई दिनों से जुकाम था, हल्की हरारत भी। दो दिन तो बुचुन पेशकार साहब को हाल बता कर दवा ले आया। तीसरे दिन पेशकार साहब खुद उसके घर हाल पूछने आ गया। बुचुन उस समय अपनी दूसरी अर्धांगिनी पर सवार हो कर कही गया हुआ था पेशकार साहब ने हाल पूछा, नाड़ी देखी, जीभ निकलवाकर उसका रंग देखा फिर बोला—जरा अपनी जाघ का रंग दिखलाइए।

वह बेचारी बूढ़ी औरत हक्काबक्का रह गई! हर सती साध्वी स्त्री की भांति उसने बुचुन के वापस आते ही बुचुन को वाकया कह सुनाया।

बुचुन ने अपने खुले हुए मुंह की ओर चुल्लू से मटर का छीटा दिया तो एक मटर मुंह के बाहर टकरा कर छिटक गई। वह उसे देखने लगा कि कहां जा रही

है। मटर ने लुढ़कते हुए दो चौके पार किए फिर धीमी होती-होती तीसरे चौके की संधि पर अटक गई। वह फिर चुल्लू में भर-भर कर मटर खाने लगा। चौथी बार दो दाने छटक कर गिरे। उसने एक उंगली पर नमक-धनिया चढ़ा कर उंगली अपनी जीभ को चटाई और गीली उंगली चूतड़ पर पोंछ ली।

—मल्हू ! ओ मल्हू ! जल्दी से आओ !—सारी मटर खा चुकने के बाद उसने अपने पतले होंठ विचार कर पौत्र को पुकारा।

मल्हू दौड़ता हुआ आया।

—मटर !—बुचुन ने एक उंगली से आंगन की ओर इशारा किया। चतुर हो गया था मल्हू, इशारा समझ गया। बन्दरों की तरह जल्दी बीन-बीन कर मटर अपने मुंह में डालने लगा।

पन्नालाल ने घर लौट कर लोहे की बाल्टी में चूना भिगोया। आंगन में तीन ईंटों का चूल्हा बना कर उस पर नीला थोथा पकाया। डालडे के खाली बड़े डिब्बे में सफेदी भर कर उसने दक्षिण वाली दालान की पुताई करना शुरू किया और से लग कर एक दीवार पूरी पोती। दूसरी दीवार आधी पोती। दोपहर तक।

—विमानराज अत्रैवस्थीयताम् !—उसने दीवार से कहा।

न जाने कब वह घर से बाहर निकला। दोपहर की शाम हो गई।

शाम के बाद घन्नूगुरु ने बाहर से पुकारा—पन्नालाल ?

शाम से रात। पन्नालाल नहीं लौटा। अगले दिन भी नहीं। अधपोती दीवार डालडे के टिन में अधडूबी कूंची बीच में छोड़ कर वह गुम हो गया। चौथे दिन मन्नो ने कूंची समेत चूने का बर्तन कोने में खिसका दिया।

पागल तो पागल !

सुषमा के दौरे तेज होते जा रहे थे। अब तो बात सारे मुहल्ले में फैल गई थी बल्कि दूर-दूर तक चर्चा होने लगी थी।

एक इतवार को दोपहर के समय बुचुन तथा बुचुन-पत्नी आए, जानकी को समझाने के इरादे से।

—देखो ऐसा है,—बुचुन की स्त्री हमेशा बड़े आश्वस्त स्वर में बात करती थी—अभी बात ज्यादा फैली नहीं है।

—फैल भी जाए तो मुझे किसी की परवाह नहीं !—जानकी तमक कर बोली—क्या कर लेगा मेरा कोई !

—सुनो, मेरी बात समझो ! तुम्हारी बात नहीं कर रही हूं मैं !—विमला ने वैसे ही अविचलित भाव से कहा—सुषमा की बीमारी की बात है। समझो मेरी बात को ! बुद्धिमानी की बात करो। लड़की का मामला है, अभी देर नहीं हुई है, उसका ढंग ठिकाने में इलाज कराओ।

—मैं कहां-कहां नहीं दौड़ी सुषमा के लिए। अस्पताल में नहीं दिखाया, कि

होम्योपैथी का इलाज नही कराया, कि झाड-फूक नहीं कराई। यानि कि दौडते-दौड़ते मेरे पैरो की नसें चढ़ गयी ! एक-एक प्याला चाय पर दिन-का-दिन काट दिया। इन लोगों का खाना, खाना देना भी बडी चीज़ होती है। पढाई के लिए मैंने क्या नही किया। रात-रात भर जाग कर। इसमें मैं एकदम आधी हो गई ! जानकी लगभग चीखने लगी। उसकी आवाज कभी अचानक तेज हो जाती, कभी बुझ कर फुसफुसाहट मे बदल जाती— मैंने कहा पर कोताही की ?

—हर मा अपने बच्चों के लिए करती है। मां नही करेगी तो क्या कोई दूसरा-तीसरा करेगा ?—बिमला ने संयत स्वर में समझाया।

—बेटी, जो मनुष्य अपने कर्तव्य पर से हटा और जिसने अपनी बुद्धी को खोया, उसको ऐसा गच्चा खाना पडता है कि जिन्दगी भर वह उठ नही सकता !

जानकी ने वुचुन को बीच में ही डाट दिया—बुचुन्चा, तुम मुझे उपदेश मत दो ! सैकड़ों बार तुमसे यह सब सुन चुकी हूं मैं ! मेरे कुछ समझ मे नहीं आता। क्या बोलती हूं, क्या करती हूं, सही कुछ समझ मे नही आता ! सारी बात मेरे सिर के ऊपर-ऊपर रहती है। तुम क्या बात कर रहे हो, वह सब ऊपर-ऊपर है, दिमाग मे नही घुस रहा है।

वुचुन की स्त्री बोली—तुम सुषमा को ले जा कर गोबरधन पण्डित को दिखलाओ। देखो, गणेश के लडके को भी यही बीमारी हो गई थी। डाक्टर-हकीम सब इलाज कर-कर हार गए। गोबरधन पडित की एक बार की पूजा से देखो, वही लडका अब एकदम भला चगा है। मैं तुम्हे समझा रही हू, मेरी बात सुनो-समझो, बुद्धिमानी वाली बात करो !

सिटपिटा कर वुचुन चुप हो गया था और नाक के एक छेद के अन्दर उंगली घुमा-घुमा कर मैल ढूढ रहा था।

—नही, तुम अगर कहो तो मैं तुम्हारे साथ चला चलूगा गोबरधन पंडित के पास !—बुचुन ने वह उगली कुर्सी के एक पाए पर रगड़ते हुए प्रस्ताव किया।

अरे, चली तो मैं जाऊंगी।—जानकी थकी हुई आवाज मे बोली—जैसे मैंने इतना किया वैसे यह भी सही ! आखिर मैंने नहीं किया तो और किसने किया !

इसके चौथे दिन जानकी ने डरते-डरते सुषमा से कहा—देखो ऐसा है बबुआ कि हम लोग गोबरधन पण्डित के पास—

जानकी को पूरा बताने की आवश्यकता न थी। सुषमा को स्वय मालूम था।

—मुझे मालूम है अम्मा कि मुझे क्या बीमारी है। तुम जहा चलने को कहो, मैं चलने को तैयार हू। तुम मेरे साथ जो भी करना चाहो, मुझे मन्जूर है।

जानकी स्कूल से लौट कर सुषमा, लक्ष्मण और बुचुन के साथ भवानी मंदिर गई। बुचुन बैसाखी पर चल रहा था अतः अन्य तीन भी धीरे-धीरे रेंगने को बाध्य थे।

सर्दी ज्यादा नहीं थी फिर भी नवम्बर का उतरता महीना। जानकी स्कूल वाला काली बुन्दियों का गुलाबी हाफ कोट पहने थी। सुषमा शलवार कुर्ता के ऊपर महरूनी शाल लपेटे थी।

बुचुन ने भवानी मंदिर के आगे कहा कि मैं ऊपर नहीं आऊंगा और मन्दिर की सीढ़ियों के एक बगल नाटे चबूतरे पेर बैठ कर बैसाखियां अगल-बगल टिका ली।

गोबरधन पंडित जानकी, सुषमा तथा लक्ष्मण के चेहरे देर तक ध्यान से देखता रहा फिर अपने बाएं कान मे ऊंगली डाल कर खुजलाने लगा।

—घी, फूल, कपूर, मूज, गुग्गल, मौली, काला तिल, सफेद धोती, ताजा गोबर।—उसने पूजा के सामानों की फेहरिस्त सुना दी।

लक्ष्मण ये सारे सामान लेकर लौटा तब तक गोबरधन पंडित मंदिर का दक्खिनी कोना पानी से धोकर वहां लकड़ी के चैले एक पर एक रखते हुए चौकोर छोटी-सी चिता सजाने के बाद स्नान कर आया था। मन्दिर का सदर दरवाजा अंदर से बन्द करके उसने सांकल लगा दी।

उसने पूजन-सामग्री के थैले मे एक हाथ डालकर खड़खोरा और सफेद धोती निकाल कर जानकी की ओर बढाता हुआ बोला—अब आप यह धोती पहिन कर के आइए, एकवस्त्रा। नल उधर है।

जानकी घबरा गई थी इसलिए वह गोवरधन पंडित का मुंह मकुआ की तरह देखती रह गई।

—केवल यही साडी पहिन कर बाल खोल कर सिर से स्नान कर के आइए दूसरा वस्त्र नही पहनिए।—उसने एकवस्त्रा स्नान करने का खुलासा किया।

बुचुन कूबड़ निकाले सीढी के बगल मे बैठा था। गली मे आमदरफ्त कम थी। कुछ दूर तमोली की दूकान के सामने तीन व्यक्ति खड़े हो कर बातें करते दिखाई दिए। चौराहे पर दो खाली रिक्शेवाले रिक्शा पकड़े खड़े थे।

दूसरी ओर से दो कुत्ते आ रहे थे। उनके चूतड़ आपस मे उलझे हुए थे। दूकान के सामने खड़े तीन व्यक्तियों में से एक ने क्रोधित हो कर कुत्तों पर एक लात जमाई तो दोनों कुत्ते पें-पें कर चिल्लाने लगे। कुत्तो ने तेजी से भाग निकलने की कोशिश की मगर उलझे होने के कारण केकड़ों की चाल से टेढ़े-मेढ़े लड़खड़ाते रह गए। रिक्शे वाले हंस पड़े।—वह देखो राजा!—एक ने चिल्ला कर कहा।

दोनों कुत्ते बुचुन के आगे से गुजरे तो बुचुन ने घिना कर एक बैसाखी लेकर

ज़मीन पर फटकारी। कुत्तों ने उसकी परवाह तक न की।

गोबरधन पंडित ने वेदी के दोनों ओर काठ के दो पटरे बिछाए। दाहिने पटरे पर सुषमा को बैठा कर मुह में मंत्र पढ़ने लगा। मंत्र पाठ रोक कर वह ज़ोर से कहता—गुग्गुल दो—घी लाओ तो लक्ष्मण तत्परता से वह सामान पकड़ा देता।

नवम्बर का महीना, शाम का सम , जानकी स्नान करके गीली धोती पहने हुए लौटी। उसके बालों से पानी की बूंदें टपक रही थी। सर्दी से वह थर-थर कांप रही थी।

—आप यहा बैठ जाइए। गोबरधन पंडित ने एक हथेली से दूसरे पटरे की ओर इशारा किया।

पंडित ने समिधा जलाई। तिड़-तिड की आवाज़ के साथ मूंज लहक उठी तो उसका बहुत हल्का-ताप जानकी ने गीली धोती की परत के भीतर अपनी छातियो पर अनुभव किया.

गोबरधन पंडित वहां से तीन-चार कदम हट कर पूजा का सामान एक बगल रख नंगे फर्श पर पालथी मार कर बैठ गया और लगातार मंत्र बुदबुदाते हुए धरती पर गेरू के ढेले से आड़ी-तिरछी लकीरें खींचने लगा। फिर उसने गेरू नीचे रख कांस के बड़े से कटोरे मे जले-अधजले चैले भर कर उनके ऊपर ताज़ा कोयले रखे।

जानकी का मुंह आश्चर्य मे खुला-का-खुला रह गया था। उसका झुका हुआ सिर ज़रा आगे की ओर खिच आया, कांच के डलो-जैसी उसकी अपलक पुतलियो में मुर्दा चमक बंध गई!

लकासुंदरीराग गाओ पंडित जी!—जानकी ने बिल्कुल सम आवाज़ में कहा, मानो वह जाग्रत अवस्था मे नही, स्वप्न मे बोल रही हो।

रोशनी की कनी को अपने भीतर कैद किए हुए नीलम-पत्थर जैसी जानकी की आंखो मे मुस्कान थी, केवल आंखों मे, आंखो ही मे!

—लंकाध्वंसराग?—पंडित के पास बैठा हुआ लक्ष्मण तन कर खडा हो गया। उसकी घिग्गी बंध गई।

—नही, लंकासुन्दरीराग!—जानकी का कंठ-स्वर पहले की तरह सपाट था।

—हां। संभव है—पंडित दृढ़ विश्वास भरे स्वर मे बोला—तभी तो हम लोग जनम-मरण को मानते है।

तांत्रिक गोबरधन पंडित कामोन्मत्त पशु की तरह सिर हबुआते हुए मंत्र गाने लगा—कस्मदो दग! गोम रज्ज़ासू! ऊम रास्ते मौजूबे! खुदा रज्ज़ासू! खुदा रज्ज़ासूक!

उसी समय एक बूढ़ी औरत भवानी मन्दिर की सीढ़ियां चढ़ने लगी तो नीम की पत्तियों की झरझर आवाज़ के नीचे अंधेरे में बैठे बुचुन ने उसे डपट दिया—ए ! कहाँ चढ़ी चली जा रही हो ! गोबरधन पंडित ने मना किया है। अन्दर पूजा कर रहे हैं।

बूढ़ी औरत सिर्फ दो ही सीढ़ियाँ चढ़ी थी, उतर कर वापस लौट गई।

—ऊम तो ओम उतारी ! रज्ज़ासू ! चौकड़ी चौथ चाढी, रज्ज़ासूऊ !—बन्द किवाड़ों से छन कर बाहर गली तक सुनाई दे रहा था, गोबरधन पण्डित का मन्त्रपाठ !

कांस के कटोरे के कोयले लाल-लाल दहकने लगे। जानकी कटोरे के अन्दर आँख गड़ाए थी।

—आग की आँख का रंग काला नहीं है।—वह जैसे कि नींद में बोली—आग की आंख का रंग लाल या पीला भी नहीं है। एकदम झक सफेद है, सफेद !

—अपना केश दीजिए।—पंडित ने एक हथेली आगे बढ़ाई।

कैंची नहीं थी। पंडित ने भोथरे चाकू से घिस-घिस कर जानकी के गीले बालों की एक लट सिरे से काट कर आग के कटोरे में झोंक दी। सफेद धुएं के साथ तीखी चिरायंध फैल गई।

लगा जैसे अंगारों भरा वह कटोरा किसी भी पल तड़ाक से टूट कर चारों ओर बिखर जाएगा। लेकिन अग्निपात्र तड़का नहीं, अपनी जगह से जौ भर हिला। जी, वास्तव में हिला, हिला ही नहीं, आगे को ओर धीरे-धीरे सरकने लगा। सुषमा अपनी जगह पर बैठी-बैठी तन कर लम्बी हो गई। जानकी और आगे झुक कर अग्निपात्र की बहुत पास से घूरने लगी। लक्ष्मण ने सिर समेत दोनों कंधों को पीछे खींच लिया। सुषमा की आंखों में त्रास चमक रहा था। पंडित के चेहरे पर निष्ठा का विश्वास तथा जानकी की पुतलियों में लीला करने का उल्लास।

अग्निपात्र घूमा और इस बार इधर की ओर खिसकने लगा। तप कर वह कोयले की तरह काला हो गया था, मानो कोयले का कटोरा ज्वालामुखी की तरह धधक रहा हो। उसकी बाहरी दीवारों से भाप-सा सफेद-सफेद धुआं उठ रहा था। लक्ष्मण खूंटे की तरह गड़ा हुआ अपने स्थान पर खड़ा रहा। काला अग्निपात्र खिसकता हुआ सुषमा के निकट आया, उसके एक घुटने के पास—

लक्ष्मण उछल कर और दूर कूद गया !

जिबह किये जाते हुए पशु के-से चीत्कार के साथ सुषमा सिर के बल तड़ाक पीछे गिर गई !

—यही है ! यही है !—जानकी खड़ी हो कर विक्षिप्त के-से स्वर में

चीखने लगी—यही है !

सुषमा के कपड़े एक-एक कर झुलसने और काले होने लगे। जैसे कि वह गहरे रसातल मे बहुत धीरे-धीरे गिरने लगी। थक्का अतल अंधकार में रोशनी का एक बुलबुला निःशब्द फूटा। दूर अंधेरे में तनिक-से हरे प्रकाश की एक नन्ही बिन्दी फूल की भांति खिल कर फैल रही थी, जब वह होश मे आई।

···अम्मा !—जानकी को कस कर बांध लेने के इरादे से उठाई गई अपनी दोनों कांपती हुई बांहों को देह की सारी शक्ति उसने दे डालनी चाही मगर पकड़ उसकी खुली हुई मुट्ठियो के बाहर बह चुकी थी !

फिर भी जिजीविषा, प्रकाश की किसी भी बिन्दी से कहीं अधिक रहस्यमय जीवनी शक्ति से भी अधिक शक्तिशाली होती है···वह मरी नही, बच गई।

डेढ़-दो साल तक उसके सिर के बाल नही बढ़े।

एक मादा ययाति



गौरइयां चहचहा रही थी, असंख्य गौरइयां! उनका अनवरत चहचहा आंगन-दालान, कमरे-कोठे-कोठरियों के अंदर तक भरा हुआ था, मानो वे चिड़ियां आंगन-दालान के चोकोर पत्थरों के नीचे दफनायी जाकर एक साथ जिंदा हो उठी हों तथा प्रसन्न कलरव करने लगी हों! कमरे-कोठे-कोठरियों की दीवारों में, छतों की काली-काली धरनो में चिन दी गयी हों और वहां से निकाल बाहर न कर दिए जाने के लिए अनवरत शोर कर रही हों!

मन्नो ने खुले नल के नीचे बाल्टी रखी तो बाल्टी का कुंडा झन्न से बोला। जानकी नल के बगल में खड़ी सुंघनी से मंजन कर रही थी, सुस्ती से तर्जनी मुंह के अंदर-बाहर चलाती हुई। चमकती हुई लार के साथ सुंघनी उसके निचले होंठ तथा होंठ के दोनों कोनो पर से नीचे बह रही थी। यों भी पत्ता तम्बाकू खाने की लत के कारण उसके मोटे होंठ तथा दांतों का रंग उद्धस मैला हो गया था।

—मुझे ऐसा लगता है जानकी, कि अब रानी बुआ अधिक दिन चलेंगी नहीं! मन्नो ने वहीं से रानी अम्मा की ओर देखते हुए कहा।

—जीजी, जब इन्हें जाना हो चली जाएं!—जानकी मुंह से उंगली निकाल कर बोली—मुझसे जितना हो सकता था मैंने इनका कर दिया हालांकि अब किसी के भी लिये कुछ करने का मन नहीं होता लेकिन लाचारी है। दर्द के मारे सिर फटा जा रहा है मेरा। रात को एक मिनट को भी मैं सो नहीं पायी। यही हाल रहा मेरा तो बहुत जल्द ही इनके बगल में मेरी खाट लगेगी।

—लच्छू के ब्याह तक तो यह नहीं चलेंगी!—मन्नो ने एकतिहाई भरी

बाल्टी उठाते हुए कहा। पिछले माह उसके बायें हाथ की बीच वाली उंगली के जोड़ पर घाव हो गया था, जो बढ़ता ही जा रहा था।

पांच दिन हुए रानी अम्मा की आंखें पथरा गईं। होश में वह जरूर थी। पूछो कि पानी पियोगी ? तो वह होंठ ढीले कर देती। चम्मच से निचला होंठ दबाकर पानी पिला दिया जाता। लेकिन दोनों पुतलियां ऊपर चढ़ जाने के कारण उसकी आंखों के सफेद-सफेद कोए दिखलाई देते। पुकारने पर वह अपना सिर हिला देती, कभी हां में कभी ना में। शरीर के दूसरे अंगों से तो चेतना पहले ही निचुड़ चुकी थी। दो रात पहले डेढ़ बजे के करीब वह अचानक गाने और और बड़बड़ाने लगी—आज मैंने तीन कचौड़ी खाईं और आधी पूड़ी। तो एक राक्षस आया। बड़ा साफ-सुथरा कपड़ा पहने था। ए चाची ! देखो चाचा आए हैं, हीरालाल को लेकर। बैठाओ-बैठाओ दोनों को ! वह कहता है कि सारी कचौड़ी मैं अपने घर ले जाऊंगा और घर पर खाऊंगा। लेकिन दांत तो उसके हैं ही नहीं, खाएगा कैसे ? और हंसेगा कैसे ? बड़ी जगहंसाई होगी···

लगा कि रानी अम्मा की अंतिम बेला आ पहुंची।

मन्नो ने चतुर्भुज को झटपट जगाकर स्नान कराया और चरणामृत ले आई।

—रानी बुआ ? ए रानी बुआ ! मुंह खोलो। सारा चरणामृत तो तुम गिरा देती हो !

सारी रात रानी अम्मा बड़बड़ाती और उखड़े-उखड़े भजन गाती रही—सत की नाव खिवैया सतगुरु !

—कहो तो जीजी, आज मैं स्कूल से छुट्टी ले लूं !—जानकी स्कूल जाने के लिए साड़ी पहन चुकी थी—या मैं रजिस्टर पर दस्तखत मार कर लौट आती हूं। नहीं तो आज शनिवार है, इतवार का दिन कैजुअल में जुड़ जाएगा।

मन्नो ने उत्तर नहीं दिया।

लक्ष्मण बैठक से हंसता हुआ दालान में आया और जानकी से बोला—सुनती हो, बाहर खड़ी हैं तुम्हारी चूतड़स्तनी बहिन जी !

जानकी के स्कूल की नाटी-मोटी हिस्ट्री टीचर संजीवनी बहिनजी को वह चूतड़स्तनी बहिनजी कहता था। एक उसी को नहीं, क्योंकि स्कूल की अधिकतर अध्यापिकाएं अधेड़ और मोटी थीं, लक्ष्मण पीठ पीछे इन सबको चूतड़स्तनी बहिनजी पुकारता था। अकेली म्यूजिक टीचर मनमोहनी बहिनजी को छोड़कर वह दुबली-पतली, गोरी, लगभग टीबी की मरीज-सी, हमेशा साड़ी का पल्लू आगे खींच कर पकड़े रहती, ऊपर से कंधे सिकोड़कर झुकी-झुकी चलती। गांधीजी के चश्मे का-सा बारीक सुनहरे फ्रेम का चश्मा लगाती थी और गांधीजी ही की तरह देखती भी थी, आधा चश्मे के भीतर से आधा चश्मे के ऊपर से। लक्ष्मण ने मनमोहिनी बहिनजी का उपनाम रखा था गोरी बिसैया।

जब से लक्ष्मण की शादी मिर्जापुरवाली के यहां तय हुई, उसकी मसखरी कुछ ज्यादा ही बढ़ गयी थी। वह साफ कपड़ों में बाहर निकलने का भी ध्यान रखने लगा था और पहले की अपेक्षा अधिक मिलनसार हो गया था। अपनी इमेज सुधारने के लिए उसने सोशल सर्विस करना शुरू कर दिया था। जानकी से उसने सुना कि संजीवनी बहिनजी को संतान होने की फिर उम्मीद है क्योंकि पिछली तीन बार उनका गर्भ पांचवें माह में ही बह गया था तो लक्ष्मण ने चूतडस्तनी बहिनजी कहने के बावजूद संजीवनी बहिनजी के घर गोबरधन पंडित को अपने साथ ले जाकर पूजा-पाठ कराया।

—न हो जीजी तुम लच्छू से किसी डाक्टर को बुलवा कर इन्हे दिखा दो। डाक्टर बच्चालाल तो हैं नही। मैं तो स्कूल जा रही हूं। अकेली जान मैं किसका-किसका करूं और मेरे तो कुछ समझ मे भी नही आता।

डाक्टर बच्चालाल की बद डिस्पेन्सरी पर दो महीनों से ताला लटक रहा था क्योंकि उसे पासपोर्ट मिल गया था और वह सारे मुहल्ले वालों को आश्चर्य-चकित यही छोड़कर वास्तव में अबूढबो चला गया था। था तो परिचितों तथा पड़ौसियों को मुफ्त मे देख लिया करता था।

—या मैं ही लौटते समय ढाल वाले वैद जी को अपने साथ लेती आऊंगी। सच, मेरे कुछ भी समझ में नही आ रहा है, सब दिमाग के ऊपर-ऊपर से जा रहा है। लच्छू! जरा मुझे साइकिल से स्कूल छोड़ दो!

मिर्जापुरवाली की भतीजी मनोरमा से लक्ष्मण का विवाह जानकी ने ही मिर्जापुरवाली के यहां दौड-दौड कर तय कराया था। मिर्जापुरवाली दूर के रिश्ते से उसकी ताई लगती थी। लडकी सगीत विशारद कर रही थी, अकेली संतान बिना बाप की, मां एकदम गऊ, मिर्जापुर मे उसका एक मकान था।

लक्ष्मण ने पहले तो शादी-ब्याह करने ही से इन्कार कर दिया था। बुल्लो बीच मे एक बार आया था तो एक दिन मन्नो उसके आगे बहुत रोयी कि लक्ष्मण की शादी न हुई तो उसका वंश डूब जाएगा।

—चार साल पहले जब मैं ब्याह करा देने को कह रहा था तब तो लच्छू ने किया नही! अब कौन देगा सैकेन्ड हैंड बुढऊ को अपनी लड़की!—बुल्लो ने फट से जवाब दिया—मैं बात कहता हूं साफ, तुम्हें बुरा लगे या भला!

यह साफ बात लक्ष्मण के कानों में पड गई। बाप-बेटे मे कहा-सुनी, गाली-गलौज हो गई।

—अब से कभी इस घर के ऊपर पेसाब भी किया तो मैं अपने असली बाप की औलाद नही!—बुल्लो उसी दम उठा और घर से निकल गया।

लक्ष्मण दो मंजिलों की सीढियां चढ कर निगोल की छत पर जाकर बैठ गया, इस बार शादी कभी न करने की सौगन्ध खाकर!

दोपहर-शाम-रात तक वह नीचे न उतरा तो जानकी मन्नो के आगे इस बात का जिम्मा लेकर कि वह लक्ष्मण को विवाह के लिये राजी कर लेगी, ऊपर गयी। घंटे-डेढ़ घंटे उसने अकेले में लक्ष्मण को समझाया होगा तब जाकर लक्ष्मण विवाह करने के लिए रजामन्द हुआ, लेकिन इन शर्तों के साथ कि एक तो लड़की से वह स्वयं भी बात करेगा तथा दूसरे यह कि विवाह के बाद भी सब लोग इकट्ठा रहेंगे।

—अम्मा, ये लोग हमेशा हमारे साथ रहेंगे क्या ?—दोनों लड़कियों ने एकान्त में जानकी से जिज्ञासा की।

—मन्नो जीजी का देखो, हम सबको कितना सहारा है ! —जानकी फुस-फुसा कर उन्हें समझाने लगी—जैसे कि एक बड़े के रहने से छत्रछाया बनी रहती है। नहीं तो अकेली औरत को देख कर दुनिया भर के मर्दों को यह होता है कि बेवा है, पकड़ो इसे !

—तो ताईजी अकेली रहें। लच्छू चाचा एक दिन भी ऐसा नहीं बीतता जब मुझे या दीदी को रांड-कुतिया न कहते हों ! —दीपा बोली।

—भई दीपा, तुम किसी का मुंह नहीं बंद कर सकती हो। तुम क्यों जाती हो लच्छू के पास, क्यों मुंह लगती हो लच्छू के ! —जानकी का कंठ स्वर स्वच्छ तथा स्वस्थ होने लगा—लच्छू हैं तो हमारा चार ठो काम ही कर देते हैं। बाहर निकलने के लिए एक मर्द का साथ हो जाता है, चार लोग उंगली नहीं उठाते। मैं इनका सहारा खोना नहीं चाहती। मैं तो चाहती हूं कि ये लोग हमेशा यहां रहें।

—क्या पिक्चर जाने के लिए भी लच्छू चाचा ही का साथ चाहिए ?—सुषमा ने व्यंग्य से पूछा।

—आखिर मुझे भी तो कोई इंटरटेनमेन्ट चाहिए या नहीं ?—जानकी ने रोषपूर्वक कहा।

—तुम मेरे या दीपा के साथ पिक्चर देखने जा सकती हो, अपने स्कूल की टीचर्स के साथ जा सकती हो !

—भई, मैं अपनी निजी जिंदगी अपने ढंग से जीना चाहती हूं तो उसके बीच में कोई दखल क्यों दे ! —जानकी का कंठ स्वर आरोहित-अवरोहित हुआ—देखो, तुम दोनों के आगे तो सुख लूटने के लिए पूरी जिंदगी पड़ी हुई है। जितना घूमना, पिक्चर देखना, शौक-मौज करना चाहो कर लोगी मगर मेरी कोई नहीं सोचता कि मैंने न मालिक का सुख जाना, न घर-गृहस्थी का। क्या मैं मनुष्य नहीं हूं ? क्या मैं औरत नहीं हूं ? इस उम्र में अकेले रहना बहुत मुश्किल है, बहुत मुश्किल ! साथ की बड़ी जरूरत महसूस होती है। दो शब्द हंसने-बोलने वाला चाहना है। पागलों की तरह मैं रात-रात भर छत पर टहलती रहती हूं।

मन्नो जीजी के कहने से कि भाग खाओ तो रात को नीद आ जाएगी, भांग खाने से भी नीद नही आती । कुछ मेरी भी तो सोचो स्थित !

बड़ी हंसमुख और घाघ औरत थी मिर्जापुरवाली ! हर दूसरे-तीसरे दिन वह अकेले लक्ष्मण को कभी खाने का, कभी चाय-समोसे का न्यौता देकर अपने घर बुलाती मगर अपनी भतीजी को लक्ष्मण के साथ अकेले मे एक बार भी न छोड़ा उसने । एक बार जानकी ने मनोरमा को साथ ले जाकर पिक्चर दिखलाने के लिए बुलाया । जानकी लक्ष्मण को साथ लेकर अलका टाकीज़ पहुंची तो टिकट-खिड़की के बगल मे मिर्जापुरवाली रुपए के बराबर बड़ा टीका लगाए खड़ी मिली, मनोरमा को लिए हुए !

साथ पिक्चर जाने देना तो दूर, उसने लक्ष्मण को मनोरमा का चेहरा भी ठीक से देखने का अवसर न दिया होगा शायद ।

चौमुहाने पर के हलवाई की दुकान के ज़रा ज्यादा ही लाल मिर्च-गरम मसाला पड़े कौड़ियों समोसे खाने के बाद एक रोज लक्ष्मण ने आठ साल के बच्चे की तरह कुर्सी पर मचलते हुए कह ही दिया मिर्जापुरवाली से—जिनको ऐसे जीवन भर साथ रहना है उनको तो ऐसे आप एक बार बात करने का भी मौका नही देती । अब ऐसे पुराना वाला ज़माना तो—

नाटी-सी मिर्जापुरवाली बड़ी दिल्लगीबाज़ थी ! अधिकतर खड़ी बोली ही मे बोलती । उसके मुह से खड़ी बोली और अधिक खड़ी लगती । उसने लक्ष्मण को जवाब दिया—मनोरमा को तो लच्छूजी, तुम एक ही बार से सब देखो तब तो असली मज़ा है । इतना तो तुम पक्का मान लो कि मनोरमा मुझसे ज्यादा गोरी-चिट्टी है । बस, कहा, न, कि उसे तुम एक ही बार से सब देखोगे तब मान जाओगे ! मिर्जापुर की लड़कियों की छातिया इत्ती बड़ी-बड़ी होती है कि अगर वे चाहें तो इन्हे कंधे के पीछे फेंक सकती हैं ! — मिर्जापुरवाली ने हवाई दुपट्टा अपने दोनों कधों पर डालते हुए कहा तो उसकी बत्तीसी चमक बिखेर गई ।

लक्ष्मण ने घर लौटकर जानकी से कह दिया कि यदि मिर्जापुरवाली उसे मनोरमा से अलग बात नही करने देती तो वह उससे शादी नही करेगा । जानकी ने मिर्जापुरवाली को समझा-बुझा कर लक्ष्मण से लड़की को मिलवाने के लिए तैयार कर ही लिया ।

शाम को लक्ष्मण मिर्जापुरवाली के घर जा रहा था तो जानकी ने कहा कि उसे बढ़ई के यहा जाना है, दोनों इकट्ठा घर से निकले ।

मिर्जापुरवाली ने आटे के दो लड्डू, नमकीन तथा चाय गोल टेबुल पर सजाने के बाद अपने लड़के को बगल वाले घर से मनोरमा को बुला लाने के लिए भेजा । धोती बदलने में जितनी देर लगती है उतनी जल्दी मनोरमा आ गई । कमरे में आकर उसने दोनों हाथ अपने सिर के ऊपर जोड़ कर जानकी को नमस्ते

कहा। वह एक मामूली-सी लड़की थी, तमाम मामूली लड़कियों की तरह मामूली गोरी और उसके स्तन दुपट्टे की तरह पीछे फेंके जाने काबिल लम्बे तो थे ही नहीं !

मनोरमा, एक ठो अपना गाना सुना दो !—कहकर जानकी नि:शब्द केवल नि:श्वास से हंस दी।

—क्या गाना सुनाए जानकी जीजी !—मनोरमा के लहजे में पूछने का भाव नहीं, टालने वाली लापरवाही थी।

काफी मनुहार के बाद उसने लतामंगेशकर का भजन लतामंगेशकर ही की महीन आवाज में सुनाना शुरू किया—सावरो आ-आ-आ—नंदनदन बिच पड़िया माई सांवरो-सांवरो !

रिकार्ड के गीत में जहां-जहां पर बांसुरी बजती है, वहां-वहां मुंह खोल, गला बैठाकर बांसुरी की नकल समेत। सांवरो भजन की आवाज यदि किसी हिकमत से चूस ली जा सकती तो बांसुरी बजाते समय उस बेचारी मनोरमा का खुला हुआ मुंह बतख की चौड़ी चोंच सा लगता !

सावरो-सांवरो के साथ मनोरमा का गाना खतम हुआ तो जानकी ने फट्-फट् ताली बजायी, जिस तरह वह खैनी तम्बाकू तैयार करते समय ताली पीटती थी।

—ताई, तुम चूल्हे पर कुछ चढ़ा आई हो क्या ?—कहती हुई जानकी उठी और अंदर चली गई। थोड़ी देर बाद पर्दे के पीछे से एक हथपंखी पर्दे के आगे आकर गिरी।

—ताई, जरा पंखी दे आओ।—जानकी ने पर्दे के पीछे खड़ी होकर पुकारा।

एकान्त मिला तो लछमण ने मनोरमा का चेहरा ध्यान से देखते हुए पूछा—तुम्हें सिंध का ऐसे वह भजन आता हो तो सुनाओ, दूर करो सब कष्ट हमारे।

मनोरमा ने सिर झुकाए-झुकाए ही उत्तर दिया—दूसरे के सामने गाते मुझे शरम आती है।

वह पैर की एक उंगली-अंगूठे को एक-दूसरे से खुजलाने लगी। लछमण उसके उस पैर को एकटक ताकता रह गया।

—आगे ऐसे तुम्हारा क्या करने का विचार है।

—संगीत-विशारद करूंगी। फिर आप लोग अगर पढ़ने देंगे तो बीटी करने का मन है।

लछमण को टीबी की मरीजा गोरी बिलैया का चेहरा याद आ गया। वह बोला—क्या रखा है ऐसे बीटी-सीटी में ! मुझे ऐसे अपनी पत्नी से नौकरी कराना ऐसे पसंद नहीं है।

—लेकिन मैं तो बीटी जरूर करना चाहती हूं।—मनोरमा की आवाज में जरा-सा कड़ापन आ गया, वैसा जैसा कि स्वभाव से सीधे व्यक्ति के अचानक हठ पकड़ लेने पर उसके स्वर में आ जाता है—मैंने बरसों पहले से मन मे तय कर रखा है कि मैं संगीत विशारद और बीटी जरूर करूंगी।

—मैं ऐसे एक रहपट न लगाऊं तुम्हें! —लक्ष्मण बुल्लो की पूरी बत्तीसी दिखाते हुए हंसा।

—ऐं ?—मनोरमा चौक कर कुर्सी पर उचक-सी गई।

—मैंने तो ऐसे प्यार मे कहा था। मुझे अपनी स्त्री को ऐसे स्कूल की मास्टरनी बाईजी नही बनाना है।

बाद मे मनोरमा ने ही लक्ष्मण से शादी करने से इन्कार कर दिया—ब्याह तो हुआ नही, ब्याह के पहले रहपट मारने चला है! मुझे ऐसे अपनी पत्नी से काम कराना पसन्द नही—हु:!

जानकी ने, विमला और बुचुन ने मनोरमा को समझाने-मनाने की बहुत कोशिशें की मगर वह तैयार न हुई।

फिर तो लक्ष्मण, जानकी और जानकी का बुचुन्वा-विमला चाची, सब मिल कर मनोरमा तथा मनोरमा की विधवा मां के पीछे पिल पड़े।

—डालडे का समोसा खिला-खिला कर हिजड़ा बना देना चाहती थी मिर्जापुर वाली हरामजादी से कह देना कि अगर ऐसे वह अपनी भतीजी का बड़ा आपरेशन करवा दे तो मैं उससे ऐसे ब्याह कर लूगा। नही तो कौन खिलाएगा उसकी औलादों की पलटन को!—लक्ष्मण ने नारायणीबाई से कहा—कुतिया के खजुरी तो हुई है, सबके सामने ऐसे पैर खुजला रही थी।

नारायणीबाई राधास्वामी के मन्दिर मे रहती थी, गले में कंठी तथा मराठिनों की तरह कच्छ बाघ कर धोती पहनती थी। हाथ कमंडलु। चीनी डाक्टर की तरह उसके चेहरे पर हल्की दाढ़ी मूंछ थी। मुहल्ले की अधिकतर स्त्रियो की राय थी कि नारायणीबाई औरत नही थी, जब कि मुहल्ले ही के कुछ मर्दों का गुप्त मत था कि नारायणीबाई पुरुष नही थी। हां, बच्चे किशोरावस्था पार करने तक नारायणीबाई से बहुत ज्यादा खौफ खाते थे। शायद मंदिर के अन्दर सदा अन्धकार छाया करने के कारण, शायद नारायणीबाई के लांग पीछे खोसकर धोती पहनने के कारण अथवा उसके हाथ मे कमंडलु होने के कारण। यद्यपि वह तीन-चार वर्ष के बच्चों तक से जयश्रीकृष्ण कहती थी। लक्ष्मण का संदेश भी उसने मिर्जापुरवाली को जयश्रीकृष्ण कह कर सुना दिया।

बुचुन बिना बैसाखी-डंडा लिए चलने-फिरने लायक हो गया था। उसने पाजामे के दोनों पायचों पर क्लिपें चढ़ा कर अपनी अर्धांगिनी साइकिल उठाई और साइकिल से अखबार बांटने वाले की तरह घर-घर, जगह-जगह जाकर

मनोरमा तथा उसकी मां के विरुद्ध खूब निन्दा प्रचार किया—मनोरमा अपने तबले वाले गुरुजी से फंसी है इसीलिए तो उसने ब्याह करने से इन्कार कर दिया। जानकी के घर मिठाई-नमकीन ले-ले कर दौड़ा करती थी मिर्जापुरवाली, कि मेरी भतीजी का ब्याह नहीं हो रहा है, तुम लच्छू से करा दो। और यह तो बताइए आप कि मनोरमा की मां जवान लड़की को रिश्तेदार के यहां पटककर मिर्जापुर में अकेली भला किस लिए रह रही है ?—उत्तेजना से बुबुन की गर्दन की नसें तन जातीं।

शनिवार को स्कूल में हाफ डे था। जानकी स्कूल से बाजार करती हुई घर लौटी तो घर में सन्नाटा छाया हुआ था। उसने देखा, सामने के दालान में मन्नो दोनों हाथों से रानी अम्मा को दोनों कंधों से पकड़ कर ऊपर उठाने की कोशिश कर रही है।

—अरे क्या हुआ! —घबराकर जानकी दालान की ओर झपटी।

—रानी बुआ को!—मन्नो की आवाज आंसुओं में डूब गई—देखो, घटका लगा है इन्हें। जल्दी करो। उधर से तुम पकड़ो। इन्हें जमीन दे दें। नहीं तो खाट पर ही प्राण निकल जाएगा।

लछमण घर में था नहीं। जानकी तथा मन्नो किसी तरह खाट को उठाकर आंगन में लाईं। फिर जानकी ने रानी अम्मा के कंधों के नीचे दोनों बगलों में हाथ देकर, मन्नो ने रानी बुआ के घुटनों के नीचे अपनी बाहों से छल्ला बनाकर उन्हें नीचे लिटाने के लिए उठाया। जानकी बोझ सम्भाल न पाई, ठीक से लिटाई जाने से थोड़ा ही पहले रानी अम्मा जानकी के हाथ से छिटक कर गिरी तो उसका सिर खटाक से जमीन पर टकराया। मुरारीलाल की विधवा, बीसियों वर्ष जानकी के स्कूल में दाईगिरी करने के बाद चौदह साल लकवे की हालत में खाट पर पड़े-पड़े, उसी पर टट्टी-पेशाब करते, कोई मुझे पानी पिला दे—रानी बीवी, रानी अम्मा, बड़ी अम्मा को जैसे-तैसे जमीन मिल ही गई !

—देखो-देखो, प्राण आंखों के रास्ते निकल रहा है।—मन्नो बोली। मन्नो तथा जानकी रानी अम्मा की एकटक खुली हुई सफेद आंखों में अपलक देखती रह गईं।

—जीजी, यह इन्हें हिचकी आ रही है कि खांसी ?—जानकी ने पूछा—बहुत कष्ट हो रहा होगा इन्हें इस वक्त।

—बस, कुछ ही मिनट का खेल है ! फिर सारी पीड़ा दूर हो जाएगी इनकी !—मन्नो ने नाक सुड़की—बदन तवे की तरह तप रहा है। रानी बुआ ?

—कितना तेज बुखार है !—जानकी ने रानी अम्मा के माथे पर हथेली रखी। उसके भी गालों पर से आंसुओं की धाराएं बहने लगीं।

—अरे देखो, मैं तो भूल ही गई। गंगाजल !—जानकी जल्दी से गंगाजल

की छोटी शीशी ले आई। उसने रानी अम्मा की ठोढ़ी नीचे खींचकर गंगाजल देना चाहा मगर सब बह गया।

तभी रानी अम्मा के दोनों नथुनों से लाल आंसुओं की तरह बहकर निकला काला-काला गाढ़ा खून !

थोड़ी देर में रानी अम्मा का तपता हुआ माथा ठंडा पड़ने लगा। मट-मैले पीले बालों वाला सिर, धंसी हुई आंखें, सूखी ठठरी देह, बांस की खपच्चियों से दो पतले पैर चौदह वर्ष बाद धरती पर आ गए !

दीपा स्कूल से लौटी तो गली के नुक्कड़ पर ही अनारी साइकिल वाले ने उसे हंसते हुए बताया—तुम्हारी बड़ी अम्मा मर गईं !

मातमपुर्सी करने वाले जमा होने लगे। लक्ष्मण जाकर बांस की टिकटी बनवा लाया। रामनाम सत्त है के साथ अर्थी उठने के समय कुल आठ-नौ व्यक्ति ही रह गए थे,अधिकतर नौजवान, मुहल्ले के तथा रिश्तेदारी के। कालिन्दी आया तब लाश उठ चुकी थी। वह गली के मुहाने से ही लौट गया। श्मशान घाट के कौवों की कांव-कांव के बीच पंचलकड़ियां पाकर चिता पर जलकर खत्म हो गई रानी बीबी !

. रानी अम्मा का कहा जाने वाला वह दालान न केवल खाली बल्कि सूना तथा उदास लगने लगा।

होली के ठीक एक सप्ताह पहले वह मरी। बूढ़ी थी, कष्ट से मुक्ति पाई, सब ने एक स्वर से कहा कि अच्छी मौत पाई। मगर मौत तो मौत, किसी ने भी यह नहीं कहा कि उसने जीवन कैसा पाया। गमी के कारण जानकी के यहां होली नहीं मनाई गई। और जगह तो कोई बात ही न थी।

होली माता दो असीस ! लड़के जीवें लाख बरीस !—नाटा-गंजा तड़ीवाले तिवाड़ी अपने पीछे नारा लगाते दस-पन्द्रह बच्चों का झुंड लेकर घर-घर से होली का चंदा उगाह रहा था।

लड़कों का दल भरभरा कर जानकी के दरवाज़े में घुसने लगा तो तड़ीवाले तिवाड़ी ने डपटकर उन्हें बाहर बुला लिया।

ढुंढेरी की शाम को होली के उपलक्ष्य में समाज की सभा हुई, भैरों मन्दिर के दालान में, जिसमें छोटे-बड़े वृद्ध कुल मिलाकर पचीस-तीस व्यक्ति उपस्थित थे। हारमोनियम के स्वर तथा तबला मिलाने की ठक-ठक के बीच मन्त्रीजी ने कार्यक्रम आरम्भ किया।

"'सबसे पहले तो मुझे आपको यह बताते हुए परम हर्ष हो रहा है कि ये जो हमारे भाई तबले की जोड़ी मिला रहे हैं, उस तबले की जोड़ी को हमारे समाज के एक प्रतिष्ठित सदस्य डाक्टर कमलनारायणजी ने समाज को प्रदान किया है। और इसके साथ जो हथौड़ी है उसको भी उन्होंने दिया है। मैं उनको

समाज की ओर से धन्यवाद देता हूं तथा उनसे अनुरोध करता हूं कि वह इन दोनों को रखने के लिए कोई बाक्स वगैरह देने की कृपा करें। अब मैं अपने सभापतिजी से प्रार्थना करता हूं कि वह आज के शुभ अवसर पर सदस्यों को दो शब्द कह कर आशीर्वाद दें।

वृद्ध सभापतिजी, दुबले-पतले, गांधी टोपी लगाए, चूतड़ खींचते हुए माइक के सामने आ गए।

—भारतवर्ष का जो है सो बर्डासम धर्म ब्राह्मण छत्रिय बैस्य और सूद्र के चार त्योहार ब्राह्मणों का रच्छाबन्धन छत्रियों का दसहरा हम बैस्यों की दिवाली सूद्रों की होली जो है त्योहारों में सूद्र तो भी इसका बड़ा महत्त्व पुराने समय से वह जो भक्त प्रहलाद की कथा होलिका भक्त प्रह्लाद की बुआ में इतनी शक्ति थी कि वह दूसरों को तो जला देती थी परन्तु स्वय नहीं जलती दूसरी ढुंढा नाम की राक्षसी आज जो ढुंढेगी का त्योहार है वह ढुंढा नाम की राक्षसी ग्राम में रहा और करती क्या थी कि बच्चों को पकड़ करके अपने गुप्तांग में लोग बड़े हैरान कि बच्चे कहां लेकिन वह तो बच्चों को पकड़ करके अपने गुप्तांग में रख लेती तब सब ग्रामवासी जन लड़कों को साथ लै करके अपनी हाथ में लै करके उसको—

—ए चाचा, गुप्तांग कहां होता है ?—पांच-छह साल के एक छोटे-से बच्चे ने ज़ोर से चिल्लाकर जिज्ञासा की—चाचा, गुप्तांग—कि उसके पिता या चाचा या मौसा ने क्रोधित होकर उसे उल्टा हाथ जड़ दिया तो वह बच्चे के पूरे चेहरे पर पड़ा।

—रो नहीं जी!—सभापतिजी ने रोते हुए बच्चे को डपटते हुए कहा—असल मे होली का जो त्योहार है इसे खेलने की अभिलासा हम वृद्धों को भी जवाहिरलाल तक होली खेलने के लिए तो आप देखते ही हैं कि आम बौरा जाते हैं ये जो आम है, आम्र, यह है बसन्तोत्सव का फल इसीलिए आज के दिन आम्र-स्चूतो रसाल ये आम के नाम हैं संस्कृत में आम्रस्चूतोरसाल सहकारी पंडित कहते तो कहने का मतलब यह कि यह बालकों का त्योहार फिर वृद्ध लोग क्यों तो हम लोग क्यों तो हम लोग तो कगार के रूख हैं तो कहने का मतलब यह कि बड़ा आनन्द मिलता है जैसे आज आप सब लोगों को देखकर आनन्द हो जाता है बड़ा अच्छा है। हम मन्त्रीजी को आप सब लोगों को आशीर्वाद देते हैं कि आप लोग फलें-फूलें और दिन-प्रतिदिन इस प्रकार के उत्सव किया करें। बोलिए रजा रामचन्द्र की जै!

मन्नो ने सुषमा-दीपा से रंग न छूने को कह दिया था। दोनों बहन ऊपर वाले कमरे के बाहर की ओर का दरवाज़ा ज़रा-सा खोलकर सिर निकाले हुए देख रही थीं। होलिहारों का शोर मचाता हुआ झुण्ड निकट आता तो वे सिर

अन्दर कर दरवाजा उढका लेतीं। छज्जे या बन्द किवाड़ से टकराकर पानी के गुब्बारे फूटते। शोर कुछ दूर चला जाता तो वे फिर पल्ला खोलकर बाहर छज्जे पर निकल जाती।

गली के बाहर चौक में शोर अधिक था। छह-सात लाउडस्पीकर एक साथ चीख रहे थे—बोल राधा ऐसा प्यार जगा होगा कि नही भूले से मुस्करा दिए नही-नही-नहीं लव इन टोकियो !

आते-जाते अनेक व्यक्तियों में से एक व्यक्ति छज्जे के नीचे मुडा ही था कि दीपा ने *चिल्लाते हुए कहा—अरे, पन्ना चाचा !*

वे सीढ़ियों पर दौडती हुई नीचे उतरीं तो देखा वास्तव में पन्नालाल ही दालान में खडा हुआ था, रग से सराबोर !

भतीजियों के लिए वह दोने में मोतीचूर के लड्डू लाया था। उसने सुषमा दीपा को पास बुलाकर दो-दो लड्डू दिए। दो मन्नो को दिए एक मन्नो के लिए एक लक्ष्मण के लिए। जानकी को एक लड्डू दिया तो जानकी हंसने लगी और हथेली में लड्डू लिए-लिए देर तक हंसती ही रही ! पन्नालाल विक्षिप्तावस्था में नही था। उसने कहा कि बचा हुआ एक लड्डू रानी अम्मा के लिए है तो मन्नो ने उसे बताया कि रानो बुआ तो सात दिन हुए मर गईं। पन्नालाल हाथ का दोना लिए हुए दक्षिण के उस दालान मे गया जहां पर पहले रानी अम्मा खाट पर पड़ी रहा करती थी, वही जमीन पर दोना रख कर उसके आगे पालथी मार कर बैठ गया और उच्च स्वर में गीता-पाठ करने लगा···अनेक वक्त्र नयन-मनेकाद्भुत दर्शनम्। अनेक दिव्याभरणं दिव्यानेकोद्यायुमम्। दिव्य माल्याम्बरधरं दिव्यगन्धानुलेपम्। सर्वाश्चर्यमयं देवमन्तं विश्वतोमुखम्। दिवि सूर्यसहस्रस्य भवेद्युगपदुत्थिता। यदि मा: सदृशी सा स्याद्भासस्तस्य महात्मनः॥

पन्नालाल को पूरी गीता ही नही वाल्मीकीय रामायण का अधिकाश तथा कालिदास, माघ, बाणभट्ट, पंडितराज जगन्नाथ आदि का अधिकतर भाग कंठस्थ था ! सातवलेकर की संस्कृतस्वयंशिक्षक से उसने संस्कृत का स्वाध्याय शुरू किया था फिर बनारस गया था संस्कृत पढने। वही उसका दिमाग चल गया।

ग्यारहवें-बारहवें-तेरहवें अध्याय का उसने रानी अम्मा के स्थान पर बैठकर पाठ किया। सफेद इनैमल वानिश पेन्ट और तरह-तरह के रंग चुपडे होने के कारण उसका चेहरा पहचान में आने लायक नहीं था।

घर में रंग नही खेला गया था फिर भी जानकी दोपहर से ही घर धो रही थी। ऊपर की छत, सीढ़ी, बीच की छत, छज्जा, कमरे। उसे भांग चढ़ गई थी। भांग वह पिछले कई महीनों से खाने लगी थी। लक्ष्मण ने उसे सुझाया था कि जरा-सी भांग ले लेने से रात नींद बढ़िया आया करेगी। तो वह शाम को छोटी-सी हरी गोली मुह में रखकर पानी से उतार जाती। उस दिन भांग में शायद

भांग का बीज रह गया होगा ।

फिर वह दांते के आगे अपनी कमर पर दोनों हाथ टिकाकर खड़ी हो गई और गीता पाठ करते हुए पन्नालाल को गौर से देखने लगी ।

पाठ पूरा करके पन्नालाल ने कहा कि मैं उस श्मशान घाट पर जाऊंगा जहां अम्मा जल रही हैं । मन्नो ने उसे समझाया कि तुम्हारी अम्मा तो जल फुंककर कभी की समाप्त हो गईं । पन्नालाल बिसूरने लगा ।

शाम को लक्ष्मण घबराया हुआ घर आया । पन्नालाल को लोटा देखकर उसने उसे उड़ता उड़ता नमस्कार किया और तुरन्त मन्नो को बताया कि कचौड़ी वाले की बहू एसी करेन्ट से चिपककर मर गई, अभी शाम को । गुसलखाने का दरवाजा तोड़कर लाश निकाली गई है । स्नान करने के बाद गीली धोती लोहे के तार पर फैलाई थी वही धोती पकड़े हुए गुसलखाने के फर्श पर मरी पड़ी पाई गई । लोहे की अलगनी के ऊपर बिजली का तार था, जिसकी प्लास्टिक कपड़ा फैलाने के तार से रगड़ खाती खाती घिस गई थी इसलिए करेन्ट लोहे के तार में आ गया । बिजली की फिटिंग स्वयं उसके पति रामेश्वर ने की थी, गुदड़ी बाजार से बिजली का पुराना तार लाकर । अट्ठाईस साल की थी, एक बच्चा तीन साल का, पेट में पांच छह माह का गर्भ ।

होली मिलन की उल्लास भरी शाम, मुहल्ले में सनाका छा गया । लाउडस्पीकर एक के बाद दूसरे चुप हो गए, पड़ोस वाले मुहल्लों में कई लाउडस्पीकर जरूर पहले की भांति संगीतमय युद्ध करते रहे ।

उस रोज देर रात तक नल में पानी आता रहा । जानकी ने पन्नालाल को नया साबुन दिया तो वह नल की काईदार हौद के अन्दर बैठकर अपने सारे शरीर से रंग छुड़ाकर साफ करता रहा । वह नहा कर बाहर निकला तो मन्नो ने उसे लक्ष्मण का पाजामा दे दिया ।

रानी अम्मा के मरने के बाद उत्तर वाले दालान की दीवारें पिंडोर से पुतवा दी गई थीं और अब यहां खाना बनने लगा था ।

वहीं पन्नालाल कमर तथा सिर झुका कर गुमसुम खाना खा रहा था ।

—पन्ना, थोड़ी-सी सब्जी और दे दूं ?—मन्नो उसके एक बगल बैठी थी ।

—एक पराठा और हो तो दे दो ।—पन्नालाल ने सिर झुकाए हुए ही कहा—अब मैं मैं यहां नहीं आया करूंगा ।

—क्यों नहीं आओगे पन्ना ? हम लोग तो हैं, मैं हूं, तुम्हारी भाभी हैं, तुम्हारी दो दो भतीजियां हैं ।

—नहीं, अब मैं यहां नहीं आया करूंगा ।—पन्नालाल की आंखों से दो बूंद आंसू टप-टप् नीचे गिरे—मेरी अम्मा चली गईं, अब से मैं यहां नहीं आऊंगा ।

मन्नो की भी आंखें डबडबा आईं ।

दरवाजे बन्द कर बिजली बुझाकर सब ऊपर-नीचे के दरो मे सो गए।

रात के गहरे सन्नाटे में अंधेरे आंगन से आती मन्नो की चीख-पुकार सुनाई दी—आग-आग-आग ! आग लगी है ! जानकी ! जल्दी से दौड़ो ! लच्छू ! लच्छू।

जानकी, लक्ष्मण, सुषमा, दीपा सब ऊपर से दौड-दौड़ कर नीचे आए, पड़ोस के घरो में जगहर हुई।

चूल्हे के बगल वाली अल्मारी का सबसे निचला दर, जहां जली लकड़ियां बुझा कर कच्चा कोयला जमा किया जाता था, वह पूरा दर भट्ठे की तरह धू-धू करता हुआ जल रहा था।

न मालूम मन्नो ने लकड़ी बुझाने में लापरवाही की अथवा पन्नालाल ने आग लगाई।

जानकी ने लक्ष्मण के कान में धीरे से कहा तो लक्ष्मण पन्नालाल को ले कर नीचे अपनी बैठक मे, दरवाजों की कुडिया भीतर से चढा कर सोया।

सुबह लक्ष्मण की आंख खुली तो उसने देखा कि पन्नालाल उससे पहले ही जाग गया था और बाहर की सलाखदार खिड़की खोल कर उसे पकडे हुए खड़ा था, अलिफनंगा !

सुबह-सुबह ही सारे मुहल्ले में यह समाचार फैल गया कि पन्नालाल त्यौहार पर घर वापस आ गया !

बाजार लगने लगा था। खिडकी के नीचे बैठी कुंजडिन की टोकरी पर झुका हुआ झब्बेदार लाल तुर्की टोपी लगाए हुए वही बूढा आलू छांट-छांट कर एक ओर रखता जा रहा था।

सब्जीवालों की लगातार हाक, चीटियों-से आते-जाते चुपचाप और चिल्लाते आखों से टटोलते खरीददारो का रेला। कुछ साइकिल भी पकड़े थे और साइकिल को अपने बगल मे रेंगा रहे थे।

—मैंने तो उनसे साफ-साफ कह दिया कि पहले नगदी सामने रखो तब अगली बात करो !

भीड मे दस-बारह वर्ष का एक किशोर साइकिल का हैंडिल दोनों मुट्ठियों मे कस कर पकडे टोकरियो मे लगी सब्जियों पर नजर बिछलाता हुआ आगे बढ रहा था। देखने में वह मुहल्ले का लड़का नही लगता था। नीले हाफ पैन्ट के अंदर खुंसी हुई सफेद कमीज, मोजेदार जूते। उसकी साइकिल का हैंडिल दूसरी साइकिल के हैंडिल से टकरा कर उलझ गया। वह दूसरी साइकिल सरला गुडी की थी जो शलवार कुर्ता सफेद दुपट्टा और चश्मा पहन कर सब्जी खरीदने निकली थी।

-- क्यों वे साले आंख है तेरी कि बटन—सरला ने दो उलझी हुई साइकिलों में से अपनी साइकिल को अलग करने के लिए उसे कई बार जोर से झिझोड़ा—

हरामी के पिल्ले !

साइकिल सुलझ कर अलग हुई ही थी कि उसने अपनी साइकिल को झटके के साथ घोड़े की तरह एँड लगा कर अगला पहिया आसमान में खड़ा कर दिया !

—चढा दूंगी तो घुस जाओगे वापस जहां से निकले हो !

ही-ही-ही-ही-करके हंसता हुआ भारतमाता मंदिर की ड्योढ़ी पर अपने अंडे रख कर उन पर बैठा हुआ लल्लन परचूनिया ज़ोर से चिल्लाया—चढ़ा दो ! चढ़ा दो।

एकदम साड़ बन गयी थी उन दो-तीन लमहों के लिए सरला गुंडी की साइकिल जब तक उसने अगला पहिया नीचे नहीं गिराया !

इसी के साथ कुंजड़िन ने भी बूढे मियां के चुने हुए आलू के छोटे से ढेर को हाथ मार कर टोकरी के आलुओ के साथ मिला दिया—जाओ-जाओ, आगे बढ़ो !

बूढे मियां कमर झुकाए-झुकाए खड़ा हो गया। वह पुराने फ्रेम में तेज पावर के मोटे धुंधले शीशे लगाए हुए था और उसके कलछौंर बन्द होंठो के दोनों किनारों पर पिछली रात को खाए खाने का सूखा सफेद लुआब चिपका हुआ था।

—आओ, जल्दी करो नही तो मेरी आधे दिन की गैरहाज़िरी लग जाएगी। जानकी ने दरवाज़े की दो सीढी उतर गली में खड़ी होकर लक्ष्मण से मुस्कराते हुए कहा—तुम मुझे स्कूल के आगे उतार कर अपने कालेज चले जाना।

भीड़ मे धीरे-धीरे आगे साइकिल से रास्ता बनाता हुआ लक्ष्मण, पीछे-पीछे जानकी। वे थोडी दूर ही गए थे कि किसी ने पीछे से फब्ती कसी—जनानी बाइ-सिकिल पर बैठा कर आगे, ले चले लला लखन लाला !

लक्ष्मण ने सिर घुमा कर उसे गाली दी—कुत्ता !

—चलो-चलो, नहीं तो मुझे देरी हो जाएगी।—फुसफुसा कर जानकी ने लक्ष्मण की पीठ में टोहका मारा।

—इसी को कहते हैं प्यारे, कि निरमोही माता तजै-तजै निरजर नारि ! क्यो पन्नू गुरु ! क्या दबाए लिए जा रहे हो दोने मे, जलेबी कि इमारती ? अरे, खिलाओ न तो नाम ही बता दो !

लक्ष्मण का सारा सामान दालान मे निकलवा कर उसके कमरे मे पन्नालाल को रख दिया गया। पड़ रहता था वह वही दिन-रात। छोटे-से कमरे में लगातार तेज़ी से चक्कर-दर-चक्कर लगाते और चिल्ला-चिल्ला कर श्लोक पढ़ते हुए ! मुहल्ले के छोटे बच्चे जंगले से ज़रा दूर पर गली में अर्धवृत्त बना कर खड़े हो उसे देखते रहते, जब देखते-देखते उकता जाते तो अपने संगी का हाथ पकड़ कर कहते—आओ, चला जाए !

लक्ष्मण का विवाह फिर पक्का हो गया था, दूसरी जगह। कानपुर की लड़की

थी, गंगा। बीए बीटी पास। एक स्कूल मे पढ़ाती थी। लड़की मिलने से कहीं बडी बात, लड़की से पहले एक नियमित नौकरी मिल गयी लक्ष्मण को। सयोग भी ऐसा कि नौकरी दिलवाई बुल्लो के साढ़ूभाई सीताराम ने अपने ही स्कूल की केमिस्ट्री लैब मे, सेकेन्ड असिस्टेन्ट की। प्राइवेट स्कूल था अतः साढे छह सौ की रसीद पर दस्तखत कर लक्ष्मण को मिलता था पौने चार सौ। इतना भी बहुत था बहुत। लक्ष्मण पहले वेतन के साथ घर लाया लाल आड़ी धारियों की नायलान की एक साडी, "अम्मा" अर्थात् जानकी के लिए। शेप सारा वेतन भी उसने जानकी के पास जमा कर दिया। मन्नो उस सारे दिन आंख मिचमिचा कर आखों मे बार-बार उमड़ आने वाले खुशी के आसू पोंछती रही। हनुमानजी को सेर भर बेसन के लड्डू का भोग लगाया था उसने और एक लड्डू का आधा हिस्सा अपने लिए रख कर सारे लड्डू घर के प्राणियो तथा मुहल्ले के लड़को मे वितरित कर दिए।

होली बीते हफ्ता-दस दिन गुज़रे थे। शाम होते ही मच्छर इस कदर परेशान करने लगते कि न कमरे के अंदर चैन न दालान में-छत पर। जानकी शाम को स्कूल से लौटते ही सब्ज़ी बना कर ढक देती, लडकियां खाना मांगतीं तो अंगीठी पर तवा चढा कर गर्म-गर्म पराठा सेंक देती।

—दीदी, चलो घोड़े वाले पार्क में चल कर बैठें।—दीपा ने कहा तो सुषमा राज़ी हो गयी। पिछले दो दिनो से उसे एक बार भी दौरा नही आया था। फिर अंधेरा हो गया था अतः बाहर किसी के देख लेने का खटका भी न था। जानकी अगर घर मे थी तो रही होगी किसी कमरे मे दोनों उसे बताए बिना पार्क में जा कर पश्चिम वाली सिमेन्ट की बेन्च पर बैठ गयी। पार्क के फाटक पर लगे अकेले उद्धस बल्ब की रोशनी वहां तक नही पहुंचती थी।

—उस घर को देखो दीदी, तो ऐसा लगता ही नही कि वह हम लोगों का अपना घर है—उनसे पचास कदम की दूरी पर खड़े उनके मकान के गलियारे में रोशनी जल रही थी। सामने की बैठक बद थी, पिछले आठ-दस दिनों से। उसके अदर बंद पन्नालाल की आवाज़ भी बाहर नही आ रही थी। ऊपर के सामने वाले कमरे के दोनों दरवाज़े खुले हुए थे लेकिन कमरे का बल्ब बुझा हुआ था। हरिहरचा के बरामदे मे रोशनी जल रही थी। परछन हलवाई की दुकान के आगे दो ग्राहक चुपचाप खड़े थे, नौकर कडाह से पूड़ियां निकाल रहा था और परछन हलवाई बायी मुट्ठी में तराज़ू उठाए हुए था।

—क्या सोच रही हो दीदी ?

दीपा ने पूछा तो सुषमा सोचने लगी। फिर सिर हिलाते हुए बोली—कुछ भी नही! बस, मैं किसी तरह से अच्छी हो जाऊं। नही तो मुझे डर लगता है कि आगे चल कर मेरा क्या होगा, कौन रखेगा मुझे, खाना-कपड़ा कौन देगा!

—तुम जरा भी फिक्र न करो दीदी। बस, मैं हाई स्कूल-इंटर के बाद बीए कर लूं। फिर मारूंगी लात पढ़ाई को ! बीए करके करूंगी एलटी। फिर स्कूल में पढ़ाने लगूंगी तो पांच-छह सौ रुपया तो आसानी से मिल ही जाएगा मुझे! तब सबसे पहले तो तुम्हारा इलाज कराऊंगी। दीदी, अगर साल भर भी लगातार तुम्हारा इलाज—

सुषमा ने अचानक दीपा के मुंह पर हथेली कस कर उसे चुप कर दिया। लक्ष्मण चरखी घुमा कर पार्क में घुसा था और सीधा घोड़ेवाली मूर्ति की ओर बढ़ गया। दीपा ने देखा, वह मूर्ति के खंभे के पीछे अंधेरे में जा कर खड़ा हो गया।

तीन मिनट भी न बीते होंगे कि जानकी चरखी घुमा कर पार्क में आयी और खाली बेंचों पर नजर डालती हुई उसी घोड़ेवाली मूर्ति की ओर टहल गयी।

दोनों ने उन दोनों को देखा।

थोड़ी देर बाद जानकी तथा लक्ष्मण साथ-साथ चरखीदार फाटक की ओर लौटने लगे तो दीपा ने पुकार लिया—अम्मा !

—तुम दोनों यहां बैठी हो ! जानकी मुड़ कर उन दोनों की बेन्च की ओर बढ़ती हुई तीखे स्वर में बोली—मैं तुम लोगों को ढूंढते-ढूंढते परेशान हो गयी ! शाम का समय, न पूछना न कहना, जब मन हुआ घर से गायब हो जाती हो !

—अरे हम लोग तो अभी-अभी यहां आ कर बैठी ही थीं! सुषमा ने मुस्कराते हुए कहा—तुम्हारा मन हो तो दो मिनट तुम भी हमारे साथ यहां बैठ लो।

—नहीं। घर चलो। मैं तो तुम लोगों की तलाश में निकली थी। घर में खोज-खोज कर जब परेशान हो गयी तो कहा कि हो सकता है भई, तुम लोग पार्क में जा कर बैठी हो ! लेकिन तुम लोगों को मुझसे कह कर आना चाहिए था।

जानकी तो लड़कियों से भी घर वापस चलने को कह रही थी मगर न जाने क्या हुआ कि उसके विचार बदल गए। बोली—तुम लोग घर जाओ। मैं पांच मिनट को यहां सुस्ता लूं। आती हूं मैं जरा देर में।

लक्ष्मण रुका नहीं, सीधा चला गया था।

दोनों लड़कियां जानकी को बेन्च पर बैठी छोड़ कर घर लौट आयीं।

ठाकुरद्वारे में मन्नो दिखलायी दी। सुषमा-दीपा दालान से हो कर जा ही रही थीं कि लक्ष्मण ठाकुरद्वारे में खड़ा हो जंगलेदार दरवाजा पकड़ कर अपनी दोनों आंखें एकदम छोटी-छोटी कर उन दोनों को घूरने लगा, कहा एक भी शब्द नहीं।

दोनों के पीछे-पीछे ही आई जानकी।

ये तीनों ऊपर आयीं तो सुषमा बोली—अम्मा, अभी मैंने क्या देखा ? कि तुम आई—

—हां मैं आई और मैंने उनके जंगले मे झांका। दो मिनट खड़ी रही, आहट लेती रही। आहट नही मिली तो मैंने जंगले मे झांका और आहट नही मिली तो सीढी चढ़ आयी। तो मैंने कोई गुनाह नही किया, मैं जानू, मेरा काम जाने!

—हम दालान में पहुंचे तो वह बाहर चले आए।

—तो बाहर क्यों चले आए, यह उनसे पूछना था! मेरे आहट लेने से तो बाहर नही आए न! बहुत देर तो आहट लिया नही। एक सेकेन्ड आहट लिया, एक सेकेन्ड में ऊपर चढ़ आयी!

—और पार्क में घोडेवाली मूर्ति के पीछे हवाखोरी कौन कर रहा था अम्मा! दीपा तेज़ आवाज मे बोली—अपनी छोटी-छोटी लड़कियो की सारी जवानी तुम्ही ले लोगी अम्मा तो लड़कियां बचपन ही मे एकदम बूढी हो जाएगी। अब तक तो सब ढका-मुंदा चलता रहा। अब ऐलानिया बेहयाई पर—

—मैं तो तुम लोगों को ढूंढने निकली थी! जानकी लगभग चीखने लगी—पाल-पोस कर कर तुम्हें बड़ा किया तो क्या यह सुनने के लिए कि तुमने लच्छू की ओर क्यों ताका! मैं बड़ी हूं, मैं कुछ भी कर सकती हूं। फिर लच्छू तो लड़के के बराबर है!

—हां, बड़ी हो तभी तो कहती हो कि लो थामो बेटा! सोलह साल की भी पूरी नही हुई थी दीपा! उसने दाहिनी मुट्ठी का अंगूठा निकाल कर मुट्ठी हिलाते हुए कहा।

छत पर अंधेरा था। दीपा का पहला घूसा जानकी के मुंह पर पड़ा।

—हम दोनों को चरका देती हो! कुतिया!

फिर वह जानकी को घूंसा-ही-घूंसा मारती गयी। जानकी लुढक कर गिर गयी।

—तुम मुझे मारोगी!—चढी हुई एकदम स्वस्थ आवाज में जानकी ने प्रतिवाद किया—झूठा अपलोक लगाओगी। अपनी मां पर! अभी जा कर मैं पुलिस मे तुम्हारी रपट लिखाती हूं! अपनी सुरच्छा के लिए पुलिस बुलाती हूं! तुम्हें पेट से पैदा किया तो इस दिन के लिए!

—मैं बंद कर दूंगी तुम्हें कोठरी में! लच्छू चाचा के साथ। रहो वही तुम दोनो। कम-से-कम आंख से दिखलायी तो न पड़ेगा!

लक्ष्मण बीच सीढ़ी तक आ कर वहीं हतप्रभ खड़ा हुआ खखार-खखार कर अपना गला बार-बार साफ करता रहा लेकिन छत पर आने का उसे साहस न हुआ।

तीनों मां-बेटियां देर तक चुपचाप रोती-सिसकती रहीं।

पिछले कई दिनों से पन्नालाल की कोठरी मे खामोशी छायी हुई थी। मन्नो ने अंदर के दरवाज़े का एक पल्ला थोड़ा-सा खोल कर अंदर झांका, पन्नालाल

उकड़ूं बैठा पाखाना कर रहा था। मन्नो से उसकी आँखें चार हुईं तो वह मुस्कराया। मन्नो ने झट से किवाड़ भेड़ कर कुंडी चढ़ा दी।

दोपहर को लक्ष्मण ने दरवाजा खोल कर खाने की थाली अंदर रखनी चाही तो पन्नालाल ने खड़े हो कर बायें हाथ मे वह थाली ली और दाहिना हाथ लहरा कर दरवाजा बंद कर देने का मौन इशारा किया।

बाहर की गली में आते-जाते मनुष्यों की बातचीत तथा खेलते हुए बच्चो का मिला-जुला शोर-गुल सुनायी दे रहा था।

अचानक गली में एक बच्चे के चीख कर रोने और अरे मार डाला ! बचाओ, कोई बचाओ की आवाजें फूट पड़ी। झपट कर लक्ष्मण बाहर निकला तो देखा कि चार-छह राहगीर मिल कर सात या आठ वर्ष के एक चीखते-छटपटाते हुए लडके को कमर-जांघ तथा दोनों पैरों से पकड़ कर अपनी ओर खींच रहे है और उसी लडके की कंधे तक पूरी दाहिनी बांह जंगले के भीतर है, जिसे पन्नालाल दोनों हाथों से रस्से की तरह पकड़े हुए दानवी बल के साथ अंदर की ओर खींच रहा है !

—पन्ना ! —पन्नालाल जी ? छोड़ दो बिचारे को ! —अरे, तुम लोग ही लड़के को क्यो नही छोड़ देते।—हां हा, छोड दो नही तो खींचातानी मे चिथड़ा हो जाएगा! —चाचा! अरे बचाओ चाचा! —लड़का पीड़ा तथा आतंक से ग्रस्त रो नहीं केवल चिल्ला रहा था।—घर वालों को जब मालूम है कि साला पागल है तो बांध कर क्यों नहीं रखते घर वाले ! —आदमी है कि एकदम हैवान ! —अरे, जब उसका दिमाग ही नहीं सही है तो वह क्या जाने कि वह क्या कर रहा है ! —मर गयी रानी बीबी और पागल औलाद अपनी छोड़ गयीं ! — साले से बातचीत करो तो उसका ध्यान दूसरी तरफ चला जाएगा, हाथ छोड देगा ! —हां हा, किसी को श्लोक-उश्लोक आता हो तो सुनाओ ! —जै जगदीश हरे ! —तोड़ दो दरवाजा और पिटाई करो ऐसी कि—पन्नालाल पागल-सागल कुछ नहीं है, दिन रात मार श्लोक तो चिल्लाता रहता है !

जानकी, लक्ष्मण, सुषमा, दीपा, मन्नो सब चिमगादड़ों की तरह बाहर से भीतर-भीतर से बाहर दौड़ रहे थे लेकिन न उन्हें समझ आ रहा था न मुहल्ले वालों को कि पन्नालाल के फौलादी चंगुल से लड़के का हाथ छुड़ाया कैसे जाए। लड़के की बांह की हड्डी शायद टूट गई थी क्योंकि वह बेहोश हो गया था।

सुषमा फिर दौड़ी-दौड़ी घर में आई। दालान में लकड़ी का हाथ भर लम्बा पाटा दिखाई दिया जिस पर रख कर साबुन लगे कपड़ों को मुगरी से पीटा जाता था। उसने वह पटरा उठाया और चोरों की तरह पन्नालाल की कोठरी की सांकल उतारी। दबे पांव पन्नालाल के पीछे जा कर दोनों हाथों से मजबूती से

पकड़ कर वह पटरा एकदम ऊपर तक उठा कर पूरे बल से पन्नालाल के सिर पर दे मारा! पटरा बीच से टूट कर दो टुकड़े हो गया, पन्नालाल कार्क के ढक्कन की तरह फर्श पर लुढ़क गया!

—यह लडका है किस का?—रामभरोसे का लड़का है।—तो खड़े मुह क्या देख रहे हो, बुलाओ जल्दी से रामभरोसे को!—यह पन्नालाल की खिडकी के प.स गया ही क्यों था? लड्डू लेने?—रामभरोसे प्रेस मे होंगे।—मैं बताऊं? पन्ना ने रज्जू से कहा कि बताओ तो कि मेरी मुट्ठी मे क्या है। तो रज्जू खिडकी के पास चला गया। तो पन्नालाल ने उसका हाथ ही पकड लिया!—कोई तो होगा रामभरोसे के घर मे!—बेचारे की हड्डी जरूर टूट गई होगी!—आप लोगों को ख्याल रखना चाहिए। अगर घर मे नही बद रख सकते तो पागलखाने मे भरती करवा दीजिए।—अरे, लड़के को अस्पताल ले जाओ, अस्पताल!—नही तो पुलिस को पकडा दीजिए!—कौन ले जाए अस्पताल। पहले घर्‍ कोई आवे तब न!

धीरे-धीरे भीड बिखरने लगी। दो आदमी बेहोश रज्जू को गोद ^उठाए
वहीं खड़े रहे। लल्लन परचूनिया अपनी दूकान से उठ कर आया, ल ' को सिर
झुका कर तजबीतता रहा फिर दाहिनी हथेली बाई-बाई करने ' रह हिलाता
हुआ बोला—हड्डी-वड्डी कही नही टूटी है डर गया है बेचा गलेदार खिडकी के
जानकी तथा मन्नो ने सलाह करके तय किया, पन्नालाल उसे खोलना
भीतरी किवाड़ों को भी इस तरह बंद कर देना चा
चाह कर भी न खोल पाए। ट की पाटियां पड़ी थी। लक्ष्मण
घर के पुराने सामानों मे रानी अम्मा या रख कर उन पर बड़े-बड़े कीले
ने खिड़की का दरवाजा बंद कर के दिया।
लोढ़े से ठोक-ठोक कर किवाड़ हो गया था।
पन्नाल ना मरा न उन्होने सांकल चढ़ा दी।
र का दरवाज़ अब किसी भांति भी सुरच्छित नही है!—जानकी
र मे रख
ली।
रखोगी तो फिर रखोगी कहां!—मन्नो ने पूछा।
—स में दे दूं क्या?—जानकी पशोपेश में पड़ गई—ओझाजी से पूछ
कार साहब शायद कुछ मदद कर सकें! मेरे तो सच, कुछ समझ मे ही
आ रहा है!

शंभू ओझा से इधर लोग-बाग बहुत कतराने लगे थे। वजह, उसके खद्दर के कुर्ते के जेब मे रहने वाला छोटा-सा टेपरिकार्डर। हुआ यो कि रऊफ साहब का एक परिचित गया था हज करने। वहा से वह एक माइक्रो कैसेट टेपरिकार्डर ले

आया। सिगरेट पैकेट से भी छोटा था वह टेपरिकार्डर और उसका टेप दिया सिलाई की डिब्बी का आधा ! रऊफ साहब ने देखा तो उस पर उनका मन चल गया। मोल-भाव के बाद पौने पांच सौ में खरीद लिया रऊफ साहब ने। खरीदा था तो अपने लिए नहीं बल्कि शंभू ओझा को भेंट करने के इरादे से। एक स्कूल की मैनेजिंग कमेटी की मैनेजरी का उम्मेदवार था रऊफ साहब, शंभू ओझा शिक्षा उपमंत्री से कह दे तो उपमंत्री के हल्के से इशारे से भी रऊफ मियां के पौबारह थे। सो वह माइक्रो टेपरिकार्डर उसने शंभू ओझा को चढ़ा दिया। शंभू ओझा महाप्रसन्न ! जैसे कि बच्चे को मनचीता खिलौना मिल गया हो ! लोगों से बातें करते-करते वह जेब में से रुमाल निकलता और मुंह पोंछ कर रुमाल जेब में वापस रख देता।

—अरे, ज़रा रुको भी !—वह विदा मांग कर रुखसत होते हुए व्यक्ति की क॰॰ई पकड़ कर उसकी हथेली में वह डिबिया रखते हुए कहता—ज़रा इसका बीच॰॰ला बटन तो दबाओ !

॰रिकार्डर पिछले दस-पन्द्रह मिनट में हुई सारी बातें दुहराने लगता !

—॰॰जी, इसे तुम शास्त्रीजी को भेंट कर दो !—धन्नूगुरु टेप से बाहर निकलती ॰॰ आवाज़ सुनते हुए खिसिया कर बोला—वह भी नेता आदमी है, उनके बड़े का॰॰ चीज़ सिद्ध होगी।

—पागल हु॰॰ ॰॰ शास्त्रीजी के पास ऐसे दस टेपरिकार्डर पड़े होंगे और उन्हें याद न होगी कि,

उसी माइक्रो टेपरिकार्डर सरक रहे हैं !

टेप करके पन्नालाल को सुनाया मगर ॰झा ने एक बार पन्नालाल का प्रवचन भाव से वह बोला—मैंने ही इस सम्पूर्ण ॰ पर कोई असर न हुआ। निर्विकार सर्वस्य प्रभवो मत्तः। मत्तं प्रवर्तते ! मैंने ही सब॰ उत्पत्ति की है शंभूजी ! अहं सर्वभूताशयस्थितः ओझाजी, आप नेता आदमी ह॰॰ है,—॰॰ात्मा गुडाकेश पितामह-प्रपितामह को देखा है। यस्मिन कुलेस्वमुत्पन्नेभ्यु मैंने अ॰॰ पिता- कह कर पन्नालाल हाहाहाहा करके ठठ्ठामार हंसने लगा ॰॰॰ न हन्यते !

और अपने उसी छोटे से टेपरिकार्डर से शंभू ओझा ने एक ॰॰॰ सबूत क॰ फांसी के तख्ते के नीचे तक ला खड़ा किया ! मगर वह तो अलग ॰॰॰ है ! बहरहाल, उस कठिन स्थिति में से जानकी को शंभू ओझा ही ने उबारी वह डी॰ एम साहब से मिल कर आगरा के डी॰ एम के नाम एक सिफारिशी पत्र आया कि पन्नालाल लम्बे अर्से से विक्षिप्त है अब परिवार एवं पड़ोस की शान्ति को भंग कर रहा है। परिवार में उसकी विधवा भाभी के अतिरिक्त कोई भी पुरुष नहीं रहता है अतः श्री पन्नालाल को आगरा के पागलखाने में भरती करवाने में जो भी सहायता श्रीमान प्रदान कर सकेंगे उसके लिए मैं आभारी हूंगा। अवश्य

ही, पागलखाने मे मरीज़ को रखने पर जो व्यय होगा उसे प्रार्थिनी श्रीमती जानकी देवी वहन करना स्वीकार करती हैं।

अब समस्या थी कि कौन ले जाए पन्नालाल को आगरा ! कहा जाए, किससे कहे जानकी ! ऐसे समय में लक्ष्मण ही काम आया उसके ! जानकी का साथ ज़रूरी था, क्योंकि वहा न जाने किस कागज़ पर दस्तखत करने की ज़रूरत पड़ जाए।

पन्नालाल के दोनों हाथ कलाइयो पर से बाध कर रिक्शे से स्टेशन तक पहुचाया चन्दर ने। दिन की ट्रेन थी अत. ट्रेन मे लक्ष्मण ने पन्नालाल के बंधे हुए हाथों को एहतियातन ऊपर खीच कर सामान वाली बर्थ की जंज़ीर के साथ रस्सी से बाध दिया और उसके दोनो पैर अपने ट्रंक के कुंडे से, इसलिए बीच में कोई गड़बड़ी नहीं होने पाई।

सौभाग्य से पन्नालाल को भरती कराने में ज़रा भी कठिनाई न हुई। जानकी ढाई सौ रुपए बैंक से निकाल कर अपने साथ ले आई थी। पन्नालाल भरती हो गया, यह एक बहुत बड़ा काम हुआ।

जानकी ने ताजमहल नही देखा था। लक्ष्मण ने भी नही। ताजमहल और एतमादुद्दौला देखा। फिर जानकी ने कहा कि जब यहां तक आए हैं तो मथुरा-वृंदावन भी लगे हाथ देख लें। एक सारा दिन तो लग गया वृंदावन में ही। जानकी को याद आ गई, दसियों बरस पहले आठवें दर्जे की पाठ्य पुस्तक मे पढ़ी रसखान की कविता मानुस हो तो वही रसखान···!

श्रीनाथजी की शयन-आरती देख कर तो भक्ति भाव से अभिभूत हो उसकी आंखें छलछला आईं—क्या रखा है इस नीरस संसार मे ! रुपया-पैसा-आदमी सब निस्सार है ! —उसने लक्ष्मण से कहा—लड़कियां अपने-अपने रास्ते चली जाएं तो मैं खो जाऊंगी भगवान के भजन-पूजन में !

जून में लक्ष्मण के विवाह की सायत निकली थी। विवाह-बरात कानपुर से, वही हटिया की एक धर्मशाला से। बरात मे पन्द्रह-सोलह व्यक्ति गए थे। सीताराम, उसका लडका कृपालू, पेशकार साहब, शंभू ओझा और बुचुन। बुचुन बरात मे सम्मिलित होने का एक भी अवसर मिलने पर उसे गवाता न था। मन्नो [illegible] थे। मन्नो तथा बुल्लो ने जानकी से बहुत इसरार किया मगर संतुष्ट थे। [illegible] हुई न सुषमा-दीपा को जाने दिया। एक हज़ार समधी से इक्यावनी ले के [illegible] लड़की अगर साल के भीतर [illegible] [illegible]। बुल्लो तथा मन्नो [illegible] के बाद

सौभाग्यवती मानूंगा !

लड़की का पिता बैंक आव बड़ौदा में क्लर्क था। सीधा कहिए या मूर्ख, वह क्या जाने बुल्लो की भाषा ! समझ ही न पाया होगा कि कौन-सी सास !

उसने दहेज में एक सोफा-सेट, कपड़े की अलमारी, शृंगारदान, मरफी का ट्रांजिस्टर रेडियो, आयरन और काठ की अल्मारी दे तथा एक स्कूटर का वायदा कर बुल्लो के सामने हाथ जोड़ कर कहा—महाराज। और नववधू को ससुराल विदा कर दिया !

ससुराल अर्थात् वही हटिया की धर्मशाला ! प्रीतिभोज चूंकि अगले दिन होना था तब बरात को लौटना था अत: निश्चित हुआ कि गंगापूजन यहीं करा लिया जाए।

—अरे, मैं कहता हूं कि जब बहू का नाम ही गंगा है तब पूजन की क्या नेसेस्टी है ! —बुचुन उत्साह से बोला · क्यों पेशकार साहब, मैं दुरुस्त कह रहा हूं न ?

—लेकिन धार्मिक कृत्य तो करना ही होगा बुचुन जी !

—आप बिलकुल ठीक कहते हैं ! —बुचुन ने तुरन्त स्वीकार कर लिया।

बूढ़ा बुल्लो तथा एक-दो को छोड़ अन्य सभी बराती, लक्ष्मण नवसपत्नीक, बड़ी मन्नो वधू पक्ष की दो-तीन बुजुर्ग स्त्रियों के मार्ग प्रदर्शन के साथ गंगाजी पहुंचे।

गांठ जोड़ कर विधिवत् स्नान-पूजन करने के बाद गंगा कपड़े बदलने लगी। वह नीचे की गीली चूनर खींच कर अलग करके गीला ब्लाउज उतार रही थी और मन्नो उस के ऊपर द्रौपदी के चीर की तरह सूखी साड़ी डालती जा रही थी। नदी का किनारा, हवा तेज तो थी ही। हवा के एक झोंके ने ज़रा-सा व्यतिक्रम पैदा करके नववधू का सूखा पल्लू झंडे की तरह लहराकर नीचे गिरा दिया। कहां तो बरातियों ने वधू की मुंह दिखाई भी न कि थी, कहां उसकी गोरी-गोरी कुआरी छातियां घाटिय-पुरोहित बुल्लो तथा अन्य पुरुषों की आंखों में बिजलियां चमका गईं !

लक्ष्मण तनफना गया। गीले रोंयेदार तौलिये का गोला बनाकर गंगा के सीने पर फेंक कर मारते हुए बोला—मर्दों को ऐसे अभी से अपनी ऐसे चूची दिखाती है साली !

गंगा बहू ने घूंघट के अन्दर से सोधेपन के साथ उत्तर दिया — मैं उनकी लड़की नहीं हूं, जो कोई मुझसे आंख मिलाकर बात करे, हां ‘४ के कमरे में

भोज बहुत बढ़िया था, सारे प्रकार फर्स्ट

महीने की गर्मी की परवाह न करते —

उगली-अपनी याद दिला

भेजी। उसी शाम सारे बरातिओं को शहर दिखाने ले जाया गया था, कमला रिट्रीट वगैरह। सब थकान और गर्मी में लस्त-पस्त हो गए थे, लौट कर भांग पडी ठंडई पी-पी कर जो सोए तो सो ही गए। रबडी चाटने के बाद गला साफ करने के लिए लक्ष्मण के कमरे से पानी की मांग होने की कौन कहे, खट-खुट की आवाज तक न सुनाई दी। केवल बुचुन दस-दस मिनट के अन्तर पर उठ-उठ कर संडास की ओर भागता रहा। कचौड़िया तथा उसके बाद खीर उसे सबसे अच्छी लगी थी। वहीं अब एकाकार हो कर निकल रही थी। बुचुन के साथ हर बरात में ऐसा ही होता था। वह हर बरात मे जाता और हर बरात से प्रेज़ेन्ट कान्टिन्युअस टेन्स में हगता हुआ लौटता !

गंगा पूजन-सुहागरात तो हो ही गए थे, लडकी वालों ने पुछवाया कि लडकी को दिन भर के लिए कानपुर से ही मायके भेज दिया जाए तो द्विरागमन भी कानपुर मे ही हो जाए। बुल्लो ने मन्नो से कहा, मन्नोने लक्ष्मण से पूछा तो उसने साफ मना कर दिया—साले ऐसे कंजूस हैं, विदा कराने के लिए ऐसे आना पड़ेगा न !

गंगा ने मायके जाने देने के लिए घूघट के भीतर से अनुरोध किया। मन्नो तो लक्ष्मण का निर्णय बताने के लिए चली गई थी बाहर इधर लक्ष्मण ने दरवाज़ा अन्दर से बंद कर लिया और ससुराल से मिले मरफी ट्रांजिस्टर रेडियो की वाल्यूम ऐंठ कर फुल कर दी। मरफी के विज्ञापनों मे हम देखते हैं फूले-फूले गालों वाला वह प्यारा-सा बच्चा ! उतनी ही छोटी-सी जान का ट्रांजिस्टर रेडियो लेकिन वह ऐसा कहर बरपा कर सकता है—यह तो मरफी कंपनी वालो ने सपने में भी न सोचा होगा।

शाम का समय। सारे बराती लौटने के लिए अपना-अपना सामन बांधने मे लगे थे और लक्ष्मण के बंद कमरे के अन्दर एक भजन बम-गोला-बारूद की तरह धूम-धड़ाक मचाए चला जा रहा था—एक गंगा सब को तारे, एक गंगा पार उतारे !

वह तो अन्दर गंगा—नदी वाली गंगा नही, नववधु गगा—बंद दरवाज़े से टकराई तथा उसकी मिची-मिची रुलाई मन्नो को सुनाई दी तब उसे मालूम पड़ा कि बाप का दिया ट्राजिस्टर फुन करके लड़की को ठोंक-बजा रहा है लक्ष्मण !

तो ठीक है ऐसे आज तुम जाओ ऐसे और फिर कभी ऐसे लौट कर अपना काला मुह ऐसे मत दिखाना !—अन्दर चिल्ला रहा था लक्ष्मण—घाट पर ऐसे अपनी जवानी की गर्मी को हवा दे रही थी न ऐसे हरामजादी !

—यह क्या है लच्छू ?—मन्नो बद दरवाज़े पर अपना मुंह चिपका कर बोली—इतने सारे बराती लोग हैं। उनके सामने यह क्या तमाशा दिखा रहे हो !

मन्नो की छलछलाई हुई आंखों के सामने झिलमिल तैर गई

पहले की एक रात मगर क्या कहे वह और किससे कहे वह !

आटे की लोइयों पर एक-एक कदम रखते घूंघट काढे हुए गंगा बहू ने गृह प्रवेश किया तो जानकी—सुषमा तथा दीपा सिर झुका कर उसके एक-एक पद प्रक्षेप को देखती रहीं।

बहू घर आई तो जानकी भी प्रसन्न थी, दोनों लड़कियां भी महीनों-बरसों बाद मुस्कुराईं। बुढ़ियानंबरएक तो चली ही गई थी, बुढ़ियानंबरदो तथा बुढ़ियानंबरतीन के अलावा—लक्ष्मण ने अपने विवाह के उपरांत यह उपाधि जानकी को प्रदान की थी—एक गंगा ही थी जो उम्र में सुषमा-दीपा के सबसे अधिक निकट थी।

अर्थात् बीच में फंसी औरत



—नौ बजे तक लच्छू को लिए सोती रहती हो !—आंगन के ऊपर जानकी की भन्नाई हुई आवाज चील की तरह चक्कर काटने लगी—बहुत दिन मैं सुन चुकी सबकी आवाज़ाकशी और बहुत दिन सीधी रह कर देख चुकी। अब अगर किसी ने मुझे कुछ कहा तो मैं उसकी ज़ुबान खैंच लूंगी !

—हा-हा ! सोती तो रहती हूं। आपसे मतलब !—कमरे के अन्दर से कलफदार आवाज में गंगा का उत्तर उड़ कर आया—बरसों तो आप लेकर सोती रही। तब किसी के मुह मे छेद नही था कहने को ! कुतिया कही की !

सुबह हो गई।

लक्ष्मण नल के नीचे बैठ कर पाठ करते हुए हरहरगंगे कर रहा था—श्रीराम जै राम जैजै राम ! श्रीई राम जए राम जजैराम ! श्री राआम···

—देख लो लच्छू, गंगा कुतिया कह रही है मुझे ! ठीक नही होगा।—जानकी ने लक्ष्मण को उलाहना दिया।

—सौ की सीधी एक बात, कि ऐसे अबसे दोनो ओर से ऐसे कोई बात न हो !—लक्ष्मण ने हौद में खडे हो कर ज़ोर से चिल्लाते हुए समझाया।

—हा, बिल्कुल कहूंगी कुतिया !—अपने कमरे के अन्दर से तमक कर गंगा बोली।

मन्नो धीरे-धीरे राम-राम बुदबुदा रही थी। उसके चेहरे, हाथ-पैरो तथा सारे बदन पर झुरियो के नए मकडी-जाल तन गए थे। डेढ माह पहले बर्तन मलते समय बाए हाथ की बीच वाली उगली में हल्की सी चोट लग गई थी,

उसने ठीक होने की बजाय एक घाव का रूप ले लिया। शरीर ही नहीं, आत्मा तक उसकी मुर्दा होती जा रही थी। घर में चाहे कितनी भी गाली-गलौज हो, वह बीच में एक शब्द तक न बोलती।

—मेरी बात ऐसे सुनोगी कि नहीं ! मैं कह रहा हूं न !

—अभी एकाध की जान इस घर मे चली जाएगी, उसके ज़िम्मेदार तुम होगे। देख लो लच्छू, यह बराबर गाली दिए चली जा रही है !

आगे की बैठक तो लक्ष्मण पहले ही से अपने इस्तेमाल में ला रहा था। शादी के बाद सामने का कमरा और उसके बगल का अंधेरा भण्डारा गंगा के सामानों से भर गया। अल्मारी, कत्थई रंग का सोफा, टेबुल, गंगा के ट्रंक, शृंगारदान। नौकरी में लगने के बाद लक्ष्मण ने खुशबूदार तेल वगैरह का कुटीर उद्योग बन्द कर दिया था मगर उसका बहुत सा बचा हुआ सामान, जैसे कि सरसों के तेल के अधभरे पीपे, एक कनस्तर कार्क, खाली शीशियों के कई खड़खड़ाते बक्स। वह सारा सामान। गंगा का तानपुरा जो वह मायके से ले आई थी। मन्नो का तो अपना कोई अलग सामान ही न था, और न अपना कोई स्थान। सर्दियों में वह ठाकुरद्वारे में खाट डाल कर सो जाती, गर्मी के मौसम मे दालान, आंगन जहां कहीं भी जगह मिल जाए।

इस सारे लड़ाई-झगड़े की जड़ में था डाक्टर बच्चालाल, जो महीने भर के लिए अबूढबी से स्वदेश आया था, अपने बीबी-बच्चों को साथ ले जाने के उद्देश्य से। जब यहां था तो उसके दवाखाने में मुहल्ले के परमानेंट बैठोल तथा निखट्टुओं की भीड़ के अलावा मुश्किल से कोई मरीज़ मुर्गा-मुर्गी नज़र आते। मगर अबूढबू मे उसकी प्रैक्टिस इतनी बढ़िया चल रही थी कि मुहल्ले भर मे यह सबको मालूम हो गया था कि वहां उसने ज़मीन खरीद कर अपना बंगला बनवा लिया है, कार तो गैर है ही, एक छोड़ दो-दो, नौकर-नौकरानियां भी हैं। नौकरानियों की वहां क्या कमी ! हबशिनों को खरीद कर रख लेते हैं, छह-आठ-दस ठो ! और मोटर जितनी चाहो रखो। पेट्रोल ठहरा मुफ्त का, बस, नल खोला और टंकी भर ली !

उसके वापस आते ही मुहल्ले के तमाम लोग उसके दवाखाने पर इस तरह पड़ दौड़े मानों अपने तमाम संगीन रोगों को रोके-थामे अब तक उसके पुनरागमन की प्रतीक्षा में बैठे रहे हों !

यह डाक्टर बच्चालाल निहायत आग लगाने वाला आदमी ! मज़े की बात यह कि उस की किसी से व्यक्तिगत लाग-डांट तक न रहती थी।

रामभरोसे गवर्नमेंट प्रेस की फाउण्ड्री में काम करता था। कायदे मे तो उसे आठ-नौ वर्ष पहले ही रिटायर हो जाना चाहिए था मगर आधी सदी पहले नौकरी में लगते समय वह एक चतुराई कर गया। अपनी उम्र उसने आठ-नौ

साल कम लिखवाई। हाईस्कूल फेल था अत. प्रमाणपत्र का सवाल ही न था। एक गोरे साहब ने कृपा कर उसे प्रेस में रखवा दिया था। फर्जी उम्र के बल पर अडसठ की उम्र में भी वह मजे से नौकरी बजा रहा था।

सुबह-सुबह वह भी डाक्टर बच्चालाल के दवाखाने में आ कर बैठ गया। महीनो से उसे खासी परेशान किए हुए थी।

—बम्बई गए हो कभी?—उसके गले को बिल में झांकने की तरह देखते हुए डाक्टर बच्चालाल ने पूछा। रामभरोसे ने वह मुह दाएं-बाएं हिलाया तो डाक्टर बच्चालाल इस बार उसके पूरे चेहरे पर नजर जमाते हुए बोला—मेरा ख्याल है कि तुम्हारे गले में कैंसर हो गया है। बम्बई चले जाओ। वहां टाटा इन्स्टीट्यूट मे पक्की जांच भी हो जायेगी, लगे हाथ बम्बई भी घूम लोगे।

कैंसर का नाम सुन कर रामभरोसे के तो वहीं ज़रा-सा पेशाब छूट गया। पाजामे का गीला हिस्सा मुट्ठी में पकड़े-पकडे भोकार छोड़ कर रोता हुआ वह अपने घर पहुंचा तो औरत-लडका-लड़की भी चिल्ला-चिल्ला कर रोने के साथ बम्बई जाने के लिए सामान बांधने लगे।

उसी डाक्टर बच्चालाल ने लक्ष्मण के लिए कह दिया कि ऐसे गुरु को कुष्ट तो है ही एक खास बीमारी भी है। कोई भी परखना चाहे तो वह सूध सकता है कि ऐसे गुरु के पेशाव से भयंकर दुर्गन्ध आती है। जानकी के न आगे नाथ न पीछे पगहा, उसे कुछ हो गया तो इलाज मैं न करूंगा। फिर सिस्टर मैथ्यू ही की शरण लेनी पड़ेगी। ऐसे गुरु की निगाह जमीन के साथ जोरू पर है। बाद में चाहे देख लेना, यही होगा।

सिस्टर मैथ्यू रेड क्रास मे नर्स थी और उसके बारे में यह प्रसिद्ध था कि यदि वह एक डिलिवरी करती थी तो पांच बच्चो को धरती पर गिरने से पहले ही डिस्पैच कर देती थी। किसी भी लेडी डाक्टर की प्रैक्टिस से अच्छी उसकी यह प्रैक्टिस चलती थी।

दवाखाने मे कही हुई बात, लोग ले उड़े। एक मुंह से चार कान, बात फैल चली।

लक्ष्मण ने सुना तो उसने खूब बकरकूद मचाई, घर के आंगन में।

—बच्चा कौड़ियाला साला! मैं अभी ऐसे उसकी रपट लिखाता हूं थाने में। अगर मैं ऐसे अपने असली बाप की औलाद हुआ तो उसे ऐसे उसे हाइकोर्ट में नंगा करके दिखा दूगा।

ताव मे तो वह था ही, सीधे डाक्टर बच्चालाल के घर जाने के लिए निकल पडा। रास्ते मे बुचुन का घर पड़ता था। बुचुन घर के चबूतरे पर खड़ा था, बारीक लाल गमछा कमर मे लपेटे, अधनंगा।

—कहां जा रहे हो लच्छू?—बुचुन ने बिना नकियाते हुए पूछा। लक्ष्मण

ने अपनी व्यथा-कथा कह सुनाई।

—मेरे ऊपर ऐसे गलत-गलत चार्जेज लगाए जा रहे हैं !

—नहीं, यह बहुत गलत हरकत है डाक्टर बच्चालाल की !—बूचुन को लक्ष्मण से सहानुभूति हो आई—तुम ऐसा करो कि तुम पेशकार साहब से मिलो, तुम तो उन्हें जानते हो। बहुत ही गुड आदमी हैं वह। अगर तुम चाहो तो मैं भी अभी तुम्हारे साथ चल सकता हूं।

बूचुन ने तुर्त-फुर्त पैरों में पाजामा चढ़ा कर इजारबन्द बांध कर कमर के पीछे गांठ लगाई, कमीज में घुस कर सिर बाहर निकाला और पायंचों पर क्लिपें कसकर एक मिनट से भी कम समय में टोपीमय तैयार हो गया।

पेशकार साहब ने आंखें मूंदकर ध्यानावस्थित हो सारी बातें सुनीं फिर आंखें खोल कर बोला—यदि आप चाहें तो श्री डाक्टर बच्चालाल जी के ऊपर डिफेमेशन का केस चला सकते हैं। अंडर सेक्शन फोर हंड्रेड ऐंड नाइन्टी नाइन में यह केस दायर होगा।

अदालत-कचहरी का नाम सुन बूचुन डर गया। लक्ष्मण भी इस इरादे से आया था कि पेशकार साहब का पुलिस महकमे में किसी इंस्पेक्टर-दरोगा से परिचय हो तो पुलिस में रपट लिखा दी जाए।

—आप ऐसा करिए कि आप श्री डाक्टर बच्चालाल जी का पासपोर्ट कैंसल करा दीजिए।

लेकिन कहां का असली बाप और कहां की औलाद, उड़ गया डाक्टर बच्चालाल अपनी पत्नी तथा चार बच्चों को ले कर अबूढबी !

लेकिन आग तो वह लगा ही गया।

जानकी ने सुना अपना लड़कियों के जरिए। तिनग कर पूछा—किसने कही ऐसी बात !

उसकी बुझी-बुझी रहने वाली आवाज में लक्ष्मण की आड़ी चर्चा आते ही अचानक चमक और खनक आ जाती थी।

—सल्लनचा ने चन्दर से कहा कि लच्छूचा को ऐसा-से-ऐसा रोग है।

—तो तुम प्रस्तुत कर दो चन्दर को मेरे सामने। अगर चन्दर मेरे सामने कह दे कि लच्छू को ऐसे से ऐसा रोग है, कि लच्छू मेरी वजह से यहां रहते हैं तो मैं लच्छू को अभी गद्दे-गद्दे पर से बाहर कर दूं। नहीं तो चन्दर का मुंह जूते से पीटूं ! कहने चले हैं सल्लन, जो रंडी के कोठे पर पड़े रहते हैं। न जाने कितने तो बिस्तर गर्म कर चुके होंगे !

जानकी देर तक बड़बड़ाती रही।

—अरे आओ-आओ, तुम क्या लच्छू को निकालोगी ? अभी परसों ही तो दीवा ने देखा कि, तुम इतनी बड़ी रांड़ हो कर इतने बड़े मर्द को ले कर हाथ-पैर

से दुलार-प्यार करवा रही थीं। तभी तो भगवान ने तुम्हें रांड़ बना दिया।

लड़की के मुंह से रांड़ सम्बोधन सुन कर जानकी सुबह-सुबह रोने बैठ गई।

—बहुत देख लिया तुम्हें हम दोनों ने ! जान तक तो तुम अपनी दे नहीं सकती हो ! अब इससे अधिक बेशर्मी तुम क्या दिखलाओगी !

—बेटी जान देना सबसे मुश्किल काम है।—जानकी ज़ोर-ज़ोर से रोने-चिल्लाने लगी—तुम्ही मेरा गला दबा दो मुझे मंजूर है। लगा दो एसी करेंट, न मर जाऊं तो कहना। अब मुझे किसी भी चीज़ की इक्षा नहीं है। सिवा अपनी मौत के, जिसकी अब मुझे सबसे ज्यादा इक्षा है ! सब जल जाएगा मेरी लाश के संग। अगर एक मेरे मर जाने से सबको सन्तोष मिल सके तो मैं अपना प्राण भी देने को प्रस्तुत हूं।

जानकी बिलख-बिलख कर उं-उं-उं रोने लगी ! वही जानकी स्कूल में सत्तर-अस्सी लड़कियोंको होम-सायंस सिखलाती थी, घर-गृहस्थी बनाना !

—मर्द तो तुम्हारा मर ही गया, अब तुम ऐसे रो रही हो जैसे तुम्हारी दोनों औलादें भी मर गई हों ! रोज़ इस घर के आंगन से इसी औरत के रोने की आवाज़ बाहर जाती है। पास-पड़ोस में हर जगह यही कहा जाता है।

—फिर भी मुझे विश्वास नहीं होता बेटी, कि बच्चालाल ने ऐसा कहा होगा !

—विश्वास तुम्हें कभी नहीं होगा अम्मा ! तो मुझी को अपनी जान दे देने दो। मेरी जान लेने के ही लिए तो तुम मुझे अपने पास रखे हुए हो न ! तो मुझी को मर जाने दो। बसा लो लच्छू चाचा के साथ घर !

—नहीं बेटी, मुझे ही मरने दो, तुमलोग न मरो !

सुषमा, दीपा, मन्नो, लक्ष्मण, गंगा सब जानकी को वहीं दालान में रोती हुई छोड़कर अपने-अपने कमरे-कोठरियों में घुस गए। दोपहर की शाम हुई। बिजली सुबह ही से नहीं आ रही थी। शाम उतर आई मगर किसी ने लालटेन-ढिबरी नहीं जलाई। न जानकी की गृहस्थी में चूल्हा जला। घर-घर में चूल्हे जल गए होंगे लेकिन जानकी रानी अम्मा के छोड़े हुए दालान में, बुझे हुए चूल्हे के बगल में खंभे से पीठ टिकाए अकेली बैठी ऊंऊं कर के अपने ही को सम्बोधित कर रोती रही—सब जानकी को छोड़ कर चले गए ! जानकी के कोई होता तो जानकी ऐसे न रोती बिलख-बिलख कर। रात-रात भर जानकी न रोती। जानकी कितनी लाचार है, कितनी दुखी है, कोई नहीं जानता, कोई नहीं समझता…

विलाप नहीं प्रलाप ! दोनों गालों पर बह-बह कर टप्-टप् नीचे झर रहे गर्म-गर्म आंसुओं के बावजूद प्रलाप ! हीरालाल की पत्नी, अब बेवा। दो संतानों को अपनी कोख से उत्पन्न करने के बाद बांझ। रानी बीबी की पुत्रवधू। जिस

स्कूल में रानी बीवी दाई थी जिसमें अब जानकी होम साइंस टीचर है। रानी अम्मा चौदह वर्ष लकवे में—रानी अम्मा लकवा को 'लखवा' कहती थी—बाप की खाट पर पड़ी पड़ी पेशाब-पाखाना करते हुए—जानकी बहिन जी स्कूल की सारी लड़कियां उसे पुकारती हैं, जानकी बहिन जी नमस्ते !—हीरालाल पन्ना-लाल रानी अम्मा अपने मृत नौजवान बेटे की लड़कियों को पुकारती थी—हीरालाल हीरालाल, हीरा तो मेरा गिर गया—अपने मृत जवान बेटे की याद करके वह उस दालान में पड़ी-पड़ी बिलखा करती थी—उसी अंधेरे दालान में खम्भे से पीठ टिका कर बैठी हुई जानकी बेआवाज़ रोती रही !

पत्थर-पत्थर शहर रीवा—बड़ी बहिन का चार कमरों का घर, धुएं से काला—वहां की भाषा तक जानकी की समझ में नहीं आती थी—ढाई साल की दीपा पांच साल की सुषमा बाहर गली में आवारा लड़कों के संग खेलती हुई मिलती थी, जब वह सिलाई-कढ़ाई के स्कूल से होंठों पर बारीक सफेद फांफी लिए थक कर चूर और मुंह खोले बदहवास शाम को घर वापस लौटती—खुद अपने बचपन के अनेक घरों की उसे याद आती—बाहर के चबूतरे पर छोटे-से सफेद शिवालय वाला किस संबंधी का घर था, जिसमें सात-आठ साल की जानकी रहा करती थी—दूसरा घर छोटी-सी गली के भीतर था, जिस गली के मुहाने पर छोटा-सा एक फाटक हुआ करता था, जिसे जानकी की मां का चाचा हर रात गोहार लगा कर सभी पड़ोसियों की घर आमदगी तस्दीक कराकर अंदर से बंद किया करता था, बेनागे—सफेद मूछों वाले एक दूसरे संबंधी के घर में वह रहा करती थी, जहां उसे पहली बार मासिक धर्म हुआ था, स्कूल के मैदान में, तो वह गेम्स टीचर बहिनजी के पास बेहद घबराई हुई गई थी, कि मुझे चोट लग गई है। मां ने उसे धरती पर तो गिरा दिया था मगर यह तक न बताया कि तुम्हारे संतानें कैसे होंगी। शादी के बाद तक वह यही समझती रही कि बच्चे उसकी नाभि से उत्पन्न होंगे, कैलेन्डरों के विष्णु भगवान् की नाभि से ब्रह्माजी के पैदा होने की तरह ! हीरालाल का चेहरा उसने विवाह के हफ्ता भर ही पहले देखा था—भरा-भरा मुस्कराता हुआ गोरा मुंह, ठीक से जमाए हुए बालों की चमकती पटिया—

सुषमा के जन्म पर रानी अम्मा का मुंह एकदम से लटक गया था—पिता जानकी के इतने गरीब थे कि अपने दूर-पास के नाते-रिश्तेदारों की ठकुरसुहाती कर इनसे-उनसे रुपए-पैसे, कपड़े-लत्ते की मदद पाकर परिवार का निर्वाह करते-पीछे वाली कोठरी की बरसों से भुरी-भुरी छत में बांस-बल्लियों की थूनियां लगा दी गयी थीं फिर भी तीन दिन की लगातार बारिश का बोझ वह सह न पायी, रात के समय भरभरा कर बैठ गई तो बाप यह कोठरी छोड़कर दुछत्ती वाली दालान में रहने लगा—ऐसे मां-बाप पर जानकी बोझ नहीं बनना चाहती

थी—घर में मन्नो का राज चलता था—सुषमा डेढ़ साल की थी, जानकी तीन दिनों के लिए अलग बैठती थी तो उसके खाए बर्तनों मे आग डाली जाती थी, रानी अम्मा-मन्नो का बस चलता तो, जहां जानकी ने बर्तन रख कर खाया होता उस ज़मीन को भी एक परत खुदवा देती। मन पर तो बीतता ही था मगर धक्का दे कर मन्नो का घर से बाहर तो कर नहीं सकती थी-दीपा तब पेट मे थी, दिन में कई बार जानकी को भूख लगती, तरह-तरह की चीज़ें खाने का मन होता। मन्नो चाय पी रानी अम्मा को पिला मुंह पोंछ कर बैठ जाती और जानकी से कह देती की चाय नही बनी, नहीं बनेगी। जानकी बगल के हरिहरचा की स्त्री के मांग कर चोरी से चाय पीती-चाची, आठ रुपया महीना तुम मुझसे ले लिया करो, मुझे दो टाइम चाय दे दिया करो।—वहां से मांग कर कभी-कभी खाना भी खाती। अज-वाइन पड़ी दो पूड़ियां, लसोड़े का अचार चार पराठे। कभी भरपेट खाना तक नहीं मिला उसे उस घर में जहां वह ब्याह कर आयी। वह तो कमाती थी और सारी तनखाह ला कर रानी अम्मा के हाथ पर रख दिया करती थी। क्या उसे इतना भी अधिकार न था कि उसे पेट भर खाना मिले, उस घर से? कौन मनुष्य ऐसा अत्याचार सहन कर सकेगा—

वह मुंह बिगाड़ कर रोती रही—सब लोगों ने मुझे क्यों छोड़ दिया। मैं किसी को भी उलाहना नही देती। मेरी किस्मत ही खोटी रही होगी। आखिर कोई ऐसा भी तो आदमी होता होगा जिसका कोई मुंह देखना तक पसंद न करे। मुझ में कोई बहुत बड़ी खराबी रही होगी। फिर भी मैं किसी से शिकायत नही करती। सब लोग खूब-खूब खुश रहो। पर बड़ा कष्ट होता है मुझे। जानकी के पास कोई नहीं रह गया। जानकी के कोई भी अपना होता तो जानकी आधी रात को इस तरह बिलख-बिलख कर रोती न होती! मालिक-बच्चे सब उससे इस तरह बेगाने न हो गए होते!

सारी रात वह अपने ही को सुना-सुना कर बिलखती रही। सुबह सबसे पहले उठ कर दीपा नीचे उतरी तो देखा, जानकी वहीं सिमेन्ट के दालान में अपनी बांह का तकिया लगाए नींद से सो रही थी।

लल्लन परचूनिया था बज्र बहिरा! उसके कानों मे चिल्ला-चिल्ला कर कहने पर भी वह देर तक चीख-चीख कर ऐं?—ऐं? पूछता रहता मगर कान के अंदर पैठ गयी बात सीधे उसके दिल तक पैवस्त हो जाती। स्वभाव से सीधा से अधिक मूर्ख होने के कारण खरखरहा आदमी था। जब शुरू हो जाता तो फिर किसी की भला क्यों सुनने लगा!

तीसरे ही दिन सुबह होते-न होते वह जानकी के दरवाज़े के सामने गली मे आ कर डट गया।

—जानकी से कह देना कि बिस्तर नहीं गर्म करता मैं! मैं क्या कच्चे

कोयले की बोरसी हूं कि औरत के चूतड़ के नीचे घुस कर उसका चूतड़ गर्म करूंगा ? मेरी पसंद चूतड की तरफ नही है ! —लल्लन एक तरफ चिल्लाए जा रहा था, कुंजड़े दूसरी तरफ।

—अरे क्या हो गया लल्लन उस्ताद, क्यों इतना लाल-पीले हुए चले जा रहे हो।

नहीं जी ! जानकी को याद नही रह गया होगा कि कैसे उसने मरे हुए हीरालाल के नगे जिसम के नीचे फड़फड़ा कर अपनी दो औलादें पैदा करी। शरम नही आती जानकी को ऐसी बात अपनी लड़कियों के सामने कहते ? असली मर्द बिस्तर नही गर्म करता जी, औरत को गर्म करता है। तब पैदा होते है बच्चे। हम-तुम-जानकी-जानकी की लड़किया सब ऐसे ही पैदा हुए है। यह जानकी अपने पैदा करने वाले मां-बाप और अपनी औलादों को गाली देती है, बच्चो के पैदा होने वाले बच्चों को गाली देती है कि लल्लन ने न जाने कितने बिस्तर गर्म किए होंगे !

गली के कुंजड़े-कुंजड़िनों तक ने कानों में उंगली दे ली मगर लल्लन परचूनिया वैसे ही चहकता रहा—अरे जानकी ने कोई लोहालिगी चुना होता तो मैं भी कहता कि चलो भई कोई बात हुई—

मुहल्ले के तीन-चार व्यक्ति उसे दोनों हाथों से पकड़ कर घसीटते हुए अलग ले गए नहीं तो वहा मार-पीट हो जाती। वह भारतमाता की ड्योढ़ी पर जा कर बैठने के बाद भी बडी देर तक गंदी-गंदी गालियां बकता रहा।

उधर लक्ष्मण इस जिद पर अड़ गया कि डाक्टर बच्चालाल, चन्दर तथा जिसने-जिसने भी उसके विषय मे गंदा प्रचार किया है वे सब उससे लिखित रूप में क्षमायाचना करें !

एक पूरे महीने से यह हाल था कि लक्ष्मण, मन्नो, गंगा सभी अपने कमरों से बाहर लेकिन जानकी, सुषमा, दीपा या चन्दर की नजरों के सामने आते ही दौड़-दौड़ कर कमरों के भीतर और कमरों के किवाड़ फटाक-फटाक बंद !

जानकी इनके-उनके पास दौड़ने लगी। और दौड़ने लगा जानकी का बुधुन्वा तथा उसकी पत्नी विमला। वे सुबह होते ही एक न एक रिश्तेदार के यहा जा कर बैठ जाएं कि हमारी भतीजी बड़े संकट में फंस गयी है, तुम्ही उसे उस सकट से उबार सकते हो। पेशकार साहब के यहां गया बुधुन कि तुम लक्ष्मण को समझाओ। विमला-जानकी भवानी मंदिर के काने गोवरधन पंडित के पास गईं कि तुम मन्नो को समझाओ। घबराहट के मारे जानकी को दस्त-पर दस्त होने लगे।

सुबह उठ कर मन्नो ठाकुरद्वारे में अंदर से सांकल चढ़ा कर उसमे ताला लगा कर चतुर्भुज भगवान को जगाने के लिए घंटा बजा रही थी कि दीपा दोनों हाथों से दरवाजे की सलाखें पकड़ कर खड़ी हो गयी।

—यह भगवानजी हम लोगों के हैं। जो घंटा तुम हिला रही हो वह घंटा हम लोगों की बड़ी अम्मा ने बनारस से खरीदा था।-दीपा शिकायत करने लगी—चोर हो तुम सब-की-सब !

मन्नो बहरी की तरह चुप रही। चतुर्भुज के कपड़े उतार कर उन्हें स्नान कराया। पूजा पूरी करके मन्नो अंदर लगा ताला खोल कर बाहर दालान में आयी।

—अब हमारे भगवानजी को अपने ताले मे क्यों बंद कर रही हो ताईजी !-वह मन्नो का हाथ पकड़ कर रोकने लगी।

—ऐसा है बेटा कि लच्छू ने कहा है कि इधर के कमरो मे अपना ताला बंद किए रहा करो। कब्जे का सवाल है। तुम लच्छू से कहो।

शाम को आया चंदर।

— लो मौसी सत्यनारायण का प्रसाद है—उसने पंजीरी का दोना ऊपर जा कर जानकी के हाथ में पकड़ाते हुए ज़ोर से कहा—तुम्हारी जगह अगर मैं होऊं तो चौबीस घंटे के भीतर इन लोगों का उठना-बैठना, हगना-मूतना हराम कर दूं।

—मेरे घर मे क्लेश न मचाओ चंदर !—जानकी की आवाज़ उत्तरोत्तर तेज़ और साफ होने लगी—यह मेरा घर है, मेरे घर मे रार-रंजिश न पैदा करो।

—और ये लोग जो आफत मचाए हुए है, उसकी कोई बात ही नही !—चंदर चिल्लाने लगा—जीना मुश्किल कर दिया है हर आदमी का !

तभी नीचे से गनगनाती हुई आवाज आयी गंगा की—पान की दुकान के सामने खड़े हो कर अपनी गुंडागर्दी दिखाओ। यहां तुमको कुछ नही मिलेगा, समझे ! यहां आए तो जूता खाओगे। समझ गए न ? मैं उस घर की लड़की नही हूं जिससे कोई आंख मिला कर बात करे !

—अरे, अगर तुम्हे जूता ही देने का इतना शौक है तो बाटा की दुकान पर सर्विस कर लो, वहां दो-चार सौ आदमी रोज़ आते है, दिया करो सब को जूता !

—बिलकुल देंगे ! मेरे मायके वाले ऐसे नही हैं !

—मायके वालों की बुद्धि हो गयी थी खराब, जो शादी करके यहां बांध दिया। जब तुम्हारी शादी हो रही थी तब मैंने मना किया था।

—मैं डरने वाली नही हू तुम्हारे कहने से।

—किसी के घर मे घुस कर आप हरामुद्दैसी करेंगी और वह कहेगा नही !

—हरामुद्दैसी ! भगवान देखेगा फल !

—भगवान तो देख ही रहा है। अभी तो लल्लूलाल पागलों के माफिक घूम रहा है, जल्द ही कुत्ते के माफिक घूमेगा सड़क-सड़क !

—कुत्ते के माफिक ! जैसे पान की दुकान पर बैठ के गुंडाई करते हो न !

—तो गुंडई करने के लिए भी जिगरा चाहिए। हर मंडुए की औलाद गुंडई नहीं कर सकती !

—आओ, नीचे तो आओ ! देती हूं तुम्हें जूता आओ ! —गंगा किवाड़ खोलकर आंगन में आ गयी और मुंह उठाकर लड़ने लगी—असल बाप के हो तो चले आओ नीचे !

—मैं असल बाप का हू ही नही। एक दिन मैंने अपने बाप से भी पूछा था कि क्यों बे, क्या नाम है तुम्हारे बाप का तो उसने कहा कि मुझे भी अपने बाप का नाम पता नही। अब बताइए आप ?

—मैं कह रही हूं न, कि सीधे से नीचे उतर आओ।

मैं नीचे क्यों आऊं ?—चंदर गंगा के साथ खेलने लगा—मैं लतूलाल थोड़े ही हूं कि औरतों पर अपनी ताकत आजमाइश करूं।

—आ जाओ नीचे तो मैं तुम्हें मजा चखा दूं ?

—नीचे आऊं तो गोली मार दोगी क्या ? वह जो हिजड़े की औलाद है न, उसको अपने लहंगे से बाहर करके भेजिए। मैं औरतों के मुंह नही लगता। अच्छा तमाशा लगा रखा है, नीचे आओ-ऊपर जाओ !

—चन्दर, तुम यहा न चिल्लाओ।—जानकी ने बीच में दखल दिया—मेरी तबियत ठीक नही है, दो रात की मैं जागी हूं। सुबह से न खाना-न पानी। मैं कह रही हूं कि यह घर है, सराय नही कि जिस का जो मन आए करे।

चंदर गगा को छोड़ कर जानकी से उलझ गया—पहले तुम यह तय कर लो मौसी कि तुम इन लोगों को हटाना चाहती हो या रखना। तब तक मैं नीचे से होकर आता हूं।

—तुम नीचे जाओगे तो हाथापाई होने लगेगी। मैं अपने घर में रार-रंजिश नही चाहती।

—मैं दौड़ कर निकल जाऊंगा कि हाथापाई होने लगेगी! —चंदर हंसने लगा जूता माता, कहो तो अगली दीवाली पर लक्ष्मीजी की जगह तुम्हारी ही पूजा की जाए,। ऊपर से थोड़ा फल इत्यादि भेजूं क्या ? जिससे लड़ने की ताकत आ जाए। या जाकर अपने लिए जग्गू पहलवान से एक गंडा फोड़वा लाओ। पहले यह बताओ कि मुझे चाय पिलाओगी या नही। चाय पिला कर तब जूता मार लेना।

—मूत पिलाऊं तुम्हें ! तुम्हारे मुह मे पेशाब करूं !

जानकी, सुषमा तथा दीपा भी दूर खड़ी खिलखिला कर हंस पड़ीं।

—अरे, पहले सोच तो लिया करो कि क्या कहने जा रही हो ! —चंदर ने समझाया—अच्छा तो तुम भी क्या कहोगी, लो मैं आ रहा हूं नीचे !

चन्दर ने सीढ़ी से दालान मे पैर रखा ही था कि गंगा बाघिन की तरह उसके ऊपर टूट पड़ी। वह तो चन्दर छिटक कर आंगन में कूद गया नहीं तो गंगा ने उसे

दबोच ही लिया होता ।

—आओ यहां ! तुम्हारे मू मे पेसाब करूंगी मैं !—गंगा दोनों मुट्ठियों मे धोती को पकड़ कर घुटनों से ऊपर उठाती हुई दौड़ी ।

चन्दर भाग कर सामने वाले दालान में गगा उसके पीछे बाज की तरह एक लोटा भन्न से आगन में लुढ़कता खभे का चक्कर काट कर चन्दर आगन के पार दक्षिण के दालान में !

लम्बी-लम्बी सांसें लेती हुई गंगा आगन के बीचोंबीच खडी हो गयी । साड़ी उसने छोड़ दी फिर सुबक-सुबक कर ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी—मेरे सारे खान्दान वालों ने अगर मूत न पिया होता तो ब्याह कर मैं इस रडी के कोठे पर न लायी गयी होती !

—शरम नहीं आती तुम्हे, एक जवान लडके के सामने धोती उठा कर कहते कि तुम्हारे मुंह में पेशाब करूंगी! —चन्दर ने चीखते हुए पूछा—धार बांध कर करोगी पेशाब मुह मे ? लगवाओगी मेरा मुह ?

उत्तेजना, क्रोध तथा अपमान से चन्दर की चीखती हुई आवाज़ विकृत हो कर फटने लगी । वह देर तक वैसे ही चीखता रहा । जब वह चुप हुआ, सिसकियां सुनाई दी गंगा की ! वह खडी-खड़ी वही बैठ गयी और घुटनो के बीच सिर डाल कर चुपचाप रोने लगी । चिड़ियों का चहचहा फिर से उभर आया । जानकी के घर मे इतनी सारी चिड़ियां न जाने कहां छिपी रहती थी कि घर में कोई भी रोने-बिलखने लगता तो वे सब एक साथ चहचहा उठती !

सारे घर को सांप सूघ गया हो जैसे । गाली-गलौज के बीच में विमला आयी थी और चुपचाप सीढ़ियां चढ़ गयी थी । जानकी, विमला तथा सुषमा-दीपा भी सन्न रह गयी, जो कुछ देर पहले तक छज्जे पर खड़ी हो कर नीचे आंगन मे होने वाला ताडव-तमाशा देख और खुल कर हंस रही थी ।

थोडी देर बाद मन्नो कमरे से बाहर आयी और गंगा की एक बांह पकड़ कर उसे कमरे में लिवा ले गयी, जैसे कोई वृद्धा अपनी पुत्रवधू की बाह हौले से पकड़ कर उसे पहली बार ड्योढ़ी के अंदर लाती है !

लक्ष्मण शायद घर में नही रहा होगा ।

—यह बहुत बुरी बात है ।—जानकी अपनी लड़कियों से बोली—गंगा के मुह में जो भी आता है, बक जाती है वह हम लोगो के लिए ! मैं अभी नीचे जा कर उसे बताती हू !

विमला ने बहुत रोका मगर वह न रुकी—मेरा जी नही मानेगा ।

नही, लक्ष्मण घर में था, बन्द कमरे के अन्दर ।

जानकी लक्ष्मण के कमरे में जा कर बरसने लगी—गगा ने मुझे क्यों वेश्या कहा । अभी एकाध की जान इस घर मे चली जाएगी तो उसके जिम्मेदार तुम

होंगे। मेरी लड़कियों को या मुझे कुछ कहा लच्छू, तो ठीक न होगा। हम लोगों को कम से कम वेश्या तो न कहती !

—मुझे जो ऊलजलूल ऐसे कहा गया है ऐसे मैंने तो उसे तुम से नहीं कहा कि मुझे क्या कहा गया ! —लक्ष्मण ने भी अपना स्वर ऊंचे सम पर ले जा कर प्रतिवाद किया—आज महीने भर से ऐसे मैं गाली खा रहा हूं।

—अरे, गंगा ने कहा कि मैं चदर के मुंह में पेशाब करूंगी। तुम सोच लो इस चीज को !

—मेरे सामने ऐसे कोई बात नहीं हुई, मैं कुछ नहीं जानता।

—तुमने कहा था या नहीं कि चन्दर मैं तुम्हारे मुंह में पेशाब करूंगी !—जानकी गंगा की ओर मुखातिब हुई।

—बिलकुल !—तमक कर गंगा बोली—चन्दर ने यह क्यों कहा कि लच्छू को सुजाक हुआ है ! जब डाक्टर बच्चालाल ने कहा था कि आप मैथ्यू नर्स से पेट की सफाई करा चुकी हैं तब आप के मुंह में छेद नहीं था !

लक्ष्मण गंगा के मुंह पर हथेली रखता हुआ बोला—तुम एक शब्द न बोलो, बस चुप रहो ! चुप रहो ! कह दिया न, चुप रहो !

विमला सब को समझाने लगी—सब लोग बुद्धिमानी की बात करो ! किसी की बुद्धि ठिकाने पर नहीं है ! जिस में सब को शान्ति मिले वही करो।

लक्ष्मण ने जानकी का एक कंधा धीरे से थपथपाया—अम्मा, बस करो। जाओ अब यहां से।

—अम्मा-अम्मा न करो। क्यों छूते हो एक वेश्या को ! क्यों एक वेश्या के कमरे में पड़े हो !

—मन्नो बीबी, आप ही कुछ समझो !—विमला मन्नो से बोली—सब की जैसे बुद्धि ही हरण हो गई है ! मैं यह कहती हूं कि मेरी लड़की छोड़ी जाए।—फिर वह लक्ष्मण की ओर मुड़ी—यह देखो कि जानकी की जान पर आ गई, जान पर ! जब जानकी की जान जाएगी तब तुम्हें होगी परवाह। अरे, सुखमय जिंदगी बनाओ ! बुद्धिमानी वाली बात करो। सब से अच्छा कि जब से समझ में आवे तभी से सहो !

जानकी अचानक उत्साहित हो गई—मैं तो आज से यहीं पर बैठी रहूंगी, यहीं खाऊंगी—यहीं सोऊंगी। मुझे ले जा कर हवालात में बन्द करा देना, दस-बीस साल की सजा करा देना। क्योंकि यह घर मेरा है न ! इस लिए मुझे सजा दिला देना !

—सुनो-सुनो !—विमला भी चिल्लाने लगी—ना घर मेरा ना घर तेरा, दुनिया रैन बसेरा ! बिगड़ी को जब से बना लो तभी से अच्छा। तुम तो पढ़े-लिखे हो लच्छू, तुम्हीं बुद्धिमानी वाली बात करो !

—आप अब जाएं मेरे कमरे से अम्मा !—गंगा ने बड़े ही मुलायम स्वर में जानकी से कहा ही था कि जानकी ने उस के मुंह पर थूक दिया—कैसी अम्मा ? थूकती हूं मैं तुम्हारे ऊपर !

—विमला चाची, अम्मा को बाहर कर दो नही तो ऐसे ठीक न होगा। थूक दिया है ऐसे। अब यह नही है ऐसे कुछ ? इन्हें बाहर कर दो ? इन्हें चाची बाहर कर दो सीधे से इन्हें बाहर कर दो नही तो आगे नतीजा देखना !

—मैं इतनी बूढ़ी हो कर कह रही हू। जानकी, तुम्ही समझ जाओ । कोई तो समझो ! सब से अच्छा है कि जब से बुद्धि आवे तभी से सही !

पड़ोस में लाउडस्पीकर से गाना आ रहा था—जो रात तुमने गुज़ारी, निभाई तुमने हमारी थोडी सी बेवफाई ।

—जब तुमने मेरी लडकियों को कुतिया कहा तब मैं कुछ नही बोली। नीच और कमीनी कहा तब भी नही। बहुत दिन मैं सह चुकी। अब तुम बोलोगे तो तुम्हारी जुबान खीच लूंगी, गंगा बोली तो उसकी जुबान खीच लूंगी।

—गालियां महीनों से ऐसे मैं सुन रहा हू और ऐसे आगे—

चंदर को मैं नही रोक सकती। आज जब कोई बात नही थी तो गंगा ने दीपा को क्यो कुतिया कहा ?—अब ऐसे मैं अभी से कह रहा हूं न ! —और गंगा ने मुझे वेश्या क्यों कहा ! —फिर वही बात ! मैं अब से कह रहा हूं न ! इस समय से ऐसे दोनों तरफ से कोई बात—बिलकुल वेश्या कहा था !—चुप रहो तुम, मेरी बात सुनोगी या नहीं ! कह रहा हूं न मैं—गंगा, अगर मैंने तुम्हे यहां से न भगाया तो तुम कहना !—मेरी बात सुनोगी या—और अगर मैं ने रह कर न दिखाया तो मैं अपने बाप की—मैं जो कह रहा हूं न, कि सौ की सीधी एक—रंडी कही की ! कुतिया !—अरे गंगा, इतना गुर्राओ न ! तैश बंद कर दो ! लच्छू, यह मुझे रंडी-कुतिया न कहें !—मैं जाती हूं किसी को बुला कर लाती हूं क्योंकि अब यह मेरे बस से—लच्छू, यह गाली बराबर दे रही है ! इनका मुंह—श्री राम ! श्रीराम श्रीराम !—अम्मा यहां से हट जाओ, हट जाओ !—गंगा मुझे छू कर देख लें अगर—चली जाओ, यहां से चली जाओ—तुम मुझे छू नहीं सकती हो—अब हट जाओ, हट जाओ—नहीं, मुझे छू कर देखें गंगा। आज यह मुझे मार कर देखें। नही, तुम मारने दो इन्हे आज।—नही, कतई नही।—मुझे इनकी मार आज खानी है !—फिर ?—नही लच्छू, आज इनकी मार—

लक्ष्मण दोनों बाहें फैला कर जानकी तथा गंगा को अलग किए हुए था। अचानक गंगा ने पीछे खिसक कर दूसरी ओर से जानकी के सारे बाल मुट्ठी मे पकड़ कर खींचा। जानकी पीठ के बल जमीन पर गिर गई।

—हट जाओ !—नही लच्छू, मुझे आज इनकी मार खाने दो !—जानकी हकलाते हुए चीखने लगी।

—जब मैंने अस्सी बरस की सरस्वती बुआ को—लक्ष्मण ने गंगा को पकड़ कर पीछे खींचा—तो यह रांड़ किस खेत की मूली है !

लक्ष्मण, दीपा, विमला के बचाते-बचाते भी गंगा ने जानकी के मुंह पर चार-पांच थप्पड़ तड़ा-तड़ जमा दिये।

—जितना ही ऐसे बात को बनाओ—हट जाओ, हट जाओ तुम !

सुषमा सीढ़ियों पर दौड़ती हुई नीचे आयी।

—जाओ तुम लोग !—जानकी फर्श पर लुढ़की पड़ी थी—क्यों तुम लोग यहां आयी हो ! जाओ यहां से !

—अब ऐसे हो गया न तुम्हारा काम ! अम्मा अब जाओ।

—मुझे भगाओ न लच्छू ! बैठी रहने दो मुझे। मुझे यहीं शान्ति मिल रही है।

दीपा ने जानकी की एक बांह पकड़ कर खींची—नहीं अम्मा, चलो यहां से। चलो तुरंत !

—जब तुम लोगों को मना किया था तब क्यों यहां आ गई !—जानकी की आवाज अचानक तेज हो गई—सारा दिन इसी में लगी रही मैं कि यों कर दो तो यों हो जाए। रार-रंजिश न मचे। कोई किसी को कुछ कहे न। बराबर इसी का ध्यान, सुबह से शाम तक। रात को भड़भड़ा कर उठती हूं। कि कोई बात तो नहीं हो गई ? दौड़ी-दौड़ी खिड़की पर आती हूं कि कोई बात तो नहीं हो गई ? इतना दिमाग पागल हो गया है मेरा !

— अम्मा, तुम लेट जाओ !—कहते-कहते सुषमा को रुलाई फूट पड़ी।

—चाचा तक का दिमाग पागल हो गया है। रात को सोते-सोते उठ कर कहते हैं कि सुषमा-दीपा के रोने की आवाज सुनाई दे रही है, मैं बेहोश हो कर गिर जाऊंगा। सोचते-सोचते। एक आदमी नहीं दस-दस आदमी का दिमाग खराब हो गया है इस समय !

—इतनी गलत-गलत बात गंगा के मुंह से निकलती है !—जानकी रोने लगी—क्या मैं आदमी नहीं हूं, क्या मैं औरत नहीं हूं ! इतनी कमजोर हो गई हूं कि इतना-सा बोलने में मुझे पेशाब हो गया। सारा लहंगा गीला हो गया ! इतनी भी ताकत मुझ में अब नहीं रह गई। कमजोरी के मारे पैर नहीं उठता मेरा ! हाथ जोड़-जोड़ कर कहा कि मुझे और मेरी लड़कियों को वेश्या न कहो लेकिन इन्हें देखो तो यह गाली दे रहे हैं, उन्हें देखो तो वह गाली दे रहे हैं ! किसी ने नहीं छोड़ा मुझे, किसी ने नहीं ! इधर से मारें तो उधर जाऊं, उधर से मारें तो इधर जाऊं ! मैं पापी, कैसे जिंदा रहूं ! मुझे यहां से कहीं ले चलो, नहीं तो मैं मर जाऊंगी !—वह बिलख-बिलख कर रोने लगी—पापी मैं मर जाऊंगी, बिलकुल मर जाऊंगी !

—तुम चलो मेरे साथ मेरे घर। यहां किसी के भी समझ में न आएगा, बिना किसी की जान जाए !—विमला ने उसे अपने सीने से चिपका लिया।

—सब खेल गए अपना-अपना खेल। चन्दर को तो मैं रोक सकती न ! हर आदमी के लिए कोई न कोई है, एक अकेली मैं ही हू जिस का कोई पूछने वाला भी नहीं। घुटती रहती हूं। किसी से कह भी नही सकती। मेरा सब स्वाहा हो गया, मालिक नही रह गए, बच्चियां बिलगा गईं मगर मैंने लच्छू को एक गलत बात नहीं कही। तो भगवान ने कहा कि लो ! अब मुझे सिर्फ अपनी मौत की इच्छा है। या मैं कहीं ऐसी जगह चली जाऊं जहां से किसी को मेरा पता-ठिकाना भी न चले।

विमला लक्ष्मण को प्रबोध देने लगी—देखो न, कि एक तुम्हारी वजह से सब इतने परेशान हो रहे हैं तो मैं ही बुद्धिमानी वाली बात करू। सब की जान बचे। तुम्हारा भी इसी मे हित है। अरे, पढ़े-लिखे हो, बुद्धिमानी वाली बात करो !

—वेश्या कहने वाली चुप हो गयी ?—दीपा ने गंगा की ओर देखते हुए पूछा।

लक्ष्मण ने भी गगा की ओर मुंह किया—तुम चुप रहना। एक शब्द न बोलना, कह दिया न !

—मैं बाहर से किसी को बुला कर लाती हूं। अब यह मेरे बस का नही रह गया।

लेकिन भला आता कौन ! विमला जिसे देख कर भी नहीं देख रही थी उसे पड़ोसी तथा मुहल्ले के तमाम लोग जानते और अनायास देखते आ रहे थे। बरसों से !

एक रोज कालिन्दी के यहा बुचुन पायंचों पर क्लिप लगाए हुए जा पहुंचा। यह जानते हुए भी कि लक्ष्मण-कालिंदी एक-दूसरे की शकल तक देखना पसंद नहीं करते।

कालिंदी गृहस्थी का बेचा जा सकने लायक सारा सामान-तावे के पुराने गगरे-गागर लोटे तक एक-एक कर के बेच खाने के बाद घर पर तस्वीर फ्रेम करने का धंधा कर के गृहस्थी का खर्च किसी तरह निकालता था। इस काम मे अधिक पूजी लगाने की जरूरत भी न थी। शीशा काटने की कलम, फ्रेम की लकड़ी, प्लाईबोर्ड तथा आरी। घर पर बैठे-बैठे तो भला कितना काम आता, वह सिविल लाइंस के बंगले-बंगले में जा कर दरियाफ्त करता और वही तस्वीरें जड़ कर रोटी कमाता।

—कौन ?—चश्मा न लगाए होने के कारण कालिंदी को सुझाई न दिया

—मैं हूं बुचुन।

—कैसे भूल पड़े इधर ?

—बहुत दिनों से तुम से मिला नहीं था तो सोचा कि कितने दिन हो गए, बहुत ही मन था तुमसे मिलने का। सोचा कि कैसे हो कि मिला जाए। देखना चाहता था कि आखिर तुम कैसे अपने को मैनुपलेट कर रहे हो। मैं भी बिजनेस लाइक जीवन को पसंद करता हूं। बहुत स्वतंत्र विचार का लिबरल माइंड का आदमी हू मैं !

—अपनी सुनाओ।—कालिंदी ने कुटिल उदासीनता से पूछा और ठीहे पर एकदम झुका हुआ फ्रेम की लकड़ी काटता रहा।

—मैं भी अब थकित पोजिशन फील करने लगा हूं। बड़ी लेबोरियस जिंदगी रही मेरी। खूब लगन से काम किया। किसी तरह से मकान बनवाया। लड़के को सैटिल किया। अगले साल पच्चीस मई को मैं छुट्टी पर चला जाऊंगा। चौहत्तर साल का हो गया। इस के बाद तो यही है कि साऊं-पियूं-रेस्ट करूं। हालांकि अब भी मैं दस-बारह-पन्द्रह मैल बाइसिकिल चला लेता हूं। मेरा ऐसा ख्याल है कि जिस इंसान में अपने कर्तव्य की भावना नहीं है उस आदमी का जरूर डाउनफाल होता है। मैं ने अपने कर्तव्य से कभी मुह नहीं मोड़ा।

कालिंदी के दाहिने हाथ की छिगुलिया की खाल एक जगह सड़ गई थी, दसियों वर्ष फोटोग्राफी के रासायनिकों के सपर्क से। वह आरी नीचे रख कर उस जगह को धीरे-धीरे खुजलाने लगा।

—काम वाली बात करो, जो करने आए हो।—कालिंदी मन ही मन उबल रहा था।

—हां तो मैं तुमसे यह कहने आया था कि तुम कुछ ऐसा कर दो कि सच्छू जानकी का पीछा छोड़ दें। मन्नो व सच्छू ने जानकी व जानकी की दोनों लड़कियों का, हम सब का सुख व चैन हरण कर लिया है। वियान्ड हेल कर दी है उन की लाइफ। मेरी भतीजी ने मन्नो और सच्छू को ऐसे संकट के टाइम में अपने यहाँ शरण दी थी जब कि ये लोग भिखारियों की तरह दर-दर भटक रहे थे और कोई इनके सामने टुकड़ा तक न डालता था। ये लोग बराबर मेरी भतीजी की छाती पर मूग दलते रहे, जिस को मेरी भतीजी हमेशा एक शरीफ औरत की तरह चुप-चाप टॉलरेट करती रही। उनके अलावा मन्नो के हसबेन्ड बुल्लो। वह यहां आ कर महीनों-महीनों रहते रहे। मेरी भतीजी ने उनकी भी सदा खातिर-तवज्जो की। हमेशा सुबह हलुआ और चाय का उन्हें नाश्ता कराया।

बुधन ने होंठ के कोने की लार उंगली से पोंछकर उंगली मेज से अपनी जांघ के नीचे साफ की—इन लोगों के कारण मेरी भतीजी को कभी भरपेट खाने तक को मयस्सर न हुआ।

—तुम्हारा यही-यही रोना मैं बीसियों मर्तबा सुन रहा हूं तुम्हारे ही मुह से।—कालिंदी ने बुधन को टोक दिया—मैं बात कहता हूं साफ। असल म

तुम्हारी भतीजी को इसके सिवा कुछ सुझाई ही नही देता कि कैसे कटेगी मेरी अकेली बुढ़ाई और लग गई है उसे चाट चटुए की ! इस उमर की औरत को जब यह चाट लग जाती है न, वह न आद-औलाद देखती है न दुनिया-जहान ! कमलनरायन डाक्टर बता रहे थे कि जानकी उनके पास गई थी लच्छू को लेकर कि आप हमारी समस्या का कोई इलाज कर दीजिए। कमलनरायन ठहरे मूरख ! जानकी से कहा कि तुम लच्छू को हज़ार-दो हज़ार रुपया देकर अलग कर दो। मैंने कमलनरायन से पूछा कि कहो कमलनरायन, उन दोनों को गर्मी-सुजाक हुआ था कि भगन्दर, जो गांठ जोड़कर तुम्हारे पास चले आए कि साहब हमारी समस्या का इलाज कर दीजिए। कहां की बात !

कालिंदी तेज़ स्वर में बोल रहा था, क्रूर विद्रूप से मुस्कराते हुए। बुचुन का ध्यान उस ओर न गया, कालिंदी की आवाज़ से वह प्रभावित हो गया।

—हां, बिलकुल ठीक कहते हो तुम !

कालिंदी सोच मे पड़ गया। जैसे केवल अपने ही को सुनाता हुआ बडबड़ाने लगा—कितने दु:ख की बात है कि एक बेवा मा अपनी कोख से पैदा दो औलादों की ज़िंदगी के साथ खेल रही है। ऐसा तो किसी रंडी-पतुरिया को करते नही देखा भई, कि अपना ही घर अपने हाथ से मार-मार कर मलबा बना दे ! हीरे तक को फिर से कोयला कर सकने वाली ऐसी दूसरी औरत नही देखी। कैसी हो गई यह दुनिया भगवान !

—तुम एकदम पते की फर्स्ट क्लास बात कह रहे हो !

अचानक बाहर गली में ज़ोर का ठहाका लगा—बोलो बजरंगबली की जै !

गली में एक देहाती साइकिल के आगे दो-ढाई वर्ष के लडके को पीछे साल भर के बालक को गोद मे लिए एक स्त्री को बैठाए सामने से चला आ रहा था। साइकिल तमोली की दुकान के पास आ गई तो किनारे पर खडे हुए एक किशोर ने खाली टायर निशाना साध कर साइकिल की ओर ढुनगा दिया। अचकचा कर सवार ने नीचे उतरने की कोशिश की, फिर ज़मीन पर दोनो पजे टिकाने चाहे मगर साइकिल बुरी तरह से डगमगाती हुई एक ओर गिर गई। उल्टी ओर गिरने के कारण पहले स्त्री की गोद से बच्चा छिटक कर गिरा और चीख कर रोने लगा। ज्यादा चोट तो किसी को न आई होगी। सकपकाए हुए ग्रामीण ने स्त्री की धोती खींच कर नीचे की, औरत ने बच्चे को उठाया और कधे पर उसका सिर चिपका कर साइकिल के पीछे-पीछे पैदल चलने लगी।

—जानते नही ये क्या जी, कि डबल सवारी चलाना मना है ! —तमोली के चबूतरे पर एक पैर टिका खड़े हुए बछैयन ने मुंह की पीक अपने सामने थूकते हुए कहा—चलो-चलो, बढ़ो आगे। अब से डबल सवारी कभी न चलाना।

देहाती राहगीर तो खैर जा ही रहा था।

—वाह रजा मजा आ गया !—दूसरे ने खिलखिला कर हंसने के बाद कहा—उसकी तो यही दिखला गई !

बुधुन कालिंदी के पास काफी देर तक मौन बैठा रहा। फिर बोला—अच्छा तो फिर मैं चलता हूं।

—हां, इसके उसके पास दौड़ने से कोई लाभ न होगा। अपनी भतीजी को समझाओ।

बुधुन कालिंदी के यहां से उठ कर सीधा जानकी के घर पहुंचा। उस समय वहां शंभू ओझा बैठा था, पास पड़ोस के छह सात स्त्री पुरुष भी थे। शंभू ओझा उन्हें धारा प्रवाह सुना रहा था—यह जनाब हैं किस फेर में। एसपी सिंह साहब को आप लोग जानते होंगे। अगर कहिए तो मैं उन्हें रात बारह बजे सोते से जगा कर बुला लूं। ना नहीं कर सकते वह। शास्त्रीजी हैं उपराज्यमंत्री। आते हैं तो स्टेशन से पहले अपने घर नहीं जाते, मेरे यहां आते हैं।

उसने लक्ष्मण को बुला लाने के लिए चन्दर को भेजा। चन्दर ने लौटकर बताया कि लक्ष्मण कहीं बाहर गया है, मन्नो गंगा हैं। गंगा भट्ठी पर खाना बना रही है।

—लगता है यह आदमी सीधे रास्ते नहीं मानेगा। इसके लिए कोई जुगत लगानी पड़ेगी।—फिर वह फुसफुसाता हुआ बोला—इन्हें मैं रेप केस में फंसवा दूंगा। यहां नहीं, किसी दूसरे शहर में। तो भागते-भागते मिट्टी पलीद हो जाएगी इनकी !

कचौड़ी वाले का लड़का रामेश्वर बड़े सोफे पर बैठा हुआ था। जब से कचौड़ी वाले के चेहरे पर काले काले चकते निकल आए थे, उसकी दूकान पर ग्राहक प्रायः नहीं आते थे। रामेश्वर से भी लोग कतराते। वह मेहलाता हुआ बोला—हां हां ! आपका तो यह रुतबा है कि आपने कहा तो पांच मिनट का काम तीन मिनट में होगा। इसमें कोई फर्क नहीं।

—तीन मिनट !—पन्नूगुरू तीन बार चुटकी बजाता हुआ जोर से बोला—मिनट के भीतर !

बुधुन को सारी बातें एकदम नीरस लग रही थीं उसने कहा—अब से जानकी, तुम सच्चू से कोई कनेक्शन मत रखो !

—सच्चू से कहां है मेरा कोई कनेक्शन भाई ! आज हफ्तों हो गए सच्चू को दपन ही नहीं दिखाई दी !

—नहीं, तुम सच्चू से सारे कनेक्शन खतम कर दो। जैसे टानिक आदमी भीतर है वैसे ही यह कैंसर रोग है। यह तुम से बोले तो तुम कह दो कि खबरदार जो मुझसे बात की !

—बुधुन्ना, मैं कहां बोलती हूं उन से !

विमला भी जानकी को समझाने लगी—अभी से सुखमय जिन्दगी शुरू करो ! कहो लच्छू से कि अगर तुम नहीं जाते तो मेरी लाश तुम्हारे सामने गिरेगी। या तो तुम लोग जाओगे या जाएगी मेरी लाश ! यह बात याद कर लो कि तुम्हें कहना है कि मेरी लाश गिरेगी।

—धकेल दो लच्छू को जो वह तुम्हारे पास अब आवें तो और अब कनेक्शन उनसे जरा भी मत रखो।

बुचुन ने इतनी बार कनेक्शन लगाया कि जानकी उत्तेजित हो गई और बुचुन ही से भिड गई···तो अगर ऐसा है तो लच्छू से मैं बराबर कनेक्शन रखूंगी। देखती हूं मेरा कौन क्या कर लेता है !

—मैंने तुम्हें समझा दिया। समझने की कोशिश करो बेटी !—बुचुन ने हार कर सिर झुका लिया।

—मेरी समझ मे नहीं आएगा इसलिए मैं कोशिश भी नही करती। मेरा शरीर ही नही चलता। जितना चलता है उससे नौकरी करना और खाना बनाना। सुबह दो ठो रोटी और जरा सा भात खाया है मैंने ! फिर इस घर में कभी से मुझे कोई किसी ने मान्यता तो दी नही ! आखिर मुझे भी तो किसी का सहयोग सहारा चाहिए मन का बुचुन्चा !

शंभू ओझा ने दोनों को समझा कर शांत किया।

—अब तक मैं इस मामले में नही पडा था। अब से मैं इसे अपने हाथो में लेता हूं। लेकिन हफ्ते दो हफ्ते रुक जाइए क्योंकि अभी मामला बहुत तनावपूर्ण है। फिर यह मेरा जिम्मा है कि अगर लच्छू को—लच्छू सडक पर रहें, कहीं भी रहें। अरे भई, इस मामले मे बड़ा दुर्भाग्य रहा !

—ताऊजी, मेरे बाबू नहो रह गए, मेरी बडी अम्मा नही रह गईं। हम दो तो लड़कियां हैं, हम भी एक न एक दिन चली ही जाएंगी यहा से।—सुषमा शंभू ओझा से कहने लगी तो जानकी ने उसे रोक दिया—अपनी बात बन्द करो सुषमा तो मैं शंभू बाबू से अपनी बात कह सकू। तुम मुझे बोलने ही नही देती हो। बस, टेन्शन लेकर बैठ जाती हो। छोड़ दो टेन्शन तुम।

शंभू ओझा सामने की दीवार को एकटक देख रहा था—सोचने की बात है कि यह एक बडे घर का मामला है, किसी नीच जाति के यहां की बात नही।

—शंभू बाबू, मैं सिर्फ इन्हीं दोनो लडकियो को लेकर ही तो अपना मन बहला सकती हूं न ! सुषमा पांच दिनों के लिए कालिन्दीचा के यहा रहने चली गई थी, सिरिफ पांच दिनो के लिए तो मेरा दिल कितना तडपा है, कितना तडपा है शंभू बाबू, कि मैं आपको बता नही सकती। मेरे लिए सुषमा दीपा है, इन्हें चाहे मेरा पति कह लीजिए चाहे लड़का मान लीजिए। अब तो इन्हीं दोनो की खुशी में मेरी खुशी है न !

—अपनी नहीं, लच्छू की बात की बात करो।—बुचुन ने नकियाते हुए याद दिलाई।

—बुचुन्चा, तुम मुझे मत समझाओ। मैं लच्छू की ही बात तो कर रही हूं। मैंने तो परसों से उनकी शक्ल ही ठीक से नहीं देखी। परसों वह साइकिल लिए उधर से आ रहे थे, इधर से मैं जा रही थी तब हल्की सी झलक भर दिखलाई दे गई थी। नहीं शंभू बाबू, लच्छू की ट्रैजडी तभी हो गई जब वह ब्याह करके अपनी औरत को ऐसे ऐटमौस्फियर में ले आए जहां है टेन्शन! वह अपनी औरत को भी खो बैठेंगे।

—यह तुम लोगों के बस की बात नहीं है। लेकिन अभी चूंकि मामला इतना गरम है, इसे जरा ठंडा हो जाने दो। गोबरधन पंडित एक रोज मुझे मिले थे। यह गोबरधन पंडित के पास बहुत जाते हैं, मारणमंत्र वगैरह सीखने। न जाने किसे मारने के लिए! गोबरधन पंडित ने भी कहा कि लच्छू अपनी इज्जत-नौकरी-औरत सब खो बैठेंगे।

—शंभू बाबू, यहां किसी को पल भर का भी चैन नहीं है।—जानकी ने बताया—कल सवेरे मैंने जो एक कप चाय पी है फिर शाम को छह बजे बुचुन्चा के यहां जाकर जो तीन पूड़ी और सब्जी हाथ पर लेकर खाई है, बस। मेरे शरीर में पीड़ा ही पीड़ा भरी हुई है!

विमला ने फुसफुसाते हुए कहा—तुम्हारा तो जो है सो है ही, लड़की को इतनी बड़ी बीमारी लग गई।

जानकी ने जोर से विमला को उत्तर दिया—चाची, सुषमा की बीमारी का तो ऐसा है कि वह बेहोश हो होकर गिरती ही रहती है। अब बीमारी तो जो है लग ही गई है। तो उसका मैं क्या कर सकती हूं!

—मैंने और दीदी ने आज सुबह से कुछ नहीं खाया।—दीपा बोली—घर में खाना ही नहीं बना!

—दीपा भई तुम इतने जोश में न बोलो। शंभू बाबू आए हैं इतने अपने पन से। अरे मैं कह ही रही हूं। तुम इतना परेशान होकर क्यों बता रही हो, बिलकुल परेशान न हो। शंभू बाबू, हम लोग बहुत बुरी तरह से परेशान हैं। कैसे भी हो कर दो।—जानकी की आंखें भर आईं—मेरी समझ सो सोने की बेटियों का मन ऐसा हो गया शंभू बाबू! इतना दुख लगता है, इतना दुख लगता है कि मैं बता नहीं सकती! मेरी भी आत्मा ने बहुत बहुत कष्ट पाया!

शंभू ओझा ने अंदर से फिर दिखवाया, मालूम हुआ लक्ष्मण लौटा न था।

—अच्छा, मैं चलूं। एक दो दिन में फिर आऊंगा मैं। तुम लोग फिक्र न करना।

धीरे धीरे कर सारे लोग उठ गए। घर में जानकी तथा उसकी दोनों

ले जाती। किवाड़ फिर बन्द।

—कल रात भी लगता है ये लोग लौटे नहीं।—जानकी ने कहा—आज सुबह से बाहर ही नहीं निकले, न टट्टी पेशाब के लिए, न पानी भरने। कुंडी तक नहीं खड़की।

दीपा ने दालान में जाकर देखा, बन्द किवाडों की दरारों की जगह रोशनी की बारीक लकीरें खड़ी थीं।

—अन्दर लालटेन जल रही है।—उसने लौटकर बताया।

तीनों ने नीचे जाकर बन्द दरवाज़ा थपथपाया, कुंडी खटखटाई मगर भीतर से किसी ने उत्तर न दिया।

—अरे, कल की जलाई लालटेन होगी।—जानकी बोली।

—वाह, ऐसा हो ही नहीं सकता। लालटेन पूरी भरो तब तो आठ दस घंटे से ज्यादा जलती नहीं! अन्दर ज़रूर कोई है।

मां-बेटियों ने घर से बाहर निकल कर गली में देखा' दरवाज़ा-जंगला बंद थे। फिर भी जानकी ने दरवाज़ा पीटा, ज़ोर-ज़ोर से।

—कौन है?—अंदर से सहमी हुई धीमी आवाज़ आयी मन्नो की।

—मैं हूं जानकी।

मन्नो ने बगल की सलाखदार खिड़की के किवाड़ का एक पल्ला खोल दिया और उस पल्ले को पकड़े हुए चुपचाप खड़ी रही।

—सच्छू कहां हैं?

—सच्छू-गंगा गए हैं सनीमा देखने।

—ज़रा दरवाज़ा खोलो। बात करनी है।

—सच्छू अंदर से ताला बंद करा कर ताली अपने साथ ले गए हैं और कहा है कि अंदर वाला दरवाज़ा मत खोलना।

—जब हम लोग सच्छू-गंगा के साथ नहीं रहना चाहते ताईजी, तो तुम लोग इशारा क्यों नहीं समझती हो!—सुषमा ने अपना सिर आगे बढ़ाते हुए कहा।

गली के अंधेरे नल पर एक आदमी कपड़े धो रहा था।

मन्नो मौन खड़ी रही। लालटेन उसके पीछे रखी थी अतः उसके चेहरे का हाव-भाव अंधकार में डूबा हुआ था मगर वह सलाखों के दूसरी ओर खड़ी जानकी की बेटियों के चेहरों पर बारी-बारी से नज़र दौड़ाती रही।

—आखिर कुछ तो जवाब दो जीजी!—जानकी ने पूछा—भला कब तक ऐसे चलेगा!

मन्नो फिर भी गिटपिटायी हुई खड़ी रही।

गली में अंधअंधेरा था। आते-जाते इक्का-दुक्का लोग सलाख के पीछे स्तब्ध खड़ी झक सफ़ेद बालों वाली एक वृद्धा तथा सलाख के इस ओर एक अधेड़ स्त्री

और दो जवान हो रही बेटियो पर ठिठकती हुई नज़र डालते फिर निर्विकार भाव से आगे बढ़ जाते। पड़ोसियों को सारी बातें मालूम हो चुकी थी और वे यह मान कर कि अब कुछ भी करने से परिवर्तन नही होने को, उदासीन हो चुके थे।

—कुछ तो कहो ताईजी !

कई बार पूछने पर मन्नो बोली—कुछ नही कहना है मुझे बेटी ! अब मैं सिर्फ नतीजा देखना चाहती हूं।

सात-आठ मिनट वे चारों वैसे ही मौन खड़ी रही फिर उकताए हुए स्वर मे जानकी ने कहा—आओ चलो यहा से। इन से कहने से कोई फायदा नही।

दोपहर की रोटियां बची हुई थी। जानकी ने ननुए की सब्ज़ी बना ली। आम का मौसम बीता न था पर आम मे रेशे आ गए थे। चार-पाच बड़े आम थे। दीपा ने बड़ी पथरी मे आम का रस निकाला। खा-पी, बत्तिया बुझा कर तीनों ऊपर चली गयी। सांझ होते ही एक लहरा बारिश हुई थी इसलिए उमस एकदम से बढ़ गयी थी। मच्छर और ज्यादा।

जानकी बिना तकिया-बिस्तर निखरारी खाट छत पर डाल, सिर से पैर तक बारीक सफेद धोती से अपने को ढक कर लेट गयी। थोड़ी देर में खर्र-खर्र उसकी नाक बोलने लगी तो दीपा ने हस कर धीरे से कहा—यह तो कहती है कि मुझे रात-रात भर नीद ही नही आती।

—यह ऐसी ही है !

—दीदी, कितना अंधेरा है ! —दीपा सहमे हुए स्वर मे बोली।

—अंधेरे की बात न करो। वह देखो, आसमान मे दो-तीन तारे दिखायी दे रहे है।

—दीदी, तुम्हें डर नही लग रहा है ?

सुषमा को सुबह-सुबह गश आया था। दाहिनी कुहनी छिल गयी थी। उसने उत्तर दिया—नही। आओ, हम लोग कोई दूसरी बात करें। बड़ो अम्मा की बात करें। कि वह कितनी अच्छी थी। हम लोगो को हीरालाल-पन्नालाल पुकारते-पुकारते वह आंखें मूद कर रोने लगती थी तो उनके दोनां गाल लाल हो जाते थे तो वह कितनी सुदर लगने लगती थी।

—बड़ी अम्मा सचमुच बड़ी अच्छी थी लेकिन बड़ी अम्मा की बातें करने से डर लगता है मुझे। दीदी, पन्ना चाचा इस समय न जाने कहा होंगे।

छत पर से दिखाई दे रही थी वह घोड़े वाली औरत। पार्क के दूसरी ओर लपपोस्ट की रोशनी के आगे काले घोड़े पर सवार काली औरत !

—जीते होंगे तो होगे कही।

—दीदी, मैं अम्मा को जगा देती हू, मुझे तो बड़ा डर लग रहा है ! —मत जगाओ।

—अम्मा सफेद धोती ओढ़ कर सो रही हैं तो इन्हें देख कर यह भी नहीं मालूम देता कि यह ज़िंदा हैं या मर गयी। अच्छा, मान लो अम्मा भी मर जाएं तो हम लोगों का क्या होगा ?

सुषमा ने उत्तर देने के लिए मुह खोला ही था कि सब से ऊपर वाली सीढ़ी पर से मन्नो ने धीरे से आवाज़ दी—सुषमा ?

दोनों लड़कियों का खून एक ही पल में जैसे कि बर्फ हो गया हो ! वे एक साथ चीख पड़ीं—अम्मा ! अम्मा !

जानकी झटके से उठ बैठी। तब तक मन्नो छत पर आ कर खड़ी हो गयी थी। दो सीढ़ियां चढ़ने के कारण उस की सांस फेफड़े मे समा नहीं पा रही थी और हर सांस के साथ उस का हड़ियल कंधा आगे-पीछे झूल रहा था।

—तुम यहां क्यों आयी हो ?—उठते ही जानकी ने ऊपर की धोती परे फेंक दी। सिरहाने रखी हथपंखी उसने उठा कर तान ली। शायद कच्ची नींद से उठने के कारण उसका कंठस्वर दु:स्वप्न में चीखने की भांति ऊंचा हो गया—क्यों आयी हो यहां तुम ?

छत पर अंधेरा था। घर भर की रोशनियां गुल थीं।

—यह ताली। मन्नो ने बांस की खपच्ची-सा पतला हाथ बढ़ाया दीपा की ओर—लच्छू आए तो उन्हें दे देना।

तालियों का गुच्छा दीपा की खाट पर गिरा कर मन्नो छत की ज़मीन पर बैठने लगी—मुझे यहां आ कर नहीं रहना चाहिए था मगर मेरे दूसरा कोई ठिकाना ही न था। न मालिक का न लड़के का। क्या कहूं, सब का खून सफेद हो गया। अच्छा, बहुत बरस मैंने तुम लोगों के घर में शरण पायी। रानी बुआ को शान्ति पूर्वक विदा कर दिया। वह तो अब है नहीं। उन्होंने ही मुझे अपने पास रखा था।

बगल में रखी अपनी बांस की डोलची पर बल दे कर मन्नो खड़ी हुई और डोलची उठा कर एक-एक सीढ़ी पर बैठ-बैठ कर नीचे उतरने लगी।

दीपा, उस के पीछे सुषमा तथा अंत में जानकी नीचे उतरीं।

—तुम लोग फिक्र न करो बिटिया, मैं अपने आप चली जाऊंगी।-अंधेरे में मन्नो की कमज़ोर आवाज़ सुनायी दी।

—आखिर तुम जा कहां रही हो !—जानकी ने नीचे पूछा।

—जहां भी मेरा प्रारब्ध ले जाएगा। यहां का मेरा अन्न-जल आज ही तक का था। भगवान की मर्ज़ी !

बंद सदर दरवाज़े के आगे अंधेरे में मन्नो का हाथ तथा उस के हाथ में लटकी बांस की डोलची को सुषमा-दीपा के चार हाथों ने कस कर पकड़ लिया—नहीं ताईजी, इतनी रात में तुम्हें कहीं नहीं जाना है।

—अब जाने दो मुझे। या अगर यह डोलची भी तुम लोग रखना चाहो तो इसे भी ले लो। दसियों बरस मैं इस घर मे रही। जब तक जिस का अन्न-जल जहां का रहता है उस के एक पल आगे वह वहा रह ही नही सकता, मेरे बाबू कहा करते थे।

बारी-बारी से उसने सुषमा-दीपा के सिर और गालो पर हाथ फेरा फिर अंधेरे मे टटोल कर ऊपर की चिटखनी-बीच की सांकल खोली। बाहर के एक पत्थर पर उतर कर वह गली मे आ कर खड़ी हो गयी।

वह वही नारकीय अंधकार के खुले मुह-सा दरवाज़ा था जहा तक आ कर एक बार वह वापस लौट गयी थी, जिस रात दीपा ने लक्ष्मण की चारपाई पर जानकी को पा कर लक्ष्मण को घूसो से मारा था और मन्नो दीवार पर अपना सिर खट्-खट् पटकती हुई सीढ़ियां उतरी थी।

मन्नो ने हाथ बढ़ा कर ड्योढी छुई फिर उगलियां अपने माथे से लगाती हुई बोली—ताई जी ने तुम दोनो को अपने सगे बेटों की तरह प्यार किया। खूब पढ़ो लिखो तुम लोग, पढ-लिख कर खूब लायक बनो। जहा भी रहो, सदा सुखी रहो तुम दोनों को ताई जी का यही आशीष है। जाओ, अब सो रहो।

बायें हाथ कोयले वाले की दूकान के आगे बास का ऊचा टट्टर खड़ा था। कोने पर बछैयन गुडा का पीला मकान। बछैयन अपने घर के तिमजिले की छत पर चढ़ कर रोज़ सुबह पतग उड़ाता था। कोई लौंडा अगर उसकी बोझिल डोर को हाथ भी लगा दे तो उस की मा-बहिन की गालिया वह आसमान में तैरा देता उसी बछैयन की चुन्नी बुआ। शहर में ही मगर कहा दूर पर चुन्नी बुआ की ससुराल थी लेकिन मोटी-नाटी विधवा चुन्नी बुआ आती तो पर्दा काढ़ कर घर में घुसती। दूसरी ओर नारायणीबाई का मदिर। नारायणीबाई मराठी स्त्रियों की तरह कच्छा लगा कर धोती पहनती। शायद इस लिए छोटे-छोटे बच्चे उस से खौफ खाते। भौंहो के बीच रामानंदी तिलक और नाक के नीचे मूछ, चीनी डाक्टर की तरह बारीक। पोस्टमास्टर साहब का बद घर। जसराम की हल्दी आटा की अधभरी बोरियो वाली बंद दुकान। जहा से मन्नो कूटू का आटा एका-दशी पर खरीद कर लाती थी तो उबली अरबी के साथ फेंट कर कूटू की पकौ-ड़ियां—एकदम अंत में मुह में बाकस स्वाद—पुस्तकालय के कोने पर नाले का पत्थर बरसों पहले कोई चुरा ले गया था। तेज़ बारिश होने पर गली भर का काला पानी वहा से उमड़-उमड़ कर मुशीजी की दुकान के आगे से बहता हुआ अनारी साइकिल वाले की दुकान के सामने सरसराता ढाल के नीचे तेज़ बहता हुआ जाता था। मुंशीजी की दुकान की दीवार पर टगी पौनतावा, डग्गा, चाद-तारा पतगें लड़के आकर खरीदते थे लटाई, डोरी, मंझा और अमृतबानों के अदर पन्नियों में लिपटे लेमनजूस-टाफी। वे सारे टाफी-लेमनजूस खा कर, पतंगों

को रात के आकाश में खूब लम्बी उड़ा उनकी डोरें तोड़ कर खुद भी लापता हो गया था मुशीजी पद्रह बरस बाद। परसाद घी वाले की दुकान पर आधी रात को मोटरसवार आते और कई-कई बद कनस्तर असली घी मोटर पर लदवा कर नोटों की गड्डी उसके सामने फेंक पर से मोटर उड़ा कर वापस चले जाते थे। पुस्तकालय की सबसे ऊपर वाली सीढ़ी पर एक पीला कुत्ता सो रहा था, पुस्तकालय का लोहे की बेलबूटों वाला जगलेदार फाटक बंद था। बायी ओर का सार्वजनिक नल बह नही रहा था। बिजली के खंभे पर तार मे उलझी हुई पतंग कब की सड़-गल गयी थी परन्तु उसकी बास की कमानी-ठड्डा डोर के साथ अब भी लटक रहा था।

—यह इतनी रात को घर से निकल कर गयी है तो आखिर गयी कहां होगी छत पर लौट कर जानकी ने चिन्ता प्रगट की।

रात को सेकेन्ड शो देख कर लक्ष्मण-गगा लौटे या नही, पता न चला।

अगली सुबह ठाकुरद्वारे का ताला खोल कर गंगा दाहिने हाथ से धोती की चुनन पकड़े और बायें हाथ मे पक्के कोयले को धुआं उगलती भट्ठी लटकाए हुए आगन मे आयी भट्ठी आगन में रख कर वह उसे पखा धौकने लगी।

— भट्ठी यहा क्यो सुलगा रही हो। सुषमा ने छज्जे पर खड़ी होकर कहा—*यहां खाना नही बनेगा। अपने कमरे मे ले जाओ।*

—मैं तो कुछ जानती नही। इन्होने कहा कि बद कमरे में धुआं भरेगा। तुम मना करती हो तो उठा ले जाती हू।

तभी लक्ष्मण बाहर आया।

—*एक ही बार मे ऐसे कह दूं। एक ही काम हो, समझीं या नही। या* कि ऐसे शुरू हो जाऊं मैं भी। गंगा, क्या-क्या है इस मे ऐसे रंग, तुम कुछ नही जानती हो। भट्ठी सुलगाओ वही।

लेकिन गगा भट्ठी उठा कर ठाकुरद्वारे मे ले जाने लगी।

जानकी छज्जे पर से होकर जा रही थी। गंगा को देख कर उस ने पूछा—मन्नो जीजी कल रात की गयी-गयी लौटी नही है। उनकी कुछ खोज-खबर ली तुम लोगों ने ?

—यह कह रहे थे कि अम्मा बूड़ानबर एक के पास गयी होंगी गगा ने ठाकुरद्वारे मे घुसते हुए उत्तर दिया—*बूढ़ानबरएक अर्थात् बाबू अर्थात् पिता बुलो।*

थोड़ी देर बाद ठाकुरद्वारे से घी की सोंधी महक उठी, घी मे भूने जा रहे आटे की सोंधी सुगंध। लक्ष्मण प्रायः हर सुबह हलुवा-पराठा खा कर कालेज जाता था।

बंद गले का काला कोट जो कालिंदी ने कई वर्ष पहले उसे दिया था, सफेद सूती पैंट और पैरों मे चप्पल पहन कर साढ़े आठ बजे वह कमरे मे अदर आया

बंद करवा कर तालियां अपने जेब मे डाल कालेज चला गया। गंगा सलाखों वाली खिड़की के किवाड खोल कर बाहर बाज़ार में लोगो तथा गायो की आती-जाती भीड को देखने लगी। उसकी दिन की प्राय. यही चर्या थी। दोपहर होती तो किवाड़ बद कर सोफे पर सो जाती। या रेडियो सुनती।

रेडियो पर भजन आ रहा था—दे ऐसा वरदान ए मइया सुमिरन तेरा गाऊ मैं ऐसा प्यार जगा दे मइया मैं बालक तू मइया मेरी निशदिन तेरी कोट है।

तभी चदर जानकी के यहा आया, हाल-चाल देखने।

शरण लगा लो मुझको मइया तुझ पर बलि-बलि जाऊ मैं। ऐसा प्यार जगा-

—भाग यहा से !-चन्दर ने बाया पैर उठा कर बद दरवाज़े को पूरी शक्ति से एक लात मारी।

अंदर से कोई मौखिक प्रतिवाद नही हुआ। ट्रजिस्टर बद हो गया। अन्दर सन्नाटा छा गया।

दालान में अलगनी पर गगा की हरे बार्डर की पीली धोती फैली थी। लक्ष्मण की साइकिल थी नही, साइकिल पर वह कालेज गया था। ताला बद सलाखो के पीछे चतुर्भुज भगवान खड़े थे, चारों हाथ फैलाए। उन के आगे लक्ष्मण-गगा की गृहस्थी बिखरी हुई थी।

घर में एक भी प्राणी न था। जानकी 'सुषमा' दीपा स्कूल गयी थीं।

गंगा फिर ट्रजिस्टर बजाने लगी, यह सोचकर कि चदर लौट गया होगा। चन्दर दबे पाव ऊपर जाकर मसहरी का डंडा ले आया।

डंडे पर टाग कर उसने लालटेन-लालटेन ज़रा फसी मगर निकल आयी। फिर छोटा स्टोव और चाय की छन्नी। दो लोटे, दो लहगे, तीन प्लास्टिक की डालियां, घी का लम्बा अमृतबान। दो प्लेट पूड़िया, माचिस की डिबिया, सेन्ट की शीशी, आल्ता को शीशी। ये सामान तो आसानी से बाहर आ गए लेकिन ताबे का बड़ा लोटा छड़ों के बीच से न निकल पाया तो उसने उसे रहने दिया। गंगा के एक लहगे में यह सारा सामान बाध कर उसने उठाया और वहा से नौ दो ग्यारह हो गया।

सडास का लोटा वह पहले ही गायब कर चुका था। जानकी ने पुरानी सुराही वहा रखी तो चदर ने सुराही तोड़ी दी। तब से जानकी-लक्ष्मण परिवार काई लगा भभ्भर ले कर पाखाना जाने लगे।

कालेज से लक्ष्मण लौटा। कमरे के अदर ही नाली के बड़े छेद पर बैठ कर मुह-हाथ धोया। शौच से निवृत्त होने के लिए अदर का दरवाज़ा खोल कर दालान में पैर रखा ही था कि तलवा मरे चूहे जैसी किसी गिलगिली चीज़ पर पड़ा तो वह चौक कर उचक गया। हाथ की ढिबरी बुझ गयी। गनीमत कि गिरी नही। ढिबरी जला कर ले आया। देखा, उसकी ड्योढ़ी के आगे पान की अधखाई

मिलोरी कोई थूक गया था।

—वही हरामजादा थूक गया है ! —उसने चिल्ला कर कहा ताकि ऊपर जान के यहां तक सुनाई दे जाए।

लौटते हुए उसने ठाकुरद्वारे को खिड़की दिखाई तो एक बार फिर चौंक कर रह गया। आवाजें दे कर गंगा को बुलाया। अन्दर दिखाया। वहां चतुर्भुज के सिवा प्राय कुछ नहीं रह गया था।

—रसोई का सारा सामान चोरी कर लिया ! रंडियों को और कुछ न मिला तो रसोई के बर्तन चुरा लिए ! —लक्ष्मण-गंगा जोर-जोर से चिल्लाने लगे।

सुन कर जानकी छज्जे पर आई और आ कर उन दोनों से अधिक जोर से चीखने लगी—अपना सामान खुद छिपा दिया है, ऊपर से झूठी चोरी लगाते हो !

जानकी लगातार इतना चिल्लाई कि लक्ष्मण-गंगा घबरा कर कमरे में घुस गए और दरवाजा बंद कर के ट्रांजिस्टर फुल कर दिया ! लक्ष्मण गया शायद अपने किसी खैरख्वाह के पास या पुलिस में चोरी की रपट लिखाने।

बाहर से किसी ने सदर दरवाजे की कुंडी खटखटाई। लक्ष्मण को कई बार आवाज दी नारायणीबाई ने। सदर दरवाजा न खुला तो उसने लक्ष्मण के दरवाजे की कुंडी कई बार पीटी। गंगा ने उसे सदर दरवाजे से आने को कहा। लेकिन वह दरवाजा जानकी वगैरह ने न खोला तो नारायणीबाई ने लौट कर फिर लक्ष्मण का दरवाजा खटखटाया। हिचकते हुए गंगा ने अपना दरवाजा खोल दिया।

नारायणीबाई गंगा पर बिगड़ने लगी—मैंने तीन बार चक्कर काटा। उधर का कुंडा इतनी पीटी, इतनी पीटी मगर किसी ने कुंडा न खोली। लच्छू ने कहा कि जल्दी आओ। जल्दी आई तो यह प्रसाद दिया ! अच्छा तब तुमने कहा कि उधर से आओ। जब कहा था कि उधर से आओ तब उधर देखती। खोलती कि भेजा है, कहीं बंद न हो। भेज कर उल्लू बनाना ! इधर लच्छू ताला बंद करके गए हैं ! यहां क्यों दोनों तरफ से ताला बन्द कर के गए हैं ! मुझ से क्यों कहा कि जल्दी आओ। जब कभी कहेंगे कि जल्दी आओ और मैं जल्दी आई तो कहना ! बिना आधी रात किए आऊंगी ही नहीं ! जाएं जहन्नुम में जाएं ! वह नौकरी करते हैं तो मैं तुम्हारी चौकीदारी करूं ! वाह, अच्छा तमाशा है !

नारायणीबाई देर तक ऐसे ही बड़बड़ाती रही फिर उसने पूछा—मरा चमरसु कहां है ?

वह काई सगे भ्रम्भर को अपने प्रयोग में नहीं लाती थी।

लौट कर आई तो उसका क्रोध शांत हो चुका था। बोली—टट्टी बड़ी साफ हुई मुन्ने। तुम मुझे बेड़ का चाय दो, समझीं। लच्छू को बकने दो। लच्छू के कहने से कुछ थोड़े ही कुछ करना है समझी न ! हजारों जगह कीर्तन करने के लिए मेरा

बुलावा। जहां मैं पहुंच जाऊं वहीं गुरुजी खाना खालो गुरुजी चाय नाश्ता कर लो जलेबी मंगायेंगी, भरी पूड़ी का नाश्ता करायेंगी। समझी न। जितनी चीजें होती हैं दान-दक्षिणा की वे सब चीजें रखे रहती हैं मेरे लिए, किसी को देती थोड़े ही हैं। अब यह धोती है, सौ रुपये से कम की न होगी, समझी? इसे तुम सर्फ से धो लेना। जहां-जिधर कढ़ी हुई है उधर से कमर में खोस कर मैंने पहना था। समझी न?

बन्द कमरे के अन्दर अकेली ढिबरी जल रही थी, लालटेन का अभाव हो जाने के कारण। लक्ष्मण ने शीशा, बक्से, कनस्तर, सोफा वगैरह अपने सारे सामान का दोनों दरवाज़ों के पीछे ऊपर तक अम्बार लगा कर कमरे की किले-जैसी दुर्भेद्य मोर्चाबन्दी कर दी थी।

—अब इस समय न धोना। कल सुबह धोना। समझी न!

नारायणीबाई ने फिर से गंगा को सहेजा—समझी? यह धोती बाज़ार में लेने जाओ तो सौ रुपए से कम में न मिलेगी। इस समय मुझे डेढ कप चाय चाहिए, बस!

फिर नारायणीबाई एकालाप करने लगी—बडी खराबी! आंख से सुझाई नहीं देता मेरे, अंधी हो गई। और लच्छू पटक गए मुझे इस अंधाकुप्प कुए में, कि तुम्हारी निगरानी करूं। मैं अपना बक्स तक नहीं खोल सकती!

नारायणीबाई के आगे-पीछे कोई था नहीं। पचहत्तर पार कर गई थी वह। मंदिर में अकेली रहती थी। लक्ष्मण। उसे पटा कर अपने यहां ले आया कि जरूरत पड़ने पर गंगा उस की सेवा-सुश्रुषा कर देगी, मरने पर क्रिया-कर्म कर देगा लक्ष्मण। नारायणीबाई की सारी भौतिक माया एक बड़े-से सदूक में जमा थी। ताला लटका के रहे उस सदूक के पीछे-पीछे वह उठ कर लक्ष्मण की गृहस्थी में सम्मिलत हो गई।

शाम को लक्ष्मण लौटा नहीं था। कालेज से सीधे वह एक ट्यूशन पर चला जाता था। छठे-सातवें दर्जे की तीन लड़कियों का ट्यूशन था, चालीस रुपए महीने का। रात आठ-साढ़े आठ बजे वह लौटता।

लौटते ही उसने ट्रांजिस्टर चालू कर दिया, खूब तेज़। खा-पी कर दरवाज़े भड़ा-भड़ चारों ओर से बन्द करके सो गया, बिना बिजली-पंखे के।

अगले ही दिन हादसा हो गया, नारायणीबाई की दी हुई सौ रुपए की धोती के साथ! गंगा ने उसे हिदायत के अनुसार सर्फ से धो कर सूखने के लिए दालान में फैलाया। वह तो किवाड़ बन्द कर के रेडियो पर ईना मीना डीका वगैरह गाने सुन रही थी, उस बीच न जाने कब वही गाय फिर अन्दर घुस आई और सर्फ से धुली धोती को खा गई। गंगा देखे और दौड़े, उसके पहले ही आधी से अधिक धोती गाय ने अन्‍ से पहन ली थी? गंगा ने उसे तावे के लोटे से मारा तो वह

गिलौरी कोई थूक गया था।

—वही हरामज़ादा थूक गया है! —उसने चिल्ला कर कहा ताकि ऊपर जान के यहां तक सुनाई दे जाए।

लौटते हुए उसने ठाकुरद्वारे की ढिबरी दिखाई तो एक बार फिर चौंक कर रह गया। आवाज़ें दे कर गंगा को बुलाया। अन्दर दिखाया। वहां चतुर्भुज के सिवा प्राय: कुछ नहीं रह गया था।

—रसोई का सारा सामान चोरी कर लिया! रंडियों को और कुछ न मिला तो रसोई के बर्तन चुरा लिए! —लक्ष्मण-गंगा ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगे।

सुन कर जानकी छज्जे पर आई और आ कर उन दोनों से अधिक ज़ोर से चीखने लगी—अपना सामान खुद छिपा दिया है, ऊपर से झूठी चोरी लगाते हो!

जानकी लगातार इतना चिल्लाई कि लक्ष्मण-गंगा घबरा कर कमरे में घुस गए और दरवाज़ा बंद कर के ट्रांजिस्टर फुल कर दिया! लक्ष्मण गया शायद अपने किसी खैरख्वाह के पास या पुलिस में चोरी की रपट लिखाने।

बाहर से किसी ने सदर दरवाज़े की कुंडी खटखटाई। लक्ष्मण को कई बार आवाज़ दी नारायणीबाई ने। सदर दरवाज़ा न खुला तो उसने लक्ष्मण के दरवाज़े की कुंडी कई बार पीटी। गंगा ने उसे सदर दरवाज़े से आने को कहा। लेकिन वह दरवाज़ा जानकी वगैरह ने न खोला तो नारायणीबाई ने लौट कर फिर लक्ष्मण का दरवाज़ा खटखटाया। हिचकते हुए गंगा ने अपना दरवाज़ा खोल दिया।

नारायणीबाई गंगा पर बिगड़ने लगी—मैंने तीन बार चक्कर काटा। उधर का कुंडी इतनी पीटी, इतनी पीटी मगर किसी ने कुंडी न खोली। लच्छू ने कहा कि जल्दी आओ। जल्दी आई तो यह प्रसाद दिया! अच्छा तब तुमने कहा कि उधर से आओ। जब कहा था कि उधर से आओ तब उधर देखती। खोलती कि भेजा है, कहीं बंद न हो। भेज कर उल्लू बनाना! इधर लच्छू ताला बंद करके गए हैं! यहां क्यों दोनों तरफ से ताला बन्द कर के गए हैं! मुझ से क्यों कहा कि जल्दी आओ। अब कभी कहेंगे कि जल्दी आओ और मैं जल्दी आई तो कहना! बिना आधी रात किए आऊंगी ही नहीं! जाएं जहन्नुम में जाएं! वह नौकरी करते हैं तो मैं तुम्हारी चौकीदारी करूं! वाह, अच्छा तमाशा है!

नारायणीबाई देर तक ऐसे ही बड़बड़ाती रही फिर उसने पूछा—मेरा कमंडलु कहां है?

वह काई लगे झंझर को अपने प्रयोग में नहीं लाती थी।

लौट कर आई तो उसका क्रोध शांत हो चुका था। बोली—टट्टी बड़ी साफ हुई मुझे। तुम मुझे डेढ़ कप चाय दो, समझी। लच्छू को बकने दो। लच्छू के कहने से कुछ थोड़े ही कुछ करना है समझी न! हज़ारों जगह कीर्तन करने के लिए मेरा

बुलावा। जहां मैं पहुंच जाऊं वहीं गुरुजी खाना खालो गुरुजी चाय नाश्ता कर लो जनेवी मंगायेंगी, भरी पूडी का नाश्ता करायेंगी। समझी न। जितनी चीजें होती हैं दान-दक्षिणा की वे सब चीजें रखे रहती हैं मेरे लिए, किसी को देती थोड़े ही हैं। अब यह धोती है, सौ रुपये से कम की न होगी, समझी? इसे तुम सर्फ से धो लेना। जहा-जिधर कढ़ी हुई है उधर से कमर में खोंस कर मैंने पहना था। समझी न?

बन्द कमरे के अन्दर अकेली ढिबरी जल रही थी, लालटेन का अभाव हो जाने के कारण। लक्ष्मण ने शीशा, बक्से, कनस्तर, सोफा वगैरह अपने सारे सामान का दोनों दरवाजों के पीछे ऊपर तक अम्बार लगा कर कमरे की किले-जैसी दुर्भेद्य मोर्चाबन्दी कर दी थी।

—अब इस समय न धोना। कल सुबह धोना। समझी न!

नारायणीबाई ने फिर से गंगा को सहेजा—समझी? यह धोती बाजार में लेने जाओ तो सौ रुपए से कम मे न मिलेगी। इस समय मुझे डेढ़ कप चाय चाहिए, बस!

[illegible] भाई [illegible], कि [illegible]

नारायणीबाई के आगे-पीछे कोई था नहीं। पचहत्तर पार कर गई थी वह। मंदिर में अकेली रहती थी। लक्ष्मण। उसे पटा कर अपने यहा ले आया कि जरूरत पड़ने पर गंगा उस की सेवा-सुश्रुषा कर देगी, मरने पर क्रिया-कर्म कर देगा लक्ष्मण। नारायणीबाई की सारी भौतिक माया एक बड़े-से संदूक में जमा थी। ताला लटका के रहे उस संदूक के पीछे-पीछे वह उठ कर लक्ष्मण की गृहस्थी में सम्मिलत हो गई।

शाम को लक्ष्मण लौटा नहीं था। कालेज से सीधे वह एक ट्यूशन पर चला जाता था। छठे-सातवें दर्जे की तीन लड़कियों का ट्यूशन था, चालीस रुपए महीने का। रात आठ-साढ़े आठ बजे वह लौटता।

लौटते ही उसने ट्रांजिस्टर चालू कर दिया, खूब तेज। खा-पी कर दरवाजे भड़ा-भड़ चारों ओर से बन्द करके सो गया, बिना बिजली-पंखे के।

अगले ही दिन हादसा हो गया, नारायणीबाई की दी हुई सौ रुपए की धोती के साथ! गंगा ने उसे हिदायत के अनुसार सर्फ से धो कर सूखने के लिए दालान में फैलाया। वह तो किवाड़ बन्द कर के रेडियो पर ईना मीना डीका वगैरह गाने सुन रही थी, उस बीच न जाने कब वही गाय फिर अन्दर घुस आई और सर्फ से धुली धोती को खा गई। गंगा देखे और दौड़े, उसके पहले ही आधी से अधिक धोती गाय ने अन्दर से पहन ली थी? गंगा ने उसे तावे के लोटे से मारा तो वह

दालान में गोबर का गोदान करते भये बाहर रेंग चली। गंगा गाय पर खूब चिल्लाई और नारायणीबाई गंगा पर जब कि गलती न गंगा की थी न गाय की। उस गाय को लक्ष्मण ने चार-पांच दिन जूठन में बची दाल-सब्जी-रोटी की ज्योनार खिलाई थी, सो गाय परच गई थी !

चन्दर चोरी किया हुआ सामान तो उसी समय बेच कर अपने यार-दोस्तों के साथ सेनिमा देख आया था। सुबह-सुबह वह मजा लेने के लिए जानकी के यहां पहुंचा उस समय गंगा और नारायणीबाई एक-दूसरे पर चिल्ला रही थीं, लक्ष्मण चीख-चीख कर दोनों से शान्त रहने को कह रहा था।

खूब हगा है ! —चन्दर ने गोबर की ओर देख लक्ष्मण के निकट जा कर उस की आखों में आखें डालते हुए कहा —क्यों लच्छू, तुमने मुझे हरामजादा कहा है। यह बहुत बुरी बात है। इसका परणाम बहुत बुरा होगा, यह समझ लो !

—मैंने ऐसे तुम्हें कहा नहीं ऐसे जिसने थूका उसे कहा।

—यह बात अच्छी तरह समझ लो। फिर कभी मुझे गाली दी तो ठीक न होगा। तुम्हारे सारे ऐसे का मैं वैसे कर दूंगा।

लक्ष्मण पलट कर कमरे में अन्दर चला गया। दरवाजा बन्द कर लेने के बाद वहां ने बोला—गुंडा है साला ! कुत्ता !

—देखो लहगे के अन्दर घुस कर तुम फिर गाली बक रहे हो ऐसे गुरु ! इस का ... परणाम बहुत बुरा होगा !

...मने रसोई वाली दालान में सिल-लोढ़ा पड़ा था। चन्दर ने लोढ़ा उठाया और संडास में जा कर एक बार में मार कर सठास का नल तोड़ दिया !

जानकी उसके पीछे आ कर खड़ी हो गई थी। वह चिल्लाने लगी—अब तुम्हें ... नवाना नल, नल वाले को बुलवा कर ! मैं नहीं जानती।

—हगने दो इन्हें जहां हगने की जगह मिले ! लोढ़ा आगन में फेंक कर चन्दर ... ला गया।

चन्दर चला गया तो लक्ष्मण ने बाहर निकल कर पाखाने के कुंडों में खूब लम्बी जंजीर लपेट कर उस के दोनों सिरों को गोदरेज के ताले से जकड़ दिया।

लेकिन अगले ही दिन तड़के वह उठकर बाहर आया क्योंकि नारायणीबाई चार बजे फजर की शौच से निवृत्त होती थी। ताले के छेद में ताली डालनी चाही तो देखा कि न जाने किसी ने उस में माचिस की तीलियां ठूस दी हैं। लक्ष्मण ने कील से, हेयरपिन से काडिया निकालने की बहुतेरी कोशिश की मगर सारी सलाइया न निकाल पाया। तब उसे ताले को दोनों हाथों से पकड़ कर झिझोड़ा, किवाड़ को झकझोरा फिर झल्ला कर वह ताले को लोढ़े से पीटने लगा। चार बजे के नीमउजाले में भड़-भड-भड़-भड़ ! —अगर मेरी संडास का दरवाजा टूट गया लच्छू तो तुम्ही को झाड़ भरना होगा।— वो ऐसे था कर खोलो इसे! —

जिस ने तुम्हारा ताला खराब किया हो उसी से कहो। मैं तो जानती नहीं किसने बिगाड़ा है।—बड़ी खराबी मेरी! टट्टी तक नहीं जा सकती मैं!

सारे पडोसी जाग गए लेकिन सब जानते थे कि जानकी के घर में तो आए दिन कोई न कोई बवाल मचा ही रहता है। लक्ष्मण ने कम से कम डेढ़ घंटे तो जरूर ही ताले को कूटा होगा मगर ताला टूटा नहीं।

उस के कमरे के एक कोने में नाली का चौकोर छेद बना था, जिस पर दो ईंटें मिला कर रखी रहती थी। ईंटों को हटाते ही नौसादर की-सी गंध का तेज भपका सारे कमरे मे छा गया, बाहर के बड़े नाले की तेज दुर्गन्ध का। नाली के छेद के आगे एक चारपाई खड़ी कर के उसने पर्दा कर दिया। उसी छेद के ऊपर नारायणीबाई बैठी। खुद लक्ष्मण को देर से हाजत लगी हुई। नारायणीबाई पांच-साढ़े-पांच बजे दूसरी बार निवृत्त होती थी।

दो रात और दो दिन लक्ष्मण-गंगा तथा शाम दिया जले के बाद नारायणी-बाई तीसरे बार, उसी एक बन्द कमरे के अन्दर पखाना-पेशाब करते, खाना बनाते खाते और सोते रहे। नारायणीबाई उसी छेद के बगल मे अपनी खाट लगा कर सोती थी क्योंकि रात को भी वह तीन-चार बार पानी लेने के लिए उठती थी।

स्कूल-ट्यूशन से लौटकर लक्ष्मण ताले के साथ भिड़ जाता, चिमटी से तीलियां निकालने में।

यह बात कि लक्ष्मण की सडास बन्द कर दी गई है, मुहल्ले के बच्चे-बच्चे तक जान गए। लक्ष्मण गंगा या नारायणीबाई घर के बाहर निकले नही कि पीछे से कोई बच्चा-बड़ा आवजाकशी कर देता—हगे है!—नारायणीबाई के जैश्रीकृष्ण का उत्तर भी बच्चे हगे हैं से देने लगे! परेशान हो कर नारायणीबाई रात को देर करके आने लगी, जब मुहल्ले के बच्चे बाहर गली मे न होते। लेकिन बच्चे आखिर ठहरे बच्चे! जो नारा उनके मुह मे एक बार आ गया, उसे वे आसानी मे छोड़ने वाले कहा! दिन-दोपहर-शाम किसी भी समय लक्ष्मण-गंगा को देखते ही तरन्नुम में गाने लगते—हगे है! हगे है! हगे है!

परेशान हो कर गंगा ने एक रोज मौके से एक अकेले लड़के को देख कर उसे अपने पास बुलाया—सुनो भैया, यहा आओ!—वह पास आया तो उसे आठ-दस रेवड़िया देती हुई गंगा बोली—अब से तुम लोग गंदी बात नही कहोगे तो खूब बहुत-सी रेवड़ी दूंगी।

देखते-देखते गंगा के जंगले के नीचे रेवड़ियां चबाती किशोर-किशोरियों की भीड़ जमा हो गई—गंगा भाभी की!—जय! गंगा भाभी की!—जै!

रात नौ-दस बजे के करीब लक्ष्मण गली के नल पर खूब जोर-जोर से गाना गाते हुए नहा रहा था—दोस्त-दोस्त ना रहा प्यार-प्यार ना रहा जिन्दगी हमें तेरा एतबार ना रहा—

एक-एक नाखून साफ करने में उसे तीन-चार मिनट लग जाते थे।

—वो मेरे दोस्त तुम्ही थे तुम्ही तो थे जो जिन्दगी की राह में बने थे मेरे हमसफर वो मेरे दोस्त—

—ए लच्छू !—पोस्टमास्टर साहब की बीवी ने अपने घर का दरवाजा खोल कर ज़ोर से पुकारा—लच्छू, सुनते हो ? तुम्हारा दोस्त रहा हो या भाड़ में गया हो भैया मेरे लड़कों का इम्तहान है कल, तनिक धीरे गाओ।

पोस्टमास्टर साहब की स्त्री महालड़ाकी और गरिहुर थी। लक्ष्मण वही गाना धीरे-धीरे गुनगुनाने लगा—सारे भेद खुल गए राज़दार ना रहा गले लगी सहम-सहम नहा कर उस ने काई दार झंझर भरा, नारायणीबाई की प्रभातफेरी के लिए !

अपने कमरे में घुसने के पहले उसने एक बार इधर-उधर नज़र दौड़ाई। कोई न था। आगे से गमछा हटा कर वह मनको अहीरिन के बंद दरवाज़े के सामने खड़ा हो कर धुलधुल करने लगा ! कई झटके दे कर वह मुड़ा ही था कि दूर से मनको की चीखती हुई आवाज सुनाई दी—मारूंगी मैं अद्धा तुम्हारी खोपड़ी पर, खोपड़ी खार हो जाएगी ! कोढ़ियल !

लच्छू अपने कमरे में भाग गया। मनको नल से पानी ला-ला कर अपने किवाड़ धोने लगी—यह आदमी है कि कुत्ता ! जहां पाया टांग उठा कर पेसाब कर दिया ! यह देखो बीबी, लच्छू मेरे किवाड़ के ऊपर मूत के गए हैं !

बेचारी मनको का दोष केवल इतना था कि कई दिन पहले दो लड़के लच्छू के बन्द दरवाजे के सामने हगे है कह कर भागे थे तो मनको अपने चबूतरे पर खड़ी हुई हंस रही थी।

शाम को दीपा के पेट मे मरोड़ के साथ तेज़ दर्द उठा तो बढ़ता ही गया। रात होते न होते वह पेट दबा कर बिलखने लगी। दो बार उल्टियां हुई और चार-पांच दस्त।

—और खाओ ठूस-ठूसकर कचौड़ी !—जानकी ने खीझते हुए उसे कहा फिर अमृतधारा की शीशी ढूढ कर उसे बतासे में पांच बूद अमृतधारा दी।

दीपा के होंठ नीले पड़ने लगे तो जानकी परेशान हो गई। वह चुपचाप रोने लगी। उस ने सुषमा को भेज कर बगल वाले हरिहरचा को जगवा कर बुलवाया। आकर वह दीपा को चुपचाप परखता रहा फिर बोला—तुम इसे ले कर अस्पताल चलो, तुरन्त। मैं पीछे-पीछे पहुंचता हू।—कह कर वह लौट गया।

सुषमा एक रिक्शा गली के अन्दर मकान के सामने तक ले आई। वे दोनो लगभग बेहोश दीपा को अपनी चार जांघों पर लिटा कर बड़े अस्पताल पहुंची। इमरजेंसी के डाक्टर ने जांच करने के बाद कहा—आप इस को खाना-वाना ठीक से देती हैं या नही। आंतें सूख गई हैं। पस आ गया है। तुरन्त आपरेशन नहीं

होगा तो इसकी जान नहीं बच सकती ।

दीपा के शरीर में खून की कमी थी। आपरेशन के पहले खून चढ़ाना था। डाक्टर ने जानकी से दीपा का ब्लड-ग्रुप पूछा। जानकी समझ न सकी डाक्टर का मतलब! समझा भी होता तो उसे पता न था। डाक्टर ने खून ले कर बताया, बी-आर एच माइनस। अस्पताल के ब्लड-बैंक मे इस ग्रुप का खून नहीं था।

डाक्टर ने आवश्यक दवाओं की पर्ची बना कर जानकी को थमाते हुए बताया—आठ सौ सी सी ब्लड का इन्तज़ाम कर लीजिए। जल्दी। दवाखाना शायद कहीं खुला हो।

तभी हरिहर चाचा हांपता हुआ इमरजेन्सी वार्ड मे दाखिल हुआ। आते ही उसने दस-दस के तह किए नोट कमीज के जेब से निकाल कर जानकी की मुट्ठी मे बन्द कर दिए—रख लो, जरूरत पडेगी।

जानकी अपना पर्स खोल कर देखे बगैर बैग कंधे पर लटकाए चली आई थी।

—वक्त नहीं है। जल्दी मंगाइए दवा और खून तब आपरेशन होगा।—डाक्टर कहकर अपने कमरे मे चला गया।

नीली दीवार वाले कमरे में स्ट्रेचर पर दीपा सो रही थी।

हरिहर ने कहा कि वह दवा-खून लेने जाएगा लेकिन सुषमा ने उसे रोक दिया—चाचाजी, आप यहीं अम्मा के पास रहिए ताकि अम्मा अकेली घबरायें नहीं। मैं तो चिड़िया की तरह उड़ती हुई जाऊंगी और दवा वगैरह लेकर चिड़िया की तरह उड़ती वापस आ जाऊंगी।

जानकी ने भी हरिहरचा को रोक लिया। सुषमा को पचास रुपये दे दिए।

सुषमा अस्पताल के बाहर सो रहे रिक्शेवालो मे से एक को जगा कर रिक्शे पर सवार हुई।

—जरा दो पैंडल ज़ोर से मार दो भैया, मेरी छोटी बहिन आपरेशन टेबुल पर पड़ी हुई है।—रास्ते में उस अधेड़ रिक्शेवाले से घिघयाते हुए कहा।

चौक बाजार की दवा की तीनों दुकानें बन्द मिलीं। नख्खास की त्रिमुहानी वाली दुकान मे जलती हुई राडलाईट उसे दूर ही से दिखलाई दी।

—सुनिए ज़रा जल्दी कर दीजिए, मेरी छोटी बहिन का सीरियस आपरेशन होने को है। अस्पताल में पड़ी है। देरी हो जाएगी!

दूकानदार सुस्त कदमों से ग्लूकोज़, गाज़ तथा अन्य दवाए अल्मारियों से एक एक कर उठा रहा था।

दुकानदार ने उसे गौर से देखा। काले-शलवार कुर्ते के ऊपर नायलान का नारंगी दुपट्टा। देखने में न वह हिन्दू लग रही थी न मुसलमान, सिर्फ अठारह-उन्नीस साल की एक मरियल-सी लड़की।

—सैंतीस रुपये साठ पैसे निकालो। दुकान वाले ने काउन्टर पर आखिरी

सामान दूसरी ओर सरकाते हुए कहा।

—यहा कहीं ब्लड मिल जाएगा ? आठ सौ सीसी चाहिए, बी-आर एच माइनस। आठ सौ सी सी। देखिए, बहुत जरूरी है। मेरी छोटी बहिन का आपरेशन होने को है, नही होगा तो वह—

—ब्लड दवाखाने मे नही मिलता।—दूकानदर नोट उठा कर पीठ फेरते हुए बोला—किसी रिस्तेदार से कहिए। या किसी कुली-मजदूर को पकडिए। पंद्रह से बीस रुपये तक का रेट है।

तभी रिक्शेवाले ने पुकार कर चार उंगलियों के इशारे से सुषमा को अपने पास बुलाया।—ब्लड चाहिए क्या ?—सुषमा दवाओ को अपने सीने से चिपकाए हुए पास आई तो रिक्शेवाले ने फुसफुसा कर पूछा—बी ग्रुप ही चाहिए न, आर एच माइनस। पंद्रह रुपयिया लूंगा। कितना चाहिए।

बिजली के खभे को पार करने के बाद सुषमा की निगाह रिक्शा चालक के पैर पर पडी तो उसकी एंडी के पीछे की तनी हुई सफेद नस दिखलाई दी और और धीरे-धीरे अगले अंधेरे मे डूब गई। उसकी निगाह हर रोशनी के दायरे मे आने पर उसी नस पर जमी रही !

दवाएं तथा पैडिल मारता ब्लड-बैंक अपने साथ मे लिए हुए सुषमा अस्पताल में दाखिल हुई उस समय रात पौने दो बजे हल्का-पीला चालीस पावर का एक बल्ब अस्पताल के प्रवेशद्वार के ऊपर आकाश मे जाग रहा था। डाक्टर ने दीपा को कोरोमाइन के दो इंजेक्शन दे दिए थे। वह सो गई थी।

डाक्टर निगम ने रिक्शे वाले को टेबुल पर लिटा कर उसकी बांह से खून निकाला। बोतल मे भरता खून सात सौ सी सी के निशान पर आया देख निगम ने डर कर रिक्शे वाले की बाह में गड़ी सुई नोच कर अलग कर दी। वह अधेड़ रिक्शे वाला भी बोतल की ओर सिर घुमा कर बोतल की दीवार पर लगे निशानो ही की ओर एकटक देख रहा था। उसके चुचके हुए गालो पर काली-सफेद खूटिया उगी हुई थी।

—आप इसके फादर हैं ?—निगम ने हरिहर से पूछा।—नही।—हमारे फादर की डैथ हो गई। यह हमारी मा है डाक्टर साहब !

डाक्टर आपरेशन के कागजो पर जानकी के हस्ताक्षर लेने से झिझक रहा था। लेकिन जानकी के परिवार में कोई दूसरा था ही नही।

आपरेशन थियेटर मे दो नर्सों ने दीपा को एनेस्थीसिया दिया। वह उसके पहले ही बेहोश थी। ढाई बजे आपरेशन शुरू हुआ, डाक्टर जब आपरेशन थियेटर से बाहर निकला तब भोर के साढ़े चार बज रहे थे।

नर्सें दीपा को स्ट्रेचर पर कंबल ओढा कर जनरल वार्ड की ओर ले जाने लगीं तो जानकी का बीदुर बन गया, वह आंचल में मुंह ढांप कर सिसकने लगी।

नाभि से लेकर रीढ़ की हड्डी तक काटने के बाईस टांके लगे थे।

जानकी ने स्कूल से छुट्टी ले ली, बिना तनख़ाह की। सुबह उसने एक कप चाय बाहर स्टाल से ख़रीद कर खड़े-खड़े पी। दस बजे दीपा को होश आया मगर क्लोरोफार्म का नशा उस पर अभी तारी था। ग्लूकोस की औंधी शीशी उसके सिरहाने टंगी थी और उसमे से निकली रबर की नली के आगे लगी सुई दीपा की बाह के अन्दर। सुषमा उस की वह कलाई थामे हुए उसके बिस्तर पर बैठी थी।

—दीदी, तुम भी यही आ जाओ। यहां बड़ा आराम है!—दीपा कमज़ोरी के कारण नकिया कर बडबड़ा रही थी—पन्ना चाचा बाबू को लेने गए है। मैं भी जाऊंगी!—कह कर वह रोने लगी।

दोपहर ग्यारह बजे हरिहर वहां से वापस हुआ। शाम को गर्मी-लू थमने पर बुचुन विमला को साइकिल के कैरियर पर बैठा कर अस्पताल आया। उसके पीछे-पीछे चन्दर। वे वहां बैठे तभी लक्ष्मण आया, टिफिन कैरियर मे जानकी के लिए खाना ले कर।

लक्ष्मण को देख कर बुचुन बिगड़ खड़ा हुआ। चढ़ी हुई आवाज में बोला—यह क्या बात है जी, कि जहा जानकी जाती है, पीछे-पीछे तुम पहुंच जाते हो।

लक्ष्मण ने उत्तर नही दिया। बेड के सिरहाने वाले ऊंचे टेबुल पर टिफिन कैरियर रखा और दीपा के सिर पर हाथ फेर कर उसी पैर लौट गया।

पांचवें दिन ख़ारिज की गई दीपा, अस्पताल से। घाव पुरने लगा था मगर टांके अभी खुले न थे। कच्चे घाव की आधी मेखला बंध गई उसकी कमर पर।

नीचे की दालान में उसके लिए मचिया बिछा दी गई क्योंकि सीढ़ियां चढ़ने की उसे मनाही थी। ज़रा-ज़रा सी बात पर वह रोने-रिरियाने लगती। कि सुई नही लगवाऊंगी, दवा नही पियूंगी, अम्मा मेरे पास बैठी रहे।

पन्द्रहवें दिन जानकी स्कूल ज्वायन करने के लिए बाहर निकल रही थी तो उसने देखा आवारा कुत्ता गलियारे में पाख़ाना कर गया था। उसे साफ़ करने का उसके पास वक्त न था।

घर के बाहर पैर रखते ही उस ने देखा कि मनको उसके घर की दीवार पर उपले-उपले पाथ रही है।

—मेरे घर की दीवार एक दम सड़ा कर रख दोगी।—वह मनको पर बिगड़ने लगी—घर को एक दम अहिराना बना दिया है। अगली बार मेरी दीवार पर पाथा तो मैं कुछ न सुनूंगी, सब नोच-नोच कर फेंक दूंगी।

—ऐसे गुरू हैं?—चन्दर हर रोज सुबह आता था, पूछने कि घर का कोई काम तो नही है?—उसने जानकी से पूछा।

—मुझ से मत पूछो ! —जानकी ने झुंझलाए स्वर में जवाब दिया—अंदर सम्हाल कर जाना, कुत्ता गलियारा बिगाड़ गया है। स्कूल से लौट कर मेरे लिए एक और नया काम बढ़ा गया !

चन्दर के दुर्भाग्य से लक्ष्मण रोज से थोड़ा पहले ही निकल गया था।

घर अकेला पाकर नारायणीबाई कमरे से बाहर निकल आगन के नल के नीचे दोनों पैर डाल कर उन्हें रगड़-रगड़ कर साफ कर रही थी।

—नारायणीबी, वह देखो सबेरे चार बजे उठ कर गलियारे में हग दिया है ?

—किसने हग दिया है ?

—लच्छू ने !

—अरे कुत्ते का गू है कि लच्छू ने हगा है !

—कुत्ते का नहीं है। कुत्ता इतना ज्यादा नहीं हगता।

—कुत्ता हग गया है तो लच्छू का नाम लगाते हो ?

—सबेरे चार बजे कुत्ता इतना ढेर भर नहीं हगता।

—इतना ढेर-सा नहीं है, जरा-सा तो है। ढेर सारा है तो जाओ, जा कर पूछो उस कुत्ते से ! और उस रोज तुम हमारी ड्योढ़ी पर पान क्यों थूक गए थे ?

—मैंने नहीं थूका। लच्छू ने कहा है कि हरामजादे को देख लूगा। क्या देख लेंगे ?

—तो न थूका होगा तुमने। तुम ने कह दिया कि नहीं थूका तो खत्म हो गई बात।

—लत्तूलाल ने खुद थूक दिया होगा। या तुमने थूक दिया होगा !

—लच्छू पान नहीं खाते। न मैं पान खाती हू। बस, तुम लच्छू के मुंह न लगना, आगे तुम जानो तुम्हारा काम जाने। तुम लच्छू को पीटोगे तो क्या लच्छू तुम्हें छोड़ देंगे। अरे, लच्छू बीस आदमी को मार कर गिरा सकते हैं !

—लहगे के भीतर घुसे तो रहते हैं, खूब गिरा सकते हैं ! —चन्दर ने व्यग्य किया।

उत्तेजित हो नारायणीबाई खड़ी हो गई। ललकारती हुई बोली—अहाहा-हा ! यह तुम्हारी सारी जवानी ! एक दिन भिड़ कर तो देखो !

—पाच मिनट के भीतर जमीन पर लेटा दिखाई देगा !

—तुम्हें पाच सौ रुपया इनाम दू मैं, अगर तुम लच्छू को लेटा दो ! —नारायणीबाई ने चीखते हुए चुनौती दी।

—भीख मांग-माग कर तो खाती हो, पांच सौ रुपया इनाम क्या चोरी कर के लाओगी ! यह बड़ा रामानन्दी टीका लगाती हो जो ! —चन्दर भाग कर

गलियारे में गया और कोने में खड़ी झाड़ू के सिरे पर कुत्ते का पाखाना उठा लाया—पहले कुत्ते की लेंड़ी का टीका तो लगा कर देखो !

दीपा बिस्तर पर पड़ी-पड़ी हंसने लगी।

नारायणीबाई भय और जुगुप्सा से विचलित हो कर पीछे हटी। चन्दर झाड़ू उसके चेहरे के बराबर उठाए हुए था। सींकों की नोकों पर कुत्ते के ढीले हरे मल की बूंदें चिपकी हुई थीं।

झाड़ू वह नारायणीबाई के चेहरे के निकट, और अधिक निकट लाया तो वह आतंकित होकर ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगी—हट जाओ ! हट जाओ !

नारायणीबाई खुद पीछे खिसकी तो लोहे की भरी हुई बाल्टी से टकरा कर गिरी, बाल्टी भन्न से खाली लुढ़कती हुई आगन में गिर गई।

नारायणीबाई की कुहनी छिल गई, घुटने की हड्डी पर चोट लगी। उसे दर्द हुआ होगा ज़रूर मगर बयासी वर्ष की वह बूढ़ी उन्मत्त की भाति चिल्लाती रही —हट ! हट !

—आज ज़रा ज़्यादा पागल हो गई हो न नारायणीबी ! अबसे गुर्राना नहीं। नहीं तो किसी दिन तुम्हें लात पड़ेगी दो-चार। समझी कि नहीं !

गंगा कमरे के अन्दर थी परन्तु भय के कारण उसे साहस न हुआ कि बाहर निकल कर नारायणीबाई की रक्षा करे।

त्रिमुहानी के भारतमाता मन्दिर की ड्योढ़ी पर लल्लन परचूनिया दोनों घुटनों को अपनी बाहों से कसे हुए उकड़ू बैठा हुआ था और आने जाने वाले परिचित-अपरिचित चेहरों को अपनी निगाह की डोर से बांध कर दूसरे छोर तक पहुंचा रहा था। वह हाइड्रोसील का पुराना मरीज़, कम्बख्त ऊपर से धोती इतनी चुस्त बाधता था कि देखने में यों लगता मानो वह एक छोटी-सी पोटली के ऊपर बैठने की कोशिश कर रहा हो ! सींक-सलाई लम्बा-सा वह, अंडों को सेती हुई मुर्गी सा दिखलाई देता।

उसकी औरत नाटी-मोटी, हमेशा खिल-खिल हंसती रहती थी। इस वजह से नहीं मगर लल्लन हर सप्ताह कोठे का दौरा ज़रूर करता। वहां से लौट कर अपना ताज़ा अनुभव हर सुनने वाले को चिल्ला-चिल्ला कर सुनाता। बहनोई बम्बई में एक कारखाने में स्टोर कीपर था। महीने-दो-महीने पर वह बम्बई का टिकट कटा दो-तीन सप्ताह वहां रह कर वापस आता तो स्थानीय वेश्याओं के किस्सों के स्थान पर फारस रोड, फाकलैंड रोड की नेपाली, गोआनी, कोकणी वेश्याओं के किस्से सुनाने लगता। दुकान उसकी जैसे-तैसे चलती थी। अधिकतर तो वह भारतमाता मन्दिर की ड्योढ़ी पर अपना असबाब रख कर उस पर बैठा रहता। वास्तव में, पहले उस छोटी सी तिकोनी जगह में न भारतमाता थीं और न उनका मन्दिर। वैह महापालिका गली का खाली टुकड़ा था। अपनी दूकान को

बगल में उतना-सा खाली ज़मीन का टुकड़ा देख कर उसने दीवार पर कुम्हारी मिट्टी से भारतमाता की मूर्ति का रेलीफ़ बना दिया तथा ड्योढ़ी पर स्वयं स्थापित हो गया। वह भारतमाता चूंकि दुर्गा, काली, चामुण्डा से ले कर सरस्वती, लक्ष्मी तथा अन्नपूर्णा तक किसी भी देवी से मिलती-जुलती लगती थी इसलिए आते-जाते स्त्री-पुरुष कभीकदा उसके आगे फूल तथा पैसे फेंक जाते थे।

सामने से चला आ रहा था चन्दर, हाथ दोनों ओर फेंकते हुए।

अनारी साइकिल वाला अपनी दुकान के पटरे एक-एक उठा कर अन्दर रख रहा था। दुकान खोलने के बाद वह एक एक साइकिल निकाल कर नीचे खड़ी करने लगा।

जानकी मनकों के ऊपर चिल्ला रही थी। दरवाज़े पर ही चन्दर से जानकी की भेंट हो गई।

ढाल पर के पीपल के पेड़ के नीचे लक्ष्मण साइकिल कमर मे टिकाए खड़ा हुआ था। बाज़ार पार कर जानकी उससे तीन-चार गज़ पर रही होगी कि लक्ष्मण साइकिल को पकड़ कर उसे धीरे-धीरे टहलाने लगा। वह बगल में चलने लगी तो लक्ष्मण साइकिल पर सवार हुआ और जानकी एक बार उचक कर उस की साइकिल पर दोनों चूतड रख कर बैठ गई।

लल्लन ने भर आंख देखा, अनारी ने कनखियों से देखा, अन्य लोगों ने भी दूर से देखा। लेकिन इसके बाद जो देखा गया, उसके बारे में राय एक नहीं है।

देखा कि जानकी उछलने के बाद जो लक्ष्मण के चौड़े कैरियर पर आई, लक्ष्मण की साइकिल की हैंडिल एक बार थरथराई तो ज़ोरों से डगमगाती ही गई। उसी समय एक मरियल-सा खौरहा कुत्ता सिर झुकाए हुए सड़क पार करने जा रहा था। अचानक अपने सामने डगमगाती हुई बड़ी वस्तुएं देख कर बेचारे कुत्ते का विचार भी डगमगा गया। पीछे कतरा कर निकल जाने के लिए सिर उधर मोड़ लिया। यही बेसिक फ़र्क़ है बिल्ली और कुत्ते मे। उस अवसर पर अगर वह बिल्ली हुआ होता तो पलट कर फुर्र से सुरक्षित हो गया होता। लेकिन वह ठहरा खाज लगा, एक भोला और मूर्ख कुत्ता, वह आगे पीछे सोचने लग गया! इसी बीच साइकिल समेत लक्ष्मण जानकी को लिए हुए उस कुत्ते के ऊपर भहरा कर गिरा। वह कुत्ता कितना भी निरीह निरा कुत्ता ही क्यों न रहा हो, मरियल तथा सूत की बेजान डोर-सी बिना रोयें वाली पतली दुम वाला, कुत्ते ने साइकिल के तिकोने फ्रेम के बीच मुलायम चीज़ अपने मुचमुचाते हुए दांतों के बीच पाई वह चीज़ लक्ष्मण की मुड़ी हुई दाहिनी कलाई थी! और उससे भी अधिक बदहवास जानकी के खुले हुए मुंह में दांतों के बीच जो चिकनी चीज़ पड़ गई थी वह उस बदज़ात व बदनसीब खौरहे कुत्ते की पिछली रान थी!

पेएं पेएं पेएं पेंएं पें—हरामज़ादी—थूह थूह—साली कुतिया चिल्लाते हुए

जब वे तीनो-चारों सुलझ कर अलग हुए तब कुत्ता अपने तीन पैरों पर भागा जा रहा था, जानकी अपने हैंडबैग को ध्यान से देखती हुई उस पर लग गई धूल को थप्पड़ मार रही थी और लक्ष्मण साइकिल के अगले पहिए को अपने दोनो घुटनों के बीच चाप कर एक आख बन्द कर हैंडिल के बीच मे नाप-तौल कर रहा था।

—अरे यार, तुम्हारा दिमाग तो सही है न ! कुत्ते ने जानकी को काटा कि जानकी ने कुत्ते को !

—सही कहता हूं प्यारे, तुम विश्वास मानो मेरा ! भगवान कसम !

नारायणीवाई को पीड़ित कर चन्दर जानकी के घर के बाहर निकला, महा-प्रसन्न !

निरोह से लल्लन परचूनिया को देख कर उसका आनंदित मन और अधिक उद्वेलित हो गया।

—क्या लल्लन गुरू ! अपना अंडा सेते बैठे हो न !—उसने लल्लन के सामने से गुज़रते हुए हंस कर व्यंग्य किया।

—अडा तो सेए रही है राजा, तुम्हारी जानकी मौसी ! यहां तो अडाकोश है प्यारे ! क्यो अनारी, ठीक कह रहा हूं न ?

—अनारी हवा भरा ट्यूब पानी के तसले में दबाते हुए बोला— गुरू, जब औरत की आंख का पानी ही मर जाए तब कहने से फायदा क्या !

जाते-जाते चन्दर पलट आया।

दोपहर की खाने की छुट्टी मे वह साइकिल से जानकी के स्कूल पहुंचा। सीढ़ियां चढ़ कर वह प्रिंसिपल मेन्ज़ीज के कमरे मे घुसा ही था कि सजीवनी बहिन जी दौड़ी-दौड़ी अन्दर आयी। उसके पीछे-पीछे मेन्ज़ीज।

—तुम चन्दर हो न ?—सजीवनी बहिन जी अब भी हाप रही थी। मिसेज मेन्ज़ीज उस की पीठ के पीछे से आगे आते हुए बोली—तुम जानकी ही के पास आया हो न ? वह तो एर्थ क्लास की लड़कियो का इक्सैम ले रही है।

स्कूल के आंगन मे, क्लासों के कमरो में, बाहर, लड़किया दौड़ता हुआ शोर मचा रही थी, जानकी के घर की दीवारो छतों और फर्श मे दफन गौरइयो की तरह !

एक बुढ़िया दाई को बंद मोटा रजिस्टर पकड़ा रही थी मिसेज मेन्ज़ीज। चन्दर कुर्सी से उठ कर चिक परे करता हुआ बाहर निकल आया।

सामने के मैदान मे लड़कियां फुटबाल खेल रही थी। मैदान के पार इकहरी नाटी इमारत थी। उधर से एक अकेली लड़की धीरे-धीरे चलती हुई वापस आ रही थी। पीछे नीम के पेड़ो की लम्बी कतार। पीछे ईंटो की ऊंची फसील।

उसने इधर-उधर नजर दौड़ायी।

बायें हाथ बरगद की एक पतली जड़ से लगी अधलुढ़की हुई साइकिल टिकी

थी। चौड़े कैरियर वाली।

उधर ही दूर पर सिर्फ सफेद धोती पहने हुए एक बूढ़ा पुरुष शिवाले की सीढ़ियां एक-एक कदम से नीचे उतर रहा था।

वह उसे एकटक घूरता रह गया! तिलस्म की तरह!

पांच बजे जानकी के स्कूल मे छुट्टी होती थी। पौने छह तक वह घर वापस आ जाती थी। रास्ते में सौदा-सुलुफ करना हुआ तो हद से हद साढ़े छह तक। चन्दर बुचुन के यहा पहुंचा और बुचुन को बताया जो उस ने मदिर के दालान में देखा था तो बुचुन अनुपस्थित जानकी पर ऊंची आवाज में देर तक बिगड़ता रहा फिर चन्दर को साथ ले वह जानकी के घर आया, जानकी को समझाने। जानकी लौटी न थी। बुचुन दीपा की खाट के पायताने बैठ गया। दीपा लेटी-लेटी इंद्रजाल कामिक्स के पन्ने पलट रही थी।

—डू नाट रीड मिस दीपा!—बुचुन दीपा का मनोजरंन करने के लिए अंग्रेज़ी मे बोला—इट विल गिव इस्ट्रेन अपान यू। ह्वाई आर नाट ओबेइंग ह्वाट आइ एम सेइग। इट इज वेरी बैड!

दीपा हंसने लगी।

तभी जानकी ने आ कर दीपा की चारपाई के पावे से टिका कर सामानों से भरा थैला खड़ा किया।

—दीपू बबुआ, कैसी तबीयत है तुम्हारी?—उसने दीपा के माथे पर हाथ फेरते हुए आवाज दी—सुषमा, जरा चूल्हे पर चाय के लिए पानी चढ़ा दो। चाय पियू तो तबीयत ठिकाने हो मेरी।

—तुम लच्छू से क्यों बातें करती हो जी!—बुचुन अचानक बोलने लगा—समाज में सब लोग देखते है, चारों तरफ चर्चा करते हैं!

—मैं लच्छू से बात तो नही करती! जिसने कहा हो उसे लाकर मेरे सामने प्रस्तुत कर दो।

—नही करती हो बात? अभी मैं तुम्हारी पोल सबके सामने खोल दू?—चन्दर उसे घूरने लगा।

—कहां बात करती हूं भई! मैं तो घर से स्कूल जाती हूं, स्कूल से घर। यहा तुम देख ही रहे हो, लच्छू आज हफ्तो से सारे दरवाजे वद किए अंदर पड़े रहते हैं।

—और स्कूल के बगल में शिवाले की दालान में खडा हो कर कौन बातें कर रहा था लच्छू से, आज दोपहर को खाने की छुट्टी मे?

मैं? मैं तो स्कूल से बाहर ही नही निकली। तुम जितनी टीचर्स से दाई से चाहो मैं पुछवा दूं।

झूठ बोलती हो तुम! मैंने अपनी आंखो से देखा। यही फालसही रंग की

साड़ी पहने शिवाले के खंभे से पीठ टिका कर बातें कर रही थी लच्छू से। धूल झोंकती हो सब की आंखों में! —चन्दर उठ कर जानकी के ऐन सामने खड़ा हो गया— और लल्लन ने, अनारी ने जो देखा आज सुबह।

—क्या देखा?

— कि ढाल वाले पीपल के नीचे लच्छू साइकिल लिए खड़ा था।

—हां।

—और उस की साइकिल के कैरियर पर लद कर तुम गयी हो।

—हां, लच्छू ने कहा, मैं बैठ गयी। तो यह मेरी कमजोरी!

—अनारी कह रहा था कि भैया, दुनिया में जो कभी नहीं देखा गया कि आदमी कुत्ते को काट खाए, वह तुम्हारी जानकी मौसी ने आज कर दिखाया!

—अनारी और लल्लन चले हैं उंगली उठाने मेरी ओर! अब से मैं किसी की परवाह न करूंगी, किसी की नहीं सुनूंगी।—जानकी ने चिल्लाते हुए कहा।

—तुम चिल्ला सकती हो हरामजादी, तो मैं तुम से ऊंचा चिल्ला सकता हूं! कुतिया!

—तुम कुत्ता! तुम हरामजादे!

कहा-सुनी की तेज़ आवाज सुनकर सुषमा नीचे उतर आयी और बारी-बारी से जानकी-चन्दर के चेहरे ताकने लगी।

—तुम कुतिया!—चन्दर ने जानकी की ओर घूसा चलाया घूसा जानकी के माथे पर लगा— तुम्हारे ऊपर तो दुनिया-जहान थूक रहा है, इस तरह!

चन्दर ने जानकी के मुंह पर थूक दिया।

जानकी का चेहरा एकदम सफेद हो गया। उसे धोती में पेशाब हो गया।

दीपा दोनों हथेलियों से मुंह ढांप कर ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी। बुचुन चिल्लाने लगा—यह तुमने बहुत बुरा किया चन्दर!

—क्या बुरा किया! यह औरत कमज़ोर-वमज़ोर बिलकुल नहीं है। सबको दिखाने के लिए जानबूझ कर कपड़े में पेशाब कर देती है कि देखो मैं कितनी दीन हूं। मौसी, अब तुम इन्सान तो रह ही नहीं गयी हो। लगातार मार खाते-खाते, मुंह पर थुकवाते-थुकवाते कुछ और ही हो गयी हो। तुम्हें पता ही नहीं है!

—अरे कौन सी इतनी बड़ी बात हो गयी अम्मा!—सुषमा ने व्यंग्य से हंसते हुए पूछा तो उसका मुस्कराता हुआ चेहरा देख कर जानकी डर गयी।

—अम्मा, तुम क्यों मेरी जान के पीछे पड़ी हो?

—नहीं बबुआ, अब से अगर मैं ने ऐसा किया तो उसी वक्त तुम मुझे छोड़ देना, उसी दम,! तुम्हारे-दीपा के अलावा मेरे तीसरा कौन है।

—फुसला-फुसला कर मुझे अपने पास बुलाती हो, मुझे पागल-अपाहिज कर

के सडक पर फेक देने के लिए ? तुम्हारी आत्मा को एक बार भी दु.ख नही हुआ कि मैं अपनी बेटी को धोखा दे रही हूं ? तुम्हारी आत्मा को एक बार भी पीड़ा नही हुई ? अगर तुम्हारे अन्दर आत्मा हो तो तुम दीपा के साथ ऐसा न करना। मेरी जान ही लेने के लिए तुम मुझे अपने पास रोके हुए हो न अम्मा ?

रोती हुई सुषमा दालान का खंभा दोनो हाथों से पकड़ कर उस पर अपना माथा पटकने लगी।

मुझे ऐसे ही रुला-रुला कर पागल कर दोगी। देखो, अब मैं कितनी बड़ी हो गयी हूं।—खभे पर तड़-तड़ माथा मारते हुए वह बोली—तुम्हारे आगन में बहुत रो-रो कर मैं इतनी बड़ी हुई हूं अम्मा। अब मैं यहा नही रहूंगी। नही तो तुम और लच्छू चाचा मिल कर मुझे जान से मार डालोगे। मुझे तुम दोनो का सारा प्लान मालूम हो गया है। इसलिए मैं ही अपनी जान दिए देती हूं तुम्हें !

सुषमा का माथा फट गया और ढेर-सा खून उस के सारे चेहरे पर फैल गया चन्दर ने दौड़ कर उसे पीछे खीचना चाहा मगर वह पाशविक बल से दोनों हाथो से पत्थर का खंभा पकड़े हुए उस पर सिर धुनती रही।

—हे भगवान, मेरी सुषमा पागल हो गयी ! मेरी सुषमा पागल हो गयी ! —जानकी बिलख-बिलख कर चीख उठी—अब मैं क्या करूगी !

—मार डालो अम्मा, दीदी को तो तुम्हें छुट्टी मिल जाए !—दीपा खाट पर से उठती हुई बोली और दीवार का सहारा लेकर सीढ़ी की ओर रेंगने लगी।

—मेरे बाबू आज अगर जिन्दा होते तो तुम दोनो मिल कर मुझे खाने थोड़े ही पाते !—सुषमा की जबान बुरी तरह से ऐंठने और लड़खड़ाने लगी—बाबू! अगर तुम जीते होते तो अम्मा का हाथ पकड लेते न! सुषमा की जान ऐसे थोड़े ही चली जाती, न ?

सुषमा के सारे चेहरे पर लाल-लाल खून फैल गया था। ऐसा लगता था जैसे होली का दिन हो और उसकी चुलबुली सहेली ने उस के चेहरे पर ढेर सारा गीला गुलाल चुपड दिया हो और वह हस रही हो!

—मेरी बेटी पागल हो गयी ! बेटी मेरी पागल हो गयी!—जानकी धरती पर लोटने लगी—कोई तो पानी लाकर उसे पीला दो !

हांपती हुई सुषमा बेहोश होकर खभे के बगल मे गिरी।

—जल्दी से पानी ले आओ जानकी !—बुचुन आतंकित स्वर में बोला—तुम्ही ले आओ चन्दर ! जब मर जाएगी तब ले आओगे ?

—अरे, ऐसी अभागी लड़की को तो मरने के बाद भी पानी न मिले तो अच्छा ! बुचुन ने सुषमा के बगल मे उकड़ू बैठ कर चुल्लू भर पानी से उसका मुह धोया तो माथे पर चार-पाच जगह कटाव दिखायी देने लगा। बुचुन की हथेलियां खून से सन गयी, दोनों कुहनियों तक धार बह आयी।

—कुछ तो दया-माया होनी चाहिए तुम्हें अपनी लड़की की ! —बुचुन बोला— किसी समय फट से इसके प्राण निकल जायेंगे तब क्या करोगी ?

जानकी फर्श पर लुढ़की हुई दोनों बाहों के बीच अपना चेहरा दबा कर हिचकियां ले-ले कर रो रही थी । बाहर का दरवाजा खुला हुआ था। चीख-पुकार सुन कर बाहर के चार-पांच व्यक्ति अन्दर घुस आए थे। परसाद घी वाला, घन्नू गुरू, अनारी साइकिल वाले का छोटा पागल भाई छेदी तथा तीन-चार बच्चे ।

जब कि जानकी फर्श पर गिरी हुई रो रही थी, वे सब उस के चारो ओर चुपचाप खड़े थे ।

ऊपर से उसका सिर बहुत छोटा-सा दिखलायी दे रहा था और छोटी बच्ची के जूड़े-सा उसका जूड़ा !

एक दिन जब जानकी मरेगी, उस वक्त उसके लिए रोने वाला कोई न रहेगा । यह कितनी कारुणिक बात है कि जीवित रहते हुए एक मनुष्य अपनी सारी जिन्दगी में दो बूंद आंसू भी न कमा सके जिसे दूसरा उसकी मृत्यु के समय ढुलकाये !

असहाय तथा विधवा होने की स्थिति में उसने जिस का सहारा लेना चाहा या वह उसे बचाने की बजाय उसे खाता गया । या वह खुद ही उस सहारे को खाती गयी !

थोड़ी-थोड़ी देर पर बाहर वाले तो एक-एक कर वहां से खिसक गए और अपने-अपने घर जाकर खा-पी चैन से सो रहे होंगे । सुषमा को होश आया तो उस ने ऊपर जा कर एक छोटे-से थैले में अपने दो जोड़े कपड़े डाले और उसे लटकाए हुए नीचे आयी । जानकी दीपा की खाली चारपाई के बगल में फर्श पर बैठी थी, जैसे कि गहरे नशे में ।

अम्मा, अब मैं तुम्हारी ड्योढ़ी पर कभी नहीं आऊंगी ।—उस के माथे पर सूखे हुए खून की चार पांच ताजा काली लकीरें थीं । पहले की चोटों के निशान गाल, माथे तथा कुहनियों पर ।

उसने झुक कर जानकी के दोनों पैर बारी-बारी से छुए वे उंगलियां अपने माथे से लगायीं ।

—मैं जा रही हूं ।

सुषमा ने कहा तो जानकी कुछ देर तक बिसूरती रही फिर उसने एक बार सिर को बगल में झुकाते हुए स्वीकृति दे दी । वास्तव में वह समझ ही न पायी होगी कि उस की कोखजायी बेटी ने उस से क्या कहा था और वह किस बात की अनुमति दे रही है !

आकाश की केवल सबसे ऊंची तथा गहरी जगह पर साफ निलाई बच रही थी, अन्यथा धुए तथा अंधेरे से चारों दिशाएं सिलेटी हो गयी थीं। दीपा सब से ऊपर वाली छत की मुडेर पर छाती के बल टिकी हुई देख रही थी। दूर-दूर तक छतों का फैलाव था और उनके बीच में गहरी गलियों के टुकड़े। सामने वाले मैदान में घोडे वाली मूर्ति के खंभे के नीचे तीन कुत्ते आपस में झगड़ते हुए न जाने किस चीज़ को चीथ-चीथ कर खा रहे थे। मैदान के बीचों बीच पांच-छह छोटे-छोटे लडके-लडकिया चिल्ला-चिल्ला कर खेल रहे थे मगर उनकी आवाजें ऊपर तक नहीं पहुंचती थीं। बच्चों के झुंड में से पांच साल की एक बच्ची अलग हो कर मूर्ति की ओर गयी लेकिन कुत्तों के निकट पहुंचते ही वह चीख कर उल्टी भागी।

—यहा लौट कर अब कभी न आना दीदी! —उसकी डबडबायी हुई आंखों से कई बूंद आसू नीचे ढुलक गए।

रात के अंधेरे मे सामने का पार्क स्पष्ट नहीं दिखलायी दे रहा था मगर ऊंचे खंभे के ऊपर एड़ लगाये घोड़े पर सवार तलवार लिए हुए वह औरत पीठ पर बंधे अपने बच्चे के साथ काले आसमान में उड़ती जा रही होगी।

गली में शोर हुआ और कई पुरुष मूर्ति के पास सिमट आए मूर्ति के खंभे के नीचे साल भर की एक बच्ची का शव दोपहर से कुत्ते खा रहे थे। लम्बे बाल तथा ककाल मे लगे मास के ज़रा से लोथड़े के सिवा उस शव का चेहरा तक साबुत न बचा था। किसी ने पुलिस को फोन से खबर की। पुलिस के दो कांस्टेबल और एक मोटा दरोगा आए, उस समय सामने के सभी घरों के बाहरी दरवाज़े बंद हो गए।

बाज़ार मे रोशनी और चहल-पहल के बीच पिस्तौलें चलीं फिर एक बम का धड़ाका हुआ तो राहगीरों मे वहशियाना भगदड़ मच गई। पल भर में सारे बाज़ार में सिर्फ जलती हुई तेज़ रोशनियां ही बच रहीं। पिस्तौल चलाने, बम फेंकने वाले तीन मोटर साइकिलों पर आए थे, भाग गए। एक राहगीर गोली से घायल हो कर सड़क किनारे पड़ा था। एक व्यक्ति बम लगने से वहीं कि वहीं चिथड़े-चिथड़े हो गया। बम से शायद उसी को मारने के लिए वे आए थे।

भीड़ फिर जुटी तो बहस होने लगी कि बम चलाने वाले किस ग्रुप के थे।

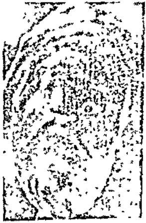
रात अधिक गए मुहल्ले, बस्ती, सारे शहर मे सोता पड़ गया। एक ट्रेन के नदी के लम्बे पुल पर आने के पहले उस की सीटी सुनायी देती थी। फिर धड़-धड़-धड़-धड़ वह ट्रेन पुल पर से देर तक गुज़रती रहती थी। कब्रगाह के बगल वाली पुलिया पर उस की संक्षिप्त घर्राहट। हर रात।

उस रात काफी ज़ोर का विस्फोट हुआ—धड़ाम! मीलों दूर पर, अंधेरे

में। जैसे कि दूर रेलवे-यार्ड में माल का एक खाली डिब्बा मालगाड़ी से जा टकराया हो!

सोया हुआ शहर एक सपना देख रहा था। दूर के बंगाली मुहल्ले में हो रहा रवीन्द्र संगीत का कार्यक्रम लाउडस्पीकर से प्रसारित हो रहा था और उस की कड़ियां यहां तक उनींदी-सी मद्धिम आ रही थी—आनन्द लब्धे मोन्गला लुब्धे श्रीराज शत्त सुंदर! मोहिमा तव उद्‌भाषित महागगन माझे......

...जन्मभूमिश्च



संकरी-सी गली जहां पर दायें मुड़ती थी, पत्थर के चौकों पर तेज बारिश की बूंदें पटा-पट गिरती और क्षणिक बुलबुले बनाती हुई दिखाई दे रही थी। उस के चार-पांच डग आगे ही वह गली बायें घूम जाती थी। उतनी सी जगह में सीताराम के घर का लाल चबूतरा था। सीताराम छतरी खोलकर चबूतरे पर उकड़ू बैठा हुआ था और बरसात की मिली-जुली आवाजें सुन-देख रहा था। वर्षा ने पिछले तीन दिन और चार रातों से एक मिनट को भी थमने का नाम तक न लिया था। पिछले दो दिनों से रेनीडे की छुट्टी थी, आज केवल सुबह कालेज जाना था क्योंकि कालेज में दो कमरों के वाणिज्य संकाय के पूर्वनिर्धारित उद्घाटन समारोह में पशुपालन तथा सहकारिता उपमंत्री आने को थे। हाल में जमा छात्रों के सामने सफेद पेंट-हाफ बुशर्ट में डायस के टेबुल पर अधबैठकर दिये गए उपमंत्री जी के भाषण के टुकड़े सीताराम के कानों में गूंज रहे थे— शिक्षण धर्मकार्य की भांति पुनीत कार्य है अतः अध्यापकों को इसे नि.स्वार्थ भाव से करना चाहिये। छुट्टियों में अध्यापकों को अपने छात्रों के साथ दल बना कर गावों में जाना चाहिये, जैसे कि चीन में नंगे पैर डाक्टरों के दल जाया करते थे तथा गावों में जाकर प्रौढ़ों को साक्षर बनाना चाहिये। सरकार ने गांव-गांव में नये-नये स्कूल खोल दिये हैं। भारत के विकास के लिये मनुष्य का चरित्र निर्माण प्रथम सीढ़ी है और उस पर पहला चरण है कि समाज से शराबखोरी, जुआखोरी, घूसखोरी जैसे दुर्गुणों को दूर किया जाए। इसके लिए अध्यापक तथा नवयुवक छात्र ही मिल कर कार्य कर सकते हैं। अन्त में मुझे आशा है कि

आज की नयी पीढ़ी जगदम्बा प्रसाद जी जैसे त्यागी महानुभावों के त्याग से प्रेरणा लेगी और उनके साचे में अपने को ढालने का प्रयास करेगी तथा निःस्वार्थ सेवा करते हुए भारतमाता के कदमों मे अपने को न्योछावर कर देगी।

जगदम्बा प्रसाद माथुर एक व्यापारी था। वाणिज्य संकाय के निर्माण के लिए उसने बीस हज़ार रुपये दान किया था।

अध्यापक तथा लड़के भी आये दिन होने वाले ऐसे भाषणों के इतने आदी हो चुके थे कि भाषण सुनते हुए या उसके बाद उन्हें अचभा तक न होता कि भाषण मे कहा क्या गया था।

मुकुन्द विहारी वर्मा समाजशास्त्र पढ़ाता था और हर समारोह मे खड़ा हो कर अतिथि से प्रश्न अवश्य करता था। भाषण के अन्त मे भी वह खड़ा हुआ —मंत्रीजी, ये जो सेनिमा के सैक्सी पोस्टर हैं और शहर के बीच में हमारी जो अभागी वहनें रहती हैं इन से हमारे कोमल मन किशोरो पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। कृपा कर यह बतायें कि सरकार शीघ्र ही इन दोनों के सम्बन्ध मे क्या कदम उठाने जा रही है।

सुनते हैं कि वर्मा सिविक्स के क्लास में भी अक्सर पूरा कि पूरा घंटा लड़कों को दोनो चीजों की बुराइयों के बारे मे ही लेक्चर देता रह जाता। डायस पर शंभू ओझा भी एक कुर्सी पर बैठा हुआ था। वह जोर से हंस पड़ा। पशु-पालन मंत्रीजी ने शालीनता से मुस्कराते हुए उत्तर दिया—सिनेमा के अश्लील पोस्टरों के प्रदर्शन पर कानून या अध्यादेश द्वारा शीघ्र ही रोक लगा दी जाएगी और वेश्याओं के लिए तो सरकार ने पहले ही से वनिता विकास गृह खोल रखे हैं। लेकिन ये काम केवल सरकार—

गेट तक अध्यापक छाते को हाथ जोड़ने की मुद्रा में पकड़े हुए मंत्रीजी को विदा करने आये। शभू ओझा मंत्रीजी की मोटर पर सवार हो कर चला गया।

बतरा ने कहा—यार, मैनेजर को पशुपालन वाइस मिनिस्टर के अलावा दूसरा कोई मिनिस्टर नही मिला !

—मैं दूसरी बात कह रहा हूं ! —संस्कृत टीचर रामजियावन पाडे ने खुलकर हंसते हुए कहा—भैया, इस वनिता विकास गृह मे कौन-सी समास लगती है ! मतलब ही नही समझ मे आता इसका !

तभी सड़क के दूसरी ओर खड़े खोंचे वाले ने हमेशा की तरह बुलंद आवाज़ में हाक लगायी—बरफ खाओ ! ठंडे हो जाओ !

सीताराम को हसी न आयी। उसका दिमाग उड़ा-उड़ा सा था। तब भी, अब भी।

शंभू ओझा की दोछती बारिश में तड़-तड़ बज रही थी। बुल्लो के पुराने मकान के सामने से आने वाले भरे नाले की पहाड़ी नदी-सी घर घर ! सामने

महेश पाधा की चार ढालदार सीढ़ियों पर बिछल कर तेज़ी से नीचे बहता बरसाती पानी। शिवाले के ऊपर वाले छतनारे पीपल पर पटर-पटर। तभी मोड़ के दूसरी ओर छप-छप करते धीरे-धीरे पास आते कदमों की आहट सुनायी दी। आने वाला गली के मोड़ वाली दीवार के पीछे से हमेशा एक अचभे की तरह प्रकट होता था।

श्यामसुदर वैदजी था। काली छतरी के नीचे सफेद टोपी लगाए, गले मे सफेद लम्बा दुपट्टा, सफेद कुर्ता, सफेद धोती।

सीताराम तथा वैदजी की आंखें चार हुईं। सलाम-बंदगी किसी को करने की सीताराम की आदत नही। तो उससे भी कोई दुआ-सलाम नहीं करता। एक-दूसरे को देख कर परिचित होने भर का भाव आखो में झलका। सीताराम सोचने लगा वैदजी के लड़कों के बारे में। वैदजी भी जरूर ही सीताराम की जिन्दगी को एक-एक नग विचारते हुए मंथरगति से आगे बढ़ गया होगा।

वैदजी ने अपनी ओर से कुछ भी न उठा रखा था कि उसके दोनो पुत्र, न सही दूसरों के, खुद अपने ही मसरफ के हो जाएं। और नहीं तो औषधालय में दवा घोंटना-बनाना ही सीख लें लेकिन बड़े वाले को पड़े-पड़े पैर हिलाते हुए अपने ज्योतिष ज्ञान का घमंड बघारने से फुर्सत नहीं और दूसरा साहित्यकार-कवी बनने के पीछे दीवाना है!

दीवार के कोने से एक काला सिर गाय का, फिर पूरी गाय भीगती हुई चुपचाप प्रकट हुई।

खुद सीताराम ने अपने कृपालू को राह पर लाने के लिये क्या-क्या नहीं किया। लेकिन उसे तो बचपन ही से बुरी संगत जो मिल गयी। सख्ती बरतने मे सीताराम ने कोई कमी न की। बारह-तेरह बरस का रहा होगा कृपाल, एक दुकान पर उसने चोरी की तो सीताराम ने उसके हाथ-पैर बाध कर लकड़ी की कोठरी मे बद कर दिया था और तीन दिनों तक खाना-पानी सब बंद! नवें क्लास मे पढ़ता था, सीताराम ही के कालेज में। नकल करते हुए पकड़ा एक मास्टर ने। सीताराम ने घर आ कर कृपालू को खभे से बाध कर लोहे की छड़ से मारते-मारते अधमरा कर दिया फिर दोनों हाथों से ऊपर उठा कर दरवाजे के बाहर गली में उछाल दिया। माथा फूट कर सारा चेहरा लहूलुहान हो गया, दाहिने पैर की हड्डी टूट गयी। लेकिन कृपालू की बुरी लतें नही सुधरनी थी तो कभी नही सुधरी। स्कूल जाना बद करा दिया था। सिगरेट, शराब, जुआ रंडीबाजी कोई भी कुकर्म ऐसा नही जो कृपालू से छूट गया हो, सोलह-अठारह की किशोरावस्था ही में! सीताराम ने शंभू ओझा से कह कर एक सनीमाहाल मे गेटकीपर रखवाया। महीने के भीतर-भीतर कृपालू ने वहा टिकटों की ब्लैक करना शुरू कर दिया। पहले से वहा यही धंधा करने वालों से उसका झगड़ा

हुआ तो चाकू ही निकाल कर मार दिया एक को ! उस गुंडे और उसके साथियों ने कृपालु को सेनिमाहाल के पीछे वाली गली में घसीट कर उसका पेठे का मुरब्बा बना डाला और उसे मरा समझ कर नाली में फेंक गये। कृपालु खुद उठ कर घर आया और पासियों के यहां से सुअर की चर्बी ला कर अपने घावों की मालिश खुद की। गेटकीपरी से तो छुट्टी हो ही गयी। जब मन होता लाटसाहब की तरह अकड़ता हुआ घर आता है और रसोईघर में घुस कर 'खाना लाओ' ! नहीं तो महीनों पता-ठिकाना नहीं ! कभी किसी से सुना कि कृपालू को उसने कानपुर के पास चलती हुई ट्रेन मे दूसरे डिब्बे से आ कर गरमागरम मूगफली की पुकार लगाते स्वयं देखा-सुना था। चेहरा जरा पतला हो गया था उसका।

कृपालू को राह पर लाने का जो अन्तिम उपाय सुझाई दिया सीताराम को वह उसने कर दिया। गरीब घर की लड़की थी सुलभा, इंटर पास। दहेज के नाम पर कृपालू के लिए सफेद नकली पोखराज की सोने की अगूठी, लड़की के लिए मामूली कपड़े लत्ते। कृपालू के विवाह में बुल्लो निमंत्रित हो कर आया था। उस के आने का समाचार पाकर उसके दो पुराने शागिर्द भी उसका पैर छूने आये थे। एक अब वायलिन बजाता था। दूसरा तबलची। सांवले चेहरे वाले अच्छे-खासे कद के वायलिनिस्ट बंगाली बाबू ने कृपालू के विवाह में वायलिन का अपना कार्यक्रम पेश किया था। वायलिन हाथ मे उठाने के पहले वह बाहर गया और एक कुल्हड़ ताड़ी चढ़ा कर, दूसरा कुल्हड़ पंजे के नीचे छिपा कर लाया। कार्यक्रम के बीच मे सम को लेकर उसकी तबलची गुरु-भाई से नोकझोंक हो गयी—मैं कहता हू कि ताल में अगर गडबड़ी हो जाए तो अपना हाथ मैं खुद कलम करने को तैयार हूं ! —बुल्लो ने दोनों को शांत किया। बंगाली बाबू उठकर घर के बाहर अंधेरे मे खड़ा हो पेड़ में हजारे से पानी देने की तरह दीवार पर देर तक पेशाब करता रहा !

—सीताराम ! मुझे नाली पर बैठा दो ! —ऊपर से मउसी की आर्त पुकार फिर सुनाई दी—अरे चंपा ! बड़ी जोर से पेशाब लगी है मुझे मोरी पर बैठा दो !

सीताराम की माता मउसी दोनो आंखों की अंधी। चौरासी वर्ष की होने पर भी वह आखों को छोड पूरे शरीर से टनमन थी।

शाम के लिए सब्जी लाना है।—अन्दर से चंपा ने टाट का थैला फेंका तो थैला गीले चबूतरे पर फिसलता हुआ सीताराम के बगल मे आ कर रुका—और चावल, अरहर की दाल भी चुक गये हैं।

—चावल कैसे खतम हो गया। अभी पिछले महीने ही तो बारह किलो लाया था।

—अब कैसे खतम हो गया, यह क्या बताऊं !

—यह मउसी क्यों चिल्ला रही है ?

—वह बेवजह चिल्लाती रहती है।—चंपा का जवाब दूरतर होता गया—अभी पांच मिनट भी नही हुए सुलभारानी ने उन्हें पेशाब कराया है !

जहा तक बन पड़ता, सीताराम घर के भीतर नही जाता। दिन-के-दिन घर के बाहर वाले चबूतरे पर उकड़ू बैठा रहता। साफ-धुले कपडे पहने, जैसे कि कही चल पड़ने को तैयार। गर्मी-बरसात के मौसमों मे छतरी लगाये। किसी से मिलना-जुलना नहीं, किसी के घर आना-जाना नही। बस, घर से पैदल कालेज, कालेज से पैदल घर। पान-तम्बाकू-सिगरेट की कोई लत, शौक-मौज की कोई आदत नही। व्यसन था तो पेड-पौधो का और पशु-पक्षी पालने का। लाल-पीली पत्तियों वाले क्रोटनों के गमलो की दोहरी कतार उसने सामने के छज्जे पर लगा रखी थी। कालेज से लौट कर हर शाम वह पतले छज्जे की दीवार से छिपकली की तरह चिपक कर रेंगता हुआ उन तमाम गमलो में फौवारे से पानी छिड़कता। सीताराम पर एक नस्ल के जानवर पालने का दौरा आता था! बिल्लियां पालता तो दसियो नस्लों की बिल्लिया घर भर मे टहलती-दौडती नजर आती। फिर खरगोश खरीदता तो दसियों खरगोश-ही-खरगोश। लाल की बारी आती तो कमरो-दालानों-चौखटो पर चहचहाते लाल के छोटे-बड़े पींजरे ही लटक्ते नजर आते। उसकी एक रिश्तेदार थी कपिला। कपिला को बहस करने का मर्ज़ था। गीतारहस्य से लेकर मिट्टी के तेल तक और भारत सरकार की विदेशनीति से लेकर शाकाहारी भोजन के गुण तक वह एक ही समय में पक्ष-विपक्ष के मत पेश कर सकती थी। सीताराम ने एक बार कहा कि कपिला को पुरानी पेचिश की शिकायत है, मुंह में ! तो कपिला ने सीताराम को यह कह कर लाजवाब कर दिया कि सीताराम क्या बोलते है, एक औलाद तो पैदा नही कर पाये, एक लड़का न सही तो एक लड़की ही सही !

बाज़ार करने के लिए निकलने से पहले खाली थैला लटकाए वह सीढ़ियां चढ़ कर ऊपर पहुंचा तो मउसी छत पर उस बारिश मे एक छोटे-से दायरे पर शराबी की तरह लड़खड़ाती हुई चक्कर लगा रही थी। वहां चौखट के बगल में, छपरैल की छाजन के नीचे कपड़े की छोटी-सी पोटली पड़ी दिखाई दी। वह सुबह से वही पड़ी रही होगी, जब चंपा ने चाय बना कर कपडे से छानी होगी।

—कब मरोगी तुम !—सीताराम ने झुंझला कर कपड़े की पोटली उठा कर नीचे आगन की ओर उछालने के बाद मउसी से पूछा।

—सीताराम ?—मउसी ने आश्वस्त स्वर में दरियाफ्त किया—मुझे नाली तक पहुचा दो बेटा ! बड़े जोर से पेशाब लगी है। कितनी देर से कह रही हूं मैं, कोई सुनता ही नही !

—अभी पांच मिनट पहले पेशाब किया था कि नहीं !—नाराज होने पर

सीताराम चबा-चबा कर बोलता और उसकी आवाज़ जनानी हो जाती।

—फिर लग आयी ! ठंडी हवा चली तो फिर लग आयी, मैं क्या करूं। ठंडी हवा चली तो फिर लग आयी।

सीताराम ने मउसी के सिर के पीछे बधे सफेद बालों की छोटी-सी गाठ पकड़ कर हिलायी फिर उसे पकड़े-पकड़े मउसी को दूसरी ओर घुमा कर छोड़ दिया। मउसी नाली की ओर दो डग बढ़ी तो उसका माथा सामने की दीवार से टकराया।

—क्या करते हो सीताराम बेटा ! —उसने मुह ऊपर उठा कर सफेद फटी हुई आंखो से खला में घूरते हुए प्रतिवाद किया तो सीताराम ने उसे बाह से पकड़ कर झिझोडते हुए नाली के मुह के आगे दबा कर बैठा दिया।

अपनी माता से घृणा नही करता था वह। वह केवल चिढ़ा हुआ था। वह अपने आप से चिढ़ा हुआ था। वह चिढा हुआ था अरहर की दाल जल्दी-जल्दी चुक जाने से। वह चिढा हुआ था आज कालेज मे रेनीडे होने की वजह से। वह चिढ़ा हुआ था आज का सारा दिन घर से दूर न हो पाने की वजह से। उस के सदा चिढ़े रहने के एक सौ एक कारण थे।

—कालिंदी की दुल्हन बिट्टो बीबी मर गयी ! सात बजे स्यापा है ! नाइन ने दरवाज़े की चौखट पर खड़ी हो कहाउत चिल्ला कर कही।

—अरे कैसे मर गयी ! —चपा ने पूछा।

—मौत आयी, मर गयी। हैजा हो गया था ! —जल्दी-जल्दी कह कर नाइन पलट गई।

मउसी ने सुना तो रोने लगी—अरे बिट्टो बीबी, तुम मुझे भी अपने साथ क्यों नही ले गयी !

सीताराम ने जल्दी-जल्दी बाज़ार किया। दाल अच्छी थी तो उसने इकट्ठा दस किलो ले ली। बासमती चावल भी आया था। दस किलो। चंदौसी के घी के लिए उसने पहले से कह रखा था। एक कनस्तर घी। सारा सामान मज़दूर के सिर पर उठवाकर वह घर लौटा तो चप्पल के छीटों से उसके पाजामे-कुर्ते के पीछे का सारा हिस्सा काला हो गया था। उसी पैर वह कालिंदी के यहां चला गया।

वहां देखा कि कालिंदी अस्पताल से लाश लिए बगैर चला आया था, पैसा और आदमियो का साथ लेने के लिए। कालिंदी ने बताया कि मुर्दाघर का जमादार लाश नही दे रहा है।

सीताराम ने बरसते पानी में घूम-घूम कर छह-सात व्यक्ति जमा किये। तड़ीवालेतिवाड़ी, लल्लन परचूनिया तथा अनारी का सत्रह-अठारह साल का बेटा। कचौड़ी वाले के बाकायदा कोढ़ फूट गया था, उसकी दुकान पर कोई

ग्राहक न जाता था, सो उसका बेटा रामेश्वर भी एक जगह चबूतरे पर किसी के साथ गप लड़ाता खाली मिल गया। वे लोग तीन रिक्शों पर लद कर हैजा अस्पताल पहुंचे। मुर्दाघर अस्पताल के पीछे था। उसके बरामदे के एक सिरे पर टेबुल-कुर्सी लगाये, टेबुल पर दोनों पैर चढाये मुच्छड जमादार अधलेटा बैठा था। उसकी मोटी गांठदार चुटिया सिर के पीछे झूल रही थी।

—लाश निकालो इन की !—सीताराम ने डाटते हुए कहा।

—मैंने पहले ही बता दिया बाबू साहब, कि मैं लाश छूऊंगा भी नही। मेहतर निकालेगा।

—तो कहा है तुम्हारा मेहतर !—रामेश्वर ने पूछा।

—आसपास कही चला गया होगा !—जमादार ने पानी से भरे मैदान पर इधर-उधर नज़र दौडाई।

सीताराम ने कालिदी के कान मे धीरे से कहा—दे दीजिए दो-चार रुपया इसे।

लेकिन जमादार को सुनाई दे गया—मुझे भगी-चमार समझ रखा है क्या, जो दो-चार रुपया पकड़ा रहे हैं। हम ठाकुर हैं, ठाकुर !—एक हाथ का पंजा उठाते हुए वह बोला—पैंतीस रुपया होता है। आपलोग पढ़े-लिखे साहब लोग हैं। अब आप को भी समझाना पड़े तो आप में और देहातियों मे फर्क क्या रहा !

कई जेबों से चदा करके पैंतीस रुपया इकट्ठा हुआ।

मेहतर आया तो जमादार ठाकुर ने कहा—पाच रुपया इसको भी दे दीजिए गरीब आदमी है। फट से वह अदर से लाश निकाल कर ले आयेगा।

उसने लाश का नंबर रजिस्टर से देख कर बताया। मेहतर वास्तव मे तीन मिनट गुज़रने से पहले ही अदर से ट्राली समेत बिट्टो की मिट्टी ठेलते हुए प्रकट हो गया।

तय हुआ कि अब घर ले जाकर क्या करेंगे। भला, मरा मुंह देखने वाला बैठा ही कौन होगा वहा। इधर ही से श्मशान लेते चलें। लाश को बौछार से दूर दीवार के निकट लिटा कर बुचुन और कालिदी वही रुक गए, लल्लन परचूनिया, सीताराम, रामेश्वर तथा अनारी का बेटा अंत्येष्टि का सामान खरीद कर लाने निकल गए।

कालिदी शव को संबोधित कर रोने लगा—सौ बार समझाया था कि खाने के पीछे क्यो मरी जा रही हो ! आखिर सड़ी लीची खाने के पीछे अपनी जान दे ही दी !

कालिदी को अपनी पत्नी के मरण का उतना दुःख नहीं हुआ होगा, जितना कि इस वृद्धावस्था में अपने निपट अकेले और असहाय छूट जाने का !

रसिकटो कफन के अलावा लल्लन .... लंबी शीट भी ले आया।

—मैने कहा कि रास्ते मे चाची भीगे क्यो !—वह हसते हुए बोला।

—अरे, तुम तजुर्बेकार आदमी हो उस्ताद लल्लन !—बुचुन ने नकियाते हुए तारीफ की उसकी।

चिता को अग्नि देते समय कालिदी फफक-फफक कर रोने लगा। तो लल्लन सीताराम ने उसे कधे से पकड़ कर उसके बुरी तरह से कापते हुए हाथ की आग फूस से छुआ दी।

बरसात का मौसम, लकडिया तो तर-ब-तर थी ही, लाश आधी जल गई तो बिहो की पोटेशियम परमैंगनेट का जो बोतलों पानी चढ़ाया गया था, वह सब रगीन पानी शव के अंदर मोटी-पतली नालियो की तरह निकल कर चिता मे गिरने लगा। राल की मुट्ठिया झोंकते-झोकते बड़ी मुश्किल से पूरी लाश जल पाई।

कालिदी के यहां स्यापे मे जाते हुए चपा जानकी के घर गई, उसका साथ पकड़ने के लिए। उम्र में वह जानकी से बीस-पच्चीस वर्ष बडी थी मगर जानकी स्कूल जाते हुए या वापस लौटते हुए अक्सर उस के यहा चली आती थी। यदा-कदा चपा उसे खाने-पीने का सामान भी गुपचुप दे दिया करती थी।

जानकी साड़ी बदलने के लिए उठी तो चपा ने धीरे से आवाज दे कर उसे रोक लिया। अपने आचल के नीचे से कागज की दो बडी-छोटी थैलिया निकालते हुए वह बोली—एक में आधा किलो अरहर की दाल है, दूसरे में किलो भर बासमती चावल। बहुत बढ़िया चावल है !

दाम सुन कर जानकी चावल लेने मे आनाकनी करने लगी तो चंपा ने आजिजी से कहा—रख लो तुम ! अब इसे लौटा कर मैं घर कैसे ले जाऊगी।

—इतना मंहगा चावल खाने की मेरी औकात कहा है मौसी ! अच्छा, तुम छोड दो, मैं मिसेज़ मेन्सेस को दे दूगी ! वह पुलाव-सुलाव अक्सर बनाती रहती हैं। जब वह दाम देंगी तो—

—कोई जल्दी नही है। मेरे हिसाब में जोड़ देना।—चंपा ने उतावली से उसकी बात काटी।

चपा अपने परिवार वालो की नजर बचा कर कभी दाल-चावल तो कभी आटा-घी-मसाला पड़ोस की स्त्रियों के यहा पहुचा कर उनकी नगदी खड़ी कर लेती। पैसा वह अपने पास कभी न रखती क्योकि घर मे पैसा रहता तो कृपालू ऐसा था कि घर मे भी चोरी करने से बाज न आता। बचपन से चोरी करने की आदत पड गई थी उस की। यहा तक कि पिछले माह सीताराम का चचेरा भाई-भयाहू घर मे आ कर ठहरे तो सीताराम ने कृपालू को सबके सामने बुला कर हंसते हुए समझाया था कि देखो यह लोग निकट-संबंधी हैं, इनके रुपये, पैसे,

सामान पर हाथ साफ न करना। मगर कृपालू आदत से लाचार, चाचा के कोट के अंदरूनी जेब से पांच रुपये का एक नोट साफ हो ही गया ! चंपा ने अपना गुप्त-धन, साढ़े सात-आठ सौ रुपये, जानकी के साथ ज्वाइंट बंक अकाउंट मे डाल रखे थे। मजे की बात कि यह तो पड़ोस की प्राय. सभी स्त्रियों को पता था कि चंपा अपने ही घर का जिन्स चोरी-चोरी बाहर बेचती है मगर इस बात की गंध पुरुषों को न लग पाती थी। कारण, वे औरतें भी तो चंपा से सस्ते में सामान ले कर और अपने पतियों से बाजार भाव पर दाम वसूल कर थोड़ी-थोड़ी रकमें बचा लेती थी !

स्यापे में कई औरतों ने जानकी से लक्ष्मण समस्या के विषय मे जानना चाहा।

—मेरे तो कुछ समझ में नही आता ! दिन-दिन भर धूप मे पागलो की तरह, विक्षिप्तों की तरह दौड़ते रहे हैं लच्छू ! —जानकी ने बताया—वह स्वयं परेशान रहते है। मुंह से खून तक गिरने लगा है। वह भी आखिर क्या करें।

—जो दूसरे को कष्ट देगा वह स्वयं कष्ट पाएगा।—विमला ने कहा—भगवान के यहां हर चीज का दण्ड लिखा हुआ है।

—बुल्लो इन लोगों को पकड़ कर ले क्यो नही जाते ! आखिर ब्याह किस लिए किया था मन्नो से और किस लिए औलाद पैदा कर के रख दी थी ! स्वय को बुढ़ाई में सहारा भी हो और सबको रोज-रोज की चिकचिक से छुट्टी मिले।

अरे मामी, बुल्लो जीजा के तो गले मे कैंसर हो गया है, ऐसे मे उन्हे क्या कहना !

सुषमा को घर से भागे कई महीने हो गए थे। किसी ने जानकी से पूछा कि सुषमा का कुछ पता चला ? लेकिन विमला ने बड़ी होशियारी से बात का प्रसंग बदल दिया।

कालिंदी के यहां हुई गमी के पांचवें रोज, रात ढाई बजे, सीताराम के घर की कुंडी पिटी—मास्टर साहब! मास्टर साहब ! सीताराम जी !

सीताराम बड़ी गहरी नींद सोने वाला था। एक बार सो जाए तो फिर सिर पर से बारात भी झइयम-झइयम बैंड-बाजा बजाती निकल जाए, उसकी नींद नही खुलने की !

मउसी जाग रही थी। वह सीताराम-सुलभारानी-चंपा-कृपालू, सब के नाम पुकार-पुकार कर चिल्लाने लगी—देखो तो, कोई आया है, दरवाजा पीट रहा है !

चंपा ने नीचे उतर कर दरवाजे की कुंडी खोलने के पहले पूछा कि कौन है तो कृपालू की आवाज ने कहा हम हैं।

किवाड़ खोलते ही चंपा अवाक रह गई। कृपालू के सिर पर सफेद पट्टी बंधी हुई थी, नीली कमीज़ कंधे पर खून से लाल-काली हो गई थी। रिक्शे पर काठ का बड़ा-सा खोखा रखा हुआ था, नीचे रिक्शे वाले के अलावा एक अपरिचित व्यक्ति खड़ा था।—अरे, यह क्या हुआ कृपालू तुम्हे !

—हट जाओ मेरी आंख के सामने से !—कृपालू ने आग्नेय दृष्टि से चंपा को देखते हुए कहा फिर रिक्शेवाले से बोला—सामान अंदर कर दे !

रिक्शेवाला तथा वह अजनबी उठाकर बक्सा अंदर कर रहे थे कि सीताराम उतर कर नीचे आया और देखते हुए समझने की कोशिश करने लगा।

—आपने बड़ी मेहरबानी की भाई साहब, बहुत-बहुत शुक्रिया!—कृपालू ने उस अपरिचित व्यक्ति से कहा।

सीताराम के पूछने पर वह व्यक्ति नम्रता से बोला—हम सेवा दल के कार्यकर्त्ता हैं। भाई साहब का यह रेडियो छिनने के लिए ट्रेन पर इनको उचक्का लोग छूरा मार दिए। स्टेशन पर उतर कर यह हमारा आफिस आए कि जरा घर तक पहुंचा दीजिए। वही हम इनको पहुंचाने को आए हैं।

—रेडियो खरीदा क्या ?—सीताराम ने कृपालू से पूछा।

—हाँ।

सीताराम पलट कर ऊपर चला गया सोने।

आए दिन एक-न-एक आफत उसके सिर पर खड़ी रहती थी।

कृपालू ने एक नौकरी छोड़ी। सीताराम ने दौड़-धूप कर दूसरी नौकरी मे उसे फिट कराया। वह भी कृपालू ने छोड़ दी, कि वहाँ दाम कम काम ज्यादा है। सीताराम ने उसे पी डब्लू डी मे सब-इंसपेक्टर रखवाया, डिवीज़नल इजीनियर सक्सेना से बहुत मिन्नत-चिरौरी कर के। सक्सेना पंद्रह-बीस वर्ष पहले कालेज में सीताराम से केमिस्ट्री पढ़ चुका था। पीडब्लूडी मे खाते तो सब थे, ऊपर से ले कर नीचे तक मगर वे छोटे-छोटे निवाले लेते थे, अनेक बार। कृपालू ने तो नौकरी मे लगते ही अपने ऊपर के तमाम बड़े-बड़े अफसरों तक को मात कर दिया ! साढ़े चार सौ रुपया माहवारी वेतन पाने वाला वह हजार-पंद्रह सौ से कम की रिश्वत पर टेढ़ी नजर तक न डालता ! एक बार सक्सेना ने सीताराम को बुलाकर एकान्त मे कहा भी—मास्टर साहब, कृपालू को समझा दीजिए। इकट्ठा बहुत-सा न खाया करे, धीरे-धीरे खाए तो ताज़िंदगी खा सकता है। नही तो साथ ही के लोग फसा देंगे तब मैं मदद न कर पाऊगा।

सीताराम ने माथे पर तीन उंगलिया रखते हुए उत्तर दिया—किस्मत मे जो लिखा होगा सक्सेना साहब, भोग लेंगे।

कृपालू का काम निरीक्षण का। जहाँ भी जाता, ठेकेदार शराब-मुर्गा इफरात से मुहैया कर देता। कभी-कभी मुर्गी भी। बाहर की मुर्गियां उसे ऐसी भाने लगी

कि घर की मुर्गी साग बराबर भी न लगे।

उसकी स्त्री सुलभा ने, जिसे चपा सुलभारानी पुकारती थी, शादी के बाद बीए कर लिया था लेकिन बेरोजगार थी।

बाहर की मुर्गियों से मिला प्रसाद कृपालू ने सुलभा को दे दिया। चौथे दिन वह पीड़ा तथा घृणा से उफनती हुई रोने-सिसकने लगी तो कृपालू उल्टे उसी को गालियां दे-दे कर चिल्लाने लगा—शरीर की अपने सफाई नही रखती है साली! उल्टे मुझे रोग दे दिया!

सुलभारानी रोना भूल कृपालू का मुह दबा कर उसे चुप करने लगी!

चंपा ने वहू का इलाज पहले एक होम्योपैथ डाक्टर से कराया। होम्योपैथ डाक्टर से इलाज तो करते न बना रोग का, उसका विज्ञापन उसने खूब कर दिया! तब चपा बहू को ले कर जनाना अस्पताल गई। सुई-दवा का खर्च दिया सीताराम ने क्योंकि कृपालु का तो घर हफ्तों-हफ्तों तक पता न रहता था!

कभी वह होली मे पड़ा मिलता तो कभी वेश्या के कोठे पर। बडी ग्लानि होती सीताराम को बेटे की तलाश मे होलियो के अंदर घुसते!

बिजली का बिल जमा होना था। लाइन इतनी लंबी रहती है कि पहले दो पीरियड की छुट्टी लो तो बिजली का बिल जमा करो। सीताराम ने बिल और ढाई सौ रुपया चपा को देते हुए कहा कि दोपहर को वह रिक्शे से बिजलीघर जाकर बिल जमा कर दे। औरतों को देरी नहीं लगती क्योंकि उन्हें अवसर तो लाइन ही नहीं लगानी पड़ती। चपा ने सीताराम के कालेज जाने के बाद वह रुपया-बिल सुलभारानी को देकर बिजलीघर रवाना कर दिया। कृपालू ने सुलभा से कहा कि बिल जमा करने के बाद दोनों मेटिनी शो सेनिमा देखेंगे तो सुलभा सेनिमा के लालच में आ गई, उसने कृपालू को अपने साथ ले लिया।

खिड़की के आगे छह-सात औरतें लाइन लगाकर खड़ी थी और पुरुषो की लाइन मे केवल तीन मर्द थे। कृपालू औरतों की लाइन में खडी सुलभा के बगल मे जाकर बोला—लाओ मुझे दो, मैं अंदर जा कर एक मिनट मे जमा करा आता हूं।

ढाई सौ रुपये के नोट तथा बिल ले कर कृपालू बगल के फाटक के अदर गया। जो अंदर गया तो मिनट की कौन कहे पंद्रह मिनट बीते, एक घटा बीत गया मगर वह अदर से बाहर न आया। डेढ़ घटा वहा खड़ी रहने के बाद सुलभा अकेली घर लौट आई।

कृपालू नही लौटा। रात को भी नही और न अगले तीन रोज।

खूब चीख-चिल्ला कर शान्त हो जाने के बाद सीताराम ने होलियो का चक्कर लगाना शुरू किया। वहां से उसे जो जानकारियां मिली उन के आधार पर उस ने लल्लन के पास जाकर कहा—यार, अकेले मेरी वहा जाने की हिम्मत

नही होती, ज़रा तुम मेरे साथ चले चलो।

दो-तीन बार ज़ोर-ज़ोर से कहने पर लल्लन ने जब सुना-समझा तो चिल्लाते हुए पूछा—हा-हा, लेकिन चलना कहा है ?

सीताराम ने बताया नही क्योंकि सुनाने के लिए और ज़ोर से चिल्ला कर बताना पड़ता।

तडीवालेतिवाडी सामने चबूतरे के नीचे उकडू बैठा हुआ था। मुहल्ले के तीन लडके दस पैसे-बीस पैसे और दस पैसे की रेट के सिक्के उसे चुका कर उस की गंजी खोपड़ी पर तड़ी लगाने के पहले चबूतरे पर हाथ घिस रहे थे।

—मेरे साथ तो आओ !—सीताराम उसे बांह से खीचते हुए एक ओर ले गया।

जीवन में वह पहला और अंतिम अवसर था, सीताराम ने वेश्यालय मे ले जाने वाली सीढी पर पहला कदम रखा !

लल्लन तो उस बस्ती की हर सीढ़ी, हर कोठे के चप्पे-चप्पे कोने-अंतर तक से खूब परिचित था !

दोपहर के समय, छठी जगह वह उन्हें मिला। हरे छज्जे पर केवल अडरवियर पहने हुए, *शराब के नशे मे बेसुध पडा हुआ !* पतलून, कमीज़, बनियान उस की या तो किसी ने उतार ली थी या खुद उसी ने बेच दी थी। सीताराम-लल्लन ने उसे उसको काखों से लटका कर खींचते हुए नीचे उतारा। आधे रास्ते मे कृपालू को होश आया तो वह सीताराम और लल्लन को गंदी-गंदी गालियां देने लगा। लल्लन तो हंस रहा था मगर सीताराम की आखों से आत्म-ग्लानि आसुओ की धारें बन कर बह रही थी। सारे रास्ते भर कृपालू गालिया बकता हुआ घर तक आया।

अपने घर के दरवाज़े पर आ कर कृपालू अडियल टट्टू की तरह रुक गया।

— अब तुम इन्हे सभालो मास्टर साहब !—लल्लन का दम बुरी तरह फूल रहा था।

आठ-दस बच्चे द्वार पर खड़े तमाशा देखने लगे।

सीताराम ने चपा तथा सुलभारानी को आवाज़ दी। वे कृपालू को पकडकर घर के अन्दर खीचने लगी तो कृपालू वही गली मे अपनी माता तथा पत्नी पर फोश से फोश गालिया बरसाने लगा।

—इस औरत की शक्ल देखते ही अठन्निया रडी के साथ सोने का मन करने लगता है। इस साली ने एक रुपया अलग से रख लिया छाती चुमवाने का। नाम पूछो तो हरामज़ादी कहती है सुलभा बाई। इस औरत मादरचोद से रडी के कोठे पर जाने से भी छुटकारा नही !

शम्भू ओझा अपने घर मे था। जब उससे वे गदी-गदी गालिया न सुनी-सही

गइ तो क्रोध से चेहरा लाल, वह घर के बाहर दौड़ता हुआ निकला और कृपालू के दोनों गालों पर दोनों हाथो से ताबड़तोड आठ-दस झापड लगाए !

—यह कहां का कोढ पाला तुमने सीताराम ! यहा दस भले लोग रहते हैं, लड़कियां-बहुएं है ! यह तुम्हारा लड़का नही, पाप है तुम्हारा पाप ! सारा मुहल्ला गंदा किये है !

कृपालू सीक-सलाई तो था ही। शभू ओझा की मार से लडखडा कर नीचे गिरा। फिर लड़खड़ाते हुए खडा हुआ और सीताराम को घूरते हुए बोला—तुमने मारा है मुझे। मुझे मारा है न—कहते-कहते कृपालु ने घूमा कर एक भर पूर मुक्का जड़ दिया सीताराम के मुह पर ! सीताराम के सामने के तीन दांत खटाक से उखड़ गये।

—तुम मर जाओ कृपालू, तो पांच रुपये का भोग चढाऊं मैं हनुमान जी को !—उल्टी हथेली से खून और आंसू एक साथ पोंछते हुए रुंधी हुई आवाज में कहा सीताराम ने !

—याद रखना बाबू !—कृपालू उठी हुई तर्जनी सीताराम की ओर गड़ाते हुए बोला—बाबू, इस बात को याद रखना तुम ! नेताजी ! थाना एस ओ के पास लड़कियां सप्लाई करते हो तुम और कहते हो कि मैं सारा मुहल्ला गदा किये हूं !

किस्मत की मारी जानकी स्कूल से लौटते हुए वहां आ गयी ?

—यह औरत ! यह औरत एक रडी से भी गयी-गुज़री औरत है ! रंडी तो अपनी जवान बेटी को कोठे पर बैठा कर तब पेशे से अलग होती है। क्यो जानकी बाई लड़की को अपने कोठे से कहां भगा दिया ?

जानकी इतनी घबरा गयी कि उल्टे पैर वहा से भागी !

घंटे भर से ज्यादा कृपालू गली मे खड़ा-खड़ा गाली-गलौज करता रहा।

अगले ही दिन के अखबारों में सबके ऊपर बड़े-बड़े अक्षरो मे खबर थी कि भारत ने पोकरन में शांतिपूर्ण प्रयोगो के लिए आणविक परीक्षण करने में सफलता प्राप्त की है !

उसी महीने सीताराम के घर पर पुलिस ने छापा मारा, रात
तलाशी मे निकले छह जापानी टेपरिकार्डर, आठ बिना पट्टे की
एचएमवी रेडियो वगैरह कीमती सामान के साथ एसओ तथा दो
कृपालू को भी ले गये। ले जा कर थाने के लाक-अप

अफवाह थी कि छापा-तलाशी शंभू ओझा ने
का खासा एहसान था। लोहे वाले वर्माजी के
के तारों की चोरी के शक मे पकड़ा गया था।
खुद मिश्राजी ने थाने के अदर ही इक्कीस साल

में शोरशराबा अधिक हो जाने के कारण मिश्रा की मुअत्तली हुई तो शंभू ओझा ही ने लखनऊ जा कर डिसमिसल आर्डर को दूसरे थाने में बदली के रूप में परिवर्तित कराया था। तब से एसओ मिश्रा से कोई भी काम हो, शभू ओझा चुटकी बजाते उसे करवा देता। हाल की बात है, एक हलवाई का छोटा भाई अदर हो गया तो शभू ओझा ही ने उसके हाथ से पैंतीस रुपया मिश्राजी के जूतो पर रखवा कर छोटे भाई की पिटाई रुकवाई थी। हिरासतियों की खंजडी बजा देने मे एसओ मिश्रा की बडी शोहरत थी।

कृपालू को ले कर मिश्रा थाने में दाखिल हुआ। साथ ही एक कांस्टेबिल को भेजा, डाक्टर को बुलाने। डाक्टर उसका परिचित था। डाक्टर से उसने कृपालू की मेडिकल करायी। रिपोर्ट अपने हिप-पाकेट के हवाले कर डाक्टर को थाना-बाहर और थाने का फाटक भीतर से बद करवा दिया।

रात तीन बजे सीताराम घर से निकला, कृपालू को ले आने के इरादे से। लाल अमात वाली लबी गली में अधाकूप अंधेरा था। उस गली मे नया बल्ब जितनी बार लगाया जाता, चौबीस घटे के भीतर फिर तोड़ दिया जाता।

सीताराम दाहिनी दीवार पर हथेली फिसलाते हुए पैरों से टटोल-टटोल कर एक-एक कदम आगे रख रहा था कि सामने एकदम अंधकार में सुगबुग होती मालूम दी। यह भी मालूम न दिया कि उधर आदमी है या जानवर। उस के कलेजे की धड़कन तेज हो गयी। डर जानवर से नही, आदमी से अधिक था। कि पहले चाकू-छूरा न मार दे। सोचा कि कोई गीत-भजन गुनगुनाए कि तभी तीन-चार गज आगे अधेरे मे से किसी ने दबी हुई आवाज मे पूछा—कौन है बे ?—हम हैं सीताराम। सीताराम मास्ट—जाने दो यार, मुहल्ले का आदमी है।—उस आवाज की जगह से परे कतराता हुआ सीताराम एक-एक कदम टटोलता आगे बढ़ गया।

थाने मे केवल हेडकांस्टेबिल था। सीताराम ने अपना परिचय देने के बाद कृपालू के विषय मे पूछताछ शुरू ही की थी कि हेडकास्टेबिल ने सिर एक ओर खीचते हुए जोर से आवाज दी—रामधन का बद कर दो स्साले को !

सुबह नौ के करीब शंभू ओझा नया धुला हुआ कालरदार खादी का कुर्ता-पाजामा पहन कर थाने मे आया तो देखा, थाने के तीनो कास्टेबिल आगन के नल पर नहा और साबुन से अपने कपड़े धो रहे थे। आगन के दूसरी ओर के लोहे की छडो वाली हवालात की एक कोठरी मे सलाखों से कंधा टिकाकर सिर झुकाए हुए सीताराम बैठा था, जैसे कि बैठे-बैठे नीद से सो रहा हो। सीताराम का चश्मा साबुत था, घुंघराले बाल जरूर अस्तव्यस्त थे, कपड़े फटे हुए नही नजर आ रहे थे। कृपालू उसी कोठरी मे पीछे की ओर फर्श पर औंधा पड़ा हुआ था। बदन पर केवल पतलून थी। कुहनी की हड्डी शायद टूट गयी थी क्योकि बाहू उल्टी ओर

मुडी हुई थी। चेहरा सूज कर गोल हो गया था।

—कहा हैं हेड-कास्टेबिल ?—शंभू ओझा ने कपडा धोते हुए एक सिपाही से रुखाई के साथ पूछा तो बिना नजर ऊपर किये वह ढिठाई से बोला—अभी तो कमरे में बैठे थे। पान खाने चले गये होगे।

शंभू ओझा की आवाज सुन कर सीताराम यदि सो रहा था तो जाग उठा, खयालों में खोया हुआ था तो लौट कर हवालाती कोठरी में वापस आ गया।

—कितने बजे आवेंगे मिश्राजी ?—अरे साहब, उनका कोई ठीक नही है। नौ बजे आवें या दस-ग्यारह बजे आवें। मोटर साइकिल उठाकर निकल गये तो फिर कोई ठिकाना नहीं !—दूसरे सिपाही ने नम्रता से विस्तारपूर्वक बताया।

नेताजी !—सीताराम ने दूसरी आवाज दी—नेताजी !

शंभू ओझा जंगले के पास पहुंचा। सीताराम का चेहरा फक सफेद हो गया था, मानो वरसों से एनीमिया का मरीज हो। चश्मे के भीतर आंखो के चारो ओर काली झुर्रियों की चौड़ी पट्टी बन गयी थी। सीताराम की पलकें तेजी से झपकने लगीं।

—शंभू भैया !—सीताराम बड़ी मुश्किल से बोल पा रहा था—मुझे किसी तरह इस नरक से बाहर निकालो !

शंभू ओझा के कहने से दोपहर के बाद जमानत हुई, मगर केवल सीताराम की कृपालू की जमानत मिश्रा ने नही होने दी। या कराना सम्भव न था क्योंकि कृपालू के पास से तस्करी का कई हजार रुपये मूल्य का सामान बरामद हुआ था। मिश्रा ने बताया कि रिपोर्ट वह ऊपर भेज चुका है इसलिए लाचार है। शंभू ओझा को भी विश्वास हो गया कि मिश्रा झूठ नही बोल रहा है।

मिश्रा की लाचारी के बावजूद कृपालू की जमानत हो गयी और उसी शाम। तीन व्यक्तियों ने कुल मिला कर आठ हजार रुपये का मुचलका लिखा था। उन में से एक का केवल नाम ही सीताराम को पहले से सुना हुआ-सा लगा, यमुनापार गणेश फ्लावर मिल्स के मालिक नाथवानी का।

कृपालू छूट तो गया लेकिन घर नही आया। न जाने कितने तो उस के यार-दोस्त थे। सुना गया कि उसका इलाज हो रहा है। सुना गया कि वह काम पर नियमित रूप से पहुंचने लगा है। फिर सुना गया कि वह बाहर दो कमरो का फ्लैट किराये पर ले कर वहा रहने लगा है। फिर किसी ने देखा कि कृपालू भीड़ के साथ मनमोहन सेनिमा से सावले रंग की एक औरत के साथ बाहर निकल रहा था। वह कायस्थ की लडकी थी, टैलीफोन एक्सचेन्ज मे आपरेटर थी। सीताराम ने एक कान से सुना लेकिन दूसरे कान से निकाल न सका।

कृपालू की छोटी बेटी यशोधरा तीन साल की पूरी होने को थी। उसके पहले एक लड़का था दयाराम, पाच साल का। कटी हुई पतंग सेने पड़ोस के घरों

. . . . . ओड़कर भाग जाए और कभी वापस न लौटे।

लेकिन सीताराम का कालेज था और कालेज की नौकरी। लक्ष्मण ने वहां की नौकरी अपनी ओर से छोड़ दी। पता नहीं क्या करता था। अब ट्यूशन वगैरह करता होगा या सुगंधित तेल का कुटीर उद्योग फिर से चलाने लगा होगा, सीताराम को मालूम नहीं। मालूम करना भी नहीं चाहता। दस से चार तक लैब में घूम-घूम कर एर्थ से लेकर इंटर सेकेण्ड इयर तक के हर पीरियड में लड़कों को केमेस्ट्री एक्सपेरिमेन्ट कराना। उसके लहरियादार बालों में अधिकतर सफेद हो गये थे, और चश्मा नाक पर फिसल कर बार-बार आगे आ जाता था मगर सातवें क्लास के लड़कों को हाइड्रोजन गैस से भरे औंधे बीकर के पास जलती माचिस लाते और भक से जल उठती गैस को दिखाना नाइट्रिक एसिड के घोल में नीले लिटमस पेपर का टुकड़ा एक बार डाल कर और उसे ऊपर उठा कर लाल दिखाना उसे उतना ही कौतुक भरा लगता जितना कि नवें क्लास के शोर करते उन तमाम किशोरों को। जुलाई ही में आठ नये केमिकल बैलेन्स खरीदे गये थे। मगर दो वर्ष बाद तो सीताराम को रिटायर ही हो जाना था !

शाम को वह लैब बंद करके दरवाजे में ताला लगा ही रहा था कि दो नौजवान साइकिल सवार उसके पास आकर साइकिलों से भदभदा कर उतरे। उनमें से एक ने उतरते-उतरते पूछा—केमिस्ट्री टीचर सीताराम साह आप ही हैं ?

लड़के कालेज के नहीं थे। सीताराम जरा डर गया। उसने हुंकारी में सिर झुकाया।

—कृपाराम मालगाड़ी से कट गया है। कब्रगाह वाले पुल के ऊपर।—दूसरे ने कहा—आप जल्दी पहुँचिये।

सीताराम कुछ पूछ सके उसके पहले ही उन दोनों ने साइकिलों के अगले पहिये वापस घुमाए और साइकिलें सीधी करके उछल कर सीटों पर सवार हो साइकिलें भगा ले गये !

सीताराम सिर झुका कर सामने की घास में गिरी हुई चाभी ढूढ़ने की तरह निगाह दौड़ाने लगा। सभी टीचर्स जा चुके होंगे। उसने देखा, बगल वाले वुड-क्राफ्ट के क्लास का दरवाजा खुला हुआ था। वुडक्राफ्ट टीचर पाण्डे ने सीताराम को अपनी साइकिल के पीछे बैठाया। सीताराम के पास तो साइकिल भी न थी। वह बरसों से पैदल कालेज आता-जाता था।

उधर से सड़क उतार की थी। मुड़ कर गवर्नमेन्ट कालेज के सामने वाले रास्ते से बनारस जाने वाली लाइन की ऊंची पुलिया के नीचे से गुजरते हुए सीताराम ने अचानक घबरा कर अपने दिमाग पर जोर डाला कि उन लड़कों ने

गवर्नमेन्ट कालेज वाली पुलिया तो नही बतायी थी ? फिर उसे ध्यान आया कि उस की याद उसे धोखा दे रही थी। गवर्नमेन्ट कालेज वाली रेलवे पुलिया पर तो जीवनलाल की दो साल की स्त्री ने रेल से कट कर आत्महत्या की थी। पुलिया से पंद्रह-बीस गज पश्चिम की ओर। सात-आठ महीने के पेट से थी। पेट ही फट गया, तरबूज की तरह। रेल से कटी भैंस की तरह। पश्चिम के आकाश मे केवल शुकुवा तारा अकेली सफेद आख की तरह जल रहा था, शाम की सिंदूरी चमक के साथ-साथ। वैसे ही कृपालू—

पान्डे ने बंगाली मुहाल की तरफ साइकिल खीची, कि उधर से दो-तीन मिनट कम लगेगा। बंगाली मुहाल के पुल के बगल में अब जहा पट्रोल पंप खडा है, पान्डे के बचपन मे सन् 42 के समय कोयले की तीन टालें ही थी। कोयले वाले अपनी दुकानों के बांस के ऊचे-ऊंचे टट्टर रेलवे के पुश्ते से टिका कर खड़े करते थे। 42 मे इसी पुल को उड़ाने की कोशिश करते हुए एक नौजवान को पुलिस ने पकड़ा था तो दस साल के पान्डे को एकदम स्पष्ट याद है, नौजवान के हाथ उस की पीठ के पीछे बाध, मुंह पर कपडा डाल कर सरे बाज़ार पैदल चलाते हुए ले गये थे दो बंदरमुहें अंग्रेज सार्जेन्ट ! अब पुलिया के दूसरी ओर फुटपाथ के किनारे अपनी-अपनी अंडा या मछलियों की डलियों के बीच गैस की ढिबरिया रखकर चाव-चांव हांक लगा रहे थे दुकानदार। इसी बंगाली मुहाल मे चट्टोपाध्याय मास्टर साहब का घर था। एकदम हिटलर के नाक-नक्श, वैसे ही सीधे सपाट बाल और मूछो वाले चट्टोपाध्याय मास्टर साहब, जो पान्डे को स्कूल मे ज्यामेट्री पढ़ाते थे।

—यार पान्डे, ज़रा दो पैंडिल और जोर से मार दो भैया !

सीताराम इसी शहर में रहते हुए भी दसियों साल बाद इस ओर आया था चौराहा बड़ा हो गया था और उसके बीच में एक छतरी के नीचे एक मूर्ति खड़ी हो गयी थी। पहले इस चौराहे के आसपास मोटर-मिस्त्रियो की दुकानें हुआ करती थीं, दोनों किनारों पर ट्रकों की कतारें खड़ी रहती। दाहिनी ओर वाली लंबी पीली इमारत मे एसटी कृष्णमूर्ति रहता था, एमएससी केमिस्ट्री मे टाप किया उसने। फिर आईएएस-आईएफएस दोनों मे एक साथ आ गया। इग्लैंड गया था ट्रेनिंग करने।

कब्रगाह के सफेद दरवाज़े के ठीक सामने से, जहां एसटी कृष्णमूर्ति वाली पीली इमारत का सिरा था, उस इमारत और रेलवे लाइन के पुश्ते के बीच गज भर पतली लंबी गली थी।

पान्डे ने उतर कर गली मे साइकिल को दीवार की ओर झोंक दिया और सीताराम तथा पान्डे पुश्ते पर हाथों के पंजे टेक कर तेज़ कदमों से चढ़ने लगे।

पुश्ते के ऊपर दो जोड़ा रेल-लाइनों के अलावा न आदमी न आदमजात। अंधेरा भी होने लगा था। बंगाली मुहाल की तरफ बहुत दूर पर पिछली पुलिया के आगे आसमान में सिगनल की लाल बत्तियाँ टिमटिमा रही थीं, दूसरी ओर इस्पात की वे ही दो जोड़ा लकीरें। नीचे कब्रगाह में पेड़ों के चार गुम्बद क्षितिज के आगे स्तब्ध खड़े थे।

—माट साब! पान्डे ने पीछे से चिल्ला कर पुकारा—यहा है!

सीताराम पटरियों को जोड़ने वाले स्लीपरों पर दौड़ता हुआ पाण्डे के पास पहुँचा।

धड़ कृपालू का लाइन के बाहर था। सीताराम ने उसके दोनों पैर पकड़ कर खतरे की जगह से अलग करने के लिए उठाया तो दोनों पैर धड़ से अलग हो कर इकट्ठा सीताराम के हाथों में आ गये, एकदम हल्के से! दोनों पैर टखनों पर मोटी रस्सी से कस कर बंधे हुए थे। नीचे के रोड़े मोटी काली काई-जैसे रक्त से ढक गये थे और कटी हुई जांघों से खून सांपों की तरह धीरे-धीरे रेंगता हुआ अब भी बाहर निकल रहा था।

—कृपालू?—सीताराम ने जैसे कि पहचान करने के लिए पूछा।

—बाबू?—सफेद फटी-फटी आंखों में से उछल कर जवाब आया—सराब होए तो थोडी-सी सराब पिला दे, हरामी!

—माट साब जल्दी करो! पाण्डे बोला—वक्त गंवाने से कोई फायदा नही।

पाण्डे ने दोनों कटे हुए पैरों को उठाया। सीताराम ने कृपालू के कटे हुए जीवित कबन्ध को। कटे हुए दोनों पैरों में भी जान तो रही ही होगी!

—पुलिस को इन्फार्म कर दीजिये, वरना बाद में परेशानी होगी।—पाण्डे ने उचक-उचक कर पुश्ता उतरते हुए सलाह दी।

कट जाने पर भी, देह का अधिकांश खून रिस जाने पर भी, कबन्ध में जान बच रही थी, जो सीताराम से लिपटा हुआ बीच-बीच में बड़बडा रहा था, बाबू! बाबू?

पाण्डे और सीताराम एक ही जीवित देह को टुकड़ों में लिये नीचे उतर रहे थे।

—हा पाण्डे, बाद में पता नही क्या आफत आए।

सीताराम की दोनों बाहों के बीच कस कर पकड़ा हुआ मांस का बड़ा लोंदा अचानक लुंज हो गया।

—खतम हो गया!—सीताराम एक बार जोर से सिसक कर रो पड़ा—तुम इन्हें ले कर यहीं रुको, मैं थाने में इत्तिला कर आता हूं।—सीताराम ने बाहों का बोझ नीचे धरती पर रख दिया।

पाण्डे हिचकिचा गया। कटी हुई टांगें बगल में लिटाते हुए कहा—नहीं

यार, अकेले मुझे ठीक नहीं लगता।

वह इलाका सिटी स्टेशन पुलिस सर्किल के अन्तर्गत आता था।

थाना इंचार्ज सहृदय निकला। उसने सीताराम का परिचय सुन, शक्ल-सूरत हुलिया देख कर कहा—अरे मैं आपके लडके को जानता हू। जैसे स्मगलर्स का उसका साथ था, मर तो उसे बरसो पहले जाना चाहिए था! पुलिस पोस्टमार्टम के चक्कर मे पड़ियेगा तो दौड़ते-दौड़ते तलुए की खाल घिस जाएगी। नौजवान लड़का तो आपका गया ही। ऐक्सिडेन्ट का सर्टिफिकेट लिख देता हूं।

—बडी ज़र्रानवाज़ी होगी हुज़ूर की!—सीताराम ने झुक कर दोनो हाथों से उसके जूते छूए।

थाना इचार्ज दो सिपाहियो को बुला कर सार्टिफिकेट पर उनके दस्तखत करा रहा था कि पान्डे ने अपने पतलून के जेब से पर्स निकाला।

—मुझे डोम समझ रखा है क्या वे?—थाना इंचार्ज बोला—भलमनसाहत से पेश आया इसीलिए?

पान्डे तथा सीताराम ने बहुतेरी माफी मागी।

बाहर निकल कर सीताराम ने हड़बडी में कहा—पान्डे, दस-पाच रुपए हों तो दे दो और जरा तुम दो मिनट यही रहो, मैं अभी आया।

स्टेशन के पास के चौराहे पर हनुमान मदिर था। नीचे हलवाई की दुकान से उसने सेर भर बेसन का लड्डू खरीदा। ले कर सीढ़ी से ऊपर गया। छत पर दर्शनार्थी स्त्री-पुरुषों की खासी भीड़ थी। मगलवार का दिन था। वे हनुमान चालीसा का पाठ कर रहे थे पुजारी के साथ। बारी पर आगे बढ़ कर सीताराम ने मिठाई का दोना दोनों हाथों से पुजारी के हाथ मे थमा दिया। पुजारी ने लौटा कर उन लड्डुओ की पिटारी तथा फूल दिए और सीताराम के माथे पर लाल महावीरी का टीका लगाया। भीड़ के रेले के साथ उतरते हुए सीताराम ने झुककर प्रसाद की पिटारी को सीढ़ी के कोने में छोड़ दिया, बाहर निकलकर बाहु से तिलक पोंछ डाला।

अगले दिन कृपालु का दाह-संस्कार हुआ। चिता पर सीताराम ने धड़ रखने के बाद एक-एक कटी हुई टाग धड़ के दाहिने बाएं रखी।

कोई महीने भर बाद बुल्लो आया। कृपालू के मरने की खबर उसे न जाने कहा से—कैसे मिली। मातमपुरसी करने ही के लिए वह आया होगा। सीताराम की बैठक में वह बैठा था। पर्दा खिसकाकर पहले सुलभा आयी, घूघट काढ़े हुए।

उसके पीछे चंपा। चंपा के अधिकतर बाल सफेद हो गए थे। घूघट के अन्दर सुलभा रोने लगी। चंपा ने चार बीड़े पान और कत्थे जर्दे वाली छोटी तश्तरी बुल्लो के आगे के गद्दे पर रख दी और जीजा कह कर सिसक पड़ी।

बुल्लो घटे से अधिक वहां बैठा रहा होगा मगर उस के मुह से एक भी शब्द

निर्मूल नही होने पाया वंश, मगर किसका वंश ? कृपालू के एक लड़का था छह वर्ष का, चार वर्ष की लड़की थी, प्राइवेट बीए पास पत्नी थी, जो कोई ट्रेनिंग वगैरह कर के कही मास्टरनी हो सकती थी। छप्पन वर्ष की विधवा चंपा थी। अस्सी से ऊपर की अधी माता थी मउसी, जो लगातार यही कह-कह कर विलाप करती रहती थी कि इसी हाथ से पाल-पोस कर बड़ा किया था, सीताराम ! तुमने इसी हाथ से जहर का गिलास क्यों मागा।

वह तो शमू ओझा था, नही बिना मर्द के सीताराम के परिवार वालों को कितनी परेशानियो का सामना करना पड़ता, कहा नही जा सकता। सीताराम के घर मे अगले महीने की कौन कहे, अगले सप्ताह के लिए भी जिन्स न था। शंभू ओझा ने सीताराम के कालेज चपा के साथ जा कर प्रिंसिपल पर जोर डाल कर चपा को पिछले महीने की बकाया तनखाह दिलवायी। दो-तीन बार मैनेजर से मिला, सीताराम का प्राविडेन्ड फड उस के परिवार को जल्दी दिलवाने के लिए। शंभू ओझा इसी प्रकार संकट मे हर एक का सहायक होता था।

लोहे वाले धीगरा साहब की फैक्ट्री में ऐसा जोरदार विस्फोट हुआ कि फैक्ट्री की पूरी छत ही उड़ गयी। एक मजदूर तो वही चिथड़े-चिथड़े हो गया, पाच बुरी तरह घायल। वास्तव मे धीगरा साहब की फैक्ट्री में कैन्टूनमेन्ट से खरीदे गए बम के खोलों से तावा-पीतल-फौलाद धातुएं अलग-अलग करके उन्हें अच्छे दामों पर बेचने का भी धंधा होता था। नीलामी का ढेर सारा कत्तल उस की फैक्ट्री में गलाया जाता था। कहते हैं कि एक आर्मी-आफिसर को रिश्वत दे कर फौज का तीन ट्रक सामान उस की फैक्ट्री में पिछली ही शाम को आया था। डबल ओवरटाइम दे कर मजदूरो से कहा गया था कि सुबह होने से पहले सारी धातु गला देनी है। मजदूरों के तो कयास मे भी न रहा होगा कि स्क्रैप मे नये शेल के कई क्रेट भी मिले हुए हैं। फोरमैन को भी न मालूम रहा होगा। एक मजदूर ने एसेटलीन टार्च गोले को दिखायी ही थी कि फैक्ट्री के भीतर कर्णभेदी धमाकेदार सूर्योदय हो गया !

अली मुहम्मद नाम का एक मिस्त्री, फैक्ट्री का बरसो पुराना कारीगर था। उसका एक हाथ एक पैर उड़ गए लेकिन मरा नही था वह। बड़े धीगरा का भतीजा और फोरमैन ने अली मोहम्मद को एक बोरे मे भर बोरा ऊपर से सिल दिया। बोरे के अन्दर से अली मोहम्मद चीख-चीखकर गिडगिड़ाता रहा—मालिक, मुझे मारो नही, मैं जिन्दा हूं ! मुझे अस्पताल भिजवा दो ! खुदा तुम्हें बरकत दे ! या अल्ला, इनके बाल-बच्चो को—मालिक, मुझे मारो नहीं, मैं जिंदा हूं !

पंद्रह मिनट भी न बीते होंगे, फैक्ट्री पर पुलिस का पहरा बैठ गया। फोटोग्राफरो-पत्रकारो को सौ गज दूर ही से यह समझा-बुझाकर विदाकर दिया गया कि दिल्ली से आर्मी खुफिया विभाग के आला अफसरो का दल रवाना हो चुका है।

उन के पहुंचने से पहले किसी को भी मौका-मुआयना करने को इजाजत नहीं है।

धीगरा की लगातार भागती पिकअप वैन मे दिखालयी देता शंभू ओझा ! रात-दिन उस ने एक कर दिया। उसकी पहुच भी लखनऊ से आगे दिल्ली तक बढ गयी थी। दिल्ली की फ्लाइट पकड़ने के लिए वह हवाई-अड्डे अपने किसी मित्र की जीप से पहुचा तो वहा दस-बारह व्यक्तियों का एक छोटा-सा समूह उस की प्रतीक्षा कर रहा था। उन में से तीन-चार के हाथो मे फूल मालाएं थीं। राजनीतिक हलको मे मध्यावधि चुनाव की आशाएं लगायी जा रही थी। शंभू ओझा प्रान्तीय विधान सभा का टिकट पाने के लिए भी दौड़-धूप रहा था।

जानकी परेशान थी, पन्नालाल के पुनः वापस आ जाने से। पागल खाने के अधिकारियों ने दो माह फीस न पहुंचने पर पन्नालाल को बाहर कर दिया। पागल पन्नालाल लावारिस ढोर की तरह रेंगता हुआ वापस पहुंच गया जहा वह अपना घर मानता था। पन्नालाल को मानसिक चिकित्सालय में रखने का आर्थिक साधन जानकी के पास न था, घर में रखने की सामर्थ्य नही। यों पन्नालाल इस बार जब से घर लौटा, उस पर उग्रता के दौरे नही पड़े। घर के अन्दर रहता तो सदा की तरह श्लोक या धार्मिक भजन गाया करता। पर वह घर मे रहता ही बहुत कम था। बाहर-बाहर डोला करता। लेकिन पागल तो पागल, क्या ठिकाना कब काबू से बाहर हो जाए।

जानकी ने बुचुन्चा से सलाह की, बुचुन और जानकी ने पेशकार साहब से। पेशकार साहब ने कहा जाकर शंभू ओझा से कहो, नेता आदमी हैं, कोई रास्ता निकाल देंगे।

शमू ओझा रहता तो अपने पुराने वाले मकान ही में था मगर रात-बेरात सोने के लिए ही वहा आता था।

जानकी और बुचुन पेशकार साहब को साथ लिए हुए शमू ओझा के यहां पहुचे तो उसकी नीली बैठक मे बैठे अन्य बारह-पन्द्रह व्यक्ति उसके बाहर निकलने की प्रतीक्षा कर रहे थे। छह-सात सफेदपोश व्यक्ति कुर्सियों-सोफासेट पर कसे-फसे, मटमैले कपड़ों वाले आठ-नौ स्त्री-पुरुष नीचे फर्श पर बैठे थे। लोहे की कुर्सी पर बैठे नौजवान ने खड़े होकर जानकी को अपनी जगह दे दी। शमू ओझा के सो कर उठने का भी कोई निश्चित समय नही। कभी सात-साढ़े सात बजे ही उठ जाता तो कभी नौ-दस-ग्यारह बजे तक सोता रहता। इसीलिए पेशकार साहब ने सुबह आठ ही बजे पहुंच जाने का सुझाव दिया था।

नौ के आसपास शंभू ओझा पजे मे अखबार के फड़फड़ाते पन्नों को मुर्गी की तरह दबाये हुए कमरे में तेजी के साथ दाखिल हुआ तो सारे लोग अचकचा कर खड़े हो गये।

वह दो-दो तीन-तीन व्यक्तियो से एक साथ वार्तालाप करते हुए उन्हें जल्दी-

जल्दी निबटाने लगा।

जानकी पन्नालाल के विषय में कह ही रही थी कि पन्नालाल का वह क्या करे, कि फोन की घंटी बजने लगी।

शंभू ओझा ने रिसीवर बायें हाथ में लटका कर जानकी से कहा —तुम फिक्र मत करो। परसों मुझे दिल्ली जाना है। बस तुम पन्नालाल को स्टेशन तक पहुंचा दो फिर मैं उन्हें अपने साथ दिल्ली ले जा कर वहां उनका बंदोबस्त करा दूंगा—हेलोओ ?

पन्नालाल धारीदार नीली कमीज और सफेद पाजामा पहने हुए था। सिर के बाल थोड़े-थोड़े सफेद हो गये थे। आंखों में तथा होठों के कोनों पर तरलता तो खैर, उसके हमेशा रहती थी।

जानकी चन्दर तथा लल्लन उसे स्टेशन तक ले आये। वैसे, वह बात-व्यवहार से पागल लग ही नहीं रहा था। स्टेशन प्लेटफार्म पर आठ-दस लोग शंभू ओझा को विदा करने के लिए आये हुए थे।

पन्नालाल शम्भू ओझा को पहचानता था। बोला—ओझा जी, आपकी देह में जो आत्मा है वह भी मेरा ही एक अंश है। ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातन.। वही मैं आपकी, लल्लन की, भाभी की सब की मन सहित छहों इंद्रियों को मन.षष्ठानि इंद्रियाणि प्रकृतिस्थानि कर्षति मेरी ओर खींच रहा हूं। यदादित्यगतं तेजो जगद्भासयते खिलम। यच्चन्द्रमसि यच्चाग्नौ तत्तेजो विद्धि मामकम्। अहं वैश्वानरो भूत्वा प्राणिना देहमाश्रित: —

शंभू ओझा तथा पन्नालाल के सामने अधघेरा बना कर खड़े वे लोग आश्चर्यमिश्रित कौतूहल से पन्नालाल को देख रहे थे।

—शंभू बाबू, इनका उधर ही कुछ हिसाब लगा देना। सच, मेरे तो चंदर, कुछ समझ ही में नहीं आता! —जानकी के थके हुए चेहरे पर दु.ख, उदासी, पीडा कुछ भी न था। थी तो प्रताड़ना की हल्की सांवली झाईं। और उसकी सदा बेचैन चमकती रहने वाली आंखों में उलझन, केवल उलझन, मकड़ी के कांपते हुए सफेद जाल-सी उलझन!

—तुम फिक्र न करो।—शंभू ओझा हंसता हुआ बोला—पहले तुम अपनी हेल्थ का ख्याल करो।

—अरे, अब मेरी जिन्दगी में रखा ही क्या है! —जानकी की आवाज बुझ गई।

ट्रेन हिली तो जानकी, चंदर तथा लल्लन ने हाथ जोड़ दिये, पता नहीं शंभू ओझा को या पन्नालाल को भी।

साल से अधिक हो गया पन्नालाल लौट कर नहीं आया। कुछ लोगों का कहना है कि शंभू ओझा ने रास्ते में उसे पुलिस को दे दिया। नहीं, पुरानी दिल्ली

उतरकर रेलवे पुलिस के हवाले कर दिया। कुछ ने सुना कि शंभू ओझा ने पन्ना लाल को रात के समय बीच के एक छोटे स्टेशन पर गाड़ी से नीचे उतार दिया।

गाजियाबाद पुलिस ने अलीगढ़ के एक गिरोह को पकड़ा, जिसने तीन भिखारियों की हत्या की थी और उन भिखारियों की लाशें विदेशों को शवों का निर्यात करने वाली कलकत्ता की एक कम्पनी के दलाल के हाथ बारह-बारह सौ रुपये में बेच दी थी।

जो भी हो, पन्नालाल अपने घर लौटकर नहीं आया। अन्यथा वह कहीं भी क्यों न हो अधिक से अधिक दो या तीन महीने बीतते न बीतते उस स्थान पर लौट आता था, कबूतर या बिल्ली या गाय, बैल के माफिक, जो उसका जन्म-स्थान था!

रात को जो बम का दूसरा बड़ा धमाका सुनायी दिया था, वह बम नहीं फटा था, यमुना पुल पर खड़ी मालगाड़ी से एक पैसेन्जर ट्रेन टकरा गयी थी—अगली सुबह के अखबार में सबसे ऊपर यही खबर थी। सुबह उठ कर हजारों लोग यह तमाशा देखने के लिये उधर ही दौड़ पड़े।

तब तक सिर्फ एक क्रेन वहां पहुंच सकी थी। पेसेन्जर ट्रेन के दो डिब्बों की केवल छतें बड़े-बड़े कछुओं की काली पीठों की तरह पानी की सतह के ऊपर नजर आ रही थीं। क्रेन की बांह वहां तक पहुंचती न थी। हत और आहत पहले ही हटाये जा चुके थे, उनके बिखरे हुए सामानों के ढेर के बगल में एक पतली मूंछों वाला कान्सटेबिल राइफल पकड़े हुए खड़ा पहरा दे रहा था।

चारों ओर आपाधापी मची हुई थी। पागलों जैसे सैंकड़ों मनुष्य धीरे-धीरे आगे रेंगते हुए झांक रहे थे पैसेन्जर ट्रेन के तुड़े-मुड़े-पिचके डिब्बों के अन्दर-नीचे! एक लाश छत की एक धरन से लटकी हुई थी, चिपट कर पट्टी की तरह बारीक! एक बर्थ के ऊपर मुड़ी हुई केवल एक टांग!

वे मृतकों का सामान या लाशों पर से नेकलेस-अंगूठी-कलाई घड़ी उतार लेने वाले नहीं, केवल अपने मृत सम्बन्धी की लाश खोज रहे व्यक्ति थे।

—डिब्बा नीचे गिरा तो हम को होश था। किसी तरह निकल कर हम तैरते हुए किनारे पहुंच गये!—बयान देने वाले के सिर पर सफेद पट्टी गांधी टोपी की तरह बंधी हुई थी—पहले हम पास वाले किनारे पर गये थे क्योंकि तीन-चार और आदमी आगे-आगे पानी में हाथ मारते उधर ही बढ़े जा रहे थे। अंधेरे में दस-बारह औरत-मर्द-बच्चे किनारे पर खड़े थे। जिस जगह पर तैरते हुए लोग किनारे पर लगने वाले थे किनारे के लोग उधर ही भागे। हमने सोचा कि खींच कर बाहर निकालने के लिए दौड़ रहे हैं। लेकिन साहब, जब देखा कि वे तो घड़ी-अंगूठी नोच रहे हैं तो इधर कुआं उधर बावली, हम तो साहब उल्टे लौट पड़े।

एक लंगड़ाती हुई औरत भरसक तेज़ी से पीछा करने की कोशिश करती हुई चल रही थी। उसकी ठोड़ी फूट गयी थी लेकिन कमर पर टिकाए हुए चार-पांच साल के उसके बच्चे की बायीं बांह पट्टियों में लिपटी हुई थी। रेलवे कर्मचारी ने तीन पहियों की गाड़ी के दोनों हैंडिल एकदम ऊपर उठा कर लाश प्लेट फार्म पर भद् से गिरायी तो वह स्त्री बिफर कर रो पड़ी···रुपया, पैसा सामान तो रात को ही ले गये। अब लाश की इस तरह ख़ुआरी क्यों करते हो !

मुरादाबाद से आया एक नौजवान दुर्घटनास्थल, अस्पतालों के वार्डों तथा मुरदाघरों में तलाश कर लेने के बाद निराश हो चुका था—अब्बाजान का चेहरा आख़िरी बार देखना नसीब में न था ! अब वापस लौट जाऊंगा मगर उनकी कब्र में दफ़न क्या करूंगा !

संवाददाता सम्मेलन में मंत्रीजी ने बहुमूल्य जीवनों की हानि पर खेद प्रगट करते हुए घोषणा की कि सरकार की ओर से प्रत्येक मृतक के वारिस को एक हज़ार रुपये, गम्भीर रूप से घायल हुए यात्री को पांच सौ रुपये तथा सामान्य रूप से घायलों को पचास रुपये की आर्थिक सहायता प्रदान की जायेगी। लाश ढूंढ निकालने वाले व्यक्ति को पचास रुपये प्रति लाश के हिसाब से पुरस्कार दिया जायेगा।

नदी के शान्त नीले बहाव से काफी दूर पर था ऊंचा कगार, टेढ़ा-मेढ़ा दरका, फटा हुआ। धरती के बड़े-बड़े टुकड़े उसके नीचे गिरे हुए थे। जैसे कि रात के अंधेरे में एक प्रेतात्मा अपनी सिकुड़ी चुंधियाई आंखों से धरती को एकटक घूरती हुई धीरे-धीरे डग रखती उधर से हो कर गुजरी हो और उसके प्रत्येक पद-पात के नीचे की धरती धंस कर गिरती गयी हो ! दूर तक।

यह चेहरा है धरती का, हमारी धरती का !

शुक्र है कि उसकी टकटकी धरती की गहरी परतों के नीचे छिपी उन अनेक संपदाओं तक नहीं पहुंच सकी, जो हमारी सारी पूंजी है।

एक और चेहरा है धरती का, जिसे अपनी मोटी-पतली उंगलियों से नदी गढ़ती है। ऊंचे विशाल खिलौनों-से पर्वत, लम्बे-चौड़े हरे-भरे बंजर दलदली सूखे मैदान, खेत खलिहान घर मकान उसके किनारे पर घास-फूल की तरह अपने आप उगते हैं। सुस्त छोटे-से रंगीन कीड़े की तरह रेंगती हुई विशालकाय नदी जब अंगड़ाई लेने के लिये अपनी सांवली बांहें फैलाती है तो दूर-दूर तक कच्चे-पक्के घरों, पशुओं और मनुष्यों को निगल कर अपने पीछे खाददार उपजाऊ मिट्टी उलीच जाती है ताकि बचे हुए मनुष्य उस पर फिर लहलहाती फसलें उगा सकें। दूब-घास से लेकर वट तथा पीपल देवदारु तक सब इसी प्रक्रिया से नष्ट होकर पैदा होते हैं। आकाश तक ! जिसमें काले-काले मानसूनी बादल एकत्र होकर रास नाचते और फुहारें बरसाते हैं, धूल-आंधी का गुलाल उड़ाते हैं !



लक्ष्मीधर मालवीय

जन्म 27 नवम्बर 1934 इलाहाबाद

शिक्षा एम० ए०, डी० फिल्, इलाहाबाद विश्वविद्यालय

इलाहाबाद विश्वविद्यालय तथा राजस्थान विश्वविद्यालय में अध्यापन.

सन् 1966 में ओसाका गाइकोकुगो दाइगाकु जापान (ओसाका विदेशी भाषा विश्वविद्यालय जापान) में विजिटिंग प्रोफेसर

नई दिल्ली में छायाकर्मों की एकल प्रदर्शनी सन् 1984 में.

प्रकाशित कृतियां :

देव ग्रन्थावली	(शोध प्रबन्ध)
किसी और सुबह	(उपन्यास)
दायरा	(")
रेतघड़ी	(")
हिमउजास	(कहानी संग्रह)
मुमेक्षु	(")